कालापानी



लेखक

बॅ. वि. दा. सावरकर

अनुवादक

श्री. आनंदवर्धन विद्यालंकार, दिल्ली



[१९४९] [मूल्य रु. ५

प्रकाशक
वि. गं. केतकर
अ वि. गृह प्रकाशन
६२४, सदाशिव पेठ, पुणे २



मुद्रक
वि गं. केतकर
लोकसग्रह छापखाना
६२४, सदाशिव, पुणे

प्रकाशककी ओरसे

मराठी साहित्यके अुच्चकोटिके जो कलाकार-महोदय हैं, अुनमें वॅ. वि. दा. सावरकरजीको विशेष महत्त्वका स्थान दिया जाता है। आप निबंध-कार हैं, कवि हैं, अुपन्यासकार भी हैं। इन सब विविध रूपोंमें आपकी लेखनी गतिशील, चमकीली और हृदयको आकृष्ट करनेवाली ठहरी है। यह सत्य है कि, आपने जो कुछ लिखा है, अुसमें आपने भारत-माताके सम्बन्धमें जनताके कर्तव्यको जगानेकी भरसक चेष्टा की है। केवल मनरंजन का साहित्य आपने कभी भी निर्मित नहीं किया है। प्रस्तुत "काला पानी" अुपन्यास भी अिस सिद्धान्तको अपवादरूप नहीं है।

जहाँ भारतके अनेक सुपुत्र जेलमें बंद कर दिये गये थे, जेलर और रखवाल-दारोंसे त्रस्त किये जाते थे, जहाँ निवास करने के बाद बचकर वापस आना असंभव माना जाता था, जहाँ स्वयं लेखक महोदय अँधेरी कोठरीमें जीवन बिताते थे, वहाँकी अर्थात् अन्दमान की कथा अिस अुपन्यासमें ग्रथित है। कभी कैदियोंको कुछ वर्षोंकी सजा भुगतनेके अनन्तर अन्दमानमेंही कारा-गृहके बाहर रहकर जीवन निर्वाह करनेकी सुविधा दी जाती थी। अैसे कैदियोंका जीवन, जंगल तोडनेकेलिये जेलके बाहर जानेका मौका आतेही कैदियोंकी मनोवृत्तिमें होनेवाला आन्दोलन, जेलके अन्दर सरकारी कर्म-चारियोंके द्वारा कानून के अनुसार या अुसके विरोधमें भी बंदियोंकी होनेवाली भयानक मारपीट—अिन सब घटनाओंका जो वर्णन अुपन्यासमें चित्रित किया है, अुसे पढकर पाठक मुग्ध हो जाता है।

कथानकका आरंभ भारतमें होता है, अुपन्यास के पात्रोंको अन्दमान जाना पडता है, वहाँसे भागकर ये पात्र—मालती, अुसका बंधु दोल्काष्ठ और मालतीका रक्षक और अन्तमें अुसका पति किशन—सब मिलकर अेक

छोटी-सी नावमें भारत लौटने लगते हैं। अपने देशके किनारेके नजदीक हम आये हैं, अिस तरहका कुछ आभास उन्हें जब होने लगा था, तब अेकाअेक प्रचंड मत्स्यकी फटकारसे अुनकी नाव अुलट जाती है। यहाँ उपन्यासकी समाप्ति होती है।

वीर सावरकरजीने 'जन्मठेपमें' अपनी जेलकी और अन्दमानकी परिस्थिति सुंदर और ओजपूर्ण शब्दोंमें अंकित की है। जब वह अनुपम पुस्तक ज़ब्त हो गई थी तब अुस विषयकाही सौम्य आविष्कार कहानीद्वारा —अिस उपन्यासके द्वारा—जनताके सामने आया।

मूल मराठी अुपन्यासके दो संस्करण निकले चुके हैं। राष्ट्रभाषा हिंदीमें यह पहलाही संस्करण छप रहा है। अनुवादका कार्य नयी दिल्लीके श्री आनन्दवर्धनजी विद्यालंकारने सुचारु रूपसे किया है अिस लिये अुन्हें धन्यवाद। विश्वास है कि पाठकगण अिस रचनाको अपनाअेंगे।

वीर सावरकरजीने यह अुपन्यास प्रकाशित करनेका कार्य हमारी संस्थाको सौंप दिया, अिस लिये अुन्हें हम धन्यवाद देते हैं।

गीताजयंति,
मार्गशीर्ष, शु, ११
शके १८७१. १-१२-४९

वि. गं. केतकर
कार्याध्यक्ष, पुणे अ. वि. गृह

अनुक्रमणिका

कालापानी

मथुरा क्षेत्र में ? : : : १

"अम्मा, अेक गाना तो सुनाओ ना, हम तुम्हे अितने मीठे मीठे और सुरीले गाने गा कर सुनाते है और तुम हमे अेक भी गाना गाकर न सुनाओ ? यह कहाँ की रीत है भला ! " मालती ने झूले पर अेक और अूँचा झोंका लेते हुअे लाडभरे कठ से रमावाअी से कहा।

" वेटा, तुम अेक की वात करती हो, मै अेक लाख गाने सुनाने के लिये तय्यार हूँ तुम्हारे लिये। पर अव मेरा गला तुझ जैसा सुरीला नही रह गया है ! केले की छाल से डोरा निकाल कर अुसमे गेंदे के फूल पिरोये जा सकते है, पर वेटा, जूही के फूलो को पिरोने के लिये रेशम का मुलायम डोरा ही चाहिये, नही तो माला के फूल खराव हो जायेंगे ! प्रेमभरे गीत तेरे मीठे कठ मे से होकर और भी अधिक मिठास घोलने लग जाते हैं। अिसी लिये, मै कहती हूँ मीठे मीठे गाने तुझ जैसी लडकियो को ही गाकर सुनाने चाहियें। मुझ सरीखी माओ का तो सुनकर ही अन करण तृप्त हो जाता है। मै अगर गाने लगू तो मेरे फटे वास के से गले मे निकलती हुअी चीखभरी आवाज सुनकर गाने की सारी मिठास किरकिरी होजायगी और तुझे हँसी आयेविना नही रहेगी। "

"हँसी आयेगी तो आने दे। वह अद्भुत प्रतीत होगी, अिसी बात पर न आयेगी हँसी ? पर्वाह नही । पर मेरे मनोरंजन के लिये ही क्यो न हो, तुझे दो चार पद सुनाने ही होंगे। देवता की पूजा में बैठते समय घटो गीत, पद और स्तोत्र पाठ करती है, तब नही लगती आवाज चीखती हुअी ! पर मेरे अूपर से दो चार पद सुनाते हुअे आवाज फटती सी प्रतीत होने लगती है ? माताओ को सिर्फ लडकियो के गाने सुनने ही का था तो माताओ के गाने योग्य गाने लिखकर रखे ही काहे को हैं लोगो ने ? पर माताओ के गाने के लिये कितने वात्सल्यपूर्ण गीत लिखे हुअे है ? अुनमें से कुछ तो मैं भी जानती हूँ, समझी ?"

"तो फिर, जब तू मा बन जायगी न, तब अपने बच्चे के लिये गाकर जरूर सुनाअियो ! " रमाबाअी निर्मल अंतःकरण से हँसी।

"तबकी तब देखी जायगी, पर तू तो नही न सुनायेगी मुझे अेकआध मीठा गाना ? "

और तत्काल माके साथ लिपट कर और अुसकी ठोडी के पास अपने नन्हें नन्हें ओठ ले जाकर वह किशोरी अुसे मनाने लगी,

"अैसी भी भला कौन बात है, तुम मेरी मा हो न, तब तुम नही सुनाओगी तो मुझे और कौन गाकर सुनायेगा माके दुलार भरे गाने ? "

"तुम मेरी मा हो न !" ये अुस अिकलौती बिटिया के दुलार भरे शब्द कान मे पडते ही रमाबाअी के हृदय में वात्सल्य का स्रोत अिस वेग से अुमड पडा कि—अेक दूध पीते बच्चे की तरह अुसके सुरेख मुख को अपनी छाती से लगाकर अुसका चुंबन लेने के लिये रमाबाअी के ओठ फडक अुठे। पर माताका प्रेम जितना अुत्कट होता है, अुतना ही अुम्र में आअी हुअी लडकी के साथ व्यवहार करते समय संकोची भी होता है।

मालती के गालो के बिलकुल नजदीक आते हुअे अपने मुँहको पीछे ले जाकर अुसकी मा ने अुस वयप्राप्त होती चली आनेवाली बेटी के मुँह को थोडी देर दोनो हाथो से दबाया और तत्काल हाथ पीछे लेती हुअी वह मालती को आश्वासन देने लगी,

"अच्छा, ले, सुनाती हूँ, पर बेटा, दो चार ही सुनाअूगी अं !"

"हा, हा, अब आयेगी असली मजा !" यह कहकर मालती ने झूले को जोर जोर से झोके देना शुरू किया। "यह क्या, सुनाती काहे को नही, कामचोर गवय्ये की तरह ताल-सुर वगैरे ठीक करने ही में आधी रात गुजार दोगी क्या ?" असतरह अेक बार फिर मालती के कोहनी के धक्के से सूचित किये जानेपर, रमावाअी के मुँहमे अुस वक्त जो भी गाना आया वही वे सुनाने लगी—

*अेरी रत्नों की खान, अपनी—
मत जतला टसक, अैसी,
देख, गोदी में मेरी भी कैसी,—रत्न माला ?'
आते जाते राजा के वेटे,
देखियो ना, चोरी-चोरी,
डीठ लग जायेगी मेरी —मालती को !
सौंपती हूँ अपनी सारी,
संचित सुकृतों की ढेरी,
करें संरक्षण श्री हरी—लाडली का !
चंद्रकला सी बढती जावे
जन्मभर हे नारायण,
कन्या मेरी सुलक्षण—अिकलौती !

गाने की धुन में ज्योंही मुँह से अिकलौती शब्द निकला त्योंही अेकदम विच्छू के दंश के सदृश किसी तीव्र मर्मव्यथा के स्मरण से रमावाअीका चित्त व्याकुल हो अुठा। अपनी वेटी को अैसे आनंद के अवसर पर अपने अंतःकरण का शल्य चुभोकर व्याकुल करना ठीक नही यह सोचकर भले ही रमावाअी ने चेहरे पर खिन्नता की छाया न आने दी हो, पर वह गाना जो अुसके मुँह से वाहर निकल रहा था वहीं का वहीं अकस्मात् थम गया। मालती ने समझा, शायद गाते गाते मा की सास फूल गअी है, अिसी लिये वह चुप होगअी है। मा को थोडा विश्राम देने के लिये तथा गाने की जो धुन सवार थी अुसमे भी किसी प्रकार का विघ्न अुपस्थित न हो अिसके

* पृष्ठ ३ और ४ के ये पद मराठी के 'ओवी' नामक छंद में लिखे गये हैं। भाषांतर भी अुसी छंद के समकक्ष करने का यत्न किया गया है।—अनु

अुसने झट अपना सिर अपनी मा की गोद में रख दिया—तत्क्षण अुसकी मुखाकृति विषादयुक्त हो गअी और तुरत अुसकी आँखो मे पानी अुतर आया। तत्पश्चात् अपने नित्य के स्वभाव के अनुसार अुसने अपना अश्रुपूर्ण मुख मा की ठोडी के समीप ले जाकर अत्यत व्याकुल स्वर मे बोलना शुरू किया,

"अैसा क्यो भला, मा, मै तेरे विषाद को कम करने के लिये तथा तुझे आनदित करने के लिये गाने लगी, भूल से तेरे दुख की खिपली ही अुखड गअी—जाने क्यो मेरे मुँह से अैसी गीतपक्तियाँ निकल पडी!"

मालती के मन को वह भूल अितनी चुभती हुअी दिखाअी दी कि, अुसकी मा को अपने पुराने दुखकी अपेक्षा अिस समय का मालती का यह रोने का दुख ही असह्य प्रतीत होने लगा और रमाबाअी ने तत्काल अपना रोना बद कर के मालती का समाधान करना शुरू कर दिया,

"पगली कही की! अरी, तेरी गीत पक्तियो से नही—बच्च मे ही गीत सुनाते समय तुझे अपना अिकलौता बच्चा बोल गअी थी न, अुसी का मुझे अितना खेद हुआ है, समझी! परमेश्वर द्वारा दो बच्चे मिलने पर भी दैव ने मुझसे अेक छीन लिया और अब सिर्फ अेक ही अवशिष्ट रह गया है, यह बात मेरे हृदय को तीर की तरह भेद गअी! चुप हो बेटी, तूने मेरी दुखकी खिपली को नहीं अुखाडा है! अिसके विपरीत, अुस दुख को किंचित् न्यून करनेवाला यदि कोअी रसायन है तो वह तेरे मुखपर आविर्भूत होनेवाला आनद का प्रकाश ही है! खैर, जो गुजर गया वह लौटकर थोडअी आने वाला है! तेरे भाअी की तुझपर अितनी अधिक ममता थी कि अुसके वियोग के दुख से भी यदि मैने तुझे रुलाया तो वह मुझपर बिगड खडा होगा। अुसका आत्मा जहाँ भी होगा वही वह तिलमिला अुठेगा! और तू मेरे लिये अुसी की स्थानापन्न है न? तब तुझी में मेरे दोनो बच्चे समाविष्ट हैं—है न? चुप! अरी, चुप हो! आज रातको अुस नये आये हुअे साधू के कीर्तन में जाना है न, चल, तो अुठ! अब मैं चूल्हा सुलगाती हूँ, तू झाड़-बुहारी कर! हमारा भोजन समाप्त होते न होते नायडू बाअी बुलाने के लिये आ ही पहुँचेगी!"

वे दोनो मा-बेटियाँ घर मे गअी! यह अेक छोटा सा सुहावना सा घर रमाबाअी ने गत मास ही मथुरा-क्पेटर के निवास के लिये आने के बाद स्वतत्र रूप मे किराये पर लिया था।

रमाबाओी के पति दो बच्चे होने के पश्चात् अेकाअेक गुजर गये ! रमाबाओी का जीवननिर्वाह आसानी से हो सके अितना द्रव्य और कुछ गहने अुनके पति अपने पीछे छोड गये थे । अुसी के बलपर रमाबाओी ने अपने दोनो बच्चो का पालनपोषण कुछ बरस तक नागपुर की तरफ के अपने असली गाव में ही रहकर किया । आगे चलकर अुन के पुत्र को फौज में नौकरी लगी । वह अुधर चलागया और अब अुन के समीप मालती ही रह गओी । दोचार बरस ही में भारतवर्ष से बाहर आग्रेजो के साथ चलने वाले किसी युद्ध में भारतीय फौज भेजी गओी—अुसी मे रमाबाओी के पुत्र को भी जाना पडा । परतु वहाँ जाने के पश्चात् वह लगभग लापता ही हो गया । अत्यत परिश्रम के पश्चात् रमाबाओी को अेकबार अेक अफसर की ओर से यह वृत्तात ज्ञात हुआ कि, वह सैनिक किन्हीं कारणो से अपने अफसरो से लड झगड कर फरार हो गया था और कदाचित् वह शत्रुपक्ष की तरफ से मार डाला गया हो !

अुस बात को बीते पाच-छै बरस का अर्सा हो चुका था । रमाबाओी का पुत्र फौज मे भर्ती हुआ सो अुधर ही समाप्त हो गया । अिस बात पर गावबालो का अितना अधिक विश्वास बैठ गया था कि, सब अिस बात को भूल ही गये थे । पर रमाबाओी अिसे भला पूरी तरह से, कैसे बिसरा सकती थी ? अुन्हे अपने पुत्र का विस्मरण नही हुआ था–अितना ही नही, अुनका पुत्र मर चुका है, और अब अिस लोक मे अुसकी मुलाकात कभी नही होगी यह बात भी अुन्हे कभी-कभी सत्य नही प्रतीत होती थी । लडाओी में मरे हुअे सैनिको के अत्यत प्रेमी सम्बधियो में भी अनेक बार अिस प्रकार की मनोवृत्ति दिखाओी देती है । अभी भी रमाबाओी को अपने पुत्र की मृत्यु का सवाद सत्य नही प्रतीत होता था । यद्यपि किसी प्रकार की कोओी आशा नही रह गओी थी, तथापि यह शका दूर नही होती थी । अुन का पुत्र दूर देश में लडाओी पर जाकर मर गया, अिन शब्दो का अुच्चारण भी अुनके लिये अत्यत कठिन हो अुठता था, अत यदि कभी प्रसग आही जाय तो वे अितना ही कहती कि, मेरा बडा बेटा अुधर लडाओी में लापता हो गयाहै ।

पुत्र की मृत्यु का समाचार मिलने के पश्चात् दुःख से भग्न हुओी अुस मा के प्राण अपनी बची हुओी अिकलौती लडकी के स्नेह के अूपर ही

टिके हुअे थे। मालती के लाड पूर्ण करने में अुन्होने किसी किस्म की न्यूनता नही रहने दी थी। वह जो वढने लगी, चद्रकला के सदृश अुत्तरोत्तर अधिकाधिक शोभापूर्ण दिखाअी देने लगी। अुसके अुस दुलार भरे चपल किंतु सुशील वोलने चालने में अैसी कुछ मोहकता रहती थी कि केवल अुसकी मा के ही नही, जो भी कोअी अुसे देखता अुसी के नयनो को वह *चतुर्थी की चद्रकला के सदृश आल्हाद प्रदान करती थी*। सुदर मोतियो को देखने पर स्वभावत ही वह किसी शोभायमान अलकरण की सामग्री होगी अैसा प्रतीत होता है, अुसी प्रकार अिस किशोरी को भी देखकर यह प्रतीत होता था कि, किसी मोहक, मगल और सुखकारक जीवन के लिये ही अिसका निर्माण हुआ होगा। अुसके चौदह वरस अव पूरे हो चुके थे और अुसकी मा के मन में अुसके भविष्य के वारे मे सुनहरी आशाओ और आकाक्षाओ का अेक अुद्यान का अुद्यान विकसित होने लग गया था।

रमावाअी की वहुत पुरानी सखी अर्थात् सूतिका अन्नपूर्णावाअी नायडू आजकल मथुरा में नौकरी पर थी। अुन्ही के आग्रह से तथा अुनके देवभक्त मनको तीर्थयात्रा की अभिरुचि होने के कारण से रमावाई मालती को साथ ले १५ दिनो के लिये मथुरा चली आअी थी। मथुरा की प्रख्यात जगहे, मदिर और सावु सतो का दर्शन करने के लिये मार्गदर्शक का काम नायडू-वाअी ही करती थी। अुन्हे भी सावु सतो की वडी अभिरुचि थी। कोअी भी साधु मथुरा में प्रख्यात हुआ कि अुसका अुपदेश सुनने के लिये तथा अुसकी यथाशक्ति प्रसग पडने पर सेवा करने के लिये अन्नपूर्णावाअी सहसा कभी कमी नही करती थी।

अुनके घर के समीप के घाट पर गत मास जो योगानद नाम का साधु अपनी शिष्यमडली के साथ आकर अुतरा हुआ था, अुसके यहाँ आजकल अन्नपूर्णावाअी नायडू भजन–पूजन–दर्शनार्थ जाने आने लग गअी थी। अुस योगानद के वारे में चारो ओर यह फैला हुआ था कि, अुसे भूत भविष्यत् तथा वर्तमान को जानने की दैविक शक्ति प्राप्त है। रात को अुस साधु के मठ मे भजन कीर्तन का कोलाहल अपने पूर्ण यौवन पर आया कि सैकडो लोग नामसकीर्तन के रग में रगे जाकर भक्ति के आवेश में नाचने लग जाते थे। नायडवाअी के द्वारा

रमाबाअी की जानकारी अुस योगानद साधू के कानो तक पहुँच गअी थी; अत अुन्होने देवता का प्रसाद अपने हाथो से—अपनी विशेष कृपा के निदर्शन के तौर पर—रमाबाअी के पास भिजवाया। रमाबाअी मालती के साथ अुस भजनोत्सव मे भी गत दो-तीन दिन से जाने लगी थी। स्वत योगानद ने भी अेक दो मर्तबा थोडी बहुत पूछताछ करने की कृपा रमाबाअी पर की थी।

योगानद का गाव की बदचलन मडली मे भी अुपहास न होनेपावे अितना अधिक देवभक्त, निर्लोभ, सरल तथा सादा व्यवहार था। भजन के रग मे रग जाने पर अुस सत्पुरुष की जग और देह की सुधबुध ही लुप्त होगअी हो, अैसा दीखता था। अुसकी मुख्य साधना भजनकीर्तन—यही थी। अिससे भिन्न अन्य कोअी भी ढोग धतूरा अुसके मठ में दिखाअी नही देता था। शिष्यसम्प्रदाय मात्र भरपूर था। अुस साधु के पीछे चलते समय तथा मठ मे रहते समय सदा अनुशासित रूपमें नजर आता था। मथुरा से अुनका पडाव अब शीघ्र ही हिलनेवाला था। अिस लिये अिस आखीर के सप्ताह मे भजन कीर्तन धूमधडाके के साथ चालू था। सैंकडो लोग रातको वहाँ भीड मचाये रखते थे।

रमाबाअी मालती को लेकर आज की रात भजनमहोत्सव के लिये वही जानेवाली थी। अुन दोनो मा बेटियो का भोजन अभी समाप्त होने भी न पाया था कि, अितने में अुन के दरवाजे पर नायडूबाअी की थपथपाहट की आवाज सुनाअी दी। तत्काल वे तीनो घाट पर के स्वामीजी के मठ की ओर जाने के लिये जल्दबाजी मे निकल पडे।



महंत योगानंद का भजन-रंग : : : २

रमाबाओी जिस समय मालती को साथ लेकर भजन की जगह पहुँची, अुस समय भजन अपने पूरे रग मे था। अुस घाट पर चारो तरफ लोगो की भीड ही भीड जमा थी। हिंदी भजनकीर्तन की विधि के अनुकूल पचास-साठ गोस्वामी साधु सत हाथ मे बडे बडे झाज लेकर योगानद के अतराफ घेरा डाले जोर जोर से नामसकीर्तन द्वारा वातावरण को गुंजा रहे थे। मुख्य दसवीस शिष्य पखवाज, मृदग, वीणा, झाज प्रभृति वाद्य लिये ताल-स्वर-ठेका वगैरे ठीक ठाक किये योगानद महत के समीप तैयार खडे थे। और अुन सब के बीचोबीच महत स्वय कभी बैठे हुअे, कभी भक्ति के आवेश में खडे होकर, अूचे स्वर में तन्मय होकर भजन बोल रहे थे। अुस दूर की जगह से भीड को चीर कर अदर जाने का रास्ता ही नही था। परतु नायडूबाओी के परिचयानुग्रह से पहले से ही महत के मदिर में अुन्हे स्थिरीकृत जगहपर लेजाकर बिठाने के लिये अेक शिष्य को नियुक्त किया हुआ था। अुसने अुन लोगो को राह पर खडा देखते ही योगानदकी आज्ञा से अुन तीनो को ले जाकर बिठा दिया।

अिधर भजन का जोर अपनी पूर्णावस्था पर था। श्रीमान् साधु तुलसीदासजी के अेक पद का वह चरण अुन सौ, भजनीको के सौ कठो मे एक साथ निकल कर सम्पूर्ण वातावरण में व्याप्त हो रहा था —

तुलसी मगन भये। हरि गुण गानों में
मगन भये हरि गुण गानों में।। ध्रु०।।
कोअी चढे हाथी घोडा पालकी सजा के।
साधु चले पैयां पैयां चींटि यॉ बचाके।
मगन भये हरि गुण गानों में।। तुलसी०।।

झाजो की झन्झनाहट रक्त के अेक अेक बिंदु के भीतर स्पदन पैदा करने लगी। भक्तिरस के कुड में मानो सारा समाज डूबा जा रहा था। हरिनाम के अतिरिक्त अन्य किसी भी मनोवृत्ति की ध्वनि सुनाओी नहीं

पडती थी। अेक की आवाज दूसरे को सुनाअी नही पडती थी। खुद की आवाज तक खुद को सुनाअी पडती थी या नही, किसे मालूम ?

अितने में अुस अूंचे चढे हुअे शतकठ-निनादी स्वर को कम-कम करते हुअे पद्य के चरण योगानदजी अकेले ही अितनी तल्लीन मुद्रा मे बोलने लगे कि शिष्यादिक भजनीको ने बाजो का कोलाहल वद कर चिपलियाँ (करताल) वजाना शुरु किया, 'तुलसी मगन भये हरिगुण गानो मे" अिस चरण को लोटपोट कर सुकुमार स्वर में गाते हुअे योगानद खडे हो गये।

योगानद जी अुस पद का अर्थ नही बतलाते थे। पर जिनको वह समझमें आता था अुन्हे अुस भजन में अर्थों के पोथे के पोथे सुनाअी देते थे। अिस जीवन की साधना हरकोअी अपनी अपनी रुचि के अनुसार करता है, हर कोअी आनद प्राप्ति के पीछे पडा हुआ है, कोअी भोगद्वारा-कोअी योग द्वारा। जैसी जिसकी जितनी मनकी अुन्नति, वैसी अुसकी रुचि। 'स्वभावो मूर्ध्नि तिष्ठते।' तब बाह्य साधनो का वाद चाहिये ही काहे को ? तुम्हे जिस मे आनद की अनुभूति होती हो, तुम अुसमे रमो। औरो को जिसमे आनद प्रतीत होता है वे अुसमे रमेंगे। हा मेरे बारे मे पूछते हो, तो "तुलसी मगन भये। हरिगुण गानो मे। हरिगुण गानो मे। हरि गुण गानो मे।"

कोअी अूंचे-अूंचे चदन के पलगो पर गादियो और गदेलो पर लोट पोट होने के लिये खटपट करते हैं, अुन्हे अुस में आनद प्रतीत होता है। पर कोअी विद्यमान पलग ही नही बल्कि कामुक पत्नियो को भी छोड कर बुद्ध भगवान् के समान बोधिवट के नीचे, खुले प्रदेश मे जमीन पर ही पडकर सो रहते है, अुन्हे गाढी नींद वहाँ लगती है। गाढ निद्रा का लगना ही यदि ध्येय हो तो वह जिसको जहाँ लगे अुसका वही सोना योग्य है। मेरे अुपाय का अवलबन तुझे करना ही चाहिये अैसी हठधर्मी क्यो ?

कोअी हाथीपर, कोअी घोडे पर, कोअी पालकी पर सवार हो बडी शान से अितराता हुआ चलता है, अुन्हे अुसमे ही आनद मालूम पडता है। अुनका वही स्वभाव है। पर अिस साधु को देखो, अुसे हाथी पर चढना फाँसी पर चढने जितना ही दुखद है। हम पालकी में बैठें और दूसरे अुसे ढोयें अिस वृत्ति की अुसे शर्म अनुभव होती है। अितनी अधिक कि, पालकी का स्पर्श होते ही अुसे अंगारे के स्पर्श की प्रतीति होती है।

अत वह पैदल चलता है, और अुस वक्त भी रास्ते की चींटियो और कीडो से पैर को बचा कर नीचे की ओर आँखें गडाये ! अितनी अधिक भूतदया की भावना अुसमे रहती है ! अुसे अुसीमे सच्चा आनद आता है।

कोअी चढे हाथी, घोडा पालकी सजाके।
साधु चले पैयॉ पैयॉ चींटियॉ बचाके।
पैयॉ पैयॉ। चींटियॉ बचाके॥
पैयॉ पैयॉ। चींटियॉ बचाके॥

यह चरण अत्यत शात, मद स्वर मे दुहराते दुहराते योगानद साधु अपने पग भी अेक अेक करके गिनते हुअे शाति के साथ रखने लगा और वीणा के स्वर पर फिर फिर गाने लगा, " पैयाँ पैयाँ, चीटियाँ बचाके ।। साधु चले पैयाँ पैयाँ चीटियाँ बचा के ।।

अुस समय तुलसीदास के पद मे निर्दिष्ट साधू यही है अैसा हर किसी को भास होने लगा। क्यो कि योगानद की यह खास आदत थी कि रास्तेपर, घाटपर, हाटपर, जहाँ कही भी वह जाता, नीचे देखकर और अेक अेक कदम अुठा अुठाकर रखता।

अपने अिर्मा साधुत्व को अिस तुलसीदास के पद द्वारा जनता के हृदयो पर बिंबित करने ही के अुद्देश्य से भले ही वह भजनकीर्तन न करता हो, पर वस्तुगत्या अिसका प्रभाव जनता पर पडता अवश्य था। तुलसीदासजी की कसौटी पर भी यह साधु खरा अुतरता है, यह हर कोअी बगैर कहे समझने लगा।

अैसे भजनोत्सव मे ही आधी रात बीत गअी। आरतीके वक्त, साधुजीका चरणस्पर्श करनेके लिये लोगोकी बडीभारी भीड जमा होगअी और अुसी गडबडी में जब वह समुदाय लौटने लगा तो धक्का-मुक्की बढ गअी। अिसीबीच, नायडू-बाअी रमाबाअी और मालनी जिधरसे बाहर निकल रही थी वहाँ अकस्मात् दसबारह आदमियो का लडाअी-झगडा शुरू होकर बडी भारी गडबड मचगअी। अुसे तितर बितर करनेके लिये साधुजीके पाच छै शिष्य हाथमे छडी लेकर अदर घुसे। जो आदमी जिधर मे भागा वह अुधर ही लोगो को धकेलता हुआ ले चला। बीचमें जबर्दस्त भीड घुसती चली आअी। अुस भीड भडक्के में रमाबाअी,

नायडूबाओ और मालती तीनो अेक दूसरे से बिछुड गये-कौन कहाँ चला गया असका किसी को पता न रहा। पर असी बीच, बुरी तरह दिङ्मूढ हुओ हुओ, लोगो के पैरोतले कुचली जाते जाते बची हुओ रमाबाओ का हाथ साधु के अेक शिष्य ने पकड अुन्हे अुस भीड में से बाहर निकाला और कहा—"साधुजी की आज्ञा से स्त्रियो को विशेष तत्परतापूर्वक अपने अपने घरो को रवाना करने के लिये हमें भेजा गया है। अब आप अपने घर चलिये।"

"पर मेरी मालती कहाँ है? मालती?" गडबडा कर और घबराकर रमाबाओ पूछ ही रही थी कि अुसने झटण्ट अुन्हे आगे आगे ले जाते हुअे ही कहा—"सबको घर पहुँचवा आया हूँ—आप आगे चलिये—बस!"

आधी राह तक भीड मे धक्का मुक्का खाते हुअे रमाबाओ बाहर हुओ। शिष्य अुन्हे लगभग घसीटता हुआ ही खीच लाया "जाअिये, अब सीधा घर चले जाअिये! बाकी दो माताओ को पहले ही मै वहाँ पहुँचा आया हूँ" अैसा आश्वासन देकर, अुत्तर सुनने के लिये, समय का अपव्यय न करते हुअे वह शिष्य अन्य किसी-भीड में पडी हुओ-स्त्री को बचा कर घर तक पहुँचवाने की बुद्धि से वहाँ से चला गया और भीड में अंतर्हित होगया।

रमाबाओ धडधड करती हुओ छाती से झपट कर पग बढाती हुओ घर की ओर चली। साधुमहाराज के भीड भडक्के से बाहर निकाल कर सुरक्षित रूप से घर पर पहुँचाने की व्यवस्था के अुपकार का स्मरण करती हुओ, तथा मालती दरवाजे पर अकेली बैठी राह देखती होगी और घबरा रही होगी-अैसा विचार करते करते अपने घर आपहुँची। अँधेरे में से ही अुन्होने बरामदे की ओर देखा, पर मालती या अन्य किसी की कोओ आहट न सुनाओ दी। लालटैन लगा कर देखा तो क्या, दरवाजेपर ताला वैसा का वैसा लगा हुआ है! मालती आगे निकल आओ हो असका अेक भी चिन्ह नही। भजन की समाप्ति के बाद जब धक्का मुक्की शुरू हुओ, वही किसी के पैरो के नीचे पडकर कुचली गओ मालती जोर जोर मे रो रही है, अैसा भास होने लगा!

"मालती! अे मालती!"

रमाबाओ ने न जाने किस अुद्देश्य से अुस जनशून्य अंधकार मे ही जैसे तैसे दो बार हाक मारी, तीसरी हाक मारने जाते ही अुनका गला रुध आया और रुलाओ आकर अेकदम वे नीचे बैठ गओ! अुस जगह कोओ भी नही

है, यह जानते हुअे भी सिसकियाँ भरते हुअे वे पूछ बैठी, "मेरी मालती कहा है? मेरी मालती आगअी क्या?"

वस्तुत अुस समय अिस प्रकार घबराने का कोअी कारण नही था। साधूमहाराज के शिष्य ने जल्दवाजी मे मगर स्पष्ट रूप से कह दिया था कि, "अुन सबको आगे पहुँचा आया हूँ?" यहाँ न पहुँचाया हो तो नायडूबाअी के यहाँ ही पहुँचा दिया होगा मैं भीड मे अकेली ही घिर गअी थी, पर वे दोनो साथ साथही रही होगी। अुन्हें साथ साथ रहना ही चाहिये। तब मुझे खोजते हुअे अितनी दूर तक अिस गडबडी में से आने के बजाय अुन दोनो ने वहाँ से समीप विद्यमान नायडू बाअी के घर मे ही पहुँचाने के लिये अुस शिष्य से विनति की होगी।

अैसा विपरीत विचार रमाबाअी को जँचने लगा। स्वय जाकर वहाँ मालती को देखा जाय अिस बुद्धि से वे दो बार सडक तक आअी, पर तब तक मालती ही यहाँ आ पहुचे और अुन्हे वहाँ न पाकर वह बेचारी फिर अकेली रह जायगी! और हो सकता है वह अुन्हे ढूँढने के लिये फिर लौट पडे! लबा रास्ता, रातका तीसरा पहर, सघन अधकार, जाना ठीक होगा या नही, अित्यादि विचारचक्रो के अुलट फेर में पडते हुअे ही न जाने कब अुनकी आँखो को झँपकी लग गअी!

चौक कर जो अुठी तो मालती का बिछौना पास ही में रिक्त दिखाअी दिया। अिस से पूर्व वह बिछौना अिस प्रकार कभी न दीखा था! हर रोज सवेरे अुठने पर गाढ निद्रा में सोअी हुअी मालती के बिखरे हुअे सिर के बालो को हाथ से सँवारकर, अुसके मुँहपर हाथ फेर कर, ओढनी ठीक ढग से अुढाकर, हँसते हुअे मुँह से वे झाडने-बुहारने तथा छिडकने-लीपने के कामो में लग जाती! यह अुनकी रोज की आदत थी! अुस बिछौने पर वह दुर्ललित मुख आज दृष्टिगत नही होता था! छाती मे धडकी भर गअी। अनिष्ट-सूचक विचार ही वारवार मन में आने लगे। पर अुनका मनोमयी भाषामें भी अुच्चारण न करते हुअे रमाबाअी जो अुठी सो सीधा नायडूबाअी के घरकी ओर मालती की खोज मे निकल पडी!

वे रास्ते पर चलते हुअे थोडी दूर ही गअी होगी—नायडूबाअी स्वय अुनकी ओर आती हुअी दिखाअी दी!—पर अकेली!

घबराअी हुअी आवाज में रमाबाअी ने पूछा,—'अय्'—मालती कहाँ है ? "

आश्चर्यपूर्ण स्वर मे नायडूबाअी ने जवाब दिया—" अय्ँ मालती तुम्हारे साथ गअी है, अैसा मुझे साधुजी के अेक शिष्यने ही कहा था ! "

" हे भगवान्, मेरी मालती, कहाँ होगी वह ? "

गद्‌गद्‌ युक्त रुघे हुअे कठ से अिन्ही किन्ही शब्दो मे अुद्‌गार व्यक्त करती हुअी अेक छोटे बच्चे की तरह चिहुँक चिहुँक कर रमाबाअी रोने लगी !

नायडूबाअी अुनकी अपेक्षा अधिक धैर्यशालिनी थीं–किंवा अुनकी अिकलौती अेक अुपवर कन्या तो अपहरण नही की गअी थी न, अिसलिये भी अुनका धीरज कायम रहा होगा। रमाबाअी को हाथका सहारा देते हुअे वे बोलीं, " अैसी क्या घबराती हो बिलकुल ! जैसे साधुजी महाराज ने तुम्हे हमें तथा अन्य सभी स्त्रियो को सुरक्षित रूप मे अपने अपने घर पहुँचवा दिया था वैसे ही मालती को भी भीड मे से बाहर निकाल कर अपने पासही कहीं सुरक्षित रूप मे रख लिया होगा ! चलो, साधुजी की ओर चले पहले, हो न हो मालती वहीं सुरक्षित है ! चलो ! "

रमाबाअी का धीरज अिस तरह बँधाते हुअे नायडूबाअी साधुजी के मदिर की ओर चल तो पडी, पर अुनके भी हृदय मे—आगे क्या होगा, अिस आशका से कुहराम मचे बिना न रहा।



योगानद जिस मदिर में अुतरे हुअे थे अुसके प्रागण मे अुस दिन सवेरे, कुछ दर्शनार्थी अेव प्रश्नार्थी गण साधुजी के वुलावे की प्रतीक्षा में अिधर अुधर घूम रहे थे। परिचित-परिचित अलग-अलग २–४ का झुड वनाकर, योगानद के भूतभविष्यद्वर्तमान के ज्ञान की प्रशसा कर रहे थे। कोअी आशका कर वैठता तो दूसरा भावुक अुसकी शकानिवृत्ति के लिये योगानद-द्वारा वताअी गअी भूतभविष्य की वातो के अुदाहरणो का जरा नोन-मिर्च-मसाला लगाकर वर्णन करता। स्वत योगानद कभी भी धार्मिक अुपदेश नहीं दिया करते थे—न कीर्तन मे न व्यक्तिगत वातचीत में! सामान्यत वे किसी से ज्यादह वोलते ही न थे। केवल अुन्ही लोगो को अपनी अेकात कोठडी में बुलाते जिनके भूतभविष्यत् को देखने की अिच्छा अुनके मनमे आती थी। वहाँ महत गिने चुने प्रश्न पूछते तथा सुनते थे। तत्पश्चात् जलादर्श नामका अेक तात्रिक यत्र सामने लेते और प्रत्यक्ष रूप से अुस यत्र मे जो कुछ अुनकी दैविक दृष्टि को दीखता अुतना भर कह देते थे। किसीने यदि अुसके खरे खोटे के वारे में कुछ कहा, तो वे अुसके साथ अधिक वाद नही करते थे। 'प्रभुने वतलाया, मैंने कहा, सच झूठ प्रभुका अधिकार! मैं अेक अुसके शब्दो का ध्वनि हूँ!' यह निश्चित अुत्तर वे देते और प्रश्नार्थियो को शिष्यो के द्वारा वाहर भिजवा देते। अिस जलादर्श मे से भूतभविष्यत् के कथन के वदले मे किसी से भी वे अेक दमडी तक न लेते थे। अुस परिग्रह-शून्य लोभ-हीनता के कारण ही अुनके वचनो पर न सिर्फ विश्वासशील व्यक्तियो का ही वल्कि अविसशयी व्यक्तियो का भी विश्वास वैठता था। महत जी वाक्-सयम के नियम का पालन करते थे, अत अुनके मुँह से जो कोअी गूढार्थ-गर्भ शब्द निकल आता अुसका अर्थ अपनी मर्जीके अनुसार लगाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति स्वतत्र था। कीर्तन के समय सिर्फ भजन ही वे स्वत तन्मय होकर सुरीले राग मे क्रियासमभिहार पूर्वक वोलते थे। अुस समय के अुनके तल्लीन-ता के आविर्भाव से ही लोग यह समझते थे कि अवश्य ही यह कोअी वडा सिद्ध पुरुष होगा। पर अुस कीर्तन मे भी भजन के अतिरिक्त वे अन्य कुछ भी नही

कहते थे–प्रवचन का तो लेश भी नही–। 'भजन सतो का ! सतो से ज्यादा मैं क्या कहूँ ! ' यह अेक वाक्य बस, अवसर पडने पर बोलकर वे चुप हो जाते थे।

पर योगानदजी की अिस मौनवृत्ति के कारण अुनके वेदात की गूढता के सबध में लोगो के हृदयो पर अितना अधिक प्रभाव पडता था कि अनेक वेदात-प्रवचनकार भी अुनके सामने फीके पड जाते थे। लोग समझते, अुनका ज्ञान अितना गूढ है, अितना गहरा है, कि अुसके व्यक्तीकरण के लिये शब्द असमर्थ रहने ही चाहियें ! ' गुरोस्तु मौन व्याख्यानम् ' यही परम सिद्धि की पहचान है, अैसा भावनाशील लोग आपस की बातचीत में कहते सुन पडते थे ! खुली हुअी बावडी की गहराअी के बारे मे थोडा बहुत तर्क लडाया जा सकता है, पर जिस बावडी का मुँह ही बद है, अुसकी गहराअी की अगाधता जितनी बढाते चलो अुतनी बढती चली जायगी। अैसा–किंवा, व्याख्यान देने की शक्ति जिसमें नही अुस गुरु के लिये भी ' गुरोस्तु मौन व्याख्यानम् ' वाक्य का प्रयोग किया जा सकता है, अैसा यदि कोअी कह अुठता तो ' अरे जाने भी दो, अुस कुतर्की के मुह क्या लगते हो ! ' कहकर चारो ओर के भावुक लोग शोर मचाने लग जाते।

रमाबाअी की अुस साधु पर भक्ति थी। और अुसी कारण वे अुस रास्तेपर जाते हुअे थोडी शक्ति महसूस कर रही थी। योगानद के मठ में मालती न भी हो–कल के भीड भडक्के मे वह कही खो भी गअी हो तो भी योगानदस्वामी अपने जलादर्श यत्र मे देखकर यह बतला देंगे कि वह अिस समय निश्चित रूप से कहाँ है, तथा किस अवस्था में है यही अेक विचार था जो अिस भावना-प्रवण श्रद्धालु मा को आधार दे रहा था। वह साधु अपने को अिस विपत्ति में से अवश्य अुबार कर रहेगा–अिसी बात का अुन्हे सतोष प्रतीत हो रहा था। अुस निर्लोभी साधु पर विद्यमान श्रद्धा की लकडी पकडे हुअे लडखडाती अवस्था मे भी वे मदिर की ओर वेगसे चली जा रही थी।

नायडूबाअी श्रद्धालु अवश्य थी, किंतु विवेकशून्य नही थी। लुच्चे साधु अुन्होंने देखे थे। पर अितने ही पर यदि कोअी कह बैठता कि सारे ही साधु लुच्चे होते है, तो वे अुसका बुरी तरह प्रतिवाद करती ! योगानदजीके बारे में अुसका मत अनुकूल था। अिसके दो कारण थे–अेक तो वे किसी से दमडी

भी न मागते हुअे–अुतना ही बताते थे जितना अुनकी समझमे आता था–दूसरे, अुन्हो ने भूतभविष्यत् की जो बाते लोगो को बताअी थी, वे बिलकुल झूठी है अैसा कहीं भी सुनने मे नही आया था। वह सच्छील, परोपकारी साधु पुरुष है, यह तो स्पष्ट ही था। पर अुसके समीप कोअी दैवी दृष्टि अेव अतर्ज्ञान विद्यमान है, अिस विषय मे भी नायडूबाअी का विश्वास बढता जा रहा था। थोडी सी शका मनमें पैदा होती थी अवश्य! वह अुसकी अीमानदारी के बारे में नही बल्की भूत भविष्यत् का ज्ञान बतलाने की सिद्धि की अचूकता के बारे मे! अुसके सत्यासत्य की परीक्षा का मौका यह अच्छा हाथ आया, अैसा विचार नायडूबाअी के मनमें आया, साथही मालती पर टूटे हुअे विपत्ति के पर्वत की कल्पना करके अुनका कलेजा मुँह को आये बगैर भी न रहा।

मदिर के प्रागण मे ज्योही ये दोनो महिलाअे प्रविष्ट हुअी, त्योही महत का अेक शिष्य अुनके सामने पहुँचा और निश्चित मार्ग से महत के निवासस्थान की ओर ले गया। वहाँ पहुँचने पर थोडी ही देर में, अबतक जैसे तैसे दबाकर रखा हुआ अुच्छ्वास छोडते हुअे रमाबाअी ने शिष्य से पूछा,

"पर हमारी मालती कहाँ है? मालती?"

शिष्य अुसके अिस अुतावले प्रश्न की प्रतीक्षा में ही था। आश्वासनसूचक मुस्कराहट के साथ अपने दोनो हाथो के पजो को वरदहस्त की अवस्था में हिलाते हुअे स्वीकृतिसूचक ग्रीवा को थोडा झुकाकर अुसने 'सब ठीक है' अैसा सूचित किया। अिस से रमाबाअी की जान में जान आअी! चिता जिस वेग से न्यून हुअी, अुत्सुकता अुसी वेग से द्विगुण हो गअी। "तो बुलवाअियें न अुसे, यहाँ कही भी वह नजर नही आ रही, क्या बात है? जल्दी मेरे पास ले आअिये अुसे!" अैसे विकल कठ से वह प्रार्थना करने लगी। शिष्य ने आकृति पर अैसा आविर्भाव लाकर कि 'निरुपाय होकर कुछ न कुछ बोलना ही चाहिये–अत बोल रहा हूँ–, अुत्तर दिया—

"माताजी, गुरुमहाराज अभी बुलाते ही हैं आपको! घबराअिये मत! गडबड भी मत मचाना!"

जिस तरह योगानदमहाराज कम बोलते थे, वैसाही अुनके शिष्यों को भी आचरण करना पडता था। अुनकी आज्ञाके अतिरिक्त वे न किसी से

कोअी प्रश्न पूछ सकते थे न अुसका वाचिक अुत्तर ही दे सकते थे। जो लोग मिलने आते थे अुन्हें भी सतमहाराज जितने प्रश्न पूछने दे अुतने ही पूछने का अधिकार था। वहाँ की यह प्रथा नायडूबाअी को मालूम थी। अुन्हो ने अिशारे से रमाबाअी को रोकते हुअे कहा '" थोडी देर चुप रहिये ! "

अितन में महत की कोठरी के दरवाजे खुले। दोचार प्रश्नार्थी गृहस्थ बाहर निकले। अुन दोनो को शिष्य अदर लेगया। पर मालती वहाँ भी नही नजर आअी ! जब रमाबाअी को अिशारा किया गया–' कहिये ' तब अुन्होने हाथ जोड कर पूछा,

" मेरी लडकी मालती को आपने कल की भीड मे से बाहर निकाल अपने पास सुरक्षित रखकर मुझपर जो अुपकार किया है, अुसे मै कभी भूलूगी नहीं। मै, अुसे लेने आअी हूँ। कहाँ है मेरी मालती ? "

महत के अिशारेपर शिष्य बोला,

" माताजी, आपकी लडकी को मैं भीड मे से बाहर लाया और आपके घर की ओर पहुँचाने के लिये ला भी रहा था, पर वह अपने परिचय के अेक शख्स के साथ यह कह कर चली गअी कि, मैं अब अपने आप घर चली जाअूगी।' अुसने यह भी कहा कि, " वह मेरा निकट का सबधी है। "

" मतलब ? वह कौन ? " बुझता हुआ घर फिर भडक जाय वैसे ही अुनकी बुझने को आअी हुअी चिंताओ की ज्वाला अुनके हृदय मे अेकबार पुन जटाल रूप मे भभक अुठी और वे अत्यन आर्तवाणी मे पूछने लगी, "महाराज, यहाँ हमारा कोअी सबधी नही है। महाराज, कुछ न कुछ घात होगया है ! महाराज—"

निश्चयी मुद्रा मे अपने हाथ की तर्जनी अुठा कर महत ने अुस स्त्री को 'ठहरिये ' का अिशारा किया। रमाबाअी का वह अनिवार्य भावावेग भी अुस तर्जनापूर्ण किंतु सहानुभूतियुक्त अिशारे से तत्काल सवृत होगया। अुनके वे वाक्य, जो अेक के बाद अेक आकर बाहर निकलने के लिये अुनके ओठो पर अेकत्र हो रहे थे, वहीं के वहीं ठहर गये !

महत ने अपनी आँखो को अर्ध निमीलित करके ध्यानमुद्रा का थोडी देरतक अभिनय किया। तत्पश्चात् अत्यत दयार्द्र स्वर मे बोलना शुरू किया,

"मय्या, तेरी लडकी नही खोअी मेरी खोअी है। परमेश्वर की अिच्छा होगी तो देखो, अभी मैं अुसे खोज निकालता हूँ। पर अेक वात है, जितना पूछू अुतना ही वोल, दीखे अुतनाही देख, वोलू अुतना ही सुन, पहले अपनी सारी मनोवृत्ति मुझे सौंप दे। अेक भी तेरा अपना विचार मनमें न आने दे। दे दिया न, मुझे अपना सारा मन रिक्त करके?"

"दिया महाराज!" अैसा कहकर रमादेवी सचमुच शून्यमनस्क होगअी और महत की चेष्टाओ की ओर टक वाघ कर देखती रही।

शिष्य ने गुरूजी के सकेतानुसार अेक साफ परात लाकर सामने रखदी। अुसमें लवालव पानी भर दिया अुम परात के कुछ अूपर अेक साफ आअीना दीवार पर टॅाग दिया। अेक समअी (दियादानी) जला कर पास रखदी। महत योगानदजी ने मत्रोच्चारग करके अेक चमसाभर पानी आँखो पर छिडका—चारो ओर छिडका और अेकाग्र चित्त हो मत्र का जाप करते हुअे वे अुस परात मे विद्यमान पानी की ओरटकटकी वाँधे देखते रहे। सारे लोग अपनी साँस तक साधकर निस्तव्ध होगये।

थोडी ही देर मे महत ने अपनी गरदन अूपर अुठाअी और नायडूवाअी से पूछा,

"अिनका अेक वडा लडका भी है न?"

रमावाअी चमक गअी। 'अिन्हे कैसे मालूम पडा? सचमुच अंतर्ज्ञानी है यह पुरुष!'

पर नायडूवाअी को विशेप अचरज नही हुआ वे वोली

"हा, मैंने वह पहले स्वय ही आपको वतलाया था कि रमावाअी का अेक वडा वेटा था, वह लडाअी पर गया था और वही वह मार डाला गया था—अुस वातको वीते अव ५–६ वरस का अरसा होगया!"

"पर वह मारा नही गया है। मै यही कह रहा था कि, अिनका वह वडा वेटा जीवित है, और अच्छा हट्टा कट्टा है। यह देखो, मेरे सामने जैसे तुम लोग वैठे हो वैसे वह प्रत्यक्ष वैठा है—वोल रहा है।"

महत के प्रत्येक वाक्य के साथ साथ रमावाअी ही के नही वरन्, नायडूवाअी के शरीर मे भी आश्चर्य की विजली कौंधती चली गअी। रमावाअी थरथराती हुअी आवाज मे वोल गअी

" मेरा बेटा ! जीवित ! परमेश्वर, तेरे मुँह में मिश्री पडे ! "

नायडूबाअी आश्चर्य के पाश में से अपने को थोडासा छुडाती हुअी बोलीं,

" पर वह अिन्ही का पुत्र है यह किस आधारपर ? क्षमा हो, पर मिथ्याभास—"

" व्यर्थ का तर्क सार हीन है ! सुनो, बताता हूँ, वह अिन्ही का पुत्र कैसे है ? असके माथे पर अेक घाव का गहरा चिन्ह है ! क्यों था न वैसा ? "

नायडूबाअी को अिस बारे मे कुछभी ज्ञान नही था। अत अुन्होने रमाबाअी की ओर देखा। रमाबाअी हिचकिचाअी, क्यो कि अुनके पुत्र के माथेपर किसी भी किस्म का घाव का चिन्ह नही था। यदि वह नही था अैसा कहे तो महत खोटा ठहरेगा और महत का अतर्ज्ञान झूठा सावित होकर मृतपुत्र के पुनर्जीवित होने तथा हृत कन्या की प्राप्ति की अत्यधिक समीप आअी हुअी सुखद शक्यता भी पुन सशय में पड जायगी !

" न हो तो साफ अिनकार कर दो, हिचकिचाओ नही। " महत ने टोका!

" अुस किस्म का कोअी भी घाव का चिन्ह अुसके माथे पर नही था " रमाबाअी विमोहाविष्ट मन स्थिति मे अेकाअेक बोल गअी।

" अच्छी तरह याद कर, सेना मे भर्ती हो जाने के बाद तेरा बेटा, लडाअी पर गया था न, हा , ठीक है, यह घाव वही लगा है ! "

" ओहो, ठीक है, महाराज, याद आया, बिलकुल सही ! अपने आखीर के खत मे अुसने लिखा था कि अुसके माथे पर चोट आगअी है, सच मुच ! आपका अतर्ज्ञान त्रिकाल सत्य है ! "

खुद रमाबाअी को भी जिसकी याद नही थी तथा अुन सबमे से किसी को पता तक न था, वह वृत्तात अिस महत को मालूम हो—वहभी अितने अधिक तत्त्वबद्ध स्वरूप मे ? और सत्य सावित हो ? अत्यत सहजगत्या ? नायडूबाअी चकित हो गअी। रमाबाअी के सदृश ही महत पर अब नायडूबाअी का भी श्रद्धाभाव न बैठे—यह असभव था। वे अेकदम परकीय अेव अपरिचित थी। महत ने अितने वेगसे अुस पुत्र की अितनी निशानियाँ ।था घर की जानकारी बताअी कि, अवश्य ही अुसका पुत्र अुसकी आँखो के समक्ष अुसकी अतर्दृष्टि

मे दीख रहा होगा।—पाखड का पाखड भी अिसमे अिनकार नही कर सकता था!

रमाबाअी के अचरज का तो ठिकाना न रहा। अपने पुत्रके जीवित रहने के समाचार से आनद की लहरो द्वारा अुनका हृदय अितनी हिलकोरियाँ खाने लगा कि थोडी देर के लिये मालती के खो जाने की याद भी विला गअी। अपहृत कन्यका के अन्वेषण मे लगी हुअी मा को अुसका चिर दिवगत पुत्र जीवित मिल गया!

"पर कहने की बात तो अभी बाकी ही है।" महत झटपट आगे कहने लगा, अुस तुम्हारे पुत्र का यह मित्र देखो, वह और, हा यह देखो, मालती आगअी! ठीक! नागपुर की ओर ही तुम्हारा घर है न? हा, देखो, अुस जगह मालती अुसके साथ प्रेम का वार्तालाप कर रही है। यह ही है वह शख्स! कल अुसी के साथ मालती गअी! हा बिलकुल आनद के साथ चली है देखो! बिलकुल जैसे तुम लोग मुझे यहाँ दीखते हो, और यह जैसे सच है, वैसे ही वह भी मुझे दीख रही है और वहभी अुतना ही सच है! निकले! रेलगाडी छूटी! क्या? अक्षर अस्पष्ट! पर नागपुर की ओर! मालती अपने प्रियकर के साथ नागपुर की ओर चली गअी है!—ह्रोम् ह्रीम् ह्रूम् वषट्! नेत्रत्रयाय फट्!"

अेकाग्र चित्त के अवधान मे परिश्रात हुआ हुआ वह महत मत्रोच्चारण-समकालमेव शनकै हरिणाजिनपर मुद्रित-नेत्र पड गया!

शिष्य ने अनेक प्रश्नो और जिज्ञासाओ से आक्रात चित्त अुन दोनो स्त्रियो को अिशारे मे चुप रहने के लिये कहकर वह यत्र तोड डाला। अुसके साथही न जाने कही से अेक आवाज गूँजती गूँजती चली गअी और घटो का अेक समूहित निनाद खनखनाने के पश्चात् क्रमेण मद पड गया। परात, समअी (दियादानी), आअीना प्रभृति पदार्थ झटपट अपनी अपनी जगहो पर अुस शिष्य ने रख दिये! हवा करते हुअे कुछ देर वह गुरुजी के पास बैठा और अुन स्त्रियो से कहना शुरु किया,

"अब अिससे अधिक कुछ कहना सभव नहीं है। स्फूर्ति अुतर चुकी है। केवल 'आगे क्या करना चाहिये—' यह सवाल पूछना हो तो पूछो। योगकी तद्रा अुतरने से पहले पहले गुरुजी ने यदि कुछ कहा तो अुतना ही सुनना

चाहिये, और किसी प्रकार की चर्चा न करते हुअे लौट जाना चाहिये। कल की कल।"

रमाबाओ को अेक ही साँस मे अेकसौ सवाल पूछने के थे—महत की बताअी हुअी बातो ने अुनके हृदय मे अितना अधिक चितायुक्त विचारो का ववडर खडा कर दिया था। पर निरुपाय। अेक अुत्तर ने अुन सभी प्रश्नो को वही का वही जमाकर वरफ बना डाला। वह अुत्तर था अुस अुग्र शिष्य का 'चुप' रहने का अिशारा। फलत जिस अेक प्रश्न के पूछने की अनुज्ञा मिली थी वही प्रश्न रमाबाअीने आकुल होकर पूछा,

"अब हम आगे क्या करे जिस से यह सकट टल जाय? महाराज, कृपा करके—"

शिष्य ने "हैं।" कह कर फिर अुगली का अिशारा किया। रमाबाअी के वाक्य की लबाअी ठहराये हुअे नाप मे आगे बढ रही थीं।

महत ने नीद के नशे में ही शरीर को थोडा हिलाया डुलाया और त्रुटित अेव विसगत शब्दो मे अस्पष्ट बोलने लगा,

"हा?—आगे। अच्छा। किसको भी अिधर अुधर मत बोलो। बोलोगे तो मालती बची खुची लाज विसरा कर तुम्हारी दुश्मन बन जायगी—यहा मालती के खोने के बारे मे किसीसे कुछ न कहना। अबी के अबी थेट नागपुर को जाव। लडकी मैदान में मिलेगी। पर देर करोगी यहा—अेक रात विताओगी—तो मिलने की नही। नागपुर से—लडकी—बस, चलदेगी दूर दूर दूर। जाव जल्दी—नागपुर—मैदान मे। देख देख, देख।। यह देखो, मालती। आ आऽ आऽ बेटा,—आ। माके पास जा।"

महत निश्चेष्ट पड गये। शिष्य बोला, "माताजी, टलगया तुम्हारा सकट। सुनी न तुमने अभी गुरुजी की बात। वे साक्षात्कार के शब्द। अुन शब्दो के अनुसार काम करोगे तो लडकी वापस मिल जायगी—चलती हुअी आ जायगी। अिस प्रात मे, अिस जगह किसीसे कुछ न कहते हुअे—ढिढोरा न पीटते हुअे आज के आज निकल कर नागपुर जा पहुँचो। लोगो में बदनामी होगी। वह मालती और अधिक निर्लज्ज होकर दूर भाग न जाये अैसी अिच्छा हो तो अेक शब्द न निकालते हुअे जबतक वह नागपुर मे है तबतक तीन चार दिनमे अुसे जा पकडो। बस्—अच्छा है आअिये। हरे, हरे, हरे,

यह क्या, फल–दक्षिणा ? हरे, हरे, माता, फूल तक दूसरे का अिस देवता को चलता नही ! यह महत अेक अलौकिक साधु है ! वैसे तो लाखो तुम देखते है ! परतु माताजी, यह तो साक्षात्कारी पुरुष ! अच्छा चलिये !— अ ह, अब अेक शब्द अधिक बोलना नही ! बाहर—!"

शिष्य के अुस आखिरी शब्दमें अितनी ठसक भरी हुअी थी कि अब अगर बाहर न निकले तो धक्का ही मार बैठेगा ! वे दोनो नमस्कार करके फल और दक्षिणा वापस ले चुपचाप अुन्ही कदमो से बाहर निकल आअी, चुपचाप मदिर से बाहर आअी। रास्ते पर आतेही रमाबाअी कुछ बोलना चाहने लगी अुतने ही में नायडूबाअीने सचेत किया—

"अ ह ! रास्तेपर नही। जो कुछ बोलना हो वह घर में !"

नायडूबाअी के ही घरमें पहले वे लोग गये ! जाते ही नायडूबाअी ने पूछा,

"है क्या वह शख्स तुम्हारी जान पहिचान का ? तुम्हारे लडके का कोअी मित्र तुम्हारी लडकी के साथ अैसा निर्लज्ज व्यवहार करेगा क्या ? मालती किसी के प्रणयपाशमे थोडी सी फँसी हुअी थी क्या ? और तुमने अुसे अिनकार किया था क्या ?"

सवेरे से लेकर अबतक रमाबाअी का मस्तिष्क अितने चमत्कारपूर्ण धक्को से हिलता आया था कि अब अुनके मस्तिष्क की विचारशक्ति ही अेकदम बद पड गअी थी। वे नायडूबाअी के आखिरी सवाल से तो चौंक ही गअीं और बोली—

"नही तो, अपनी मालती को मै ने कभी भी अिस तरह अुलटा सुलटा बोलते नही सुना। तब ना कैसी और हा कैसी ? अब, जब कभी अपनी सहेलियो के साथ घूमने फिरने बाहर जाती तो वह सामान्यत मदिरो में जाती, कभी नाटक देखने भी गअी होगी—पर अैसा कोअी पुरुष अुसके परिचय का नही था। अैसी हालत मे वह मेरे लडके का मित्र कहा से ?—मै तो क्या कह सकती हूँ ! जगभर घूमा हुआ मेरा लडका ! पर मालती अैसी निकली ! हायरे दैव !"

"अह, दैव के तो देव के समान अुपकार हुअे है तुम्हारे अूपर ! पुराणो की कहानियाँ अिस युगमे घटित हुअी ! तुम्हारे मृत पुत्र का आज पुनर्जन्म हो गया नहीं ? तब खोअी हुअी लडकी के दोबारा मिलनेकी चिता काहे को ?

मैं कहती हूँ, तुम अब सारे तर्क वितर्क छोड दो, अुस महत के अेक अेक करके ठीक साबित हुअे हुअे अद्भुत अतर्ज्ञान पर विश्वास कर के अुसके द्वारा बताये हुअे मार्ग पर ही जाओ।"

"अैसा कुछ नही, तुम आओोगी तभी मैं जाअूगी नागपुर को" रमाबाअी हठ ठान कर बैठ गअी। अपने पैरो पर वे अुठकर खडी ही नही हो सकती थी!

मालती के अुम कीर्तन के भीड भडक्के में खोये जाने का समाचार अुस प्रात मे किसीके भी कान पर न डालते हुअे रमाबाअी और नायडू बाअी दोनो की दोनो आखीरकार, नागपुर की तरफ अुसी दिन निकल गअी।



'बता दे सखी, कौन गली गये श्याम ?' : ४

रमाबाअी और नायडूबाअी के तत्काल नागपुरकी तरफ रवाना हो जाने की वजह से तथा मालती के अपहरण के सबधमे किसी से कुछभी न कहनेकी वजह से, अुनके पडोसियो तक को अिसकी खबर नही थी तब अन्य लोगो को तथा पुलिसवालो को खबर कहाँ से रहेगी?

अुसी दिन रातको योगानदस्वामी का मथुरावासियो को अतिम दर्शन होनेवाला था। आखिरी कीर्तन सुनने को मिलनेवाला था। क्योकि स्वामीजी का मोर्चा भजन समाप्त होते ही हिलनेवाला था। स्वभावत ही लोगोकी भीड और दिनो की अपेक्षा ज्यादह थी। अपने चार शिष्योकी चौकडी के ठीक मध्य मे वीणाहस्त योगानदजी खडे होकर भजन गाने लगे। रग चढता गया। थोडी देर में स्वामीजी की आज्ञा से वे हजारो लोग खडे होकर नामघोष करने लगे, बडे बडे पक्षवाद्य, मृदग, झाज-सारगियाँ और हजारो तालियाँ अेक साथ झाकार करती हुअी अुस शतकठ निनादी नामघोष का साथ देने लगी—महत भक्ति के आवेग मे आकर हाथ अूँचा करके ताल की गति द्रुततर करने के लिये निरतर अिशारा करने लगे और अुस द्रुततर ताल पर नामघोष का अेकमात्र रण-सभ्रम मचाने लग गये। अुस समय अुस ध्वनि-सिधु की अुत्ताल अूर्मियो के साथ लोगो के हृदय कपित हो अुठे और हरकिसी

को अैसा प्रतीत हुआ, मानो अुसका देहभान ही विलुप्त हो गया हो ! भक्ति के आनद में तल्लीन होकर कितने तो नाचने लगे, कितनो की आंखो से प्रेमाश्रुओ की धारा प्रवाहित हो चली, नामघोष की गर्जना से सारा वातावरण ध्वनिकपित हो अुठा !

पर अत मे, लय साधकर महत ने दोनो हाथ अूपर अुठाये और "शात हो जाअिये" का अिशारा किया। किसी बडे भारी हार्मोनियम का, अैन सगीत के बहार मे, भाता ही फूट जाय तो जैसे वह मूक हो जाता है, वैसेही वह विशाल सभा अेकदम नि शब्द होगअी। अेक हल्की सी आवाज भी कही नही सुनाअी देती थी। प्रत्येक व्यक्ति अुस साधु के मुंह की ओर टक लगा कर देख रहा था तथा किसी नवीन भावरमार्द्र भजन-पद की अुत्कठापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था।

गाढ निद्रामग्न पक्षियों के कुलाय मे से प्राभातिक जागर्ति की प्रथम चिरमधुर गीतरेखा के सदृश अुस नि स्तब्ध सभाकी शातता मे से कुछ क्षण पश्चात् शनकै अेक सारगी का मजुल स्वर पुन अुद्गत होने लगा। स्वामीजी के भजन का साथ देने वाले शिष्यो ने अुनकी पसद का मीराबाअी का निम्न पद सारगी पर रक्खा—

बतादे सखी, कौन गली गय श्याम !
कौन गली गये श्याम ॥ घृ० ॥
गोकुल ढूढी। वृंदावन ढूढी।
ढृढि आयो व्रज धाम ॥ बतादे सखी० ॥ १ ॥

"कौन गली गये श्याम !" यह रसार्द्र चरण अितने मुक्तार्त कठ से वह भक्त गाने लगा—शब्द शब्दको पर्याय से अूंचे अुठाते हुअे और नीचे ले जाते हुअे अितने मधुर आलाप लेने लगा—कि प्रत्येक के हृदय में अपने अपने प्रियकर की मूर्ति दीखने लगी। वे ही स्वय अपने प्रिय को खोज रहे हो अैसा भास होने लगा ! 'कौन गली गये श्याम ?' सखे, बताओ न किस गलीमें मेरा प्रियकर छिपा बैठा है ? मैं गोकुल ढूढ आअी, वृदावन ढूढ आअी, व्रज मे भी देख लिया पर मेरा प्रियकर दिखाअी नही देता ! बताओ ना, वह मनोमोहन कहाँ है ? कौन गली गये श्याम ?

ससारप्रवण तरुण तरुणियो के हृदय मे अुनके अैहिक प्रियकरो की स्मृति जाग अुठी और प्रीति की मधुर व्याकुलता सकप हो कर पूछने लगी "कौन गली गये श्याम?"

अध्यात्मप्रवण साधु-सत भक्तो के हृदयो को अुनके प्रियकर का आकर्षण व्याकुल करने लगा। यह जीव जन्म जन्म के गोकुल-वृदावनो मे जिसकी खोज करता हुआ, जिसके आकर्षण से खिँचा हुआ, रस रूप-रग-स्पर्श के प्रसूनो वाले कुजो-कुजो मे अुस आनद-कद देव की खोज के लिये अनवरत दौडता जा रहा है, अुसके दर्शनो की अुत्कठा आर्तस्वर से पुकार अुठी 'कौन गली गये श्याम?" बताओ ना सखे, वह देव कहा है, जिसके आकर्षण से यह जीव विव्हल होकर युग युगात से निरतर दौड रहा है? जिसकी मुरली के नाद से जीवित रहने की लालसा प्रबल हो अुठती है वही-हा वही-मुरलीधर कहाँ है? कौन गली गये श्याम?'

वह रसाल पद चल रहा था, अितने मे कर्णकर्कश दस बारह मोटरों के भोपू की आवाज सुनाअी दी। अुस सात्त्विक मजुलता मे रसमग्न हुअी सभाको यह आवाज सुनकर अैसा लगा-पुष्पशय्या पर सोने के लिये जातेही अकस्मात् किसी ने कट्ट कर के डस लिया हो! मदिर के जिस प्रागण में यह कीर्तन चलता था, अुसकी तीनो दिशाओ में विद्यमान तीनो दरवाजो पर अुन मोटरो मे से दो-दो मोटरे भो भो करती हुअी घूमकर आखडी हुअी। योगानद स्वामीकी कलकीर्ति बहुत दूरतक पहुँची हुअी थी, बडे बडे लोग अपनी अपनी मोटरे लेकर दूर दूर से अुनका कीर्तन श्रवण करने के लिये सदैव आया करते थे। अुन्ही में से किन्ही की ये मोटरे होगी। तथापि कीर्तन के अैन रगीन समयमे अिस प्रकार का रसभगकारी औद्धत्य करते हुअे अिन मोटरवालो को कुछ तो सकोच अनुभव होना ही चाहिये था! लोगो ने थोडासा त्रस्त होकर आपसमे काना फूंसी की। पर महत योगानदजी पूर्ववत् तद्गतेन मनसा गाते रहे।

अितने मे अेक तगडा, अुग्र और अूचा पूरा गृहस्थ (शख्स) प्रागण के सामने के दरवाजे मे से अदर घुसकर ढिठाअी के साथ रास्ता निकालता हुआ, व्यासपीठ (स्टेज) पर जहाँ महतजी अपनी भजनी मडलीके साथ बैठे हुअे थे सीधा अुधर ही को जाने लगा। आसपास के लोग चिल्लाकर अुससे कहने लगे, 'नीचे बैठो' 'ओ महापुरुष' 'अरे बिठाओ नीचे, हाथ पकड कर

विठाओ अिसे ' पर चिल्लाने या खिल्ली अुडाने की तरफ किंचित् भी ध्यान न देता हुआ वह वाक्पीठ के पास पहुँचा और किसी को न पूछता हुआही अूपर चढ गया। भजन के रगमे मन पूर्वक रगे हुअे अेकाध भक्त के शरीर में दैवी आवेश का सचार होता है अथवा किसी अर्ध-विक्षिप्त मनुष्य की प्रचड जन-समर्द के देखने से ही वात-भक्पित की सी स्थिति हो जाती है--वह बौराने लगता है ! पर यह गृहस्थ तो अर्धविक्षिप्त भी नही मालूम पडता था, बावला भी नही मालूम पडता था। स्वच्छ व्यवस्थित वेशविन्यास--तेजस्वी, तथा समजस मुद्रा थी अुसकी ! अत वाक्पीठ पर अधिष्ठित होते ही महत की अुस चौकडी मे से अेक शिष्य ने अत्यत नम्रतापूर्वक प्रश्न किया,

"कहिये , आप क्या चाहते है ? अिस तरह अेकदम वाक्पीठ पर चढना सभाविनय के अनुकूल नही है। "

पर अुस गृहस्थ ने अुसे सुना अनसुना करके सीधे महत के पास पहुँच कर महत से कहा--

"तुम्हे बाहर अेक बडे महानुभाव मिलने के लिये बुलाते है, चलो !"

महत ने अुस गृहस्थ को स्वत अुत्तर न देकर शिष्य को अिशारा किया। शिष्य बोला,

"अुन बडे महानुभाव को अदर आने के लिय कहिये, महत अेक देव को छोड कर अन्य किसी के भी अभ्युद्गमन के लिये नही जाते ।"

अुस शिष्य की ओर दुर्लक्ष करके वह गृहस्थ योगानदसे डपटकर बोला, "तुम्ही को चलना होगा बाहर ! "

अुस डपट को सुनकर महत भी चमके बिना न रहे ! "भजन की समाप्ति तक हमारा आना न होगा ! " वे थोडे से शकाग्रस्त हो लडखडाते हुअे बोले।

"तुम खुद नही आते तो मै तुम्हे लेने के लिये आया हूँ, बोलो चलते हो या नहीं ? "

"हा, यह अुद्धतपना यहाँ नही चलेगा ! " शिष्य ने गुस्से मे आकर अुस गृहस्थ को फटकारा, "अैसे है तो कौन वे अितने बडे महानुभाव, नाम तो बताअिये ! "

"पोलिस सुपरिटेडेट साहब ! "

यह सुनते ही योगानद स्वामी की वह प्रशांत मुद्रा तथा वह भक्तिशील नख शिखात आविर्भाव अेक पलक में बदल गया और वह दूसरा ही कोअी तल्ख-तर्रार-गुस्सैल और झगडालू तबीयत का आदमी नजर आने लगा। बुलाने के लिये आये हुअे शख्स ने पुलिस सुपरिटेडेट का नाम भी अभी पूरीतरह नही लिया था अुतने ही मे अेक वज्र बलोत्कट मुट्ठीका मुक्का अुसकी नाक पर जडकर नीचे जो छलाग मारी, वह अितनी दूर थी कि,–वह लबा तगडा आदमी नाकपर मुक्के के प्रहार से चक्कर खाकर अपने को सँभालते हुअे अुसके पीछे कूदा तो वह कूद अुसकी आधी दूरी तक भी पहुँच न पाअी ! अुन चारो शिष्यो ने भी अपने धारदार चिमटे हाथ मे लिये और योगानद के पीछे ही वाक्पीठ से नीचे कूद पडे। ठसाठस बैठे हुअे लोगो मे गोस्वामियो की अुन धडा धड मारी हुअी छलागो से अेकदम बडा भारी हल्ला गुल्ला हुआ। चीखते-चिल्लाते अुधर के लोग अुठ खडे हुअे, और धक्का मुक्की शुरु होगअी !

पर यह सब अितने अप्रत्याशित रूपसे तथा शीघ्रता से हुआ कि लोगो की भीड के शोरो शराबा करने हुअे अुठने तक दूसरी तरफ के लोगो को घटना का ठीक ठीक ढग से ज्ञान भी नही हुआ। और जिन लोगो को अितना दीखा कि, धक्का मुक्की शुरू होगअी है, महत छलाग मारकर लौट रहे है, अुन लोगो को भी अिस बात की बिलकुल कल्पना नही थी कि अैसा हो क्यो रहा है ? "अरे, बात क्या हुअी ?" हर कोअी अेक दूसरे से जोर जोरसे यही पूछने लगा। यह क्या हो रहा है, क्यो हो रहा है, अिन प्रश्नो के मन में आने तक का भी टाअीम नही मिला। धडाधड छलागें मार कर वह गोस्वामी मडली भीड में जो घुसी अेकदम अदृश्य सी होगअी ! क्यो कि, सैकडो लोगो ने आकस्मिक चीखो पुकार की वजह से, धक्का मुक्की करते हुअे, आगे घुसे आकर अुस प्रागण मे अेक अजीबो गरीब हगामा मचा दिया था। वह अुन गोस्वामियो के लिये फायदे का ही रहा। कोअी बोला– "महत के शरीर में 'महावीर जी का सचार हुआ!'—हनुमानजी का सचार हुआ! अत अेव वे अुडाने भरते हुअे रामचद्र के देवालय की तरफ दौड रहे है!" कोअी बोला—"किसी बेहूदे ने महतजी को तकलीफ पहुँचाअी, अत वे अूब गये!" अुस प्रशात भक्तिरस की शातता मे निमग्न होने के कारण कुछ लोग अिस सहसा अुत्पन्न हुअी हुअी चिल्लाहट और गडबडी से अेकदम

वेसुधसे हो गये ! अुस साधु के सुरीले भजन वाले प्रशांत प्रागण मे से अुठाकर किसीने अुन्हें पहलवानो के अखाडे में लेजाकर पटक दिया हो, अैसा अुस दृश्य परिवर्तन (ट्रासफर सीन) के होते ही अुन्हे भासने लगा।

अिधर, पुलिस सुपरिटेंडेट का सदेसा लानेवाला वह आदमी जिस सामने के दरवाजे से घुसा था अुस दरवाजे की तरफ छलाग न मारते हुअे दूसरे ही दरवाजे की ओर छलागें मारकर भीड मे गायब हो जाने का जो प्रयत्न अुन गोस्वामियो ने किया था वह जानबूझकर ही किया था। अुस दरवाजे की तरफ लगभग अैसे ही लोग बैठाये हुअे थे जो भजन के लिये नियमपूर्वक रोज आया करते थे, जो देखने पर बहुत ही श्रद्धालु दीखते थे और सबसे पहले आकर बडी आस्थाके साथ अपनी अपनी जगह पकड कर बैठा करते थे। अैसा आस्थाशील, कीर्तन-प्रिय समाज जिस दरवाजे पर था, अुसी दरवाजे मे बाहर निकलना आसान होगा अैसा महतने अदाज लगाया। पुलिस सुपरिटेंडट का सदेसा जिस सामनेवाले दरवाजे से आया था अुसके आसपास पुलिस वाले खडे होगे अैसा सोचकर अुस चतुर महत ने तथा अुसके शिष्यो ने अुस दरवाजे को छोडकर श्रद्धालु लोगो से भरे हुअे दरवाजे की ओर बढना अुचित समझा। अुस सदेसा लानेवाले आदमी के हाथो से छूटकर वे लोग अुस दरवाजे पर आकर पहुँच भी गये ! अब क्या था ? अेक जोर की छलाग मारने भर की कसर थी कि दरवाजे से बाहर !

अिस निश्चय के साथ वे पाचो गोस्वामी अुस दरवाजेपर जा भिडे और वहाँ विद्यमान श्रद्धालु लोगो से जल्दी से कहा—" रास्ता छोडिये ! "

पर श्रद्धालु लोगो की वह भीड अेक अेक आदमी की कतार बना कर अेक दूसरे से कधा भिडाये अुन पाचो के चारो ओर अेक वर्तुलाकार दायरे म घेरा डाल कर खडी होगअी। अुनमे से प्रत्येक ने देखते देखते अपनी अपनी पिस्तौलें निकाली और वे अुस गोस्वामी की ओर तान कर खडे होगये। अुनके मुखिया ने योगानद को हुक्म दिया,

" खडा रह यहीं, वरना अेक पैर आगे बढाया तो ढेर कर दिया जायगा ! "

वैष्णवी तिलक, वैष्णवी मुद्रा, माला, भगवे कपडे प्रभृति धारण किये हुअे, भजनमें तल्लीन नजर आने वाले, नित्य नियमपूर्वक प्रारभ से लेकर अतनक भोदुओ की सी शक्ल बनाकर बैठनेवाले और सीधे सादे नजर आने

वाले ये रोज के श्रोता लोग आज अेकाअेक पिस्तौले तान कर अुस वेचारे साधुशील सत्पुरुष पर अुलट पडे। देवावतारी भगवद्भक्त कहकर प्रत्यह जिस के पैरो पर माथा टेकते थे आज अुसी की जान लेने के लिये खडे होगये "आखिर यह मामला है क्या ?" दिङ्मूढ हुअे लोग आपस मे कानाफूसी करने लगे। सैकडो भयभीत होकर प्रागण मे से बाहर निकल कर जाने लगे। कुछ लोगो के मन मे सहानुभूति अुत्पन्न हुअी और अुन्होने अुस धर्म-परायण भक्त को छुडाने के लिये दगा करने की ठानी।

पर अुस महत के ध्यान मे पूरी तरह से आगया कि, ये नाना प्रकार के वेशविन्यास करके आनेवाले तीस चालीस सी आअी डी के लोगही अिन तीनो दरवाजो पर प्रत्यह आकर भजनमे बैठा करते होगे। अुनका कपट अपने पर प्रकट नही हो पाया यह ठीक है, अब हम पूरी तरह अुनके पजें मे आ पडे है यह ठीक है- तथापि अन्तिम अुपाय समझ कर अुसने अत्यत कर्कश और अूँची आवाज मे अुस भीड के लोगो को सबोधन करते हुअे कहा,

"यहा धर्म का सच्चा अभिमानी कोअी नही है ? भगवान्, अब तू ही अपने भक्त की रक्षा के लिये दौड !"

यह सुनते ही कुछ भोले भाले गुस्से मे आगये। अुस महत के बारे में अुन्हे जो कुछ जानकारी थी, वह अुसमे असीम श्रद्धा को अुत्पन्न करनेवाली थी। अुस अपरिग्रही निर्लोभी, स्वधर्म प्रचारक भक्त पर किसे मालूम अीसाअी मिशनरियो ने कोअी षड्यन्त्र रचा हो- अैसी भावना मे कुछ साहसी स्वधर्मा-भिमानी लोगो का पारा चढ गया। पुलिस वालो पर दो तीन पत्थर भी आकर गिरे-गालियो की बौछार का तो कहना ही क्या है?

अितने मे मुख्यद्वार से लाठीबद पोलीसो की टुकडी के साथ स्वत पोलिस सुपरिटेंडेंट अदर आये, वाक्पीठ पर चढे और रोबदार आवाज मे सब लोगो को सबोधित करते हुअे हुक्म देने लगे—

"नगरवासियो, योगानद नामधारी अिस शख्स ने यहाँ जो आजपर्यंत आडबर रचा है, अुसपर से आप जैसे कायदा-पसद नागरिको को यह लगना स्वाभाविक है कि यह कोअी बडा भारी भगवद्भक्त होगा। पर हमे अिसके बारे में जो अित्तिला मिली है अुससे आप लोगो की समझ मे आसानी से आजायगा कि अिस शख्स पर श्रद्धा रखना नही था अिस साधु का भेस बनाकर

विचरनेवाले शख्स का असली नाम सुनकर आपको तअज्जुब हुअे वगैर नही रहेगा । अिस योगानद स्वामी का असली नाम रफिअुद्दिन अहमद है। यह पजावी मुसलमान है । अिसपर पहले अत्यत क्रूरतापूर्वक दोवार डाके जनी करने का आरोप सिद्ध होकर अिसको पहले पजाव मे सात वरस की कालेपानी की सजा हुअी थी । अुसके मुताबिक अिसको कालेपानी भेज दिया गया। वहाँ से चार वरस वाद यह निकल भागा । गुजिश्ता दो वरसो में अिसने अिन चार चेलो की तरह अनेक दुष्ट लोगो को जमा करके फिर अनेक चोरियाँ डाकेजनी और अपहरण सदृश भयकर अुपद्रव मचाने शुरू कर दिये है । गुजिश्ता साल अिसकी टोली को पुलिसवालो ने जगल में घेर लिया था । अुस टोली ने पुलिसवालो पर गोलियाँ चलाअी और अिसने पुलिस के अफसर को घायल कर दिया और अुसके घोडे पर सवार होकर यह दुष्ट साहसी भाग खडा हुआ। अुसके वाद वह लापता होगया । यह वही है, अैसा हमें जव सशय आया तव हमने, अिसके मथुरा आने के वाद अपने गुप्त पुलिसवालो को किस्म-किस्म के भेस पहनवाकर अिसपर पहरा विठा दिया । ताकि अिसके वारे में पूरी तौर से जानकारी हासिल करके वारट निकलते ही अिसके समस्त साथियो के साथ अिसको पकडा जा सके। अिसके वारे मे सव किस्म की जान कारी हमने हासिल की। अिसके साथियो से अिसकी जो निशानियाँ मालूम पडी थी अुस के आधारपर अिसे पूरी तरह पहचान लिया । अिलाहावाद से अिसके नाम जो वारट जारी हुआ है, वह यह है, यह आज ही साझ को हमारे पास अिलाहावाद मे आया है । और यह टोली आज ही भजन के खत्म होने वाद गुप्त होकर निकलनेवाली है, यह सूचना हमें मिलते ही भजन के वीचमें ही अिसको गिरफ्तार करना निश्चित हुआ । ये जवरदस्त लोग अकेले दुकेले को कुछ नही गिनेंगे, यह हमे पहले ही मालूम था। अत हम अिन पर अिस तरह सशस्त्र छापा मारना पडा । आप लोग यह समझ वैठेंगे कि अेक साधु पर जुल्म हो रहा है, और अिस विपरीत समझ के कारण किसी किस्म का दगा फसाद न होने पाये अिसी लिये हमे अिस वारे में अितना स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता महसूस हुअी । अव आप लोग दस मिनिट के अदर अिस मैदान को खाली करदे। अिसी तरह रास्ते पर भी कल सवेरे तक किसी किस्म का जमाव नही होना चाहिये । नही तो लाठी चलाकर पुलिसवालो को अुसे

तितर वितर करना पडेगा। वारट के मुताबिक हमे अपना फर्ज पूरा करना ही चाहिये ! असका तथ्यातथ्य निर्णय करना न्यायालय का काम है ! पोलीस ! दस मिनिटो के अदर अिन पाचो अपराधियो को वेडी पहना कर जेल की तरफ ले चलो, और यह मैदान साफ कर दो ! ! "

दस मिनिट के अदर अदर अन पाचो को हथकडियाँ और वेडियाँ पहना कर जेल पहुँचा दिया गया। और वह सारा मजमा खुदवखुद तितर-वितर होगया—अुस मैदान मे अब अेक भी आदमी नजर नही आता था।

पर वह पकडा गया गोस्वामी वास्तवमे कौन था ? स्वामी योगानद या रफिअुद्दीन अहमद ?

और मालती ? अुसका क्या हुआ ?

अलाहाबाद की जेल है यह ! : : : ५

अलाहाबाद के कैदखाने के कैदियो पर जिसे मुख्य जमादार नियुक्त किया हुआ था, अुसे अिस बातका सख्त हुक्म मिला था कि, आज कालेपानी से भागकर आया हुआ पक्का डाकू रफीअुद्दीन अपने साथियो के साथ कैदखाने मे लाया जानेवाला है, अुसके आने से पहले यहाँ के कैदियो को अेक शब्द भी मालूम नही होना चाहिये। और अुसके वास्ते पक्का अितजाम किया जाना चाहिये। "अगर अिस बारे में थोडी सी भी गफलत हुअी तो याद रखो, जमादार, तुम्हारे पैरो मे वेडियाँ पड जायेगी ! " अैसा कैदखाने के साहबने जता दिया था।

जेलर साहब के सामने तन कर खडा हुआ वह मुसलमान जमादार अग्रेजी पद्धति का सैनिक सैल्यूट करके बोला,

"जी हुजूर, वह बडा डाकू होगा ! पर मैंने अैसे छप्पन डाकुओं को अपने आगे पानी भरने लगाया है ! वह कालेपानी से भागकर आया होगा, पर अुससे कहियेगा कि यह लालपानी है ! अिस डडे की अेक चोट

से खून की भुलटी कराने लगाभूगा !—कमर तोड कर रख दूगा—कमर ! ” जमादार ने कमर मे लटके हुअे डडे को हाथ में लेकर हवा में अेक तडाखा भी जमा दिया !

“ अह ! मारना वारना करने की जरूरत नहीं, समझे ? वे लोग अपने प्राणो पर अुदार हुअे हुअे गुडे है !—पुचकार कर काम निकालना होगा—तब है तुम्हारी करामात ! मारपीट करते हो तुम और भुगतना पडता है हमें ! ”

“ अच्छा हुजूर, ये लीजिये, लटकाये देता हूँ यह डडा अपने कमर से—अब मे अपनी लचकीली जीभ ही का अिस्तेमाल करूगा ! हुजूर, मेरी जीभ अिस डडे से ज्यादा करामाती है ! अिस डडे से तो आदमी सिर्फ घायल होता है, यह जीभ तो अुसे जिंदा ही मार डालती है ! तलवार से गर्दन तोडकर जान ली जा सकती है, मगर खून बहता है, जीभ से गर्दन को सही सलामत रखकर भी जान ली जा सकती है ! और प्रमाण के लिये खून का कतरा तक गिरा हुआ मिलेगा नही । तभी तलवार से की गअी हत्या पकड मे आ जाती है, पर जिसे जीभ द्वारा जान लेनी आती है, अुसे सौ हत्याओ की छूट है ! ”

“ चुप ! लगा बकने को !—जाव ! तेरे डडे की तरह तेरी जीभ को भी सँभालते सँभालते नाक मे दम आ जाता है मेरी ! ”

“ अच्छा साहब, जैसे डडा कमरसे लटका लिया है वैसे ही यह लीजिये, जीभ भी लटका ली अपनी तालू से ! ” फिर अेकबार मुजरा ठोक कर जमादार बाहर लौटा !

“ अे ! जमादार !—अदर आव, हमारा बूट किधर है आज ? Damn fool ! भूल गया तुम ? जाव लाव ! ”

बदीपाल (जेलर) की वह गाली अपने विस्मरण स्वभाव की कीमत करनेवाला अेक अगरेजी शब्द है, अिस सतोष से जमादार ने अुसे सुना, लजाकर जीभ बाहर निकाली—दातो से काटी, तत्काल अुस अभिनय से भी लज्जित हो मुँहपर हाथ रखकर वह हँसा और अुसके साथ ही साथ चोर की तरह बाहर जाकर बूट ले अदर चला आया ! अपने मुँह पोछने से लेकर नाक छिनकने तक के सभी कामो मे अुपयोगी पडनेवाला रुमाल निकाल कर बूटो को झाड

पोंछकर अुस वंदिपाल के सामने धीरे से रक्खा और रुमाल साफ करने के लिये थोडा झटकने लगा, त्योंही मुंह की सिगरेट निकालकर वंदिपाल बोला,

"अरे झटकता क्या है, रुमाल को ! मेरे वूटो मे तेरा रूमाल मैला नही हुआ वल्कि तेरे गलीज रुमाल से ये मेरे वूट ही मैले होगये होगे ! "

"सचवात है हुजूर ! आपका बूट ही मेरा अन्नदाता है साहव ! आप के पैतानो की सेवा वारह वरस से करता आया हूँ, तभी तो आज सिपाही का जमादार होगया है यह वदा ! "

यह फिर वकते तो नही न वैठेगा, अिस भीति से अुसे कोअी भी नया विषय न मिल सके यह सोचकर, पास के टाअिप करते वैठे हुअे क्लार्क को सम्वोधित करके जेलर साहव वोले,

"अच्छा दादा, लाव तुम अपने कागज। दस्तखत वगैरे काहे पर करने है सो वताओ, देखे ! "

जमादार को चला गया देखते ही वह अधगोरा जेलर अुस क्लार्क की ओर देखते हुअे, पर मन ही मन वोला,

"क्या मिठबोला है यह गर्दन मारनेवाला ! अभी वे कैदखाने के डाकू भले मगर अिन सिपाहियो की शक्लमे अिन डाकुओ से तो भगवान् ही वचाये ! "

क्लार्क को यह मालूम था ही कि, भले ही जेलर ने नाम न लिया हो, पर अुसकी भी गणना दूसरे ही वर्ग में है, अैसा जेलर साहव अुसी वाक्य मे कह रहे हैं। जेलर क्लार्क के समीप अुन सिपाहियो के सवध मे जो मत व्यक्त कर रहा था वही मत वे क्लार्क दादा और सिपाही अेकात मे वैठने पर अुन जेलर साहव के वारे मे भी व्यक्त किया करते थे। अत सदा जैसे को तैसा व्यवहार होते रहने की वजह से पीठ पीछे कहे गये शब्दो से कोअी भी व्यथा अनुभव नही करता था। प्रत्येक व्यक्ति के आतरिक छिद्र प्रत्येक को विदित होने के कारण और प्रत्येक की वद मुट्ठीमे प्रत्येक का थोडा वहुत हिस्सा होने के कारण गत वारह वरसो से वह जमादार, जेलर और क्लार्क सभी अेक सयुक्त कुटुव की तरह अुस जेल रूपी रियासत का कारोवार चलाते थे। नये नये पर्यवेक्षक (सुपरिटेंडेंट) आते और जाते, पर अुस वदी गृह की तरह ही जमादार, दादा, और जेलर का वह समिलित कुटुव अटल का अटल ही रहता!

बंदिपाल की आज्ञा सुनकर जमादार कैदखाने के अंदर जाते जाते मन मे विचार कर रहा था। अुसने दो लोहे के फाटक खुलवा कर अंतवर्ती अेक मध्यभागस्थित मैदान मे पैर रखते ही हाक मारी,

"शिवराम! शिवराम हवालदार किधर है? बुलाव अुनको!"

थोडी ही देरमे शिवराम हवालदार हाँफते हुअे, टाप पर टाप मारकर, तनकर खडे होकर, मुजरा ठोक कर, जमादार के सामने खडा हुआ। सब लोगो का 'चले जाव' हो चुकने के बाद जमादार अकेले शिवराम से बोला,

"शिवराम! आज कालेपानी से भागकर आया हुआ कोअी डाकू अपने साथियो के साथ यहाँ लाया जानेवाला है। जेलर साहब ने सख्त हुक्म दिया है कि यह खबर किसी के कानो पर न पडने पाये!"

"अच्छा, जमादार जी!"

"अच्छी तरह सुन, अुस खतरनाक डाकू को अुधरके फाँसी के चौक में तनहाअी मे बंद करना है, तेरे और मेरे सिवा और किसी को अंदर नही जाने देना है!"

"जेलर साहब या सुपरिंटेंडेंट साहब को भी?"

"गवारपना मत कर! ठट्ठे मे, दाँत जिस तरह दिखाअी देते हैं, अुसी तरह झड भी जाते है अेकाध वक्त! कोअी झाडूवाला, रसोअिया, कहार, अंदर ले जाना हो तो हम दोनो में से किसी अेक का अुस वक्त हाजिर रहना लाजमी है!; अगर किसी को अुसके साथ बातचीत करते हुअे देखा, तो याद रख, गला ही दबा डालूंगा तेरा!" अिस तरह सख्ती से बोल बैठने के बाद अुस अभिनयपटु जमादार ने अपने अुस घनिष्टतायुक्त हवाल्दार के गले में हाथ डाला

"किसी को भी बातचीत करने न दीजियो!"

"जरूर, जरूर, मगर अभी काहे को गला दबाये डालते हैं मेरा— किसी को अुसके साथ बातचीत करने दू तब न, दबाअियेगा? देखें, कौन बदमाश अुस डाकू से बातचीत करने आता है—फिर चाहे वह अिस कैदखाने का बडा जमादार ही क्यो न हो!—नही नही जमादार साहब, माफी चाहता हूँ! आपका हुक्म मैं कैसे_लफ्ज-ब-लफ्ज बजा लाअूंगा यह कहने की झोक मे वैसा बोल गया!"

"अरे, पर मुझे जो चाहिये—अेक नुक्त-अे नजर से तू वही बोल गया है बाबा ! यह देख शिवराम, जो खुशकिस्मती के बारे में बोलना है, वह सब पहले पहल तू ही बोलियो ! जब तक तू पूरी तौर पर सब काम तय करके नहीं आयेगा, मै अपनी जुबान से अेक लफ्ज भी नही निकालूगा । अिस काम मे तू ही है पक्का दाव पेंच जाननेवाला ! तभी तो मैं तुझे हमेशा अैसी विश्वास की जगहो पर तैनात करता हूँ ! यह देख जब कभी अैसा कोअी असली डाकू पहुँचता है यहाँ, तभी हमारी कुछ खीर पकती है ! अैसे आसामी सौ-सवा सौ से नीचे तो क्या जायँगे ! अैसे ही लोगो के पास गिन्नियाँ देखने को मिलती हैं—यो रोजमर्रा के छोटे मोटे चोरो के पास क्या रहता है, जो हमारी जेब गरम कर सके ! वह कैदखाने से भाग न जाय—अिसका पक्का बदोबस्त रक्खा तो होगया खत्म हमारा सरकारी फर्ज ! यो अदर ही अदर, जो मौज अुसको अुडानी हो अुडाने दे—अगर हमारी खाली मुट्ठियो को भर कर वह वैसा करना चाहता हो तो ! मगर खबरदारी से हा !—पहले देख, आसामी कैसा है,—अच्छी तरह टटोल कर—नही तो फट् कहते ही ब्रह्महत्या ! आया दिमाग में ? अच्छी बात है, अब जा अदर ! वह चौक, वह दालान, वह तनहाअी खाली करके, झाडकर, ताला लगा कर रखदे ! वह टोली आज शाम तक आ ही जायगी, पर किसी के सामने अुनके आने के बारे में अेक लफ्ज तक नही निकालना ! "

"अैह्, अुस बात की फिकर ही न कर ! " अैसा आश्वासन देकर शिवराम हवालदार वह फासीवाला चौक साफ सूफ करने के लिये चला गया। अुसने पहले ही धडक्के में अपने अेक विश्वस्त कैदी को बुलाया । अुस कैदी को आठ-दस बरस की सजा हुअी थी—काम की दिलचस्पी और लियाकत को देखकर अुसे हवालदार के हाथ के नीचे मुकद्दम बना दिया गया था । अुस कैदियो के मुकद्दम को शिवराम हवालदार ने फासी की सजा मिले हुअे तथा अितर घातपात करनेवाले भयकर कैदियो को अलग से बद करने के लिये तय्यार की गअी अेव बीच बीच में अिस्तेमाल मे लायी जानेवाली कोठरियो के चौक को, दालान को, तथा तनहाअियो को झाड बुहार कर साफ करने का जल्दबाजी का काम बताया और अत्यत कडाअी के साथ जताया कि,

"आज यह चौक अिस तरह खोलकर रक्खा गया है, अिस बात की

खबर किसी को लगने न पाये! आजतक कभी नही रहा अैसा बन्दोबस्त रखना है, बडे भयकर डाकू है वे लोग!"

मुकद्दम की जिज्ञासा बढ चली। मगर अुसने यह सोचकर कि अुन डाकुओ के बारे मे सीधे मुँह कुछ पूछने से बात को छिपाने की कोशिश वह और ज्यादा करने लग जायगा, अत बातको घुमा फिरा कर वह बोला,

"आप भी क्या फरमाते है, हवालदारजी, गुजिश्ता साल कालेपानी की सजा पाये हुअे लोगो की टोली जब यहाँ आयी थी, तब काले पानी जाने तक, आपकी दुआ से मैनेही तो अुन्हे सभाले रक्खा था न? आपने अुनकी चिट्ठियाँ दी थीं, अुन्हे जेल का सामान बेचने के वास्ते बाहर जाने पर अुनके घर किसन पहुँचाया था? 'हलदी' कौन लाया था मुठ्ठीमें भरकर? अिस पठ्ठेने जान पर बीतने वाली कसरत की थी वह हवालदार जी!"

"अरे काले पानी को जाने वाले डाकू की बनिस्बत कालेपानी से भागकर आया हुआ डाकू कितना खतरनाक होगा बाबा!"

"यह कालेपानी से भागकर आया हुआ कोअी डाकू है न, तब?"

"हा, चुप, वह मैं नही बताअूगा—पर क्यो रे मुकद्दम, यह आसामी भी खासा गँठा हो तो अुसकी भी चिट्ठियाँ ले जायगा न, या कालेपानी मे आया जान दुम दबा लेगा! जो 'हलदी' मिलेगी अुससे तुझे भी नये दूल्हे की तरह हलदी से भी ज्यादह पीला कर दूगा!"

मुकद्दम को जो बात चाहिये थी सो सब मालूम पड गअी! "वैसा 'हलदी'का सारा काम मेरी तरफ रहा साहब! कालेपानी मे कोअी भाग आया हो तो वह अिन्सान न रहकर भेडिया थोडअी हो जाता है?" (अुस जेलखाने की डिक्शनरी मे 'हलदी' का अर्थ सोने की मुहर होता है, यह बताने की जरूरत नही!)

मुकद्दम को लेकर हवालदार जी फाँसीवाले दालान मे गये। मुकद्दम ने अपने हाथ के नीचे के बडे-बडे कैदियो के जरिये चौक, कमरे वगैरे बराबर साफ करवा लिये और अुन्हे आवश्यक प्रोत्साहन देने के लिये चुनी हुअी गालियो तथा हमेशा की डडे-मारी की यथायोग्य बौछार करनी शुरू की। यह देखकर, काम ठीक ढग मे चल रहा है, अिस अितमीनान से हवालदार अुन कोठरियो मे मे अेक में अपना पट्टावट्टा खोल, पैर पसार कर, पेटा निकाले आराम लेता

हुआ पड गया। मकद्दमने अेक कैदी लडके को अुसके शरीर की मालिश करने के लिये नियुक्त कर दिया। अुस मजे की झोक में दालान के बडे दरवाजे को अदर से ताला लगाकर बद करने की जरूरत भी हवालदार को अुतनी महसूस नहीं हुअी।

अितने में जैसे किसी पर भूत सवार होगया हो वैसे ही आवेशमें दौडते-दौडते जेलर आगे और अुसके पीछे पूरी तरह दौड लगाते हुअे जमादार और दो तीन सिपाही अुस खुले हुअे दरवाजे से भीतर दालान मे घुसे।

"हवालदार, अे, किदर है हवाल्दार?" जेलर गरजा।

"अिदर-अुदर-वे वहाँ!" गडबडा कर मुकद्दम हकलाया। और हवालदार को अुसके मुकद्दरपर छोडकर—अपने काममे हम लगेहुअे है, अैसा दिखाने के लिये कैदियो को 'यह कर' 'वह कर' हुक्म देने लगा और जमादार से बोला—

'सब कुछ साफ-सूफ, ठीक-ठाक होगया है!'

अितनेही में वह जेलर "किधर है वो साला! हवालदार! अे हवालदार!" अिस तरह बेलगाम गुरगुराता हुआ अुसी कोठरी के बरामदे पर बूटो की आवाज करता हुआ चढ गया! अितने ही में वह हवालदार गडबडाकर अुठता हुआ अुस कोठडी के सामने ही दिखाअी दिया! जेलर की पहली गरज के अेकाअेक सुन पडते ही हवालदार के होश पहले ही फाख्ता होगये थे! सँभलकर अुठने की अुसने बहुत कोशिश की—पर अभी वह आधा भी न सँभल पाया था कि, अेकदम जेलर सामने आकर खडा हो गया! लडका जिस पैर को रगड रहा था अुस पैर की यूनिफार्म की पट्टी खुली हुअी थी, बूट निकाला हुआ था, दूसरे पैर की पट्टी ठीक ढगसे लपेटी हुअी थी और बूट पहना हुआ था, जल्दबाजी मे टोप का सा वह फेटा सिरपर रखने जाते समय तिरछाही झुका हुआ था, और अुसका सोगा छूटकर किसी पहलवान की तरह कधेपर से छातीपर झूल रहा था, कमरका पट्टा दूर कोने मे पडा हुआ था और फाटको की तालियो का गुच्छा अुस कैदी लडके के हाथ ही मे भूल से लटक रहा था—अैसा अुस हवालदार का अस्तव्यस्त ध्यान बूट पहने हुअे अेक पैरपर ही खडा हुआ देखकर अुस गुस्से में भी अपनी—असली विनोदी वृत्ति के कारण जेलर को हँसी आये बना न रही!

"क्यो जमादार तुम जो, हमेशा कहा करते हो कि विकट परिस्थिति के कामो मे शिवराम हवालदार अेक पैरपर तय्यार रहता है, वह बिलकुल सच है! देखो, वह अेकही पैरमे पुलिसका पोशाक चढा कर सचमुच अेक ही पैरपर खडा हुआहै! दूसरे पैर मे अुसने बूट तक नही पहना है! क्यो रे, वह अपना बूट रहित पैर अिस तरह केवल अलगसे अुठा कर पकडने के लिये रखता ही काहेके लिये है अर्थहीन वस्तु की तरह? ठहर अुसे अभी तोडकर फेंक देता हूँ! चोर?" जेलरने गुस्से मे लाल होकर हाथकी लकडी का अेक तडाका शिवराम के पैरपर कसकर जमाया!

"मैयारी! जेलर साहब, पैर पडताहूँ, पर पहले मेरी बात तो सुन लीजिये, चलते चलते मेरे पैरकी पिंडली का गोला अेकदम अैसा चढ गया कि मैं बोंब मारते हुअे जमीनपर ही गिर पडा! अिस लिये अिस कोठडी में, दबवाकर वह पैरका गोला अुतरवा रहा था। सरकार, कृपालु अिसमें अगर कोअी कसूर हो तो वह माफ कीजिये!" हवालदारने अेकदम बहाना तो बनाया पर वह बहाना ही रहा!

"माफ? कामपर रहते हुअे पट्टा फेंक कर फैलकर पड रहा तू यहाँ! तुझे माफ कर दू तो कल सारे सिपाहियो के पैरोकी पिंडलियो के गोले जब मर्जी हुअी तब अिसी तरह अैठकर चढने लग जायेंगे! ला वह पट्टा अिधर! जमादार, सिपाहियो के कमरका यह पट्टा अिसके गलेमे कुत्तेके पट्टेकी तरह अैसे लपेटो, अ-ह, अैसे! हा ठीक! और अिस को अिसी हालत मे, सारे कैंदियो की कतारो मे से अुधर ऑफिस की तरफ बडे फाटक के पास ले आओ! चलाव! (चलो-आओ)। तेरे बापका—अुस सुपरिंटेंडेंट साहब का मुझे अभी फोन आया है कि, अेक डाकुओंकी पकडी हुअी टोली अभी आनेवाली है,—और तू यहाँ पैर रगडवाने पडा हुआ है क्यो?—चलाव!"

सबके सामने अुन हवालदारजीका वह विचित्र स्वांग, अुसके पीछे मुँह पर रुमाल रक्खे हँसनेवाला वह जमादार, अुसके पीछे वह मुकद्दम वे कैंदी,—अिस प्रकारका यह जुलूस आगे आगे,—रास्ते मे जहाँ जहाँ कैदियों की कतारो मे से जाना पडा वहाँ वे कतारे दोनो ओर ठहाका मार कर हँसती—और वह तमाशा देखता हुआ मन मनमें हँसनेवाला पर अूपर से गुस्से मे तना हुआ वह अधगोरा जेलर सबसे पीछे,—अैसी वह सवारी कैदखाने के बडे फाटकमे विद्यमान दफ्तर के नजदीक आअी!

अुतनेमें अुस भयानक कैदखाने के अुस मुख्य लोहे के दरवाजे की वडी वडी सीखचो को पकडकर बाहरकी तरफ खडा हुआ अेक गोरा सार्जंट सगीने और वदूके ताने हुअे दस-पाच सिपाहियो के साथ खडा हुआ जेलर को दिखाअी दिया। अुसके पीछेही सुनाअी पडनेवाली वेडियो की खन् खनाहट भी सुनाअी दी। जो डाकुओ की टोली आनेवाली थी सो आभी पहुँची यह वात जेलर के ध्यानमे आअी। सो अिस वाह्य सकटका मुकाविला करने के लिये गृह-कलह को मिटाकर कार्यतत्पर और विश्वस्त जमादार-हवालदारोकी अन्तर्गत अेकता करना प्रथम आवश्यक है, अैसा विचार करके अुस कैदखाने की वालिश्तभर राजनीति के वखेडे को दूर करने के अिरादेसे अेक झटके मे जेलरने जमादार से कहा,

"शिवराम को छोड दो! वेचारे की भद्द काफी अुड चुकी! अुसमे वोलो, आगे से अैसा न करे।"

जमादार भी वही विनति करनेवाला था। शिवराम कामका आदमी था। अदरकी मैशीनरी अुसीके हाथो चला करती थी। और अुसमे जेलर महाभाग का भी हिस्सा रहता था। जमादार और जेलर की आँखो-ही आँखो में यह भाषण–वगैर वोले हो चुकासा था ही, मतैक्य जमगयासा था ही। तत्काल शिवराम हवालदार के दोनो वूट, पगडी, पट्टा, चावियो का गुच्छा–अित्यादि सव अुसके शरीर पर यथा स्थान शोभायमान होने लगे और वह "अे गद्धा, अिधर आव! अे चोर अुपर जाव!" अैसी अनुशासनानुकूल भाषामें आज्ञा देते हुअे अपने हाथ के नीचे काम करनेवाले मुकद्दम कैदियो के वीच, अिस तरह घूमने लगा–जैसे गलीमे जूझनेवाला मुर्ग पुकार मचाता हुआ फिरता है।

कैदखाने का वह विशाल दरवाजा कर्रर्र्, अिस आवाज के साथ खुल गया। सार्जंट अुस पैर मे वेडियाँ खनखनानेवाली डाकुओ की टोली के साथ भीतर आया। जेलरने अुसके सामने का अतवर्ती दूसरा लोहेका दरवाजा खुलवा कर मुख्य कैदखाने के भयानक परतु भव्य मैदान में अुन दस वारह कैदियो को कतार वाधकर खडा करवाया। अुनपर शिवराम हवालदार को देखरेख करने के लिये कहा और खुद दफ्तर मे जाकर सार्जंट की तरफ से सारे कागज समझवा लेने लगा।

अिधर अुम मुकद्दमने कैदखाने मे जाकर अपने विश्वस्त कैदियो को कभी का यह वतादिया था कि, आज काल्रेपानी से भागकर आये हुअे कुछ पक्के गुनहगार आनेवाले है !—पर यह वात किसी दूसरे को पता न चलने पाये ! "

अुन कैदियो ने दूसरे कैदियो को तथा अुन्होने तीसरे कैदियो को किसीको न वताने की शर्तपर, कर्ण परपरया वह समाचार वतला दिया। अिस तरह यह ख्वर हर अेक कैदी के कानमें पहुँच गअी थी कि, "आज कोअी कालेपानी से भागकर आया हुआ डाकू आनेवाला है, पर यह किसी को मालुम होने न पाये।" अत जिस जिसको कोअी वहाना मिलगया वह वह, कैदी, वॉर्डर, मुकद्दम, सिपाही अुस टोली को देखने की गरज से अुस मैदान के नजदीक आकर रेंगने लग गया था। सिपाहियो का मजमा भी वहाँ खडा ही था।

अितने लोगो के सामने अैसे पक्के डाकू पर मै अधिकार चला रहा हूँ, अिसवात की गर्विष्ठ जानकारी शिवराम हवालदारकी फूली हुअी छाती मे समाअी न जा रही थी। अपने कडे अनुशासन का प्रदर्शन करके अुन सव पर अपनी छाप विठाने की जवर्दस्त अिच्छा अुसे हुअी और अुन डाकुओं मे से जो थोडा सा डरा हुआ सा तथा सौम्यसा डाकू, नजर आया अुस अेकको हवालदारने विलावजह ही डडा चुभोते हुअे कहा—

'अे, सीधा खडा हो! यह घर नही है तेरा, अिलाहावाद का कैदखाना है यह। यहाँ हरेक को तमीज के साथ खडा रहना चाहिये!"

शिवराम हवालदारकी वह अैंठभरी आज्ञा अुस सौम्य डाकूने सुनली। पर अुनमें से जो अेक अूँचा सुरौंट प्रियदर्शन, दुष्ट, मुस्काते हुअे चेहरेवाला डाकू था, अुसको अुस हवालदारके रोवपर कुछ मौज मालूम हुअी हो अैसा नजर आया। हवालदारके पीठ फेरते ही वह हवालदार की अकड का स्वाग भर कर जोर से वोला,

"अे, सीधा चलो, यह घर नहीं है तेरा, अिलाहावाद का कैदखाना है यह!"

अपने को किसी ने पागल वनाया है, यह शिवराम के ध्यान मे आया। आसपास के लोग हँसे। पर कालेपानी का वह पक्का डाकू यही होगा अैसी शका मनमे आनेपर शिवराम हवालदारने अदाज लगाया कि अुसके नामपर

जाकर अुसने गलती की और अुसका मुह बनाना जैसे अपने ध्यान ही मे नहीं आया अैसा दिखलाते हुअे वह दूसरी तरफ को घूमने लगा।

अितने मे सार्जेंटका 'टॉम' कुत्ता अुस मैदानमे प्रविष्ट हुआ। अुसको अुस कठोर अनुशासनवाले कैदखानेमे भी किसीने नही रोका। मनुष्योकी अपेक्षा किन्ही देशोमे कुत्ते को ज्यादा आजादी हासिल रहती है। अुनमे मे भी वह सार्जेंटका कुत्ता था! शिवराम हवालदार अुसे सहलाने लगा। अितनेमें अुस खुर्राट डाकूने वडी नम्रता के साथ हॉक मारी।

"थोडा अिधर आअियेगा जनावेमन, अेक अर्ज है गुलाम की!"

"अच्छा तो अिस धूर्त और अुद्धत आदमी पर भी मेरा दवदवा वैठ गया।" अैसा हवालदारने अुसके 'जनावेमन' अिस नम्र सवोधन को सुनकर ताड लिया और अुसकी ओर दयाभरे वडप्पन के साथ वह गया और वोला,

"क्या चाहिये? वोल, डर मत!"

वह लुच्चा डाकू अदरही अदर हँसकर जोर से वोला,

"मैंने आपको कहाँ वुलाया है? मैंने तो अुस टॉम कुत्ते को वुलाया था। अुससे कहना था कि, अिस तरह वदतमीजी से खडा मत रह! यह अिलाहावाद का कैदखाना है! हरेकको यहाँ तमीज के साथ खडा रहना चाहिये!"

फिर सारे कैदी और सिपाही भी हँस पडे। हवालदार सतप्त हो अुठा,

"पूरे गदहे हो तुम लोग!"

नम्रतया हास्य करते हुअे डाकूने अुत्तर दिया,

"और आप हमारे सरदार! जो कहियेगा सो ही ठीक!"

अुतने ही में जेलर अुस मैदानमे, सार्जेंट के साथ, अुन कैदियो की पहचान सार्जेंटकी ओर से रीतिपूर्वक करवा लेनेके हेतु से दाखिल हुआ। पहले ही धडक्केमे सार्जेंटने जेलर को दिखाया वह खुर्राट, अूँचा, सदा ओठो पर शरारत भरी मुसकान वनाये रखनेवाला गुनहगार।

"यही है वह योगानद रफिअुद्दीन कालेपानी पर से भागकर आया हुआ कैदी! अिन डाकुओ की टोलीमें पहले नवरका आरोपी!"

किसी राजाकी प्रशस्ति भाटके द्वारा गाये जाने पर जैसे वह राजा और ज्यादह रोव के साथ फूलने लग जाता है, तद्वत् वह आरोपी योगानद

अर्थात् रफिअुद्दीन भी अुस अपनी प्रशस्तिको सार्जेंटके मुँह से बहुत तनकर सुन रहा था। लज्जा और भयकी तो दूर, चिंता की भी छाया अुसकी आकृतिपर नही थी। अुसके गाल भरे हुअे थे। ओठो को बाअी ओर मोडकर बाअी भौंहको चढाकर, दहिनी आँख मिचकाकर अदर ही अदर छद्मपूर्ण हँसी हँसने की अुसकी जो अेक विशेष रीति थी—अुसके अनुसार हँसते हुअे वह बोलकर रुके हुअे सार्जेंट से कहने लगा,

"साब! अैसी बेअिन्साफी काहे को भला, करते है आप? मुझे चार मर्तबा कोडे लगाये गये है, और कम-अज-कम १४ कैदखाने तो मैंने देखे होंगे—अितनी तो मेरे बारे मे अिन प्रिजनरसाहब मे आपको ज्यादा कहना चाहिये! तभी मेरी असली लियाकत अुन्हें मालूम पडेगी और अुसके मुताबिक ही प्रिजनर साहब मेरी खातिरतवाजो और मेहमाननवाजी कर सकेगे!"

सार्जेंट की और अुस डाकू की गत अेक महीने से—जितने दिनो वह अुसके हाथो मे रहा, अुतने दिनो तक—खूब घुटती थी। और आरोपी के अुस निरुपद्रवी बकवास मे जो अेक व्यंग्य रहता था वह सार्जेंटको भी पसद आने लगा था। जेलरको जेलरसाब कहने के बजाय रफिअुद्दिन जब प्रिजनर साब! कह अुठा तब अुसके अंग्रेजी भाषा के अज्ञान की खिल्ली अुडाने के लिये सार्जेंट जोरसे हँस पडा!

"खूब, बहुत खूब, जेलका यह अफसर अगर 'प्रिजनर साब' होगया तो तुझ सरीखे जेलके डाकू बंदी को 'जेलर साब' कहने मे कोअी हर्ज नही—नहीं क्या?"

"ऑफकोर्स मि सार्जेंट साब! यस्! आपकी बबर्ची अिंग्लिशको वह ठीक नहीं मालूम पडता होगा, मगर करेक्ट ग्रैमेटिकल अिंग्लिश वही है जो मै बोलता हूँ! प्रिजन के मानी भी कैदखाना और जेलके मानी भी कैदखाना तब प्रिजनर और जेलर अिन दोनो शब्दोका कोअी सा अेक ही मायना होना चाहिये न? कायदे के मुताबिक तो जो जेलर वही प्रिजनर, प्रिजनर और जेलर दोनो अेक ही थैले के चट्टे बट्टे! अिंग्लिश किसके साथ खानी चाहिये सो मुझे भी मालूम है समझे मि सार्जेंट साब!"

"योगानद ही है तू! है! अच्छा क्यो रे रफीअुद्दीन, यह नही वतलाया तूने कि तुझे चार मर्तबा कोडो की सजा काहे को हुअी?—" सार्जेटने जानना चाहा।

"अुसकी वजह बिलकुल सीधी सादी है अगर अिन जेलर साव को गुस्सा न आये तो वताअूगा। दो जेलरो ने मुझे मेरे कहे के मुताविक अफीम खाने नही दी-अिसपर गुस्से मे आकर मैंने अुनके सिरपर तसला अुठाकर दे मारा अिस लिये मुझे दो दफा कोडे खाने पड गये! और दो जेलरो को मैंने अुनकी मर्जी के मुआफिक पैसो की घूस नही दी अिस वास्ते मुझे कोटे खाने पडे!"

घूस खाने की वात वातचीतके दौरान में निकलते ही सार्जेंट साहव के पेट मे गोला अुठा! किसे मालूम यह वाप्कल आरोपी अुसके अपने वारे मे कुछ बोल वैठे तो! क्योकि गुजिश्ता दस-पद्रह दिनो मे सार्जेटको भी चालीस पचास रुपये अुस आरोपीने खिलाये थे! हाथघडी (रिस्टवाच) देखनेमे गढे हुअे की तरह दिखाकर सार्जेटने रफिअुद्दीनके अुस वाक्य की ओर दुर्लक्ष किया। वेल होगअी अैसा जेलरको सुझाकर अुस सारी टोली को जेलर के हाथो यथा रीति सुपुर्द करके सार्जेंट कैदखाने के फाटक से वाहर निकल गया।

तत्काल अुन डाकुओ की टोली को फोडकर निराली निराली कोठ-डियो में अुन्हे वदकर दिया गया। अुनमें से दो तीन के चेहरेपर चिता की भयानक छाया पसरी हुअी थी। अेक शख्स—अुसका नाम किशन था—तो वुरी तरह पश्चात्तप्त दिखाअी देता था। वाकी के सारे कैदघर मे भी नाच-घरकी तरह निश्चित, निडर और पकेहुअे खुर्राटो की तरह वरताव करते थे। सवमे ज्यादह निडर और खुर्राटे था वह योगानद-अर्थात् रफीअुद्दीन अहमद!

अुसे फाँसी की तनहाअी मे खास वदोवस्त के साथ रखा गया था। अर्थात् अुसके कमरे के पास जमादार और शिवराम हवालदार को छोडकर और कोअी भी नहीं जा सकता था। पर अिसी वजह से वह सवसे ज्यादह चैनमे था। जैसी कि अुम्मीद थी—शिवराम के हस्तकों द्वारा अुस डाकूके जो कुछ अैसे साथी अभी तक लुके छिपे अिलाहावादमें रहते थे जिन्हे

पकडा नहीं गया था, अुनके पास अुस कैदघर के रफिअुद्दीन की छुपी छुपी चिट्ठियाँ जाने लगी और खूब 'हलदी' अुस कैदखाने में जाने आने लगी। थोडी अफीम, खूब तमाखू और बीच बीचमे मिठाअी रफीअुद्दीनकी अुस अकेली कोठडी में गुप्त रूपसे पहुँचने लगी और अप्रत्यक्ष रूपसे अुसकी पीली धमक सोनेकी गिन्नियाँ जमादार, दादा और जेलर के खीसेमे पडने लगी।

योगानद के स्वरूपमें विद्यमान जटा, दाढी, मूछे सब अुतर चुकी थीं और रफिअुद्दिन अब अेक छँटा हुआ बदमाश मसलमान बना हुआ था। अुसे योगानदके भेसमे और भजनमें तल्लीन जिन लोगो ने देखा था, अुन्हे वह अेक डाकू मुसलमान है, यह सपने में भी सत्य नही प्रतीत हो सकता था और अुसी तरह अुसको जिन्होने फाँसी की अिस तनहाअी में पक्के मुसलमान डाकूकी शक्लमे देखा है, वे अिसबात पर यकीन किसी हालतमें भी नहीं कर सकेंगे कि अेक बार अुसने अेक साधुका भेस बनाकर हजारो लोगो को झुलाया और भुलाया है। तबभी अुसमें योगानद का अेक लक्षण बाकी था—सुख-दु:खे समेकृत्वा तुल्यनिंदा स्तुतिस्त्वका—। जब कोअी अुससे पूछता कि, अब तुझे भयानक सजा होनेवाली है, अिसका भय या चिता नही मालूम देती तुझे ? तो वह हमेशा की तरह अपने ओठोको मोडकर और भौंह चढाकर अदर ही अदर हँस देता।

"अुसमे फिक्र और परेशानी कैसी ? फाँसी तो मुझे होती नही—कालेपानी की अुम्र कैद हुअे बिना रहेगी नही।—और हमको कालापानीमें तो जो पुण्य और मजा आती है वह तुम्हारे काशीजी मे भी नहि मिल सकती। मक्काजी मे भी नहि मिल सकती। हम लोगो की कालापानी हि काशी जी है।"

"पर तुझे फाँसी होगी ही नही यह किस बूतेपर ? भयकर क्रूरता से कितनो को तूने जानसे मारा है—लडको लडकियो के गले काटे है—अैसे राक्षसी आरोप तेरे अूपर है। तुझे फाँसी होगी अैसा खुद जेलर साहब कहते हैं।" अैसा कभी शिवराम अुसे टोक बैठता तो वह हँसता।

"अरे, जेलर क्या जनता है। छप्पन भाषा, छप्पन भेस, छप्पन कैदखानो का पानी पिये हुअे मुझजैसे डाकू को—प्रमाणो का, सजाका, अपराधो का, कायदेकानूनका जितना अनुभव से प्राप्त ज्ञान रहता है, अुतना अैसे

जेलरोको तो क्या, बडे बडे जजो तक को नही रहता। अुस ज्ञान के जोरपर हम जो डाके डालते है—वे कायदे से डालते है। जिन्हें हम जान से मार डालते हैं, अुन्हें भी अिस ढग से नही मारते जिससे हमें फाँसी की सजा होजाय। हम अितने गदहे नही है। बाबा, तुम हिंदू लोगो की गीता भी मैंने पढी है 'हत्वाऽपि स अिमाल्लोकान् न हन्ति न निबध्यते' अिसी को कहते हैं, 'योग कर्मसु कौशलम्!'

हिंदू अफसरो के सामने वह अिस किस्मके सस्कृत के श्लोक बोलता और भजन गाता कि अुन वे दोको यह लगता कि वह सचमुच कोअी अतर्ज्ञानी अवधूत है और अिस तरह कैदखाने में हिंदू सिपाही वगैरो की भी अुसको सहानुभति मिलती।

मुसलमान अफसरो के सामने अूटपटाग बाते करते समय कुरान की दसपाँच आयते पढकर सुनाता और बची खुची दाढी पर दस मर्तबा हाथ फेर कर दिनभर निमाजही पढता रहता और कहता,

"देखो, मैंने जोभी डाके डाले, जो लडकियाँ भगाअी, जिनके हाथपैर तोड डाले-और तुडा डाले, जानें ली, लूटमार की, वे सब काफिर हिंद थे। अीमानदारो (मुसलमानो) के बाल को भी धक्का नही लगाया। अल्ला रहीम है! काफिरो को सजा देने की वजह से मेरे अूपर वह मेहरबानी ही करेगा!"

"बिल्कुल!" वह मुसलमान जमादार कहता और तल का पता न लगनेवाली पुरानी अँधेरी बावडी मे जैसे झाँकते है अुसी प्रकार वह भी अुसकी आँखो मे आँखे डालकर अपने मनमे बोलता,

"यह कोअी न कोअी औलिया, कोअी न कोअी खुदाअी खिदमतगार है, सचमुच!"

जेलमें पक्के चोर-डाकुओ मे जो जो मुसलमान रहते है अुनमे से सिंधी बलूची, पठान, पजाबी अपराधी तो अपने खून, चोरियो और डाको का समर्थन अिसी युक्ति परपरा से करते हैं।

"हमतो केवल काफिर हिंदू को हि मारते है! लूटते है!"

और अुनके वे पापकृत्य भी पुण्यकृत्यो के सदृश प्रतीत होते अेव कितनेही धर्मांध मुसलमान सिपाहियो और जमादारो को अुनके विषय में सहानुभूति प्रतीत होने लगती। अैसे सैकडो अुदाहरण देखने और सुनने का अवसर

स्वत हमको भी प्राप्त हुआ है। अिस विषयमें अपवादस्वरूप बगाली तथा मराठी मुसलमान अुतने धर्मांध नही होते, अितनी बात थोडी सी अच्छी है। डाकुओ में से अुत्तरदेशस्थ मुसलमानो का अिमीलिये दक्षिणदेश के मुसल्मानो पर ज्यादा भरोसा नही रहता है।

अिस योगानद अर्थात् रफिअुद्दीनकी टोली मे भी अतमे वही अनुभव आया। अुनमे से जो आरोपी कारागारमें पैर रखते ही घबरा गये और डर गये—अैसा हमने अूपर लिखा है—अुनमे से हसनभाअी नामका महाराष्ट्रीय मुसलमान और पश्चात्तापदग्ध किसन—अिन दोनो ने पुलिस वालो को अुस टोली के बारे में बहुत सी जानकारी दी और अपने अपराध स्वीकार किये। अुनकी अिस स्वीकारोक्ति से पुलिसद्वारा अेकत्र किये गये स्वतत्र प्रमाणो मे महत्त्वपूर्ण सहायता हुअी। सरकार ने अुनपर अभियोग चलाया तथा अुसकी निश्चित की गयी तारीख की रफिउद्दीन प्रभृति सब आरोपियो को अित्तिला दी गअी।

अभियोग के दिन, जिस तरह 'वर' सजधज कर तय्यार होता है, अुसी तरह रफिअुद्दीन ने भी अपनी सजावट की और पैरो की बेडियो को बडी अदा के साथ खनखनाते हुअे सिपाहियो के सगीनो के पहरे मे कारागृहके दरवाजे से बाहर हँसते और खिलखिलाते हुअे निकला। अुसको अैसा लग रहा था कि सारा त्रिभुवन अुसको अिस भावनाके साथ देख रहा है कि "यही है वह पराक्रमी पुरुष जो कालेपानी पर से भाग कर आया है।" और अिस समय अुसके दिमाग मे यही आरहा था कि, अैसी कौनसी चाल चली जाय जिससे जजको भी हँसा हँसा कर बिलकुल ठडा करदिया जाय। अपने भयकर क्रूर कृत्यो की कथा सुनकर किन्ही लोगो के शरीरपर काटे खडे हो जायेंगे, अपने को कुछ लोग राक्षस कह कर मुँह पर थूकेंगे, अिस बात की धुकधुकी अुसके मन मे भी नही पैदा हो रही थी स्मशानवर्ती धर्मशाला मे पडे हुअे मुर्दो को देखकर, लोगो के रोनेधोने को सुनकर तथा चितापर जलते हुअे मुर्दो को निहारकर जिस तरह स्मशान के चौकीदार को स्मशान की भीति नही मालूम पडती अुसी तरह अिस खुर्राट डाकूको भी न्यायालय, प्रमाण, सजा, बेडियाँ, कैदखाना, अुम्रकैद, कालापानी अित्यादि सब बातो का अितना अधिक अभ्यास हो गया था कि, अुसको अुन चीजो से कुछ भी डर नही

मालूम होता था। शैतान की ही भाति अुसने भी अपने मन से यही स्वीकार किया हुआ था—"Oh Evil ! Thou be my Good"

अुसका मन राक्षसी अेव मानुषी वृत्तियो का अेक अविभक्त कुटुब था। जैसे वह राजमहल मे नीरो वैसा ही यह काले पानी मे रफिअुद्दीन।

अुसे यदि किसी बातका डर था तो, जैसे नीरो को मौत का था वैसेही फाँसी का !—और यदि किसी से लगाव था, मायाममता थी तो अेक अफीम की और दूसरी स्त्री की !

न्यायालय मे जाते जाते भी अुसके मनमे अेक दो मर्तबा घबराहट पैदा हुअी कि—किसे मालूम फाँसी ही हो गअी तो ! और अेक दो मर्तबा वह क्रूर भी व्याकुल होकर मन मे भर आया—

"मालती ! हाय हाय ! अब फिर कैसे फँसेगी वह लडकी मेरी मजबूत मुट्ठियो मे !!"

अरे राक्षस ! क्या कर डाला यह ? : : : ६

कोर्ट में अुस भयकर डाकू का अभियोग पूरी बहार मे आया हुआ था। वकील, अुनके मुहर्रिर, सिपाहियो का सशस्त्र जमघट, पखेवाले, अैसे डाकुओं के अभियोग देखने की विशेष अभिरुचि रखनेवाले बहुत से सभ्य गृहस्थ, कुछ गुडे, वगैरह वगैरह की खासी भीड जमा थी। अुस क्रूर नरपशु की नृशस कथाओं को सुनकर न्यायासन पर बैठे हुअे परिपक्व जजके हृदय को भी चोट लगती थी। पक्षपातशून्यता को भी असवाय क्रोध आता था। गुडो के शरीरपर भी काटा खडा हो जाता था। नृशस अेव क्रूर श्वापदो को मनुष्य अपनी बस्तियो से निकालकर जगलो मे हँकाल देने मे समर्थ हो सका, किंतु मनुष्य के मन के अदर जो श्वापद आज भी घूम फिर रहे हैं अुनको मनुष्य निकाल कर बाहर नही कर सका। मनके अतर्वर्ती भूमिगृहो के द्वार जब खुल-जाते हैं तब ये श्वापद बुरी तरह भगदड मचाने लग जाते हैं—अुस समय अुन्हे

काबू करना मुश्किल हो जाता है। जिसे हम मनुष्यता के नाम से पुकारते हैं वह अेक 'क्वेटा नामक सुशोभित नगरी है अैसा समझिये। अुसी के नीचे सदा खौलते रहने वाले भूकपीय राक्षसता के थर के थर जमे हुअे होते हैं! केवल दया-दाक्षिण्य, मायाममता, न्यायान्याय के ही आधारपर मनुष्यता खडी है और वह अविचल है, अिस भ्रम मे पडा हुआ जो व्यक्ति असावधान हो सोता रहता है, वह अेकाअेक अप्रत्याशित रूप से विनष्ट हो जाता है! अिसी प्रकार राष्ट्र के राष्ट्र लौट पौट हो जाते है!

रफिअुद्दीन भी अेक मनुष्य ही था, क्यो कि वह हँसा करता था! कितनेही प्राणिशास्त्रज्ञोंका मत है कि अितर प्राणियो से मनुष्य भिन्न है, अिस बात को प्रदर्शित करनेवाला मुख्य वैशिष्ट्य अुसका हँसना है। मनुष्य ही सिर्फ हँसा करता है! यह अभियोग जिनके सामने चल रहा था, वे न्याय-मूर्ति ऑकलैंड साहब, अिस अघोरी आरोपी की तरफ सिर्फ अपराधी की निगाहो से ही नही देख रहे थे। जिस प्रकार वैद्य रोगियो की परीक्षा करता है, किंवा मांत्रिक सर्पों के विष की परीक्षा करता है, अुसी प्रकार से वे अेतादृश अघोरी पापियो के स्वभावविशेष की परीक्षा किया करते थे। अपराधविज्ञान भी मनोविज्ञानही का अेक भाग है, अैसी अुनकी धारणा थी। अिसी लिये वे प्रमाणो के साथ साथ अघोरी किंवा विक्षिप्त अपराधियो के मनोविकारो की, चेहरे की, भाषण की, हालचाल की, मन ही मन छानबीन करने मे लगे रहते थे। और वह छानबीन हो सके, अिसी अुद्देश्य मे अपराधियो को आरोपी के कठघरे में रहते समय भी योग्य परिमाण मे स्वाभाविक रूपसे बोलने चालने और हँसने-रोनेकी छूट दिया करते थे। अुनमे अपने आप बातचीत शुरू करके अुन्हे बोलने लगाते थे। जिस सकट के यत्रपाशमें आबद्ध होते ही बडे बडे दुर्जन भी थर थर काँपने लग जाते है, लजा-सकुचा जाते है, अुस सकट मे भी रफिअुद्दीनको निश्चिन्त, निर्लज्ज, नि सकोच अेव हँसते हुअे देखकर न्या मू ऑकलैंड साहब को लगता था कि, अिसे अेकबार शेक-स्पियर ने देखा होता तो अच्छा होता। शेक्स्पियर ने अेक दुष्ट घातकी और गूढकृत्यकारी मनुष्य का, अेक पात्र के मुँह से, यह लक्षण कहलवाया है कि, 'He seldom laughs' अर्थात् अुसे शायद ही कभी हँसी आती है! वह लक्षण कभी कभी कितना अप्रमाणित सिद्ध होता है, यह भी

अुसने किसी अन्य अवसर पर, किसी दूसरे पात्र के मुँहसे, कहलवाया होता! रफिअुद्दीन जितना क्रूर था, अुतना ही वह विनोदी था, अेव जितना वह दुर्वृत्त था अुतना ही वह प्रियदर्शन भी था। न्या मू. ऑकलेंड मनही में कहते, अिसने अेक महाकवि के अुपरिनिर्दिष्ट सूक्त ही को नही प्रत्युत दूसरे महाकवि के 'नह्याकृति स्वसदृश विजहाति वृत्तम्' अिस कालिदासीय सूक्तको भी वितथ कर डाला है! सुदर मनुष्य सद्वृत्त होता है-अैसा कोअी नियम नही है। अितना ही नही, अुसके दुर्वृत्त से भी अुसकी सुदरता कभी कभी अधिक विषैली सावित होती है। गुलावो के सघन पुष्पावृत क्षुपसमूहो के आवरण के पीछे कपट का परभाग भी वही विद्यमान है, यह वह अवगत तक होने नही देती।

पुलिसवालोने अुस डाकुओ की टोलीद्वारा किये गये नृशस क्रौर्यपूर्ण अत्याचारो की कथा परिपूर्ण-प्रमाण-पुरस्सर अुनके समक्ष अुपस्थित की। अुन प्रमाणो में जो अेक महत्त्वपूर्ण किंतु अप्रत्यक्ष प्रमाण रफिअुद्दीन की टोली के, क्षमाका साक्षीदार वने हुअे हसनभाअी नाम के आरोपी ने अुपस्थित किया था—अुसकी अुस स्वीकारोक्ति मे से यदि छाँटकर अेक सक्षिप्त सा आशय हम यहाँ लिखे, तो पाठको को रफिअुद्दीन के क्रूर कार्यो की रूपरेखा का परिचय पर्याप्त रूपमें मिल जायगा, अैसा हमें विश्वास है। पुलिस के स्वतत्र प्रमाणोद्वारा समर्थित अुस स्वीकारोक्ति के अदर आया हुआ वह आशय निम्न प्रकार है।—

"मेरा नाम हसनभाअी। मै हाअीस्कूलपर्यंत पढा हूँ। क्लार्क था। आगे चलकर जुअे के व्यसन मे फँसकर चोरी करने लगा। मेरा असली गाव खानदेशमें। रफिअुद्दीन के साथ अुसके काले पानी जाने से पहले ही से मेरी जानपहचान। पजाव और लखनअूकी ओर लूटमार करके लाअी हुअी कुछ सपत्ति वह मेरे घर में लाकर रखा करता था। अिसी लिये वह मुझ प्रत्यक्ष डाका डालने के लिये अपने साथ कभी नही ले जाता था। और मेरी ओर पुलिस का ध्यान आकृष्ट न हो अिस विचार से वह मेरे पास खुले तौरपर कभी नही आता था। आगे चलकर अुसे सजा हुअी और वह काले-पानी भेज दिया गया। अिस तरह अुसका और मेरा सवध विलकुल टूट गया। कुछ वरसो के वाद जव वह अचानक मेरे दरवाजे पर आकर खडा हुआ—तो मुझे अैसा लगा जैसे किसी मरे हुअे आदमी को जिंदा हुआ देखकर लगा करता

है। काले पानी में गया हुआ मनुष्य जिंदा लौट कर आसकता है, अिस बात की कल्पना तक नहीं थी मुझे। अुसने कहा कि वह मत्र के बल से अदृश्य होकर, समुद्रपर से पैरो पैरो चलते हुअे आया है। अुसने मत्रद्वारा अभिमन्त्रित अेक तावीत भी मुझे दिखलाया। मेरे पास अुसकी जो पीछे की ३-४ हजार की धरोहर थी वह मुझे बक्षीस के तौर पर दे दी है, अैसा आश्वासन भी अुसने मुझे दिया। अुस अुसके शर्करासमुत्पादक वाक्यविन्याम का मुझपर अद्भुत परिणामहुआ। मुझे वह अेक अद्भुत मान्त्रिक और अनिर्वचनीय साहसी पुरुष प्रतीत होने लगा। और वह जो कहता अुसे करने के लिय मैं फिर तय्यार होगया। सिंध और पंजाब की ओर मुसलमानी धर्मके प्रचार के हेतु से मैंने अेक बडी भारी सस्था स्थापित की है, वह अेक प्रकार का धर्मयुद्ध-जिहाद—है, अुसकी सहायता करना प्रत्येक मुसलमान का कर्तव्य है, अैसा अुसका कथन भी मुझे अुस समय सत्य ही प्रतीत हुआ। मुसलमान बनाने के लिये खानदेश में जो भी हिंदू लडके-लडकियाँ मिले, अुन्हे बहकाकर अुसके सुपुर्द करना—अुसकी जो चीजें और द्रव्य छिपाने के हो अुन्हें पूर्ववत छिपाना, वह जब बुलाये तब अुस के पास जाना—अिस सब के लिये जो खर्च पडेगा वह खर्च तथा अूपर से सौ रुपये मासिक वह मुझे देगा—अैसा अुसका और मेरा अिकरार हुआ।

"अुसका यह अब का काम मैंने न सुना तो पिछली धरोहर के लिये यह क्रूरकर्मा मेरी जान लिये बिना न छोडेगा अिस बातकी भीति मुझे थी, पहले पहल मैं डरते डरते ही अिस टोली की सहायता करता था। पर अिसकी डाकेजनीकी बाते सुन कर आगे चल कर मैं भी आदमियो को अिकट्ठा करके छोटे मोटे डाके डालने लगा। कारखानो में से धर्मशालाओ मे से और स्टेशन-पर अच्छी अच्छी हिंदू लडकियो के अुडाने में तो मेरी टोली अितनी अुस्ताद हो गअी थी— कि, जिनके पेट के बच्चो को हम अुडाते थे अुनका रोनाधोना सुनकर हमें अेक प्रकार का मनोविनोद ही प्रतीत होता था। अुस वजह से रफिअुद्दीन मुझपर सदा प्रसन्न रहा करता था। अुन लडकियो को दूर-सिंध बलूचिस्तान तक लेजाकर असकी टोली या तो मुसलमानो को बेच देती थी या फिर आपमही में बाट लेती थी। बडे बडे मौलवी भी हमारे अिन दुष्ट कृत्यो को परदेके पीछे से 'धर्मकृत्य' का नाम देकर बखाना करते थे। अुसकी

वजह से तो हमारी अुस नीच विषयवासना को और धनलोभ को अेक प्रकार का धर्मोन्मादका अुत्साह और शिष्टत्व प्राप्त होने लगा, जिसके कारण हमारे मन की लज्जा भी दूर हो गअी और जनकी लज्जा भी। डर यदि किसी बात का था तो सिर्फ सरकारी सजा का ! वह भी खास कर अंग्रेज या कठोर हिंदू पोलीस अफसरो का।

"हम दक्षिणी मुसलमानो को अुत्तर की तरफ के ये पठान, बलची डाकू अविश्वसनीय समझते थे। हमारा भेस, भाषा, चालढाल सब हिंदुओ जैसे, हमारे हाथ से क्रूर कृत्य अुतने झपाट्टे से घटित नही होते। अत वे हमको डरपोक और 'आधे काफिर' समझते थे। अपनी डाकेजनी में हमें प्रत्यक्ष भाग नही लेने देते थे। पर बिहार में अेकदफा अिस टोली की अेक डाके के मामले में धरपकड होगयी, तब रफिअुद्दीन कुछ लोगो के साथ छूटकर खानदेश चला आया और मेरी टोली को अुसकी टोली में मिलना लाजमी होगया। वह तब से हिंदू गोस्वामियो के भेसमें फिरने लगा। वह पक्का बहुरूपिया है। अंग्रेजी, सस्कृत, बगाली, मराठी, जिसकी जरूरत पड जाय, थोडा थोडा याद कर लेता है। गाता है नाचता है, लावनियाँ और भजन तो वह अैसा रग कर बोलता है कि कहना क्या ! योगानद के स्वाग में तो अुसने हजारो हिंदुओं को धोखेमें डाल दिया। अुसे सिर्फ दसपाच भजनही आते हैं, किसी किस्म का शास्त्र वगैरह कुछ नही आता। अिसी लिये वह मौन का ढोग रचता था और केवल भजनही गाता था। पाच पचास सस्कृत के श्लोक अुसे पाठ थे पर वह अुन्हे अिस ढग से थोडा बोल कर चुप हो जाता था, ताकि लोगो को अैसा प्रतीत हो कि अखड विद्वत्ता होने पर भी वह अत्यत विनयशील है ! अुसके योगानद वेष का हमे बहुत अधिक अुपयोग हुआ। हजारो रुपये न मागते हुअे हिंदू लोग हमे दे जाते थे। यह खुद किसीको भी हाथ नही लगाता था। परतु जो लोग कुछ भेट जबदस्ती रख जाते थे, अुन्हे हम लोग अेकत्र करते और अुसे अिसके साथ साथ हम सब आपसमें बाँट लिया करते। भजन के समय होनेवाली भीड मे हम ने कुछ नही तो कमसे कम सौ सवासौ हिंदू लडकियाँ, अिस बरस डेढ बरस के दरमियान भगा कर गुलाम हुसेन नामके बलूची के हाथो अुत्तर की ओर भिजवाअी होंगी ! अुस प्रत्येक शिकार के पीछे हमे स्वतत्र 'बख्शीश' मिला करती थी। मुसलमानो को न लूटने

का यह जो वहाना वनाता था, वह कितना खोटा है, यह हमे तव मालूम पडा जव कि वह हमारी टोली मे आकर मिला। किमी मुसलमान को लूटना हो तो वह अुसे 'काफिरो का दोस्त' कहकर गाली देता और अपनी सौगध से मुक्त हो जाता। हमे भी अुसका यह सुगम शास्त्र दिलसे पसद आता था। यह जितना ही क्रूर है, अुतना ही विनोदी भी है। परतु वहुरूपियापनमें यह अितना अधिक निष्णात है कि अिसका मूल स्वभाव विनोदी है या क्रूर है, यह वताना मेरे लिये भी दु शक है। पागलपन के स्वाग के लिये भी अिसका यह विनोदी प्रकार वहुत अुपकारक होता है। वह चाहे कुछ हो, अितना मात्र सत्य है कि जव वह अत्यत क्रूर कृत्य करता है, तभी विनोद के अुच्चाक पर पहुँचता है।

"अिस की क्रूरता से मुझे नफरत होने की दो घटनाअें हैं, वे मैंने अपनी आँखो मे देखी है, अत अुन्हे यहाँ प्रमाण के रूप मे अुपस्थित करता हूँ। खानदेशके जिस मुसलमान डाक्टर के घर डाले गये डाके का हमपर अिस अभियोग मे आरोप है, अुसमे मैं भी था। हम ज्योही दरवाजा तोडकर अदर घुसे त्योही वहाँ से भागकर अूपर की मजिलपर जाने की कोशिश करते हुअे डॉक्टर रहमान के पैरपर अिसने कुल्हाडी का वार किया। पैर का टुकडा गिर पडा और, डॉक्टर वही मर गया पर तोभी कुल्हाडी चलाने के निर्भर आनद मे जोर जोरसे हँसते हुअे—मेरे मना करने पर भी—अुस डॉक्टर की वोटी वोटी अुडा डाली। अितने मे पलग के नीचे छिपे हुअे अुसके दो वच्चे दिखाअी दिये। वे चुप थे। मै करुणा-भाव से वोला, "रहने दो अुन्हे, डरके मारे वे चुप, अर्धमृत तथा अचेत पडे हुअे है।'

"वह कहने लगा, 'वेसुध हालत मे सभी आँखे मूंद कर चुप रहते है। सुध आजाने पर अेकदम वाणी वाचाल हो अुठती है और आँखे खुलजाती हैं। और तव कोर्ट मे डाकू कौन है, यह येही खुली हुअी आखें और वाचाल वाणी पहचान लेगी और तव हमारे गलो के चारो ओर रस्सी वाँधने मे मदद करेगी। अैसा कह कर अिसने अुसी कुल्हाडी के अेक प्रहार ही में अुन वच्चो में से प्रत्येक को दो-दो टुकडो मे विभक्त करदिया। अुस अघोरी कृत्य को देखतेही मुझे वेहोशी आने लगी। पर अुस डाके मे हमारे हाथ पडी हुअी

दस हजार की लूट ने मेरी अुस वेहोशी को कुछ कम कर दिया और मेरा मन पूर्ववत् अुसी अुन्मार्गपर चलता रहा।

"दूसरी जो दुष्ट घटना मैंने अपनी आँखो से देखी, वहतो अिस घटना की क्रूरता को भी फीका कर देती है। रफिअुद्दीन हमसे हमेशा अपनी शान वघारते हुअे कहा करता था कि, अव वह अेक वरस के लिये अेक सुरेख स्त्री को अपने नजदीक रखता है। वरस खत्म हुआ कि अुसे जान से मार डालता है, और दूसरी औरत ले आता है। सारे लोग जिस तरह अपने सत्कृत्यो को वढा चढा कर कहते हैं, अुसी तरह यह विक्षिप्त अपने दुष्कृत्यो को वढा-चढाकर वडी शान वघारते हुअे कहा करता था। अत अुसके अिस प्रतिज्ञा-वाक्य मे कितना सार है, यह मै ठीक ठीक कह नही सकता। पर जव यह खानदेशमे भागकर आया था, अुस समय मात्र अुसके साथ विहार से भगाकर लाअी गअी अेक हिंदू कायस्थ की तरुण कन्यका थी जरूर! वह अिसके कडे पहरे मे रहा करती थी। अुसके अूपर अिसका अैसा कुछ विषयाव प्रेम था कि, अुसे देखकर अैसा लगता मानो, दुनियाँ मे, अिस जैसा कोअी भी प्रणय-मुग्ध स्वभाव का आदमी नही होगा। यो देखने पर, यह हमारी टोली के सहचारियो के साथ भी जव तक रहती तवतक अच्छी मैत्री वनाये रहता था। यह अुस तरुण रमणीपर भले ही लुव्ध था, किंतु वह मात्र झुलसती चली जा रही थी। कभी कभी तो वह अपने प्राणो का मोह भी छोड वैठती थी। अेक वार रफिअुद्दीनने देखा, वह देवताके समक्ष हिंदूधर्म की पद्धति से हाथ जोड कर प्रार्थना कर रही थी। रफिअुद्दीनने अत्यत लाडसे अुसके सिरपर हाथ फेरते हुअे पूछा,

"'क्या हो, अिस भावना से तू अुस पत्थर के देवता से प्रार्थना कर रही है।

"वह अेकदम चिढकर वोली, 'तुझे फाँसी हो अिस भावना से!'

"फाँसी यह शब्द सुनते ही वह साँपकी तरह गुस्से मे गया आ। जोश का झटका वैठते ही वह हँसा करता है, अुसी तरह वह हँसा और वोला,

"'सचमुच अिसका वरस पूरा होने को आ रहा है, है न?'

"अुस दिन अुसने मुझसे कहा, 'मै आज शाम को तुझे अेक तमाशा दिखाअूगा नदी के किनारे। जगली टीले के अुस वुर्जपर जाकर वैठ!'

"साझ के समय मै अुस जगल के अदर टीले के सबसे अूंचे तुर्जपर जाकर बैठ गया। बरसात की बौछार पर बौछार आरही थी। नदी बाढ के कारण दोनो कछार भर के वह रही थी। अुस वीरान पडे हुअे टीले के बुर्ज तक नदी का पानी चढ आने का मतलब होता था नदी के अदर बाढ का आजाना। अुस किस्मकी भयानक बाढ अुस नदी मे आअी हुअी थी।

"थोडीही देरमें रफिअुद्दीन अपनी अुस सुस्वरूप तरुणी को लेकर वहाँ आया। असका बुरका निकालकर हिंदू तरुणी के सदृश कधेपर पल्लव डाले, बाढ का मजा दिखलाने के लिये बिलकुल अुन्मुक्त स्वरूपमे आज वह अुसे वहाँ ले आया था। बहुत दिनो के पश्चात मुखपरका आच्छादन हटा था—श्वासोच्छ्वास के लिये शुद्ध मुक्त वायु अुसे प्राप्त हो रही थी अत वह कुछ चित्तमें प्रसन्नसी दीखती थी। रफिअुद्दीन मीठी मीठी लाड चाव की बातो से ही अुसकी आराधना कर रहा था। मेरे सामने, अुसको बुरके से बाहर अिस तरह अेकात में ले आना यह अेक कुतूहल ही की बात थी। तिसपर भी जब वह अत्यत विपयोन्मत्त की तरह से अेकदम अुसको अपने से चिपटाने लगा तब मुझे यही नही सूझता था कि क्या कहू और क्या करू? सचमुच अुस सुदर तरुणी से अुसी प्रकार आलिगन करनेकी अिच्छा मेरे भी मन में प्रबल हो अुठी।

"रफिअुद्दीन के फदे से वह छुटने का प्रयत्न कर रही थी—तो भी जबरदस्ती अुसको भुजाओ में भर अुसने अूपर अुठा लिया—और छोटी बच्ची की तरह अुसको दोनो हाथो मे तिरछा लेकर 'मेरी—मेरी यह लाडली' अैसा कह कर अुसे थोडासा झुलाया—झटमे खीचकर अुसकी साडी भी खोल डाली और वह कामोन्मत्त मुझसे अत्यत निर्लज्जतापूर्वक कहने लगा,

"देख ले—देखले, अिस परी को पेटभर कर देख ले!!'

"यह विपयाध अिस विकृत मनोवस्थामे अुसके साथ क्या करनेवाला है, यह सोच कामावेश से थरथराता हुआ मैं भी आँख भरकर अुसकी ओर देख ही रहा था कि—

"अुतने ही मे!

"किसी अेक पत्थर को अुठाकर जिस तरह हम भिरका (=फेंक) देते है, अुसी प्रकार के सावेश बलसे अुसने अुस सुदर लडकी को अुस बुर्ज

पर से, अुस नदी की भीषण बाढ में दूर फेंक दिया ! ! 'बरस पूरा होगया अुसका' अैसा कह कर वह जोर से ठहाका मार कर हँसा ।

"राक्षसके बच्चे ! ' मैं अेकदम चिल्लाया !

"'पहले वह तमाशा तो देख ! यही तमाशा दिखाने के लिये तो तुझे यहाँ बुला कर लाया था ! '

"दो बार वह निरपराध सुदरी लहरो के अूपर आअी । दो बार लहरो के साथ नीचे गअी । अुस बाढ के प्रवाह के मध्यमें अेक चट्टान अूपर सिर निकाले खडी थी । अेक प्रचड लहर अुसी ओर को मुडी, अुसमे अुलझी हुअी वह तरुणी और अुसकी गुलाबी साडी स्पष्ट दिखाअी दी ।

"अूँचे टँगे गये काचो के झूमर के अकस्मात् टूटकर नीचे गिर पडने से जिस प्रकार अुसके काच के ठीकरे-ठीकरे अुड जाते है और तदन्तर्वर्ती ज्योति की चिनगारियाँ अुच्छिन्न होकर बुझ जाती है, तद्वत् वह प्रचड लहर अुस चट्टान पर टकरा कर, जलौघ के ठीकरो के रूपमे परिणत होगअी और अुस अत्यत अनागस काचनगौर तरुणी के माथे के टुकडे-टुकडे खिल गये और अुस की पाचो प्राण-ज्योतियाँ अेकदम निर्वाण हो गअी ! वह पुन जलपृष्ठपर नही आअी !

"'राक्षस के पडपोते, क्या कर डाला यह तूने, मरण के आवर्त में क्यो ढकेल दिया अुसको ? ' मैं शोकत्वेष से चिहुँक अुठा !

"'मरण के नही, पगले, अुसके बारे में बोलना हो तो अुसी की जबान मे बोल ! अुसकी सस्कृत भाषामें पानी को मरण नही कहते ! पानी को जीवन कहते हैं ! ! मैंने अुसे जीवन के महापूर मे फेंक दिया है, वह हँसा !

"'वह आज मर न गअी होती तो कल अुसने जाकर सी आअी डियो को मेरा पता बतला दिया होता ! है किस ख्याल में तू ? '

"महाराज, मैं अिसके समान अुलटे कलेजेका नही था तो भी पाप कृत्यो की चाट मुझे लगी हुअी थी । अुसमे भी, अलौकिक सत्कृत्यो के सदृश अलौकिक दुष्कृत्यो मे भी लोगो के मनो पर छाप डालनेकी अेक दु शक्ति रहती ही हैं । अुस छापके कारण अिसके भयकर दुष्कृत्यो का प्रभाव हमपरभी अुत्तरोत्तर बढना ही गया और अिसके योगानद के ढोग धतूरे की वजह से

हमारा वहुत कुछ म्वार्थ सिद्ध होता जाता था, अत हम अिसका साथ देते ही रहे ।

" तत्पश्चात् हम मथुरा आये । अिसने कर्ण पुत्तलिका के सदृश जलादश-नामक यत्रका अेक नया ढोग आरभ किया था । अस यत्रकी सहायता से यह भूतभविष्यद्वर्तमान की सारी वाते ठीक ठीक वतला देता है, अिस वारे में हमने लोगो मे वहुत अधिक अिसकी ख्याति व्याप्त करदी थी । कहीं भी जाने पर, हम लोग परदेशी, व्यापारी, डॉक्टर आदि का स्वाग रचकर-अलग-अलग गावो मे घूमते और योगानद ने अमुक चमत्कार हमारे सामने किया है, अिस वात का झूठ मूठ का प्रचार करते। यह देखकर कि कोअी-गृहस्थ अिससे भूतभविष्यत् की वाते पूछने आ रहा है, झटपट हममें से अेक आदमी—परकीय गृहस्थ वनकर अुसके सामने पहुँच जाता और अिससे-कुछ पूछता और जव यह अुसे कुछ जवाव देता तव,

" 'ओह क्या अचरज है! कितनी अद्भुत दैवी दृष्टि है! आप कहते हैं, सो अक्षर-अक्षर सही निकला! विलकुल-विनचूक सही सावित हुआ!' अैसी अिसकी 'वाह्-वाह' करके अेक वडी रकम जवर्दस्ती अिमके देवस्थानपर रख कर चला जाता! परिणामत जिनके सामने हम यह सव करते वे लोग भावुकता अेव अधश्रद्धा के जनपदविध्वसक रोग से अभिभूत होकर अिसको आदर की दृष्टि से देखने लग जाते! अुसकी झूठ सावित हुअी वातो को वैसेही छोड जो कोअी वात गोल अर्थ से या दैवयोग से सच सावित होती, हम लोग अुसी को लेकर गाँव-गाँव मे अिसके वारे में ढोल पीटते फिरते थे । मथुरा में भी हमारा यह पाखण्ड खूव फल लाया! वहाँ डॉ नायडू नामकी औरत हमारी भक्त वन गअी! वातचीत के दरमियान अुन्हो ने अपने परिचय की अेक नागपुर की तरफ की औरत तथा अुसकी अिक-लौती वेटी का जिक्र किया और अुन्हे वह मथुरा भी वुला लाअी है, यह वतलाया ।

"यह वृत्तात सुनकर अिस योगानद डाकूने अेकात मे ले जाकर मुझसे कहा,

" 'मै जव काले पानी में था, तव मेरे साथ अेक सजायाफ्ता फौजी कैदी रहा करता था । अन्य किसीभी आदमी को मेरे साथ रहने नही दिया जाता था, अत अुसके साथ मेरी घनिष्ठता वहुत वढगअी। अपने घरकी

सारी कहानी अुसने समय-समयपर मुझसे कह सुनाअी। डॉ नायडूवाअी जिसे लाने की बात कहकर गअी है, वह ही अुस कैदीकी मा और अुसकी नौजवान बहिन होनी चाहिये ! डॉ नायडू ने जो नाम-ग्राम-वृत्त बतलाया है वह अक्षर-अक्षर ठीक बैठता है। वही है ! वही है यह लडकी ! आगअी, मेरे हाथ मे आगअी ! लिपटा लिया देख, मैंने अुसको ! क्या बतलाया था अुसका नाम नायडूवाअीने ? माल-माल-मालती, हा रे हा, मालती ही !! हाय रे ! मालती ! अुसे मैंने दसबार अपनी सेजपर लिया है ! मालती ! मेरी मालती !

" 'अरे, कालेपानी मे था न तू अुस वक्त ?—अुसे सेजपर लेने की बात कर रहा है, सो क्या ख्वाब मे ? अुसके सिर्फ नामपर ही अितना लपट ' मै अुपहसने लगा। वह बोला।—

" हसन, किसी हिंस्र पशुको भूखा पिंजरे मे बद कर और मास दे ही मत ! और अेक रक्ताक्त अस्थिखड ही अुसके सामने फेंक कर देख, वह हिंस्र पशु किस तरह मटक मटक कर अुसको चाटता है ! ठीक अुसी तरह मनके पिंजरे मे जहाँ वर्षानुवर्ष कामविकार भूखा बद करके रखाजाता है, अुस काले पानी मे स्त्रीका जो नाम कानपर पडा, वह नाम अितना अधिक मनमे भर जाता है कि, अुस स्त्रीकी अेक मूर्ति बन जाती है, अुस काल्पनिक मूर्ति पर ही मन लपट हो अुठता है, वास्तव मे नही तो स्वप्न म ही अुसके साथ रममाण होता है ! हिंदू लोगो का अुषा का आख्यान तूने सुना है ? स्वप्न मे का प्रिय पुरुष अुसे प्रत्यक्ष दिखाअी देनेवाले पुरुष की अपेक्षा भी अधिक विव्हल करनेवाला हुआ ! वैसा ही मेरा भी हुआ। बारबार अुस अकेले कैदखाने के साथी के साथ बातचीत का मौका पडने के कारण और अुस बातचीत मे अिस अुपवर लडकी की ही बातचीत बारबार होने के कारण मेरी अुपोषित कामवासना पर अुस कल्पना की, अुस नामकी, जो अेक छाप बैठी वह अब दूसरी किसी भी प्रत्यक्ष स्त्रीकी बैठती नही ! और क्या तमाशा है देखो, अुस नामकी अुस स्त्री की वह कामातुर कल्पना ही अब प्रत्यक्षरूप से भोगने को मिलेगी ! बस, अुसे भगाना है ! '

" अुसको भगाने का निश्चय होते ही हमने हमेशा की युक्ति-योजना की। भजन समाप्त होकर जनसमर्द लौटने लगा। भीड मे जिस जगह

मालती अपनी माता के साथ चली जा रही थी, वहाँ हममें से दोचार आदमियों ने झूठमूठकी मारामारी शुरू की। अेकदम भीडमें हगामा मचने लगा। अुसमें मालती को अपनी मा से अलग कर लिया। योगानदजीके अेक शिष्यन अुसे घरतक पहुँचवाने के लिये अपने साथ ले लिया और सीघा गुलाम हुसेन के अड्डेपर लेजाकर छोड दिया। वह रात अिस दुष्टने मालती कीही बलात्कारित सेजपर व्यतीत की।

" दूसरे दिन अिस अपहरण की बात लोगो तक न फैलजावे अिस बुद्धि से हमने चाल चलकर मालती की मा को मीठी मीठी बातो में फुसलाकर दूर के अुलटेही रास्ते पर लगा दिया। अिस लुच्चे को मालती के भाअी का काले पानी में रहते समय से रगरूप आदि सारा वृत्त मालूम था। अुसीको अतर्दृष्टिका नाम दे कर अिसने अुसकी मा को कह सुनाया। जिस बातका ज्ञान अुसकी माको भी नही था,—अुस माथेपर के घावके चिन्ह को जलादर्श यत्र और अतर्ज्ञान का पाखड रचकर अिसने अुन्हें बतादिया। वे बिचारी अिसके अन्तर्ज्ञान के फदेमें फँस गअीं। यह देखतेही अिसने मालतीकी मासे कहा कि, मालती अपने अेक प्रियकर के साथ यहाँ से नागपुर की तरफ चली गअी है, अगर तुम बगैर हल्ला गुल्ला किये नागपुरकी तरफ चली जाओगी तो तुम्हे वहाँ मालती मिल सकेगी। अैसी भविष्यत् कथापर पूर्ण विश्वास करके वे बगैर पुलिस को अित्तिला दिये नागपुर की ओर रवाना हो गअी। हम भी अब मथुरा से पौबारह करना ही चाहते थे कि अकस्मात् अन्य अस्मदीय प्राक्तनकृतकर्मणाविपरिपाकवशात् हम लोगो की यह अवस्था होगअी। यह अिलाहाबाद का वारट छूटा और हम अुसके साथही पकड लिये गये। अुस गडबडी में वह राक्षस गुलाम हुसेन अुस अुपवर मालती को लेकर कहाँ चपत होगया अिसका सुगावा (= पता) मात्र अभीतक किसी को भी नही लगा है। अुस अत्यत निष्पाप, निरपराध, असहाय, कोमल कन्यका की क्या क्या विडबना हुअी होगी—दुर्गति हुअी होगी यह देव जाने ! "

न्याय-सयत होते हुअे भी अुस न्यायाधीश के ओठ गुस्सेके मारे अेक ओर फडकने लगे तो दूसरी ओर आँखो से करुणा का अुत्स भी प्रस्रवित होने लगा। श्रोताओ में भी अनेको के नेत्रयुग आर्द्र हो अुठे।

अेक और भी व्यक्ति थी जिसकी आँखे अश्रुओसे आच्छन्न हो रही थी। वह न्यायाधीश नही था, न्यायालय का श्रोता भी नही था, तब ?— वह था अुन आरोपी डाकुओ में से ही अेक आरोपी— पश्चात्तापनिर्दग्ध किशन ! !

वह दीखने मे कुरूप, वाणी का सयत, वय से तरुण मन से कोमल, चाल-चलन से रोबदार मालम पडता था। सारे अभियोग-प्रकरणमें वह गर्दन नीची किये वैठा रहता था। वह अव अपना वक्तव्य (Statement) देने के लिये जब अुठा तब गर्दन सीधी तानकर शातता के साथ अेक अेक शब्द चुनचुनकर अुपयोग मे लाता हुआ और मालती की अुपरिनिर्दिष्ट विडबना के अुल्लेख के समकाल ही आँखो मे आये हुअे अश्रुओ का परिमार्जन करते करते बोला—

" मै काशी में (निवास करनेवाला) वेदातविद्याका अेक अनाथ विद्यार्थी था। मेरे चित्तमें विरक्ति अुत्पन्न हुअी। मन मे आया, किसी गुरुके सान्निध्यमें जाकर भक्ति और योग की साधना की जावे। मै कुछ दिनो वाद जब मथुरा आया, अुन्ही दिनो योगानदस्वामी के भजनकीर्तन का तथा अन्तर्ज्ञान का वडा गाजावाजा (प्रोपेगडा) हुआ। विवेकहीनता के वशवर्ती हो मै अिसका शिष्य वन गया। मुझे सारगी अच्छी तरह आती है। भजन भी आता है। अिस लिये भजनमें मै अिसका साथ देने लगा। अेक अठवाडा भी वीता न होगा कि 'यह हिंदू है, नया है, अत अिसे दूर रखना चाहिये' अैसी अिस टोली के कुछ लोगो की खुसफुस मेरे कानो पर आअी। अिन लोगो का कोअी कपटनाटचप्रयोग चल रहा है, अैसी शका भी मेरे मनमे आअी। पर अिस योगानद नामधारी मनुष्य के प्रति मै गुरुदेव की भावना से देखता था और अुस समय अिसका कोअी पग अुन्मार्ग पर पडता हुआ दृष्टिगत नही हुआ था, अत अितर शिष्यो का दोष मैंने अिसके मत्थे नही मढा और नाही वुलाये वगैर कभी मैं अिनके मठ या वैटक मे गया। अुसके दो तीन दिनके वादही रात को भजनके वाद लोगो के लौटते वक्त गडवड हुअी और हो हल्ला मचा। अुस रातको योगानदने मुझे वुलाकर कहा,

"'मालती भीडकी गडवडी मे अपनी मा से विछुडगअी है, अुसे अुसके या नायडवाअी के घर सुरक्षित पहुँचवाना है। नायडूवाअी के साथ वह जब

भी कभी यहाँ आअी तब में तुझे ही अुनके साथ घरपर भेजा करता था, अत वह तुझपर विश्वास करती है, और यदि तू साथ रहे तो वह आज रात को ही मेरे मोटर ड्राअिवर के साथ मोटर में बैठकर वापिस जाना चाहती है। अत तू अुसे ले जा।'

"मैंने आनद से यह स्वीकार कर लिया। मालती से कुछ सान्त्वना के शब्द में कहने में तल्लीन होगया। अुतनेही मे मोटर मथुरा के किसी अपरिचित भाग मे घुसकर किसी अपरिचित घरके सामने जाकर खडी होगअी। मेरे पूछनेपर मोटर ड्राअिवरने कहा,

'नायडूवाअीने यहाँ अुतरने के लिये कहा है। वे अदरही हैं।'

"अैसा कहकर मालती को वह घरमें ले गया और तत्काल बाहर आकर मुझसे बोला—'चलो, लौट चले!' किसीभी विश्वासघातका किंवा गूढकर्म का लवलेश भी परिचय अथवा शका न रहने के कारण मोटरसे अुतरते समय मालती के अदर आनेके लिये कहने पर भी मैं अुसके साथ भीतर नही गया और मोटरवालेकी बात सुन अुसी समय मैं लौट गया। पर मुझे अुस समय मठमें न बुलाकर अन्यत्र ही रक्खा गया। दूसरे दिन रात को सभा के समय ही सगीत मे साथ देने के लिये लाया गया। अुस सभा के अत मे अिस टोली के अदर मैं भी था, अत मुझे भी पकड लिया गया। मैं मालती के विश्वास के लिये अपात्र तथा अुसकी सहायता के लिये अक्षम सिद्ध हुआ अिसका मुझे अत्यत खेद है। यदि मेरा कोअी अपराध है तो मेरे मत मे यही है!—न्यायाधीशके मतमे कौनसा अपराध सिद्ध होगा सो मैं नही कह सकता।"

आरोपियो मे से सबके वक्तव्य, पुलिसवालो के सारे सबूत तथा अदालत का सारा काम लगभग समाप्त होने को आ रहाथा। पर रफीअुद्दीन अर्थात योगानद अपने बचाव के बारे मे कुछ भी नही बोला था। कभी मजाक अुडाता था—या हँसता था बस! अिन सब आरोपियोकी ओर से वकालत के लिये सरकारने स्वय अेक वकील दिया था। पर रफीअुद्दीन कभी कभी अुसकी भी मखौल अुडाया करता—अिससे ज्यादा कोअी सबध अुसने अुससे नही रक्खा था। अुसके विरुद्ध अुसकी टोलीमे से फूटे हुअे साक्षीदारो ने अुसके क्रूर कृत्यो के बारे मे जो बयानात दिये थे, अुस वक्त वह अुनपर भी गु मे

में आया हुआ सा नजर नही आया । न्यायाधीश के साथ मात्र अुसकी खूब घुट रही थी । अिस पैशाचिक मनुष्य के अघटित मनका शास्त्रीय विषय के समान गभीर अध्ययन करने की बुद्धि से न्यायाधीश अुससे खोदखोद कर सवाल करते थे–अुसे हँसने देते थे, बोलने देते थे तथा बहुत बारीकी से अुसकी ओर देखा करते थे । अतमें अभियोग का काम समाप्त करने से पूर्व अेक बार फिर वे रफिअुद्दीन से बोले,

"तुझ अपने अूपरके आरोपो के बारेमें या बचावो के बारे मे अभी कुछ कहना है क्या ?"

"कहता हूँ थोडा सा !" सभा के अत्यत आग्रह के कारण जिस तरह कोअी दुड्ढाचार्य भाषण देन के लिये खडा होता है तद्वत् रफिअुद्दीन भी अदा के साथ हिंदी–अुर्दू में बोलने लगा,

"मेरे अूपर अिन चालीसपचास साक्षीदारो ने अितने असंख्य आरोप लगाये हैं कि, अलगसे मुझे आज अुनकी याद भी नही रह गअी है ! अत अुन सब का अलहदा-अलहदा जवाब मैं क्या दूँ ? अुन सबको मिला कर जो अेक बडा आरोप मुझपर लगाया जा सकता है, वह यह कि–मैं अेक खतरनाक गुनहगार हूँ ! और मुझे कडी से कडी सजा मिलना ही ठीक होगा !

' अिन पुलिसवालो ने तथा अिन आरोपियोने मुझपर अितने आदमियों के मारने और अितनी लडकियो के बिगाडने का अिलजाम लगाया है, मानो मैं कोअी कहानी की किताब लिखनेवाला, नाटक करनेवाला या फैसला सुनानेवाला जज ही हूँ ! अपनी कहानी की किताब के पन्नेपर जितनी मर्जी अुतनी लडकियोपर जिस से मर्जी अुसमे नग्न बलात्कार करवा कर अपनी मानसिक कामचेतना की तटस्थ रूपसे सभ्यतया पूर्ति करते समय, या अपने नाटक के अेकही प्रवेश मे रगभूमि पर न समा सकनेवाले मुर्दे पटापट मारकर गिराते समय, या अपने निर्णयपत्रके अेक छेदक में "फासी" अिन दो अक्षरो के गडहे मे दो-दो सौ जीवो को गाडते समय, अगर कुछ टपकेगा तो स्याही की बूदे ही कलम मे टपकेगी मगर आँखो से आसुओ की अेक बूद तक न टपकेगी ।–अैसे किसी सभ्य कहानीलेखक, नाटककार अेव सदय न्यायाधीश के अतिरिक्त अन्य कोअी मनुष्य अितने भीषण कृत्य, अितनी

सफाओी से और अितनी जल्दबाजीमें कर ही कैसे सकता है, आप अिसपर भी तो खयाल कीजिये !

"तो क्या अिन सब पुलिसवालो ने, साक्षीदारो ने आरोपियो ने जान-बूझ कर, कपटनाट्यरचना करके ये सारे झूठे आरोप मुझपर लगाये है, अैसा मेरा कहना है ? नही महाराज ! मैं खुद को जितना गुनाहो से खौफ खाने वाला समझता हूँ, अुतना ही अिन पोलिसवालो को भी समझता हूँ। मैं भी निर्दोषी और ये सब भी निर्दोषी ! तब यह सारा विक्षिप्तविपरिपाक हुआ कैसे ? अिसका अुत्तर अेकही शब्द मे कहा जा सकता है, और जिस अेक शब्द के अुच्चारतेही पुलिसवालो के पास मौजूद मेरे खिलाफ अिलजामोका जबर्दस्त सबूत खोटा न ठहरते हुअे भी मुझे निर्दोष सिद्ध करने का जो गुरुमंत्र आपकी विवेकबुद्धि को हस्तगत हो जायगा, वह शब्द है गलतफहमी—समझका विप्रकार ! !

"और अुसका कारण मेरे अदर—मेरी सर्वथैव निरुपाय स्थिति के कारण विद्यमान अेकमात्र दोष ! देवने मुझे किसी सभ्य, सदय, और साबुन से घुले हुअे न्यायाधीश सरीखा मुँह और शरीररचना न देकर अेक अत्यंत भयकर डाकू सरीखी दी है। पर अिस दोषके लिय जो सजा मुझे देनी है वह मुझे न देकर देव को ही देनी चाहिये।

"पजाब मे डाके डाल कर काले पानी में गये हुअे, काले पानी से भागकर आये हुअे बिहार खानदेश प्रभृति प्रातो मे अक्षम्य अत्याचारो का भयकर ताण्डव मचा देनेवाले किसी रफीअुद्दीन अहमद नामके अधमाधम, हत्यारे और नृशस डाकू के मुँह जैसा मेरा मुँह और शरीररचना जैसी मेरी शरीर रचना दुर्दैवने हूबेहूब घड कर तय्यार की होगी और अुसी वजह से अिन सारे सज्जनो को मैंही वह पापी हूँ अैसा सात्त्विक क्रोध के आवेश मे, अीमानदारीके साथ प्रतीत हुआ होगा।

"महाराज ! अपने अिस कथन को भरपूर सबूतो के साथ मैं सिद्ध कर देना चाहता हूँ ! अत जबतक असली खरा पापी डाकू रफीअुद्दीन अहमद मुझे न मिले तबतक मुझे निर्दोषी समझ कर छोड दिया जाय, अन्यथा पोलिस-वालेही अुस को पकडकर ले आवे, अुसे देखतेही मेरा कहना कितना अक्षरश सत्य है, यह आपके तत्काल ध्यान मे आ जायगा। महाराज, आरोपी को

स्वसरक्षणार्थ आवश्यक सबूत अुपस्थित करने के लिये यथाशक्ति सहायता देना न्यायाधीश का कर्तव्य है । और मुझे अपने बारे में जो सबूत पेश करने है अुसके लिये मैं आप से सहायता चाहता हूँ । वह देना आपके लिये दु साध्य भी नही है । मुझे निर्दोषी समझकर छोड दीजिये मै अुस असली रफीअुद्दीनको पकड कर लाता हूँ ! नही तो मै अुसीकी साक्षी अुपस्थित करता हूँ ! आप कोर्टकी तरफ से—जबतक मै अुसे पकड कर न ले आअू तबतक के लिये जमानतपर छोड दीजिये ! बस, यही है मेरा बचाव–मेरा Defence ! (पुलिसवालो की तरफ देखकर) क्यो दम सोनार की और अेक लोहारकी है कि नही ? "

अदर ही अदर हँसते हुअे रफिअुद्दीन अर्थात् योगानद नीचे बैठ गया ।

" न्यायालयातर्वर्ती मडलो की यथाशक्ति रोक रक्खी हुअी हँसी जबतक समाप्त नही हुअी तब तक न्यायाधीश भी ओठो से अखड लेखनी की नोक लगाये हुअे छतकी ओर विचारपूर्वक देखते रहे । फिर अुन्होने पूछा—

" रफिअुद्दीन अर्थात् योगानद, तुझसे सामान्य जानकारी के आखीर के कुछ सवालात मुझे अभी पूछने है । ठीक ठीक और सच्चे जवाब देगा तो अुसमें तेरा ही हित है । "

हाथ जोड वह आरोपी नम्रतया खडा होते हुअे बोला,

" पूछियेगा महाराज ! "

" तेरा सच्चा नाम क्या है ? "

" योगानद गोस्वामी "

" तेरा धधा क्या था ? तू क्या किया करता था ? "

" धधा कहने के लिये, कुछ भी नही था । हा, देव का भजन किया करता था ! '

" अिन आरोपियो में से ये कुछ डाकू तेरे शिष्य बने थे यह सच है क्या ? "

" कुछ लोग मेरे शिष्य बने थे यह सच है, पर वे डाकू है या नही यह मुझे क्या मालूम ? "

" अच्छा, तेरे विरुद्ध साक्षी देनेवाला यह हसनभाअी तेरे परिचय का है क्या ? अिसकी कौन कौन सी जानकारी तुझे है ? "

"अिस मनुष्य को मैं पहचानता हूँ, पर अुसके अिस नामको मात्र मैं नही पहचानता। वह अिस जेल्मे आने के बाद ही से सुनने मे आ रहा है। अिसके बारे मे मुझे जो जानकारी है, वह अितनी ही कि यह 'रामलाल' नाम अपना बताकर मेरा शिष्य बना था, यह अेक बात। दूसरी बात यह कि, अिसको भाग, गाजा और चरस का भयकर व्यसन है। अुसके नशे म अिसको अूटपटाँग बातो का आभास हुआ करता है–अुस नशेमे सभी को वैसा होता है। पर अिसके बारेमे खास बात यह है कि, नशे में आभास हुअी हुअी घटनाओं की अिस के चित्तपर अैसी छाप बैठती है–जैसे डरे हुअे आदमी के दिलपर भूतो की बैठती है–कि, होशमे आने के बाद भी अिसे वह आभास न होकर घटनाअें ही थीं, Facts ही थी, अैसा निश्चितरूपमें प्रतीत होता है। मेरे बारे मे अुसने घटना का नाम देकर जो कुछ कहा है, वह अुसके गाजे के तथा भाँग के नशे मे–हुअे हुअे अैसे ही कुछ आभास थे। जेलमें भी अिसे भाग, गाजा, चरस अित्यादि न मिलता तो अुसकी पीनक मे पुलिसवालो ने अुससे जो कुछ झूठमूठ बाते कही अुन्हे सच मान कर अुसने यह मावषी में कहा हुआ गप्पोड पुराण कभी न कह सुनाया होता।"

"अच्छा तुझे मालती की जानकारी है?"

"है न? वाह महाराज! मालती की जानकारी के बारे मे क्या पूछने हैं आप? वह मालूम है, अितना ही नही, मुझे वह बहुत पसद भी है!"

"मालती को पहले पहल तूने कहाँ देखा था?"

"रानी के बाग में!—मुवक्किल! वहाँ पहली ही बार अपने छुटपन मे मैंने जब मालती को देखा, तभी वह मेरे मनको अितनी सुहाअी कि मैंने अुसकी अेक कलम लाकर अपने बगीचे मे लगाली। महाराज, मुझे जपा और यूथिका की अपेक्षा भी मालती बहुतही भाती है! भजन के समय मैं अिस मालती के फूलो का ही हार अपने गले मे डाला करता था। बहुतही प्यारा झाड है यह, नही?"

अिच्छा न होते हुअे भी श्रोताओं ही के नही बल्कि न्यायाधीश के मुँहपर भी अिस ढीठ आरोपी के अिस अप्रत्याशित श्लेष के कारण अकस्मात् हँसी आये बगैर न रही। अुसे तत्क्षण दबाकर अुन्हो ने पूछना शुरू किया—

"तू भूत भविष्यत् वर्तमान की बाते बतलाने की अतर्दृष्टि के नाम मे लोगो को धोखा दिया करता था—यह सच है क्या ? "

"महाराज! भजन मे तल्लीन होते ही, मेरे अतश्चक्षुओ के समक्ष अिच्छामात्र से भूत—भविष्य का चित्रपट खडा हो जाता है, यह सर्वथा सत्य है! पर मै अुसका ढिढोरा पीटकर लोगो को धोखा देता था, यह बिलकुल झूठ है। मेरा भविष्यत्कथन सत्य साबित होता है या असत्य यह तक मै किसी से पूछता नही था। किसी से ज्यादा बोलता ही नही था। कपर्दिका तक किसी से लेता नहीं था। मैंने लोगो को ठगा नही।—अुलटे, यदि किसीने ठगा है तो मुझ भोले भाले को अिन लुच्चोंनेही ठगा है, अैसा मुझे अब लगने लगा है। क्यो कि, साधुशील शिष्य के रूप मे मेरे अतराफ जमा होकर अिन लोगो ने मेरे नामसे न जाने कितना गुरुडम फैलाया! कितनो को लूटा, कितनो पर जुल्म किये, कितनो को ठगा वह अेकमात्र देव ही जानता है! मेरा ध्यान ही अुधर नही था! "

"वह तेरी अतर्दृष्टि आज भी खुली है क्या ? हो तो अभी का अभी मेरे बारे म भी अेक दो भविष्यत्कथन बता कर दिखायगा क्या ? "

"हा सरकार! यह खबा जैसे मेरे बाह्य चक्षुओ को अिस समय स्पष्ट दीख रहा है, अुसी प्रकार आपके भविष्यकी भी दो बाते मेरे अतश्चक्षुओ के सामने कल से बिलकुल स्पष्टरूप से प्रकट हुअी है। मै कहने ही वाला था, पर—"

"यदि वे भविष्यत्कथन असत्य साबित हुअे तो ? "

"तो आप मुझसे तीसरा भविष्य न पूछें—होगया!! "

"अच्छी बात है, मेरे बारे का भविष्य कह कर तो बता पहले! मगर गडबड शडबड और अगडम सगडम भाषा म नही—औं, बिलकुल स्पष्टार्थ सूचक शब्दो मे चाहिये। कह! "

"अत्यत स्पष्ट रूप से सरल अन्वययुक्त भाषामे, महाराज, मैं आपके लिये शुभ भविष्य यह कहता हूँ कि, अपनी मृत्यु अपनीही आँखो से देखने का दुःखद प्रसग आप पर कभी नहीं आयगा! दूसरा मेरे लिये अुतनाही अशुभ किन्तु विनतृक भविष्य यह है कि, अिस मुकद्दमे के निर्णयमे मुझे निर्दोषी

कह कर आप कभी नही छोडेगे ! । छाती हो तो मेरा यह भविष्यकथन आप झूठा साबित करके दिखायें ! ”

अिस समयके अुस ढीठ आरोपीके झूठ-मूठके वीररस को और अुस छञी के अदर ही अदर हँसने को देखकर गाभीर्य को अेक ओर रख के खिलखिला कर हँसे वगैर न्यायालय के भीतर किसी से भी न रहा गया। चिंता और भय से थरथराने वाले आरोपी भी हँसे। हँसा नही तो अकेला वह किशन !

हँसने का अुस मुकद्दमे में अुन आरोपियो के लिये वह आखीर का ही प्रसग था। अब, हँसते हँसते किये गये भयकर पापो के भयकर फल भोगने का समय समीप आया हुआ था !

न्यायाधीश न्यायनिर्णयका अुस दिन का काम समाप्त करके अुठे और मुकद्दमे (खटले) की बची खुची विधि को निपटाकर ‘चौथे दिन निर्णय सुनाया जायगा’ अैसा अुद्घोषा गया।

‘रोशन !....बत्ती बाहेर लाव !’ : : : ७

समस्त पृथ्वीतलपर जो खाल्डियन, ग्रीक, पारसी, यहुदी, क्रिश्चियन, मुसलमानी अित्यादि धर्मक्षेत्र हैं, अुनमें सब से ज्यादह प्राचीन होने पर भी अत्यत आधुनिक कालतक अपने महत्त्व और आकर्षण को अबाधित रखनवाले और जैसे द्वापर में वैसेही आज भी कोटि कोटि हिंदुओ के ज्ञानतीर्थ बने हुअे श्री काशी क्षेत्रके समन्तवर्ती अेक अुपवन में से अेकात रूपसे बहती जानेवाली गगा के किनारे अेक पुराना घाट था। सन्निध लोगो की बस्ती नही थी। अेक छोटा सा महादेव का जनशून्य देवालय और अुससे लग कर खड हुअे-कुछ बिल के तथा सादे चम्पक के पुराने दरख्त बस, यही अुस स्थल का अल करण था।

जैसे कोभी महारानी राज-सभा के अदर सामत नृपतियो के, सेनापतियो के, प्रधान मडल के मान-सन्मानो को राजकीय ठाठवाट से दिनभर स्वीकारते स्वीकारते थक जानेपर साझको अपने अत पुरमे आती है, वाल खुले छोड देती है, अलकार वेष वगैरा अुतार कर विलकुल सादी घरेलू साडी चोली पहनकर अेकात अुद्यान मे अुन्मुक्त चित्त से पुष्पकुजो मे से होकर टहलने की अिच्छा हुअी तो टहलने लगती है, कोचपर थोडी देर पड रहने की अिच्छा हुअी तो पड रहती है, अुसी तरह भागीरथी काशी नगरी के सार्वजनिक घाटोपर लाखो भक्तगणो के,- राजा-महाराजाओ के, सैनिक, पुरोहित, पडो के पूजा पुरस्कारो को वडी ही अदा के साथ स्वीकारती हुअी आने के वाद अव अिस साझ के समय अुस अेकात स्थल में अुन्मुक्त भाव से लहरे अुठाती हुअी वह रही थी। सामने आसमानमें सध्या कालके सूर्य ने लाल गुलाबी रगो से लवालवभरे हुअे पश्चिम क्षितिज के हौज में से रग छिडकते, पिचकारी मारते और खेलते हुअे पश्चिम दिशाकी विलकुल रगपचमी ही कर डाली थी। अुस अेकात स्थलमें, अुस पुराने घाटपर, अुस भागीरथी के सलिल-शात पाट में, अेक ब्राह्मण तरुण स्नानविधि के मन्त्रो का अुच्चारण करता हुआ अुस सध्या समयमें अपना सायस्नान कर रहाथा। स्नान के पूर्वही अपने वस्त्र धोकर अुसने अुस शिवालयके चतुर्दिक् विद्यमान चम्पक पुष्पके वृक्षपर सुखाने के लिय फैला दिये थे। स्नान समाप्त होते ही शरीरके भीगेवस्त्रो के समेतही अुसने सूर्यनारायण को अर्घ्य दिया। तत्पश्चात् अघूरे सूखे हुअे वे सुधौत वस्त्र धारण कर के अुसने थोडे से विल्वदल और चपक के चार फूल तोडे, महादेव के देवालयमें गया और शिवलिग पर अुन्हे सद्भाव से चढाकर हाथ जोडकर मनही मन वह प्रार्थने लगा—

"देव, मेरी मूर्खता के कारण मेरे अूपर आया हुआ समस्त लाछन दूर करके अुम राक्षस योगानद के पजेसे मुझे छुडा दिया। अुन पापियो के ससर्ग दोष से मेरे अूपर डाकेजनी और मनुष्यवध के भयकर आरोपो में से न्यायाधीशने सर्वथा निर्दोष समझकर मुझे जो छोड दिया, वह सब तेरी ही दया का फल है। अुन दुष्टो द्वारा आनीत गडातर में मे मुझ निरपराध का यह पुनर्जन्म हुआ है। तेरी न्यायप्रियता की कीर्ति-रक्षा करनेवाली यह तेरी ही दया है।

"पर देव, न्याययुक्त दया पक्षपात विरहित ही होनी चाहिये, नहीं क्या ?" वह अदरही अदर घुटने लगा "तब—तब मुझसे भी अधिक निरपराध और अनागस अुस कुमारीपर दया आपको अभी कैसे आओी नही ? न्यायाधीशने मुझे अिस भयानक खटले मे से निर्दोष समझ मुक्त कर दिया तथापि मेरा मन मुझे अेक दोषके विषयमें सर्वदा अशांत बनाये रखता है। अपने हाथ मे अनजाने क्यो न हो, पर मैंने मालती को अुसके अपने घर न पहुँचाकर किसी दूसरेही पते पर—वह पता अुसके घर का नही है यह जान कर भी—लेजा कर छोड दिया। वह 'अदर मेरे साथ चल' अैसा कह भी रही थी तो भी भ्रात धारणा के वशवर्ती हो-अुसके साथ अुस दूसरे के घर मे गया नही और किन्ही अशो में तो अुस नरपशु के—अुस गुलाम हुसेन के—हाथ मे अुस असहाय कुमारी को सौंप देनेके दोष का मैं हिस्सेदार बना। जान बूझकर नही हुआ, पर जो मुझे मालूम पडना चाहिये था, जिसका मालूम करना अुस समय मुझ द्वारा अगीकृत कार्यभाग मे मेरा कर्तव्य था, वह करने में मैं चूक गया, यह मेरी बेखबरदारी भी अेक दडनीय अपराध है। नैर्बंधिक अपराध (कानूनन् गुनाह) न भी हो तो भी नैतिक अपराध तो हअी है।

"मेरे अस्तित्व-हीन-अपराधो के आरोपो मे से मेरी पहली मनौती को मान कर मेरा छुटकारा करनेवाले देव! मुझे स्वय जो घटित सा प्रतीत होता है अैसे अिस अपराध के दोष मे से भी मेरा छुटकारा करोगे क्या ? अिस मेरी दूसरी भी मनौती को मानोगे क्या ? पहले तो अुस बेचारी मालती का अुस हिंस्र नरपशु के हाथ से छुटकारा कराने का अवसर तथा सामर्थ्य आप मुझे दें! पर वह लगभग दुर्घट ही है! मालती कहाँ है, यह भी किसी को मालूम नही! तिसपर मैं कितना दुर्बल—कितना अपदार्थ! अुन सर्व हुअे पापियो के सशस्त्र कपटाचार से सर्वथैव अपरिचित! तब वह अवसर और वह सामर्थ्य मिलना मेरे लिये दुर्घट ही हो तो कम-से-कम देव, तू अपनी न्यायप्रिय दया का सुदर्शन तो अुसके पीछे पीछे भेजकर अुन दुष्टो का सहार कर, मालती को तू ही छुडा!! देव, तू सर्व समर्थ है! सज्जनो के सकटो को तू निवारता है अतअेव तुझे दयासागर भी कहते है!"

भक्ति गद्गद वाणी मे वह तरुण देवकी अिस तरह प्रार्थना कर ही रहा था कि अुसका हृदय अिस अतिम वाक्य से भर आया—"तू सर्व समर्थ

है! तू सज्जन सरक्षक और परम दयालु भी है! " तन्मय हो कर सर्वथा अेकअेक शब्द का अुच्चारण करता हुआ वह हाथ जोड कर ज्यों ही खडा रहा त्यों ही क्षणभर अुस का मन पूर्णतया नि स्तब्ध हो गया। पर अुसके बाह्य मन की अुस शून्यता मे—अुसके आभ्यतरिक मनके अदर अुसके लिये भी अविज्ञात स्वरूप की-कैसी चर्चा हुअी कौन जाने—पर अुसकी वह तल्लीन शून्यता समाप्त हो जानेपर अेक स्पष्ट शका अुसके चित्त मे आअी और अुसे टोककर पूछने लगी—

"देव यदि सुजनो के सकटो को दूर कर सके अितना परम दयालु और सर्व समर्थ भी है, तो वह अुन निरपराध सुजनो को प्रथमत सकटो के गर्त मे धकेलता ही काहे को है? दुर्जनो को प्रबल करता ही क्यो है अुन सुजनो पर अनन्वित अत्याचार कर सके-अितना? सुजनो की कसौटी देखने के लिये? पर तब देव का सर्वज्ञत्व ही कहाँ बच रहा? भक्त सच्चा है या झूठा, यह दुष्टो के हाथ से अुस भक्त की अत्यत दुर्गति किये बिना देव को विदित नही होना अैसा कहना देवकी सर्वज्ञता के लिये ही नही अपितु अुसकी परम दयालुता के लिये भी परम लाछनास्पद नही क्या? गावकी डाकुओ के आक्रमण से सुरक्षा करने का सामर्थ्य रहते हुअे भी, गावपर डाका पडनेवाला है, यह मालूम होते हुअे भी जो अधिकारी पहले डाकुओ को ग्रामवासी निरपराधी लोगो को यथेच्छ लूटने देता है, मारकाट, अग्निकाड मचाने देता है, और तब अुनकी दर्द भरी पुकारो पर, अुनकी मनौतियो पर प्रसन्न हो, अुनके रक्ताक्त घावो पर विनामूल्य औषध लगाने की व्यवस्था करवाता है, अुस अधिकारी की वह दयालुता क्या स्तुति-पात्र कहला सकती है? क्यो "

अेक के पश्चात् अेक अुफनाते हुअे आनेवाली अिन शकाओ की अकस्मात् भीषण बाढ मे अुस तरुण का दम घुटने सा लगा। और अुसने बडे प्रयत्न से अुस प्रवाह को बलपूर्वक वही का वही रोक कर अुस मे डूबते हुअे अपने चित्त को बचा लिया।

"पाखड! पाखड!!" अपने आप मे ही जोर जोर से बोलते हुअे वह जल्दी जल्दी अिधर मे अुधर और अुधर से अिधर चक्कर मारने लगा। चिन थोडासा शात हुआ तब अुसने मानो अुन शकाओ और विचारो से मलिनीभूत चित्त का अक्षरश प्रक्षालन करने के हेतु से ही गगा के अुस पवित्र और

शीतल जल का आचमन किया और विचारो के प्रवाह को दूसरी दिशा की ओर मोडने के लिये, पश्चिमदिग्वर्ती सूर्य के रगपचमी के खेल के धून्युद्धूलन की शोभा देखता रहा ।

अुस लाल गुलावी स्वर्णशलाकाभ किरणो का ज्योतिपुज भागीरथी के प्रवाह में नीचे गहराअी तक प्रतिफलित हो रहा था । लहर-लहर पर वे रग नाच रहे थे । जब वे लहरे अूपरकी ओर अठकर फूट जातीं तब अुनके सहस्रावधि तुषार अुडते—छोटे-छोटे अिंद्रधनुष्यो की बौछार की बौछार नदी-पात्रवर्ती पानी पर पडकर तरगित होती ।

शनै शनै पश्चिम के क्षितिज पर की वह लाल, गुलावी, शातकुभ किरणाभ छटा, धुधली, हलकी, फीकी अेव विरल होने लगी । तेजस्वी बृहद युगपुरुषके नष्टप्राय हो जाने पर राष्ट्र का जीवन जैसे म्लान हो जाता है, वैसे ही अुन स्वर्णिम रश्मियो के समूह को नि शेष रूपमे समेट कर अस्ताचलके पीछे सूर्य के विलुप्तप्राय होते ही गगा का प्रवाह भी रगहीन, निस्तेज और मलिन दीखने लगा । किसी सुदरी के शरीरमे से चेतना निकल जाय तो जैसे अुसके अूपर तत्क्षण प्रेतकला आ जाती है अुसी प्रकार पश्चिम के मुख पर भी तत्क्षण काली छाया फैल गयी । जो प्रफुल्ल मेघ-खड गुलाव की पखडी की तरह सुहाते थे वे अव शीघ्रही सडे वुसे शुष्क पर्णों के आर्द्र ढेर की तरह दीखने लगे ।

अधकार की पकड में आकर पश्चिम दिशा के अिस तरह काले पडते ही अुसकी प्राग्वर्ती आभामय सुषमा से रगमग्न हुअे हुअे अिस तरुणकी आनदपूर्ण स्मृतियाँ भी अस्तगत हो गअी और अुसके चित्त में भी दु खद स्मृतियो का अधकार प्रसृत होने लगा । "अेक, दो, तीन, चार ! हा, चार दिन पहले ही अिस समय मैं कारागृहातर्गत भयानक तनहाअी के अधकार में तथा आगे की दुश्चिता मे पडा हुआ था । मेरे पैरो की वे वेडियाँ टूट गअी—निर्दोष छूट आया—आज मैं यहाँ अुन्मुक्त वृत्ति से अिस ताजी और मुक्त वायु को श्वासोच्छ्वास रहा हूँ !—पर मालती ? हाय ! हाय ! यह गुलावी पश्चिम जिस तरह अुस अँधेरे की पकड मे आते ही काली पड गअी, अुसी तरह वह सुदर किशोरी अुस हिंस्र राक्षस के पजे में फँसकर आज प्रभाहीन हो गअी होगी । अस्तव्यस्त विखरे हुअे केश, भीतिके कारण मृतिगत हास्य, और मुँहपर फैली हुअी चिता की प्रेतकला—अिस रूपमें वह कहीं पर पडी

होगी? तर्क भी करना कठिन है कि, अुसको कहाँ पर भगा कर लेगये होगे ।"

वह अुठकर घाट पर अिधर से अुधर चक्कर मारने लगा—अुसे पहले तो अनेक दिनो की आदत के कारण प्रतीत हुआ कि, पैरो मे वेडियाँ है अभी—चलते समय अुनको सँवारने के अुद्देश्य से अुसका हाथ कमर के नीचे चचल-सा हुआ ! तत्पश्चात् वह छूट गया है, वेडियाँ टूट गअी है, कैद की कोठडी मे अव वह नही—अिस वात की याद हो आते ही वह मन ही मन हँसा ! दूर पर कही देखते हुअे मालती कहाँ होगी अिस वारे में वेलगाम तर्क वितर्क करते हुअे, अुसके वारे मे अनेक काल्पनिक प्रकरणो की योजना करते हुअे, कुछ घूमते हुअे—और कुछ ठहरते हुअे वह वहाँ रहा ।

वह किशन था ! योगानद अर्थात् रफिअुद्दीन अहमद के डाकेजनी के खटले में पडने से पहले न्याय वेदात शास्त्रोका अध्ययन करने के लिये जव वह काशी ही में रहा करता था तव अिसी महादेव के देवालय में वह अेकात स्थान की अिच्छा से आकर वैठा करता था । अुस देवता को ही वह आराध्य देवता मानता था । आगे चल कर अुस योगानद के ढोग धतूरे के फदे मे पड कर जब वह अुसके साथ पकडा गया, तव कैदखाने मे अुसने अिसही देवताके नामपर निर्दोष छूटने के लिये मनौती न्यौती थी । अुस खटले का निकाल (निर्णय) अिलाहावाद के न्यायालयमे चारपाँच दिन पहले ही लगा (प्रकट हुआ) था । रफिअुद्दीन अहमद को आजन्म काले पानी की सजा तथा अुसके साथियो में से वहुतसो को सात से दस वरस तक की काल्लेपानी की सख्त सजा सुनाअी गअी थी । दो को छोड दिया गया—अेक हसनभाअी को—वह क्षमा का सरकारी साक्षीदार हुआ अिसकारण से, और अिस किशन को, पूर्ण निर्दोष होने के कारण ।

वहाँ से छूटते ही वह सीधा काशी चला आया और अपने प्रिय अेकात देवालय मे अुतरा । अुसका घरवार तथा कुटुंव कुछ भी अवशिष्ट नही था । वह विलकुल निर्धन था— अत अुसे कोअी अधिक पूछता ताछता भी नही था वह कुछ कुरूप था, अत अुस पर कोअी आसक्त भी नही हुआ था । मथरा मे रहते समय, मालती को लाने और भिजवाने के लिये, वह पक्का जेवकतरा रफिउद्दीन जव योगानदके वेष म व्यवहार करता था, अुन दिनो अुसने अिस

किशन को ही मालती के साथ भेजने के लिये जो चार पाँच मर्तबा चुना था, वह किशन के किसी सद्गुण के कारण नही वल्कि अुसको अिस थोडीसी कुरूपता के अवगुण के ही कारण। अुतने अर्थ मे, अुसकी कुरूपता अुसके लिये अुपकारकारक ही साबित हुअी। क्यो कि अुस-कुरूपता के कारण ही अुसका मालती के साथ परिचय हुआ और अुस परिचय के कारण-अुसके साथ दया युक्त प्रेमकी भावना से बोलने वाली तथा अुसको अच्छा कहने वाली पहली व्यक्ति अुसको मिली। मालतीने तथा मालती की माँ ने किशन के सुशील स्वभाव की कितनी ही दफा प्रशसा की थी। अुन दो तीन वार के सहवासो मे किशन को लगता था कि, सचमुच अुन दोनो का अुस पर वहुत ही दयाभाव अेव स्नेहभाव है। अुसके अुस समय तक के जीवन मे किसी ने भी अुसके हाल-हवाल नही पूछे थे। अत अेव मालती और अुसकी मा के वे दो चार मीठे शब्द भी अुसको विशेष ममता-द्योतक प्रतीत हुअे होगे। अुसके मन मे अुन दोनो के प्रति सच्ची स्नेहभावना थी। और समस्त आयुष्यमे पहली वार के अुस स्नेह से अिस प्रकार जव अुसे दूर होना पडा और अुसी की गल्ती से अुसके अूपर दया-स्नेह प्रदर्शित करने वाली व्यक्ति पर अिस प्रकार का सकट अुपस्थित हुआ अेव अुसका सत्यानाश हो गया, तव यह शल्य अुस के मन मे निरतर पीडा अुत्पन्न करने लगा। अत्यत सहज भाव से मालती अुसको जितनी मीठी आवाज मे पुकारती थी, अुतनी मीठी पुकार अुसको जन्मभर मे सुनाअी नही दी थी।

"मालती! फिर अेक वार वैसी मीठी आवाज मे पुकार ना मुझे!—किशऽऽन!" अुसने मालती जैसी पुकार अपने ही आप मार कर देखी! फिर थोडे से विसगत विचारो के प्रवाह मे देवालय में आया, वहाँ भी चक्कर मारने लगा और अत में अपने ही आप से अूची आवाज में वोला—

"हैह्! वडे वडे पुलिस वालो को अुस नीच गुलाम हुसेन का पता नही चल पाया—मुझे भला कैसे चल जायगा? यदि चल भी जाय, तो मेरे जैसा असहाय पामर अुस चाडाल चौकडी मे से अुसे छुडा कर कैसे ला सकता है? अशक्य अशक्य! वह यदि शक्य है, तो देव तुझ अकेलेही के लिये! छुडा न, मालती की मुलाकात करा न मुझसे! तेरी अिच्छा मुझ पामर को कैसे समझ में आयगी? मै अुसे पूछता ही नही! पर अपनी अिच्छा मुझे

अच्छी तरह समझमे आती है। वह वताये वगैरे मुझ से रहा नही जाता ! माल्ती की मुझसे मुलाकात करा न ! !"

अुसने देवको साष्टाग नमस्कार किया। आँखो से विगलित अश्रु-विंदुओ को अुसने पोछा। निष्फल विचार करते करते अुसका मगज विलकूल खाली-अेव सुन्न सा होगया। अन्तर्वर्ती विचार ज्योही कुछ कुँठमे गये-वह विल्व वृक्ष के मूल का आधार लेकर, दूर आकाश मे अुडते हुअे-अपने घोसलो को पहुँचने की जल्दी करनेवाले दो-चार पछियो का तमाशा देखने लगा।

अितने में समीपस्थ अुस घाट की पौडियो की ओर किसी के मुँहसे सीटी की आवाज मी सुनाअी दी। घूम कर देखने पर कोअी पौडीपर से नीचे झुक कर पानी की ओर देखता हुआ सा दिखाअी दिया। और थोडी ही देरम पानी मे घडा डुवाने की आवाज भी आअी !

"कौन भला, घडा भरकर पानी ले जाने के लिये अितने विजन सध्या समय म, गगा पर आया हुआ है ? अिस जगह लोगों का आना जाना वहुत कम रहता है, यह पानी ले जाने का घाट भी नही है। अैसे वक्त पानी का घडा भर कर ले जाने वाला मनुष्य अवश्यही यही कही अुतरा हुआ होगा ! होगा वेचारा पाथस्थ कोअी भी ! "

अैसा मन मे वोलता हुआ किशन अुस घडा भर कर अुठनेवाले मनुष्य की धुँधली सी मुखाकृति की ओर सहजभाव से ही देखता रहा, पर घडा कधे पर रखकर मुँहमे सीटी मारता हुआ वह मनुष्य परली तरफ के आये हुअे रास्ते मे न जाकर देवालय के साथ लगे हुअे रास्ते से, जैसे जैसे नजदीक नजदीक आने लगा, वैसे वैसे किशन भी मनही मन अधिकाधिक चौंकता चलागया ! अच्छी तरह देखने लगा, विल्ववृक्ष की आडमे छिपता चला गया, और मनोविनोदार्थ मुँह से सीटी मारता हुआ कधेपर घडा रक्खे जानेवाला वह मनुष्य देवालय की समीपवर्ती पगडडी मे चलता हुआ अपनी मौज मे जव थोडासा आगे गया त्यो ही किशन सताप के, भय के और कुछ आनद के आवेगमे ओठ फडकाते हुअे मन ही मन वोलने लगा—

"यह ही ! विलकुल निश्चित ! यही है वह गुलाम हुसेन ! खटले मे हसनभाअी ने जो कहानी सुनाअी थी, वह यदि सच है तो माल्ती को भगाने का काम अिसी ने किया है। पर अिसने अुसे वलूचिस्तान सरीखे

दूर के प्रदेशमें भेज दिया या बेच दिया ? या अपने ही पास रख लिया ? रह यहाँ कहा ? चोरकी तरह छिप कर रहता है अिस वीरान अिलाके में बहुधा ? पर यदि वह अिसीके पास होतो ? दीखेगी क्या मुझे ? अेकबार तो मालती दीखेगी क्या पुन ?—अरे, पर यह चला अंधेरे में । ठहरताहूँ क्या मैं मूर्खों की तरह यहाँ ? क्या डरपोक है यह मन ? कहता है, अपने हाथ में तो कुछ भी नही और यह तो पक्का नृशस—सशस्त्र भी होगा ही । अत्यत विचारशीलता कभी कभी नामर्दपने का भी रूप धारण करती है अैसा । जाना ही चाहिये अिसके पीछे । किसे मालूम अिसने मालती को यही कहीं छिपा कर रक्खा हो । क्या योग है । जान लूगा—अपनी दूगा—पर अुसे छुडाअूगा । "

अिस आखिरी वाक्य मे अुसमे हाथी का वल और वाघ का साहस आगया । "किशन । छुडा न मुझे । " अैसी मालती की आर्त पुकार अुसे सुनाअी भी दी ।

किशन पहले तो झप—झप चला । पर जब अुस आदमी के अितना समीप आया कि, अुसके पीठ पीछे से अुसका रास्ता नजर आ सके तब जरा दुबककर चलने लगा । आगे चलने वाला यह मनुष्य गुलाम हुसेन ही है, अिसमें किशन को अब सदेह ही नही रह गया था । गुलाम हुसेन कुछ दूर जाने के पश्चात पगडडी छोड कर अेक खडहर की ओर चला । आगे अेक वडे, पक्के, पत्थरो से वने चबूतरे की आड थी। वहाँ अेक घुमाव लेकर वह अेक पर अेक रक्खे हुअे पत्थरो के वावके पास आया । वावपर घडा रखकर, वाव के अूपर से अदर की तरफ फाँद कर, घडा कधेपर ले अेक वडे वटवृक्ष के मूलकी आडमें वने हुअे अेक खपरैल का छोटा सा घर था अुसके दरवाजे पर आया। अुसके पीछे पीछे सुरक्षित अतरो पर से रास्ता निकालते हुअे आने वाला किशन अुस वाघ के पास आया—अुस घर में से कोअी व्यक्ति दरवाजा खोल कर गुलाम हुसेन के सामने आती है या नही यह आँखे फैला फैला कर देखने लगा। घर के अदर का प्रकाश हिलता सा नजर आया, अुसे देखते ही अुसके दिमाग में आया कि अदर कोअी आदमी है—वह मालती ही तो नहीं न है ? अुत्सुकता से अुसकी छाती धड धड करने लगी । पर गुलाम हुसेन घडा नीचे रख कर, कमर के नजदीक कुछ खोलकर अुस वद दरवाजे के अूपर की चौखट के

समीप ज्योही अपना हाथ लेगया त्योही किशन के ध्यानमें आया कि, दरवाजे को तो बाहर से ताला लगा रक्खा है ! असपर से अदर कोअी भी नही है यह जान लेते ही अेकदम अुसका आशा-भग होगया । जिस तरह मालती हाथ मे आअी अुसी तरह वह विलुप्त भी होगअी ! अुसका जी तिलमिलाने लगा । अितने मे गुलाम हुसेन ने ताला खोलकर दरवाजा खोला और थोडा सा डाँटते हुअे वह कहने लगा—

"रोशन ! रोऽऽशन ! बत्ती बाहर लाव ! क्या ? नही आती ? घसेटके ले आवू ? "

वे शब्द सुनतेही किशन का शरीर काप अुठा । अदर कोअी औरत है ! अुसे कडी निगरानी में रक्खा गया होगा ! बाहर जाना हो तो यह राक्षस अुसको ताले में बद कर के ही बाहर जाता है ! वह अिसका कहना मनसे नही मानती ! यह मौका पडने पर अुसे घसीटने से भी नही चूकता ! अितनी लबी चौडी बाते अुसको अुस अेक चार शब्द वाले वाक्य में ही मालूम पड गअी । अुसकी अुम्मीदके लिये वह अितनी अनुरूप साबित हुअी कि, वह ओठो ही मे बोलने लग गया—

"हो न हो मालती ही अदर है ! रोशन—का मतलब ही मालती ! आयेगी क्या वह बत्ती लेकर बाहर ?—अुसे खीचकर ही लाता हूँ ! "

सचिन्त अुत्सुकता से अुसकी छाती धडकने लगी ! गुस्से से अुसके ओठ फडकने लगे ! बत्ती दरवाजे के पास आअी । वह पत्थर के बाँधके पीछे छिपकर देखने लगा धुआँ अुगलने वाली आगको कुरेदने से जिस तरह वह थोडी सी जल अुठती है, और थोडीसी लपट अूपर को अुठने लगती है, तद्वत् गुलाम हुसेनके 'आती कि नही ! अिधर ! और आगे ! ' अैसे धमकी भरे शब्दो के साथ साथ अपने हठीले पैर आगे रखती हुअी, फिर हठीले स्वभाव से ठहरती हुअी, बत्ती हाथमे लेकर मुसलमानी वेश में अेक तरुण स्त्री अतमे बाहर आअी ! वह बत्ती गुलाम हुसेन द्वारा निर्दिष्ट काटेपर टाग दी । और पुन वह घर मे जाने लगी । त्योही गुलाम हुसेन ने अुसे पकड लिया ! पास ही अेक बडा वृक्ष का लट्ठा पडा हुआ था । अुस पर वह कुर्सी की तरह पैर लटका कर बैठ गया और अुसे अपनी जाघो पर बलपूर्वक घसीटते हुअे बोला,

"आव, तू हस या रो पड पर मैं अभी तेरे साथ प्रेम की मजा लूटूगा ही! देखने दे तो तेरा वह सुदर मूह! नहि अुठांती मूह अूपर? तो अैसा मैं जबरन अुसे अूपर अुठावूगा और मेरे आखे भर भर करके तेरी खुबसूरती की शराब पी लूगा!"

अिस प्रकार लाड में आकर बोलते हुअे अुसने अुस रमणी का वदन मडल बलपूर्वक अूपर अुठाकर दोनो हाथो से अुस दीप के प्रकाश में पकड़ लिया। आँखें भर भर कर अुसकी सुदरता का मद्य वह पीने लगा। झूलने लगा और अुस मुँहके मटामट चुबन लेने लगा। कहने लगा—

"वाह वाह! अिस अंधेरे रात मे नया चाद! अै रोशन, क्या बालती थी तुझे तेरी मा?—मालती? अै मालती! मेरी जान!"

अुस अंधेरी रात मे कोअी नवीन चद्रमा अुगे अुसी तरह वह मालती का मुखमडल गुलाम हुसेनको सुदर भासित हुआ। वह देखते ही वह अंधेरी रात किशन को और भी अधिक काली भासने लगी। अस दीये के प्रकाशमे अुठाकर पकडे हुअे अुसके मुखमडल के स्पष्टरूपमे दीखते ही वह मालती ही है यह किशन को नि शक रूपसे मालूम पड गया। और जिस मालती को अेक सोने की थाली में गूथकर रक्खी हुअी पूजाकी शुभ्र और पवित्र पुष्प-माला की तरह अुसने मथुरामें देखा था, अुसी को अुस अमगल, दुर्दण्ड नीच की जाघोपर गंदले कीचडमे पडे हुअे निर्माल्य के सदृश तादृश जुगुप्सित दुर्दशा मे देखते ही असकी आँखो के सामने अेकदम अंधेरा आ गया!

"मालती! तुझे मेरी बोली समझती नही? अच्छा! मैं तेरे टूटे फूटे मरेटी मे बोलतो, सुन! तू अैसी दुख मे का? तुझी मा तुला आठवते? जिस लिये तू अबतक दाडगाअी करते, असी रडते, मला झिडकारते? रोज तो मेरे बिछोनेमे तेरे को लेताहि है? फेर बळ मे हम तुझ्यापासून जे छिनावून घेतोच है ते सुख तू हमने हँसते हँसते क्यो देन नाही मुझे? तुझी आअी भी तुझ्यापास आणून ठेवू? बोल! तुझ्या आअीला भी पळवून आणतो देख, फेर तो सुखमे हँसत सोयेंगी क्या माझ्या बिछोन्यावर? तुझ्या आअी—"

"मेरी माका नाम तो फिर मत निकाल अिस अपने नीच मुख से! आग लगे तेरे मुँहको!" अुसके हाथो द्वारा अूपर अुठाये गये और अब गुस्सेकी वजह से रोदिप्यमाण अपने मुँहको अेक झटका मार कर हटाते

हुअे मालती जो अपना सिर फिराने गअी—अुसके सिरका अेक जोर का तडाखा गुलाम हुसेन की ठुड्डीपर बैठते ही अुसकी दातो की पक्तियाँ अेक दूसरे मे अैसी कचका गअी कि, अुसके माथे मे झनझना कर दर्दही पैदा हो गअी! अुसने गुस्सेमे आकर मालती के गाल पर ताड् करके अेक चपत जमा दी और जो ढकेल दिया, वह धडाम मे जमीन पर जा पडी।

"राक्षस! अभी तेरे नरडे की घूट लेता हूँ!" अैसा फुसफुसाते हुअे दया की और त्वेषकी लहर मे किशन अेकदम बाँधपर चढने लगा।

"तेरी जान लूगा या अपनी दूगा" अिस खुमारीके साथ अुसने ज्यो ही बाधके अूपर अपना पैर रक्खा त्योही नीचे का पत्थर खिसककर अुसका पैर अेक गहरे छेदमे जाकर अटक गया। अुसके साथही अुसके जोश की खुमारी अुतर गअी! वह पैर छुडाने लगा—तबतक अेक दूसरा ही विचार अुसके दिमाग मे आया—अुसका मन अुससे कहने लगा—"तेरी प्रतिज्ञामे मे 'यातो गुलाम हुसेन की जान ले लूँगा' अिस विकल्पकी अपेक्षा 'या फिर अपनी जानही दे दूगा' यह विकल्प ही अिस मुकाबिले में फलीभूत होगा अैसी सभावना अधिक है! यह अधम हुसेन सशस्त्र तो होगा ही! मै निःशस्त्र! अिस गुत्थमगुत्थे म मेरे अूपर का गुस्सा मालती पर निकाल कर यह मालती को जान से मार नही डालेगा, अिसका क्या सबूत? फिर अिस घरमे अिसका अेक और भी साथी होगा ही। अैसे निर्लज्ज आदमियो का शृगार अनेक बार सयुक्त रूपमे भी होता है, यह अिन्ही के साथी हुसनभाअीने मुकदमे (खटले) के समय शपथपूर्वक कहा था—! हैह्! अभी अिस प्रकार का साहस करना मालती को सकट मे मे निकालने के लिये प्राप्त सुवर्ण सधिको गँवा बैठने जैसा होगा!" अूपरके पैरको पत्थरो की पकड मे से छुडाते समय किशन को अँधेरे मे छिप जाने की गडबडी लगी हुअी थी। वह बाध की आड मे छिपकर अेक और आगे क्या होता है यह देख रहा था दूसरी ओर अब आगे मुझे क्या करना चाहिये अिस विषय पर विचारो पर विचार आते जा रहे थे!

मालती धडाम मे जो जमीन पर गिरी, वह वैसेही वहाँ पर सिरहाने अपना हाथ रख के सिसकियाँ भरती हुअी पडी रही! गुलाम हुसेन तनकर खडा हुआ, कुछ क्षणोतक वह अुसको अुसी अवस्थामे पडी हुअी देखता रहा। अुसे गौर कर देखने के बाद और भी अधिक आतुर होकर हँस पडा!

"आह रे खुवसूरती ! छोकरी, यह चित्रके सदृश ठीक ठीक रेखाङ्कित तेरी शरीर यष्टि कैसी प्यारी लगती है ! खन्नी होने के भी अपेक्षा यह हरिणा जैसे तेरे गौर सुदर पैर करवटपर जोडकर सीधा लवे तान कर जव तू पडी रहती है न, तव तेरी तनुलता अेक नवीन ही शोभासे मनको मोह लेती है ! और शभर(=सौ) औरता खिलखिलाकर हँसने से जितना आनंद नही आता अुतना तुझे अिसतरह सिसकियाँ भरते और रोते हुअे करवट ले शरीर पूरी तरह फैलाकर सोती हुअी को देखकर मुझे होता हूं । तेरी छाती स्फुंदन म कैसी अुचावते, विखरे कुरल कैसे पछियो के समूहकी तरह तेरे भालके मडप पर खिळत अुडते है ! अब समझती है ना माझी मरेठी बोली तुला ? अूठ छोड दे नखरा तू झिडकारतेस मला असलिये क्या मी छोड देगा तुला ? प्यारी ! अेक (सुन) । गाय रहती है ना खूष दूधवाली ? वह जव हट से वैठजाती बिघडून लाथा मारू लागती, तव वहाला घालून (डालकर) अुसकी तगडया वाधून अुसे वलपूर्वक अुठवाकर गवळी दूध काढतोच काढतो। गाय लाथाडते अिसलिये जो गवळी अुसकी हड्डी के सदृश भरी हुअी कास (अूधस्) का दोहने का सोडतो, अुस मुर्दाडाने गाय वाळगावी कशाला (क्यो)? अूठ, प्यारी अूठ, तेरे जवानी की खुवसूरत गाय मैं दोहूगाहि दोहूगा !"

गुलाम हुसेन ने स्वत नीचे वैठकर फिर जवरदस्ती से अुसे अुठाया अुसे पास लिया तथा अुसपर अपने हाथ फेरने लगा ।

"प्यारे मालती ! ताले में दिनभर वद करके रखता हू अिसलिये तू घुस्सा करती पर पुलिसवालो को तेरा पत्ता न लगे, तुझे पकडकर ले गये तो तुमकोहि वे पोलिस हाण मार करेगे ! दूसरे किसी दुष्ट के पीजरे म यह पाखरू (पछी) जा पडेगा ! तेरे ये नखरे के पख अुखाड कर फेक देगे मोहक मैंने ! वे चाडाल ! ये लाड, नखरे में हूँ अिसलिये चलने देता हूँ तेरी कोअी लाडगा (भेडिया) दुर्दशा न करे अिसलिये तुझे अिस मेंढवाडे में अिस तरह ताले में वद करना पडता है माझ्या लाडक्या कोकरा ! (=मेमने !) पर अव दो चार दिनो होंमें मै तुझे अेकदम अितनी दूर और अैसे अेक रम्यवन मे लेजाअूगा कि वहाँ अिधर के पुलिस वालो के बापको भी अपना पता नही लग सकेगा ! वह हरामी रफिअुद्दीन तो पड ही गया अुस काले पानी के नरकमे जनमभरके लिये ! अुम्र कैद ! अुस सारे मुकद्दमे का

फैसला सुना दिया गया ! अब पुलिसवाले हम को योभी भूल जायँगे। और अब मुझे अुस वन मे अैसी जगह हाथ लगी है कि जहाँ तू भी अिच्छानुरूप आनद से अपनी जिदगी बसर कर सकेगी ! ये डाके मे कमाये गये रत्नो के दो हार यह सोना और यह तू मेरी मानी ! बस्स् भोगच भोग ! विलासच विलास ! जन्म भर भी मैं तुम सबको भोगता जाअू तो भी तुम सब बाकी बच जाओगे ! आजतक कमाअी और अब रमाअी ! प्राप्ति का भोग ! प्यारी हँस ना, हँस, हँस, !" वह अुसे गुदगुदो करने लगा।

वह गुदगुदी मालती को रीछ की प्राणहारक गुदगुदी की तरह लगी। मन मसोस कर वह हँसी !—पर अुस गुदगुदी मे किशनको सच्ची गुदगुदी हुअी और वह हँसा अत्यत सतोष से ! गुलाम हुसेन के मुँह से पुलिस का नाम निकलते ही अुसे अेकदम मानो गुरमत्र ही मिलगया ! अँधेरे में किसीको अचानक हाथचमक (हैड-बैटरी) मिल जाय वैसी अुसकी दशा हुअी और अुसके चित्त का बटन दबते ही अुसे आगे के अुपाय का रास्ता अेकदम दिखाअी दिया !

बस अलग से और पौने बारह ! अभी का अभी यह समाचार पुलिस की चौकी पर जाकर गुप्त रूपसे कह देना चाहिये। अठारह बरस से कम अुम्र की लडकियो को अुडाना यह गुलाम हुसेन का अेक नैर्बंधिक (कानूनी) घोर अपराध है ! मालती का नही ! तिसपर गुलाम हुसेन के अूपर डाकेजनी के वारट भी होगे ही ! खटले का वह अेक फरारी है ! अब वह फाँसी के रस्सेपर झूले लेगा—और मालती पुन अुस मथुरा के आनद के पालने पर ! अुसी प्रकार अुन मधुर मधुर पदो की लहरे लेती हुअी अुल्लास के आकाशमें किसी सुदर पक्षी की तरह अुडनेकी अिच्छा से पुन झूले लेगी ! अहो आनद ! अुनकी वह प्यारी "किशऽऽन ! " अैसी लाड भरी पुकार अुसे पुन सुनाअी दी !

आनद के आवेशमें यह समाचार पुलिसवालो को देने के लिये किशन लुकते छिपते अपनी आहट न लगने देते हुअे बाघ की आड आड मे चलते हुअे रास्तेकी तरफ जाने के लिये मुडा। अुसी बीच किशन ने अकस्मात् अेक भयकर चीख मारी ! "अय्यायाया ! " कहकर बिलख अुठा !

'भो! भो! गुर्र गुर्र!' करते हुअे किशन की पिंडली का मास-गोल दाँतो से पकडकर अेक विकराल कुत्ता पिंडली को बुरी तरह खींच खींच कर तोडने लगा।

वह अुस घर के समीप पाला हुआ गुलाम हुसेन का कुत्ता था।

बाघ के पास अदरकी ओर कही वह फिर रहा था। आहट सुन पडते ही वह बाघ पर अंधेरे मे चढा। किशन के हिलते ही अुसकी दृष्टि अुसपर पडी और चोरकी तरह दुबकी चाल से जानेवाले किशन पर वह विकराल कुत्ता टूट पडा अेव पहली ही झपट में अुसने किशन की पिंडली को बुरी तरह चबा लिया। अंधेरे में अप्रत्याशित रूपसे ली गअी अुस असह्य चबाअी के साथ ही कारण न होते हुअे भी किशन अितनी अूची आवाज में चिल्लाया पर कुत्ता अुसकी पिंडली छोडता ही नही था। अुलटे और भी अधिक त्वेषसे अुस को वह कचाकच तोडता चला जा रहा था—गुरगुराता तथा जूझता चला जा रहा था।

बाघ के नजदीक किसीकी अितनी जोर की चिल्लाहट सुनकर वह कामातुर गुलाम हुसेन भी चौंका। हो न हो अिस अपने कटखने कुत्ते ने ही किसी राहगीर को अँधेरे मे दाँतो से लिटा दिया है। यह ध्यान में आते ही अुसे भय लगा कि अुसकी अिस चोरबस्ती के पास लोगो का शोर शराबा होकर अुनका ध्यान कहीं अुस ओर आकर्षित न हो! अुसे यह सकट अनभीष्ट था, अत सामोपचार मे अुस प्रकरण को वही मिटा देने के विचार से हाथ में लालटेन लेकर और मालती से "घर के अदर जा" कहकर गुलाम हुसेन दौडते दौडते बाघ के पास आया तबतक किशन ने बाव में से अेक पत्थर निकाल कर अुस विकराल कुत्ते के सिरपर दे मारा था, अत वह पिंडली छोड कर दूर हट तो गया था पर फिर थोडा झपट्टा मारकर भौंकते हुअे तथा गुर्राते हुअे किशनकी दूसरी चबाअी लेने के लिये जूझ रहा था।

किशन की फाडी हुअी पिंडली में से लोहूकी धार बह रही थी और असह्य वेदना हो रही थी। हिलने की सुविधा ही नहीं थी। गुलाम हुसेन के नजदीक आते ही किशन ने बहाना किया—

"मैं अंधेरे मे वह दीया देख अेक रात भरको आसरा मागने के लिये आया था सो तुम्हारे अिस कटखने ने मेरी जान ले ली! अम्मारी! हाय अम्मा!"

"विव्हल न हो, चिल्लाता काहे को है अिसतरह!" गुलाम हुसेन प्रकरण को समाप्त करने की वृद्धि से अुसे समझाते हुअे वोला, "वह कटखना मेरा पालतू कुत्ता न भी हो तो भी मैं तेरी पट्टी वाँधे देता हूँ। यही सो रह अिस घर के पास रातभर और तडके ही अपनी राह पर लग—या हस्पताल में जा।" गुलामहुसेन को यह प्रकरण विशेष हल्ला गुल्ला न करते हुअे मिटाना था अत असे यही अक युक्ति सूझी—सो अच्छी लगी।

वडे प्रयास से गुलाम हुसेन ने किशन को अुठा कर अुस वाँव को लाघा और अुस लालटैन के हल्के से प्रकाश से युक्त आगन मे लाकर रख दिया। पानी से अुसका घाव धो-पोछकर अपनी हमेशाकी रामवाण दवा किशन के घावमें भरकर रक्तस्राव को थाम दिया। पट्टी वाँधी। किशनको अुस लक्कड पर पीठ टिकवा कर लिटा दिया और लालटैन अूपर काँटेपर टाँग दी। जवतक लालटैन नीचे थी तवतक दवादारू की गडवडीमे गुलाम हुसेन को किसी भी कपट की शका न आअी। अुसका लक्ष अुस पाथस्थ के पैरपर ही लगा रहा था। पुन, पीछे अेकदफा अुसने मथुरामें किशन को जो देखा था सो योगानदो सम्प्रदाय के गोस्वामियो के भेसमे—आज किशन का वेश अेक दरिद्र भटकने वाले का सा था। अत गुलाम हुसेन के लिये किशन को पहचान लेना कठिन हो गया था।

लालटैन अूपर टागने के वाद, लक्कड पर टेका दिये हुअे, थककर चुप वैठे हुअे किशन के मुँह पर स्वच्छ प्रकाश पडा।

अितनी देर तक घर मे रहने पर भी खिडकी में से अुस पाथस्थ की सारी हरकतो को देखने मे लगी हुअी मालती के मन में वह पाथस्थ कौन है अिस वारेमें दस दफा अेक शका आकर गअी ही थी। अुस लालटेन के प्रकाशमे किशन के मुखको ठीक ढग से देखने के वाद मालती की अुस शका ने पक्के निश्चय का रूप धारण किया —"किशन"! मालती के ओठोही ओठो में अेक पुकार भी थरथराकर चली गअी! अुसे मथुरा में देखने के वाद से अुसका क्या हुआ होगा अिसवारे मे मालती को कुछ भी मालूम नहीं था। अपनी मा की अगली जानकारी अिसे मालूम ही होगी—अैसा अुसके मन मे अुसे पहचान लेने के अेक क्षण वाद ही आया। किंतु पर—पुरुष के साथ अुसमें भी योगानद, गुलाम हुसैन प्रभृति जिस चाडाल चौकडीने अुसे भगाया था अुनके

अुस अधम अपराध की जानकारी जिन लोगो को होने की सभावना है अैसे अुस मालती के घनिष्ठ परिचय के पुरुष से खुले रूपमें बातचीत करते ही–अुसकी वजह से केवल मालती का ही नही बल्कि अुस किशन का भी घातपात करने से यह हिंस्र गुलाम हुसेन हिचकेगा नही अैसी भीति भी मालती को तत्काल लगी। वह घबरा गअी–ब्बरा गअी। पर तत्काल अुत्सुकता के कारण खुल्लमखुल्ला न भी हो तो भी अेकात मे अिस राक्षस गुलाम हुसेन के सो जाने पर अुसकी भेंट लेकर ही रहूगी चाहे कुछ भी क्यो न हो–यह दृढ निश्चय मालतीने मन ही मन किया। वह आँखो से बूदें गिराती हुअी किशन की ओर टकमक देखती रही। अुतने ही मे गुस्से से अकडे हुअे गुलाम हुसेन की आँख अुस खिडकी की तरफ पडते ही मालती झट से पीछे की ओर सरकी और अपने ही से पूछने लगी—

"अरी-मैया! यह राक्षस अैसा गुस्से में क्यो आगया अकस्मात्? कुछ शका आगअी क्या मुझे को?"

घर के भीतर खिडकी के पास से पीछे हटकर वह दरवाजे की दरार मे से बाहर नजर डालने के लिये ज्यो ही दरवाजे के समीप गअी त्योही गुलाम हुसेनकी किसी पर गुस्सा करने और अुस कटखने कुत्ते से भी अधिक भीषणता के साथ गुर्राने की आवाज अुसे सुनाअी दी।

क्यो कि अुस लालटैन का प्रकाश थकावट से आँखे मूदकर लकडे पर टेका लिये हुअे अुस किशन के निश्चल मुखपर पडते ही मालती को जो शका आअी थी वही गुलाम हुसेन को भी आअी। तिसपर खिडकी मे से अत्यत लोभपूर्ण दृष्टि से किशन की ओर टकमक देखने वाली मालती को अुसने ज्यो ही देखा त्यो ही अुसकी शका सौगुनी बढ गअी। पक्का निश्चय करने की युक्ति भी अुसे साथ ही साथ सूझ पडी। असावधान, नीदमे पडे हुअे अुस घायल को गुलाम हुसेन ने हेतुत अुस सशयित नाम मे पुकारा—

"किशन! किशन!!"

किशन दचक कर (घबराकर) जाग गया और अपने नाम का परिचय देना ठीक नही यह बात ध्यानमे आने मे पहले ही अुत्तर दे बैठा–

"ओ! ओ!"

"अरे हरामखोर, पकडा कि नही तुझे ? छद्मी वेष से नाम छिपाकर यहाँ पता चलाने के लिये आया था क्या ? किशन ! बोल ! " मुट्ठी तान कर क्रोधसे कंपित घर्घराती हुअी आवाज मे गुलाम हुसेन फनफनाया, "बोल, तू मालती का पीछा करते हुअे यहाँ आया है या नही ? तू और पाजी हसनभाअी तुम्ही विश्वासघातकी सरकारी साक्षीदार हो न कोर्ट मे के ? मेरे गले मे लात देना चाहते हो क्या ? काफर ! बेअीमान ? "

"तेरा बाप बेअीमान ! तुझसे अीमान ? " किशन त्वेष मे आ तत्काल अुठकर खडा होगया !

"छुरा भोककर तेरा पेट फाड ही दिया मैने समझ ! मेरा छुरा !—छुरा ! " लकडे पर गुलाम हुसेन ने देखा ! छुरा नही था वहाँ । वह घर के अदर सिरहाने है अैसा अुसे याद आया ।

अदर दरवाजेपर खडी हुअी मालती को भी वही तत्काल याद आया। अुसने झटपट खाटपर का छुरा निकाल कर अपने कपडो के अदर कमर में छिपा लिया और वह अेक कोने मे जाकर खडी हो गअी ! अिसी छूरे मे मालती के समक्ष गुलाम हुसेन ने अपने अेक विगडे हुअे साक्षीदार को मथुरा मे भागकर आते समय अेक जगल में आँख झपकते न झपकते भोक कर ठडा कर डाला था, ठीक अुसी तरह अब किशन भी ठढा हो जायगा—अत वह भय से थरथर काप रही थी गुस्से के मारे बेसुध हुअी जा रही थी।

अुतने ही मे छुरा लेने के लिये गुलाम हुसेन दरवाजे को तड से खोलकर अदर घुसा। अुसी के पीछे-पीछे किशन भी त्वेषके साथ अदर प्रविष्ट हो गुलाम हुसेन को कमर से पकड अुलझता सुलझता अुसके साथ ही खटिया पर जा पडा। सिरकटा कबन्ध भी रण-त्वेष के कारण कुछ देर तक तो रणमे जूझता ही चला जाता है, किशन को अपने घायल पैर का भान तक नही रह गया था।

मालती को भी अुस प्राणसकट के कालमे विचार किंवा सुधबुध रह ही नही गअी थी ! जो लहर आये वही ! किशन के नरडे (गले) को गुलाम और गुलाम के नरडे को किशन पकडते और छुडवाने—दोनो के दोनो खाट पर जा पडे और पडते ही—

अुस अधम अपराध की जानकारी जिन लोगो को होने की सभावना है अैसे अुस मालती के घनिष्ठ परिचय के पुरुष से खुले रूपमें वातचीत करते ही–अुसकी वजह से केवल मालती का ही नही वल्कि अुस किशन का भी घातपात करने से यह हिस्र गुलाम हुसेन हिचकेगा नहीं अैसी भीति भी मालती को तत्काल लगी ! वह घवरा गअी–ववरा गअी ! पर तत्काल अुत्सुकता के कारण खुल्लमखुल्ला न भी हो तो भी अेकात मे अिस राक्षस गुलाम हुसेन के सो जाने पर अुसकी भेंट लेकर ही रहूगी चाहे कुछ भी क्यो न हो–यह दृढ निश्चय मालतीने मन ही मन किया। वह आँखो से वूदें गिराती हुअी किशन की ओर टकमक देखती रही। अुतने ही मे गुस्से से अकडे हुअे गुलाम हुसेन की आँख अुस खिडकी की तरफ पडते ही मालती झट से पीछे की ओर सरकी और अपने ही से पूछने लगी—

"अरी-मैया ! यह राक्षस अैसा गुस्से मे क्यो आगया अकस्मात् ? कुछ शका आगअी क्या मुअे को ? "

घर के भीतर खिडकी के पास से पीछे हटकर वह दरवाजे की दरार मे से वाहर नजर डालने के लिये ज्यो ही दरवाजे के समीप गअी त्योही गुलाम हुसेनकी किसी पर गुस्सा करने और अुस कटखने कुत्ते से भी अधिक भीषणता के साथ गुर्राने की आवाज अुसे सुनाअी दी !

क्यो कि अुस लालटैन का प्रकाश थकावट से आँखें मूदकर लकडे पर टेका लिये हुअे अुस किशन के निश्चल मुखपर पडते ही मालती को जो शका आअी थी वही गुलाम हुसेन को भी आअी ! तिसपर खिडकी मे से अत्यत लोभपूर्ण दृष्टि मे किशन की ओर टकमक देखने वाली मालती को अुसने ज्यो ही देखा त्यो ही अुसकी शका सौगुनी वढ गअी ! पक्का निश्चय करने की युक्ति भी अुसे साथ ही साथ सूझ पडी। असावधान, नीदमे पडे हुअे अुस घायल को गुलाम हुसेन ने हेतुत अुस सशयित नाम मे पुकारा—

"किशन ! किशन !! "

किशन दचक कर (घवराकर) जाग गया और अपने नाम का परिचय देना ठीक नही यह वात ध्यानमे आने से पहले ही अुत्तर दे वैठा–

"ओ ! ओ !"

"अरे हरामखोर, पकडा कि नही तुझे ? छद्‌मी वेष से नाम छिपाकर यहाँ पता चलाने के लिये आया था क्या ? किशन ! बोल ! " मुट्‌ठी तान कर क्रोधसे कंपित घर्घराती हुअी आवाज मे गुलाम हुसेन फनफनाया, " बोल, तू मालती का पीछा करते हुअे यहाँ आया है या नही ? तू और पाजी हसनभाअी तुम्ही विश्वासघातकी सरकारी साक्षीदार हो न कोर्ट में के ? मेरे गले में घात देना चाहते हो क्या ? काफर ! बेअीमान ? "

" तेरा बाप बेअीमान ! तुझमे अीमान ? " किशन त्वेष मे आ तत्काल अुठकर खडा होगया !

" छुरा भोककर तेरा पेट फाड ही दिया मैंने समझ ! मेरा छुरा !—छुरा ! " लकडे पर गुलाम हुसेन ने देखा ! छुरा नही था वहां । वह घर के अदर सिरहाने है अैसा अुसे याद आया ।

अदर दरवाजेपर खडी हुअी मालती को भी वही तत्काल याद आया। अुसने झटपट खाटपर का छुरा निकाल कर अपने कपडो के अदर कमर मे छिपा लिया और वह अेक कोने मे जाकर खडी हो गअी ! अिसी छूरे मे मालती के समक्ष गुलाम हुसेन ने अपने अेक बिगडे हुअे साक्षीदार को मथुरा मे भागकर आते समय अेक जगल मे आँख झँपकते न झँपकते भोंक कर ठडा कर डाला था, ठीक अुसी तरह अब किशन भी ठडा हो जायगा—अत वह भय से थरथर काप रही थी गुस्से के मारे बेसुध हुअी जा रही थी ।

अुतने ही मे छुरा लेने के लिये गुलाम हुसेन दरवाजे को तड से खोलकर अदर घुसा । अुसी के पीछे-पीछे किशन भी त्वेषके साथ अदर प्रविष्ट हो गुलाम हुसेन को कमर से पकड अुलझता सुलझता अुसके साथ ही खटिया पर जा पडा । सिरकटा कबध भी रण-त्वेष के कारण कुछ देर तक तो रणमे जूझता ही चला जाता है, किशन को अपने घायल पैर का भान तक नही रह गया था ।

मालती को भी अुस प्राणसकट के कालमे विचार किंवा सुधबुध रह ही नहीं गअी थी ! जो लहर आये वही ! किशन के नरडे (गले) को गुलाम और गुलाम के नरडे को किशन पकडते और छुडवाते—दोनो के दोनों खाट पर जा पडे और पडते ही—

"ला ला ! !" गुलाम हुसेन चिल्लाया ! "मालती, वह छुरा ला !" अुसी के साथ मालती छुरा लेकर दौडी भी ! पर अितने से छुरे से वह विशाल काय मनुष्य मरेगा तो कैसे, अिस प्रकार की अेक वलवत्ती शका अुस वेभान अवस्था मे भी अुसके मन में आअी और वह ठिठक गअी !

"कैसे का क्या मतलव ? डरपोक लडकी ! तेरे ही सामने अुस साथीदार के पेटकी पोटली अिसी छुरे से गुलाम हुसेन ने अेकही प्रहार में वाहर नही निकाल डाली थी क्या ?" अुस के मनने अुसे फटकारा !

"ला ! छुरा ला !" गुलाम हुसेन अेक हाथ को अुस हाथापाअीमें से छुडाते हुअे और अूँचा अुठाते हुअे मालती पर फिर से चिल्लाया।

"ले यह ले छुरा !" अिस तरह दाँत पीसती और ओठ चवाकर चीखती हुअी वह ववराअी हुअी मालती छुरा खीचकर दौडी और अुसने, किशन को दवाकर पकडे हुअे, पर किशन की पकड में खटिया के अेक कोने पर अुत्तान होकर पडे हुअे गुलाम हुसेन के ढीले ढाले पेटमें वह लवा तेज छुरा पूरी ताक़त के साथ घुसेड दिया !

कितनी आसानी से वह अदर घुस गया ! अुस वेभान त्वेष में भी मालती को हँसी आगअी !

"व्यर्थ ही मैंने अितना जोर लगा कर घुसेडा वह छुरा वावले की तरह ! वह तो आधी ताकत से भी आरपार चला जाता !"

"ओं !—ओं !" अैसी दो तीन भयकर भयकर डुरकियाँ (सूअर की तरह) फोडते हुअे गुलाम हुसेन का धिप्पाड (विशाल) शरीर धप्प से नीचे गिर पडा !—वह फिर कुछ अुठा नही ! अपने ही अूर्ध्वपाती अुत्स्फूर्त रक्त के निपान मे अुसका प्राण डूव गया !

"मर गया ! निर्जीव मरगया !" किशनने ताली वजाअी !

"किशन !!—पर अव आगे क्या होगा ?" किशनकी आँखो की ओर टक वाँधती हुअी मालती थर थर काँपते स्वर में वोली !

"आगे ? मालती, आगे—"

वेभान, रक्तपात जन्य नशेमें चूर, कुठित विचारोवाले, वे दोनो क्षणभर अेक दूसरे की तरफ आँखो से आँखें भिडाये देखते खडे रह गये! चारो ओर रात्रि की कारिख ही कारिख घनीभूत थी !

"आगे क्या होगा ? " मालती के अिस प्रश्न का कुछ भी अुत्तर क्षण-भर न सूझने के कारण किंवा वैसे देखनेपर पाँच-पचास अुत्तर अेकदम सूझ कर अुनके अुलटे सुलटे और अेक दूसरे को विहस्त करनेवाले झमेले में अन्तिम अेव निश्चित मत अेक भी चित्तमे आकर टिक नही रहा था, अत किशन भी सिर्फ " आगे ऽऽ—आगे ऽऽ" अैसा ओठो ही ओठो मे पुडपुडाता हुआ-मालतीकी मुद्राकी ओर शून्य दृष्टि से देखता हुआ खडा था। वह विकराल प्रेत अुनके पैरो मे पडा हुआ था। अुमके घावो मे से रक्त का अुत्स्राव ठहर ठहर कर अेक दम फूट पडता था। अैसे दसपाच क्षण व्रते भी न पाये थे कि वह कुत्ता जोर से पुकार मचाते हुअे रो रहा है, तथा पीछे जोर जोर से भोक-भोक कर विप्लव मचा रहा है, अैसा किशन को सुनाअी पडा।

वास्तव मे अुनकी वह प्राण लेने-देने की जूझ जव चल रही थी तभी से वह कुत्ता पास जाने से डरता हुआ भी भाग खडा नही हुआ और वहीं वाघ पर अिधर से अुधर दौडते ठहरते हुअे निरतर चीत्कार करता रहा। और वीच ही मे बलपूर्वक भौंक अुठता था। किसी की भी सहायता आसपास से प्राप्त करने तथा लोगो को जमा करने के लिये 'दौडो रे दौडो' कह कर मानो वह आर्त पुकार मचा रहा था। पर अितनी देर तक अिस प्राणो पर वीतनेवाले प्रसग मे अुसका वह शोर किशन-मालती को सुनाअी नहीं दिया। अुन्हे अुस समय तक अपनेसिवाय वाहर की दुनियाँ का स्मरण तक नही हुआ था। पर अव ज्यो ही कुत्ते के शोरकी तरफ किशन का ध्यान गया, त्योंही अुसने दचक कर अुस तरफ मुडकर देखा और अुसे लगने लगा वाहरकी सारी दुनियाँ अुन दोनो की ओर—अुन दोनो के रक्त से भीगे हुअे हाथो पैरो और कपडो की ओर, अुन दोनो के मध्य में निर्जीव मर कर पडे हुअे गुलाम हुसेन के विकराल शव में से वीचवीचमे अुडनेवाली खूनकी पिचकारियो की ओर गौर से देख रही है 'येही है वे हत्यारे, धरो ! पकडो ! !' अिस तरह अुंगलियाँ दिखा दिखा कर शोर मचा रही है!—अैसा अचानक भास हुआ—अुसके मनकी वधिरता अेकदम दूर हो गअी। अव यहाँ वे अेक क्षण भी

वने रहे तो अुस दुष्ट की छुरी से वचे हुअे प्राण फाँसी के फदे में जा अटकेंगे। और यह मालती भी! फाँसीपर!! कल्पना भी भयकर!!

अुस धक्के के साथ ही अुसने अेक भारी पत्थर अुठा कर प्रथम अुस कुत्तेपर दे मारा। अुतने ही मे अुसको अुस तरफ के अेक टीले पर से पडौस के खेतो में दोतीन लोग लालटैन लेकर अपनी ही तरफ देखते हुअे, वातचीत करते दिखाअी दिये।

अुस कुत्ते के कोंचने और निरतर भौंकने से वे अपने खेतो की मेडो पर कभी के घवराये हुअे से खडे थे। तत्पश्चात् अुस झोपडी के पास गुलाम हुसेनकी और किशन की हुअी हुअी गुत्थमगुत्थी, गालीगलौज, चीखोपुकार और आखीर में गुलाम हुसेन पेटमें छुरा खाकर जव नीचे गिर पडा अुस वक्त अुसकेद्वारा फोडी गअी डुरकी, अिन सवके अस्पष्ट दृश्यो अेव शोरगुल के अूपर से वहाँ कोअी न कोअी भयकर प्रकार हो रहा है, यह अुन खेतिहरोंने पहले ही ताड लिया था। पर भय के कारण अुनकी जिज्ञासा दव गअी थी। वे लोग वहाँ गये तो वे स्वयम् किसी व्यर्थ की परेशानी मे फँस जायेंगे अैसा पक्का विचार अुन्होने किया था तथा वही से जो कुछ सुनाअी दे या दीखे अुसीकी चर्चा करते हुअे और वीचवीच मे दिखाअी देनेवाली अुस औरत के वारेमें ही कुछ सुदोपसुदी चल रही होगी अैसा तर्क वाधते हुअे वे लोग वहाँ अुसी तरह न जाने कव मे खडे थे।

अुनको देखतेही 'हमारी हत्यारेपनकी वात पट्कर्णपतित हो गअी' अैसी घवराहट किशन की छातीमे वैठ गअी! अुसके कहने से पूर्व ही, अुससे वगैर पूछेताछे अुसके हाथ ने लालटैन को अेकदम वुझा दिया! अँधेरे मे मालती का हाथ पकड लिया, और वोला,

"पहले हम यहाँ से निकल भागे चल! हमें पकडने के लिये लोग जमा हो रहे हैं! वे देख! चारो ओर मे घेरा डाला जा रहा है! चल!"

"अरे, पर कहाँ?"

"रास्ता मिलेगा-अुधर! जहाँ मर्जी वहाँ—पर अिस स्थल से दूर दूर दूर—यथा शक्ति दूर! चल जल्दी!"

"पर तुझसे कैसे चलने वनेगा? तेरा पैर तो लँगडाता है!"

"अेक पैर होगा लगडाता—पर दूसरा तो ठीक है न ? अुसीके आधार से जैसे चलते बनेगा वैसे चलूगा चल पहले।"

"और यह प्रेत ?—"

"मरने दे, पडने दे, सडने दे अुस दुष्टको ! नही तो अुसके कुत्ते को ही फाडकर खाने दे ! निकल, चल पहले यहाँ से ! पर ठहर, छुरा दे अिधर ! अुसकी पहचान तक किसी को न हो अैसा करना चाहिये !"

अैसा कह कर अुस प्रेत के मुँह पर अधेरेमें ही कचाकच वार कर के किशनने अुसे विद्रूप बना डाला ! "ह, अब ला, ताला कहाँ है ?"

मालतीने अँधेरे मे ही ताला टटोल कर खोज निकाला, बाहर निकलते हुअे अुसका पैर डब् से अुस खूनके डबके (= चहबच्चे) में जा पडा ! अुसकी छाती मे भी घबराहट भर गअी ! अुसने वह छुरा अपने पेटके नीचे छिपाकर रख लिया। अुसी हालत मे वह आगे जाकर अुस टूटे फूटे दरवाजे को ताला लगाने लगी हाथ कापने लगा। पर अेकबारगी ताला लग गया। और मनुष्यकी जैसी स्वाभाविक आदत होती है—अुसके अनुसार ताला लगाने के बाद अुसने ताले की चाबी अपनी कमर मे खोसली। अुसने रक्तस्नात वह छुरा अपनी कमर मे छिपा रखा था—वह ठीक से है या नही यह अेकबार पुन हाथ लगा कर देखा—यह जान कर कि अपने पास छुरा है, अुस मे पुन साहस और शक्ति का पूर्ण रूप से सचार हो गया।—"ह, चल काप मत किशन ! अिस मेरे हाथपर अपना भार डाल, हा, अिस तरह, और चल अुसके आधार पर तुझसे जितना चलना हो सके अुतना ! यह रास्ता मेरे पैरो के लिये पूर्णत परिचित हो चुका है ! ठहर दो चार पत्थर लेने दे हाथ में अुस कुत्ते को देखता रह, चबा (काट) लेगा वह मुआ छिपा-छिपा पीछे से आकर !"

अँधेरे में अुस पत्थरो के बाध को नाघकर अुस चबूतरे का फेरा मार वे दोनो जैसे तैसे अुस राहपर आ लगे।

"अब किधर मुडनेवाली है ? शहर की तरफ ?"

"हेट्, पगले, अिस वक्त हम सब रक्ताक्त हैं, पहले गगापर जाकर धो नहा कर स्वच्छ और सभ्य बने, चल पहले !"

"सच ? वहाँ के देवालय मे पहले चल, रात आज वही बिताअे, मेरा सामान वगैरे सब वहीं है। वहीं मे तो मैं यहाँ आया हूँ ! पहले वहाँ थोडा

सोजायें अिस रात । सवेरे होगा सब नहाना धोना और जो कुछ अपने दैवमें होगा वह !' मैयारी, पैर की दर्द अब बरदाश्त नही होती ! पहले देवालयमें ही चले, चल ! "

देवालयमे आतेही अकेले किशन ने ही नही बल्कि अितनी देर की अुत्तेजना से मन और तन दोनो की दृष्टि से अत्यत दुर्बलाअी हुअी मालती ने भी जमीनही पर पूरी तरह से अपना शरीर डाल दिया । अुसे दूर से ही किशनने पडे पडे आश्वासन दिया—" तू आराम से सो, वह छुरा अिधर दे, मै पहरा देता हूँ । अब दु:ख सारा भूला दे ह, कुछ देर ! "

" दु:ख ? अेह् मुझे, बताअूँ क्या, अिस वक्त क्या प्रतीत हो रहा है ? आनद ! अुत्साह ! कैसे कहूँ ? मेरे घरमे अेकबार अेक नाग निकला । दरवाजे के बड के पास वह कही रहा करता था। हमारी मा देवभक्त–अुसके लिये कटोरी मे दूध रक्खा करती थी । अुसे पीते हुअे हम अनेकबार अुसको दूर से देखा करते थे । मा कहती थी –साँप होने पर भी वह जीव ही है न ?–वह क्रिया जानता है ! वह दूध देनेवाले को कभी डसता नही है ! पर अुसका क्या बिगडा किसे मालूम ? वह अुस दिन अेकाअेक हमारे घर में निकल आया और मेरे साथ खेलनेवाली मेरी अेक मौसेरी छोटी बहन को डस कर मुझे डसने के लिये दौडा । हम सब लडके लडकियाँ जान लेकर भाग खडी हुअी " साप साप " अैसी अेकही पुकार की। अुसे सुनकर हमारे घर के नौकरने आकर अेक ही मार मे असकी तालू सेक दी ! वह अभी हिलडुल ही रहा था, पर मुँह खोलकर पडा हुआ है, अैसा देखकर अेक बडी काठी मैंने दूर पर ही से अुसके अूपर अैसे जोर से मारी कि अुसका बीच का हिस्साही चिथ कर निकल आया और मेरा गुस्सा अुस रूप में अुतर जाने पर मुझे बदले का जो आनद होता है, वह पहली मर्तबा, कितना मीठा होता है, यह समझ मे आया । वैसा अुन्मत्त आनद मुझे अिस वक्त चढा हुआ है ! मेरा यह सारा साहस है अुसी बदले के आनद का !—अिस बदले के छुरे का ! वह जबतक मेरे पास है तबतक मेरी जान में जान है ! अिस वक्त तो सिरहाने ही रहने दे अुसे मेरे ! मुझे नीद—किशन ! अरे, पर मेरी मा !—मुझे पहले यह बता मेरी मा किधर है ! कुछ मालूम है क्या तुझे ? मै अुठकर बैठती हूँ अ, बता ! " वह जैसे तैसे ग्लानि प्राप्त होते हुअे शरीर को सँभाल कर

अुठ वैठी, पर अुसका वह वोलना, आंखो मे अूघ भरे हुअे मनुष्य की तरह टूटा फूटा था।

किशनने मालती को गुलाम हुसेन के यहाँ कैद हो जाने के वाद नायडू वाअी को और अुसकी मा को अुस छद्मी योगानदने किस तरह अुल्लू वनाया और अुसपर विश्वास कर के वे दोनो किस तरह मालती को खोजने के लिये नागपुर की ओर चली गअी और अुसके वाद किस तरह अुनका पता अुसे भी नही था यह सव सक्षेपमे कह सुनाया। पर अुसके समाप्त होते न होते मालती के सज्ञायुक्त मनके सारे व्यापार वद पडनेके करीव आये। वह सुनते न सुनते कव नीचे लुढक गअी और सो गअी अिसका मालतीको भी पता नही था। किशन भी जमीन पर ही पड गया। अुसके मनमे अुन कृत्यो के भयकर परिणामो के विचार कोलाहल मचा रहे थे। वीचमें अूघ, वीचमें वह कोलाहल वीचमे वह पैर की दर्द—वह अुसी तरह तडफडाता पडा रहा। दोवार अुसे वूटो की टापे सुनाअी दी और वह डरके मारे अुठ वैठा। वाहर जाने पर जव अुसे मालूम पडा कि कोअी भी नही है तव वह फिर अदर आकर पडा रहा। पुलिसवालो के चेहरे अुसकी आँख वद होते ही अुसके सामने आकर खडे हो जाते—अुसे वे पकड रहे है, अैसा प्रतीत होता था। तव वह फिर आँखें खोलता, धीरज धारण करता, और सवेरे निकल भागने के लिये क्या किया जाय, अिस सवव मे निश्चय अूघही अूघमे करने लग जाता।

मालती का सज्ञायुक्त मन यद्यपि चावी वद पडी हुअी घडी की तरह साफ वद पडा हुआ था, तथापि अुस ग्लानिजन्य गाढ निद्रा में भी अुसके असज्ञ मन के स्तरोमें किशन के चित्त के अतर्वर्ती कोलाहल के सदृशही वृतिभीति-माया-ममता-स्वेप-द्वेप अित्यादि की नाना स्मृतियो और नाना कल्पनाओ का अेकमेव कोलाहल मचा हुआ होना चाहिये। वह वीच ही में दचकती हुअी, हँसती हुअी-खुर्राटे भर रही थी। स्वप्न पडते पडते अुसे नीदमें अैसा भासित हुआ कि, वह मा के साथ अुस मथुराके झूलने पर प्रेमभरी पद्यपक्तियाँ गाते हुअे रस्सीसे अूचे अूचे झोटे ले रही है। अुतने ही में अुसके नीचे से झूलना अूपर होकर अेकदम निकल गया और अुस रस्सीकी लपेट में अुसकी गरदन वुरी तरह लिपट कर लटक गअी। दम घुट गया—गले मे फदा पड गया और अुसकी जीभ वाहर निकल आअी।—और अैसी भीषण स्थिति मे अपने

आपको वह ही देख रही है ! ! अुस धक्के के साथही 'मर गअी ! मर गअी ! दौड ! मा, गले में फदा पड गया मेरे ! ' अैसा स्पष्ट रूपसे चीख मारकर मालती अेकदम अुठ खडी हुअी ! थर् थर थर कापने लगी ! जोर जोर से हाँफती हुअी नीद मे वदला हुआ श्वास जोर जोर से लेने और छोडने लगी—— ।

किशन भी तत्काल अुठा । अंधेरेमें जहाँ मालती घवरा कर खटी हुअी थी वहाँ हाथ टटोलते हुअे अुसके कधेपर अेक हाथ रखकर दूसरे हाथ से अुसकी पीठ थपथपाता हुआ मालती को धीरज देने लगा । अुतने ही मे मालती ने थरथराते हुअे हाथो से अुसके गले मे गलवाँह डाल दी । "किशन, मुझसे खडा नही रहा जाता, मेरी छाती मे न जाने कैसी धडकी घुसगअी है—मुझे अपने पेटके साथ मजवूती से चिपटाकर मेरे साथ ही सो । लजा मत । मैं अपनी अिच्छा से जिसे अपने साथ सोने के लिये ले रही हूँ, अैसा पहला पुरुष तूही है ! "

विलकुल नजदीक लेकर किशन के सोतेही अुसे अेकदम अैसी गाढी नीद लग गअी मानो वह बीच मे अुठी ही न हो ! नीदमें चलने वोलने का जो अेक रोग होता है, अुसका मानो अेक झटका ही आया था अुसे !

विल्ववृक्षपस्थ कोकिल की पहली कूक जव प्रभात वेला मे सुनाअी पटी तव वडे कष्ट से किशनने मालती को हिला कर पूरी तरह जगा दिया ।

"मालती, मैंने आगे के निश्चय की सारी योजना पक्की कर ली है ! धीरज मात्र धारण करना होगा । धीरज नही न खो वैठगी तू ? "

"पगले, मै अव सपने मे थोडअी हू ? स्वप्न के फाँसीके रस्से से जो लोग डरते है, अुनमे से कितने ही, वास्तविक फाँसी के रस्सेसे विलकुल भी खौफ नहीं खाते ! "

"पर फाँसी का नाम मुँह से निकालती ही काहे को है ? सक्षेपमे सुन ! तू अव गगा में जाकर अपना यह मुस्लिम वेप और खून के दागोवाले कपडे गगामे डुवा दे, नहा और मेरी अिस गठडी मे मे यह धोती लेकर अेक भिकारिणी की तरह पहन कर यह कटोरा हाथ में ले अिस टेढे रास्ते मे निकल जा और गावो में से होती हुअी घर पर मा से जाकर मिल ! और—"

"छट् ! ठहर। मेरी मा का नाम अव पूरी तरह भुला दे ! अरे, वह मुझे देखतेही मेरे मुँहपर हाथ फेरने के लिये यदि फिर दौडेगी तो अुसके भी हाथ मेरे मुँह परके खूनी दागो से खून भरे होजायँगे ! अुसके शरीर पर मेरे हाथ के कर्मो के छीटे अुडकर अुस साध्वी की निर्मलता भी कलकित हो जायगी ! मै अपनी माता के आगन का अेक निर्मल फूल थी–तव मुझे मालती कहा करते थे ! पर अव मै वह फूल नही रह गअी हूँ–अव मै हो गअी हूँ समाज के मार्ग मे अेक काटा ! कही भी धूलमे मै पडी रहूगी, पर फिर माके आगन मे पडकर अुसके पैर मे गडूगी नही ! अव अपना नाम भी मै वदल डालूगी ! फूल–नही काटा ! मालती नही–कटकी ! ! अव फिर, स्मरण रख अ, माल्ती नही कहना–कटकी कहना मुझे ! "

"ठीक है ! पर अव तू मुझे अकेला छोड जा ! मुझसे चलना नही वनेगा ! मै भी पीछेसे जैसे-तैसे निकलूगा ही यदि पकडा ही गया तो अकेलाही अिस हत्याका सारा मामला अपने अूपर ले लूगा। बच निकला तो तुझ से मिलूगा ! मुझे भी अपना नाम वदलना लाजमी है। ध्यानमे रख मेरा नाम कटक ! अैसा करने मे पिछले खटलो के तागे-डोरे मेरे तेरे, तेरी माता के चारो ओर फिर सहसा अुलझेगे नही। जिस अधम का सिर कुचल कर सजा दी है अुसका नाम भी नही कहना 'माल्रूम नहीं' कह देना ! अव अेकत्र फिरने मे दोनो के दोनो फँस जायँगे अत तू तो अव चली जा ! माल्ती ! तेरे पास से दूर होते समय पानी मे वाहर फेंकी हुअी मछलीके समान मेरे प्राण छटपटाते है–पर तेरे केशाग्र को भी धक्का नही लगा तो फिर से तालावमें पडी हुअी मछली की तरह वे सतुष्ट होगे ! अ–ह–सारी चर्चा वद ! देख पौ फटने लगी ! "

वे अितना वोलते ही थे कि अुतने ही मे दूरसे शोरगुल सुनाअी दिया ! अुसे रातको वूटो की टापो का भास हुआ था–वह जैसे खोटा सावित हुआ था, वैसेही यह भी भास ही सावित होगा, अिस आशा से किशनने वाहर सिर निकाला ! पर क्या गजव ! सचमुचही कुछ लोग शोर शरावा करते हुअे देवालयकी दिशामे आते आते रास्ते मे ही ठिठके हुअे से अस्पष्ट अस्पष्ट दिखाअी दिये !

गौर से निहारने पर अेक नजदीक के चबूतरेपर दो लोग खडे दिखाअी दीये–और वे शकाही नही–सवेष पोलीस ! !

प्रत्याशित हो, तो भी भयकर सकट निश्चित रूप से टूट पडते ही मनको वैठनेवाला वलोत्कट धक्का वैठे वगैर रहता नही। किशन को तो सकट टल भी जायगा अैसी थोडी वहुत आशा थी। तव, वह भयकर सकट पूरी तरह टलने की देहरीपर आया ही था कि फिर पक्की तरह गले से आकर भिडा हुआ नजर आतेही अुसकी छाती में अेकदम घडकी का घुस जाना स्वाभाविक ही था। पर अुसने शीघ्रही अपना समस्त धैर्य अेकत्र किया–सट् से अदर की ओर मुडा और मालती से दवी आवाज में वोला–" वे आ पहुँचे ! सुन ! अव में जो अुन्हे आगे होकर कहूँ–वही और विलकुल वही तू भी कहियो ! अेक शब्द भी कम और अधिक किसी भी अवस्था में मत वोलियो ! सैकडो पक्के डाकुओ चोरो और हत्यारो की टोलियो में कारागृहके अदर रहकर मैं अव अिस किस्मके कानूनो के छक्के पजे पूरी तरह सीख चुका हूँ ! अैसे अवसर पर सव कुछ नकारना सर्व प्रकार से अशक्य होता है ! अुन खेतिहरोंनेही रातोरात यह खवर पुलिसवालो को दी होगी, खून के पैरो के चिन्ह, कपडे और हाथ खून से लथपथ ! "

अुतने में ही—

"कौन है अदर ? चलो वाहेर आव ! ! " कुछ अतर ही से पुलिस-वालो की डाँट भरी आज्ञा छूटी !

किशन खट् से वाहर आया, आगे हो गया। अुसके सायही "पकडो पकडो ! " अैसा पुकारते हुअे दो तीन सिपाही दौड कर आये और अुन्होने वही किशन के हाथ में कडियाँ ठोक दी !

"हथकडी काहे को ? अितनी मजवूतीसे कसकर काहेको पकडते हो मुझे ? तुम लोग न भी आते तो भी मैं स्वय पुलिसवालो को खवर करने के लिये अूधर आनेवाला ही था ! "

"अिस तरह सरल व्यवहार रक्खोगे तो अुसमें तुम्हारी ही व्यर्थ की तकलीफ वचेगी " पुलिस का अधिकारी समझौवलकी वात कहने की गात भापा में वोला। " "वताओ अुस परली ओरकी झोपडी मे रहनेवाले मनुष्यकी

नादृश भयकर हत्त्या तुमने क्यो की ? तुम्हारा नाम ? हा यही वह औरत ! पकडो अुस औरत को भी ! ”

“ ठहरो, अुस आदमी की हत्त्या मैंने की है–अुस स्त्रीनें नही ! और वह अिस लिये कि, वह आदमी ही नही था, वह था अेक नृशस राक्षस ! मेरा नाम कटक, यह मेरी वहिन कटकी ! हम जव छोटे थे तव अुज्जयिनी की ओर अेक मेले में भीख मागते फिरनेवाली हमारी मा भीड भडक्के की चपेट में आकर मर गअी। अुस से पहले की अपनी राम कहानी हमें विलकुल मालुम नही। आगे की हमारी कहानी यो है–हम दोनो भीख मागते हुअे और अेक मेले से दूसरे मेले मे जाते हुअे आज तक अुसी तरह भटकते चले आ रहे है ! कुछ दिन पहले मेरी यह वहिन भीख मागती फिर रही थी–अुसे अकेले मे पाकर अुस मुसलमान गुडेने जवर्दस्ती खीचकर अपने घर मे डाल लिया–वद करके रखा। पता चलाते चलाते अुसके घरके आगे जाकर पहुँचते ही और अुसे 'मेरी वहिन को छोड दे' अैसी डाँट वताते ही वह छुरा लेकर मुझपर टूट पडा। हाथापाअी में वही छुरा छीन कर मैंनें अुसका मुरदा गिरा दिया–और अपनी वहिन को छुडा लिया ! अत्यत थकावट के कारण यही रात विताकर अभी अुठे है और पुलिस को हम स्वय यह सारा समाचार देनवाले थे कि अुतनेमे तुम्ही चले आये ! ”

मालती से पूछने पर अुसने भी वही वयान दिया जो किशन के वयानके साथ पूरी तरह जुडता था। अुस मुसलमान गुडे का नाम-ग्राम, पूर्ववृत्त अित्यादि मुझे कुछभी नही मालूम अैसा, पुलिसवालो के खोदखोदकर किये गये सवालो का अुसने निश्चल अेव निर्भीक वृत्ति से जवाव दिया।

छान वीन करने पर मालती के रक्ताक्त कपडे हाथ, मुँह, कमरमे खोसी हुअी अुस टूटे घर की चावी और वह रक्त-स्नात छुरा मालती के शरीर पर मिला। अुसे नोट करके अुन दोनो को पकड कर ले चले ! साथ ही वे खेतिहर भी लौटे ! अपने पर कोअी जुर्म न आ पडे अैसा सोच कर अुस टूटे फूटे घरके अदर चलनेवाले किसी भयकर प्रकार की सूचना अुन्होंनेही रातो-रात पुलिसतक पहुँचादी थी। अुसके सारे सवूत और पहचानते वगैरे पुलिसवालो के लिख चुकने के वाद अुन्हे अपने अपने घर भेज दिया गया ! “अपराध मेरा ! मेरी वहिन को भी छोड दो और लौटा दो ” अैसी विनति

किशनने की। अुसे फटकारा गया—" दर्शनी सबूत तुम दोनो के विरुद्ध हैं। अत तुम दोनो को गिरफ्तार करना हमारेवास्ते लाजमी है। अपराध किसका है, यह आखीर मे न्यायाधीश ठहराते हैं, न हम, न तू।"

किशन और मालती—दोनो ही पर खटला भरा गया। अपराधी भी अेकदम हाथ लग गये। अुस हत्याके लिये सबूत पूरे थे। अपराध के तागे डोरे कही अुलझे हुअे नही थे। अुस निर्जीव मारित व्यक्ति का पूर्ववृत्त सर्वथा अविज्ञात। छुरे के घावो से छिन्नविच्छिन्न हुअी अुसकी मुद्रा के कारण अुसकी पहचानत भी मुश्किल थी। और अुस वर्वे मे पडने का अुस मुकद्दमे भरके लिये कोअी भी प्रकार बाधक नही बना। अिस सारी परिस्थिति के कारण किसी भी गहराअी मे न जाते हुअे अुस हत्या भर के लिये आरोप लगा कर खटला चला कर पुलिसवाले मुक्त होगये। अुनके बयानो के बाद आरोपियो की ओर से बचाव भी नही था।

आखिरी दिन न्यायाधीशने फैसला सुना दिया—

" किस आरोपीने प्राणघातक हमला किया है, यह अच्छी तरह सिद्ध न हो सका, किंतु अितना अवश्य सिद्ध हो गया है कि अिन दोनो ने जान-बूझकर अिस हत्यामे भाग लिया है। अत हम कटक और कटकी दोनो भाअी बहनो को सजा देते हैं—आजन्म कैद काला पानी।"

ये शब्द सुनतेही किशन की आँखो मे टप् टप् बूंदे टपकी तथापि फासी की सजा टलगअी अत अुसे थोडा सा हलका पन भी मालूम पडा। पर अुस शब्दमे कुछ न कुछ भयकर अर्थ भरा हुआ है अैसा धुंधले तौर से प्रतीत होनेपर भी, अुसकी भीषणता का बिलकुल स्पष्ट चित्र मनमे अवतीर्ण न होने के कारण ही मालती आजन्म कैद काला पानी' ये भयकर शब्द सुनते समय भी सुन्न होकर अुसी तरह देखती रही। पर न्यायाधीश के अुठने लगते वक्त मात्र वह अेकदम भावावेगमे आकर विनति करने लगी—"

" अेक क्षणभर! थमिये न! कृपालु महाराज, मुझे अितना बताअिये कि, काले पानी पर जाने पर मेरा यह भाअी—अह—कटक मेरे साथ ही रहेगा न? अपने जेल को अितनी आज्ञा दे कर रक्खेंगे क्या, कि काले पानी में भी हम दोनो को अेकत्र ही रक्खा जावे? दया हो!"

"अनजान लडकी ! वह क्या न्यायाधीश के हाथ मे रहता है ? काले पानी मे पुरुषो के और स्त्रियो के वदीखाने त्रिलकुल निराले-निराले रहते हैं ! अुस मे भी अेक ही खटले के सारे अपराधियो को तो पुरुषो पुरुषो और स्त्रियो स्त्रियो को भी सहसा अेकत्र नही रहने देते ! '

न्यायाधीशने ये शब्द सहानुभूति के स्वरमे भले ही अुच्चारे हो फिर भी पहले के सजा सुनाते वक्त के भावनाशून्य शब्दो की अपेक्षा भी मालती को वे अधिक दारुण लगे। " आजन्म कैद काला पानी " अिन शब्दो की भीषणता की अपेक्षा भी किशन के नित्य के लिये दूर चले जाने की कल्पना मे रहनेवाली भीषणता अुस के मन को अत्यन (असह्य) स्पष्ट रूपसे अेकाअेक समझमे आने के कारण अुसके अुच्चारण के साथ ही वह अकस्मात् विलख अुठी, सिसक सिसक कर " अैसा मत कीजिये—मत कीजिये ! " अिस प्रकार का अधूरा वाक्य ही वार-वार दुहराती हुअी वह प्रार्थने लगी !

न्यायाधीश के मनको पहले ही से अुसके अपराध की निरपराध वाजू रिझा रही थी, पर कानून कानून ही है ! वह अनुल्लघ्य ! अत अेव वह खटला जव तक चलता रहा वे ममता के वाक्य कुछ भी नही वोल पाये थे। पर समस्त खटले मे धैर्यपूर्वक निश्चल रही हुअी तथा आजन्म काले पानी की कैद की भयकर सजा सुनते वक्त भी जो भावावेशमे आअी नही वह लडकी अपने भाअी मे विछुडने की वात सुन कर चिहुँक चिहुँक कर रो रही है यह देखकर न्यायाधीश का अत करण द्रवित हो अुठा और थोडावहुत आश्वासन दे कर वे अुसे समावानने के लिये वोल गये—

"रोओ मत वच्ची, काले पानी मे यदि तुम्हारी चालचलन ठीक रही तो दस पांच वरस वाद तुम्हे शादी की अनुज्ञा मिलने की सुविधा है ! तव अुस टापू ही मे क्यो न हो तुम सुख मे अेकत्र रह सकोगी ! '

वे शब्द सुनतेही जैसे काले पानी की सजा रद्द होकर वह छूट ही गअी हो, अैसा अुस सकट के तूफान म दिङमूट हुअी हुअी मालती को मनही मन आनद हुआ। " महाराज, आपके मुँह म मिस्री, जिसमे मर्जी अुसके साथ शादी मै कर सकूगी न ? वदी खाने का नियत्रण मै पूर्ण रूपेण पालन करूगी ! "

अुसके स्त्रीय निसर्गांतर्वर्तिनी सारी यौवनसुलभ भावनाअे अुस कल्पना के साथ ही तृप्त-प्राय हो गअीं ! किशन के साथ अुसकी शादी हो गअी अैसा अुसे लगा। पर पगली मालती ! कल्पना का अर्थ वस्तुस्थिति नही है ! अितने कठोर, निर्दय, निर्घृण अनुभव के अनतर भी यह तुझे अभी तक समझम नही आया न, कि मनुष्य अपने ही नियत्रण के, पाप पुण्यके, कर्माकर्म के फल हीं सिर्फ नही भोगता वल्कि, अिस प्रत्यक्ष जगत्में तो समाज के पाप पुण्य के और कर्माकर्म के भी फल अिच्छा न रहते हुअे भी भोगता रहता है, अुसे दूसरो के दुष्कृत्यो के भी फल—प्लेग की जनपद विध्वसकारी अवस्था में केवल वातावरणीय ससर्ग मे निरोगी व्यक्तिको भी प्लेग हो जाता है तद्वत्—भोगने पडते है !

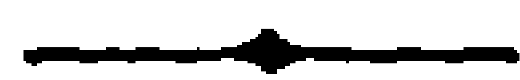
तेरे दैव में तो वही लिखा हुआ है, अैसा अवतक तुझे विदित नहीं हो पाया क्या ? अन्यथा, यह तेरे देह की, मन की, भावनाओंकी असह्य अेव भयप्रद विडवना आजतक अिस कोमल वयस्मे अिस तरह निरंतर होती चली जाय—अैसा तूने स्वत कौन मा पाप किया था, कौनसा अपराध किया था ? किसका क्या वुरा किया था ? अपनी माता की ममता के आगन में विकसित हुअी-हुअी मालती, तू अेक मालती के कोमल निर्मल पुष्पकी अर्धोन्मीलित कलिका !—जैसे शरत्कालिक चद्ररेखा !—अिस अवस्था में हमने प्रथम जव तुझे देखा था तव कम्वख्त नसीवके जन्म भरके मारे को भी तेरी—तेरे अपराधोंके विना यह दुर्दशा होगी-अैसी कल्पना नही हो सकती थी—दुष्ट से दुष्ट पिशाच के द्वारा भी तुझे अेतादृश शाप निष्कारण न दिया गया होता !

और वह असह्य दुर्दशा अितनी लज्जाकर कि महानुभूति के समक्ष भी अुसे खोल कर न कहा जा सके ! अुस दुराधर्ष, अमगल और अभद्र नर पशु की अघोरी वामना जवजव तेरी लज्जा की वलि लेती थी तव अुस कोमल अग की आग और तेरी कोमल भावनाओ की राख जो हुअी, वह, हे अनागस कुमारिके, तूने स्वत किसी नीतिनियम, विनय या अनुशासन का भग किया था अिस लिये हुअी थी ? तेरी अुस अघोरी दुर्दशा मे से तुझे तथा तादृश अन्य अनेको को छुडाने के लिये यह किशन सामने आया था, अिसने नीति नियमो की, परोपकारकी अेव विनय की पर्वा की और तुम लोगो ने अुस राक्षस

के खून की नहर बहाकर अुसके अत्याचारकी वह आग बुझा दी, अिसीलिये अत्याचारी साबित हुअे तुम लोग ? समाज में लाछित होगये तुम ? काले पानी भेजना होगा अब तुमको ? समाजपीडक अत्याचार को अुच्छिन्न करने वाला ही कभी कभी समाजपीडक अत्याचारी समझा जाकर दडित होता है। नीति-नियमो के असली अनुशासन का पालन करना यही अपराध साबित होकर अुसीके लिये अनुशासनभग का फल भोगना पडता है।

यह दोष किसका ? अैसा होता क्यो है ? अथवा अैसा न होने के लिये कैकिन अुपायो की योजना की जाय ? यह प्रश्न यहाँ अस्थानप्रयुक्त अेव सर्वथा अप्रासगिक है। हा, अैसा होता अवश्य है, और अिसी लिये मालती, तूने अनुशासन का पालन किया है, अुसका पारितोषिक तुझे मिलना ही चाहिये, स्वप्न सत्य होना ही चाहिये, अैसा निश्चित मत समझ।

परतु सुख-स्वप्न सत्यसिद्ध ही नही होते सो भी बात नही है। अत सुखस्वप्नो को देखकर हसती है, तल्लीन होती है, तो क्षणभर मजे से हँस, तल्लीन हो। पर अुसे अेक स्वप्न समझकर ही अुसमें रत हो। जाग जानेपर वह स्वप्न सत्य ही सिद्ध होगा अैसा आग्रह मात्र मत रख—बस।



समुंदर में डुबायेंगे क्या हमें ? : : : १

कलकत्ते के बदरगाह पर स्थित प्लेटफार्म का अेक पटागण पूर्णतया खाली करने के लिये पुलिसवालो की दौड धूप शुरू हुअी। सब मनुष्य निकालकर बाहर कर दिये गये। वे हटाये गये लोग दूरपर जाकर जहाँ जगह मिली वही भीडके रूपमें जमा होकर, आगे क्या होनवाला है, अिस अुत्सुकता के वशीभूत होकर अेक दूसरे के कधोपर टेका ले कर पजो के बल पर खडे होने लगे।

अितने में जिधर-तिधर लोगो में शोर होने लगा "आया। चलान आया। चलान आया!"

'चलान' का अर्थ अुस झुड से है, जिसे अदमान भेजे जानेका दड दिया गया है, और जो भिन्न भिन्न जेलो से लाया जाकर अेकत्र करके वदरगाहके प्लेटफार्म पर अेक ही झुडके रूपमे अवस्थित हुआ हुआ है।

सव अपराधो में जो अत्यत घातक और नृशस अपराव है, वह जिनके हाथ की मैल वना हुआ है, अैसे हत्यारे, आग लगानेवाले, जहर देनेवाले, डाकेजनी करनेवाले पक्के पापियो को वहुवा काले पानी की सजा देने में आती है। अुसमें भी जो लोग अतिवृद्ध, अल्पवयस्क, अत्रत्य वदीशालाओ में सद्वर्तन-द्वारा सुधारणीय कल्पित हुअे-हुअे हैं, अुन्हे छोड कर वाकी वचे हुअे जो आत्यतिक घोर अपराधी होते हैं प्रायश अुन्ही को काले पानी भेजने में आता है। राजकीय प्रकरण को अेक ओर रखें तो किसी भी सुव्यवस्थित समाज के लिये जिनका अस्तित्व महामारी सदृश जनपदविध्वसी वीमारियो की भाति भयप्रद प्रतीत हुअे विना नही रहता, अैसे अुग्र, हिंसक, अुच्छृखल, खल लोग ही अिस कालेपानी की तरफ भेजे जाने वाले 'चलान' में भरती किये जाते हैं। अपवादो को छोड दिया जाय तो सामान्य नियम अिस प्रकार का है।

परतु अुस पटागण (खुली मैदान सरीखी जगह) मे वह 'चलान' आते वक्त जिसको अुसकी विलकुल भी माहियत नही है अैसे किसी नये आदमी को किंवा भोले भाले मतको अुसे देखकर क्या अनुभव होगा? निश्चय ही अुसको अुस 'चलान' के विषय मे क्रोध न आकर अुलटे दया ही आयगी! क्यो कि वे विचारे कितने अनुशासन मे, वहुतसो की गर्दनें झुकी हुअी, वहुतेरो की आंखो मे वूंदें—कम से कम मन मे धडकी, चेहरे अुतरे हुअे, पास के आदमी से अेक अक्षर भी न वोलते हुअे या अगर कोअी वोला भी तो किसी लडकी की तरह लजाते हुअे, केवल ओठ फरकाते हुअे, चार चार की कतार मे, विलकुल सादा भिक्षुको सरीखा वाना पहने हुअे, नाप नाप कर कदम रखते हुअे, सिपाही ने 'ठहरो' कहा तो ठहर गये, "वैठ" कहा तो वैठ गये, 'अुठो' कहा तो अुठ गये अैसे नौ—सवा सौ लोग होने पर भी विलकुल गडवड न करते हुअे अुस पटागण में चल रहे थे! अितने शात दात, सयत जीवियो का वह झुड! सौ सवा सौ वकरियो-भेडो का झुड कसाअीखाने की तरफ ले जाया जाता था भी अिन लोगो की अपेक्षा अधिक गडवड करता हुआ जाता, कम दयनीय

दिखाओी देता। अैसे अुन बेचारे दीनदुर्बलो को अुनके मातापिताओो से, बालबच्चो से, औरतो से जन्म भर के लिय बिछुडा कर कालेपानी की ओर तत्रत्य अनन्वित जुल्म अेव कष्टकी बलिवेदी का बकरा बनाने के लिये ले जाया जा रहा है न? राजकीय कानून की कैसी यह निष्ठुरता? सजा की क्रूरता!

अुन लोगो को सिर्फ अुस दुर्दशामे ही देखनेवालो को किंवा, पीडा दृष्टिगोचर होते ही वह रोगापहारक शल्यक्रिया की है या मारक शस्त्राघात की है, अिसका विवेक न करते हुअे केवल रोते बैठनेवाली मिचलाती दया को अुन अुस वक्त गोगल गाय की तरह दयनीय प्रतीत होनेवाले चलान के अदर के सजायाफ्ता लोगो को देख कर अत करणपूर्वक करुणा ही आओी होती, अुनके विषय मे हार्दिक सहानुभूति ही प्रतीत हुओी होती, और गुस्सा अगर किसी बात का आया होता तो अुन पुलिसवालो की निर्दय डडेबाजी का! बदुको में सगीने चढाये हुअे पुलिस की टुकडियाँ कुछ आगे पीछे, कुछ डडे संभाले हुअे आजूबाजू को—बीचबीचमें कभी कुपित मुखमुद्रा से अेव कठोर स्वर से चिल्लाते हुअे अुन बेचारे बदियो के झुडको—कसाओी पशुओ के झुड को ले जाते हैं तद्वत् ठोकते पीटते आगे की ओर हकाले लिये जा रही थी। कोओी थोडा जोर से बोला या रेगा कि, दिया अेक डडे का ठोंचा अुसे। जरा किसी ने 'अरे तुरे' किया कि पोलिस के तीनचार डडे बैठे ही समझो अुसके खोपडे पर। वहाँ न छान बीन, न साक्षी न सबूत—अेकदम डडा। सारे न्याय-कानून अुसमे समाये हुअे! अूपर की निगाह से देखनेवालो को असली निर्दय और जालिम प्रतीत हुअे होते वे पोलिसवाले और असली दीनदुर्बल जँचा होता वह 'चलान'!

पर यदि अुन धार वद सगीनोवाली बदूको और डडो का गराडा (घेरा) अेक घडी भर के लिये हटाकर अुस चलान के अदरके अुन नीची गर्दनोवाले और बूदें बहानवाले 'बेचारो' को खुला छोड दिया गया होता तो? आँखो मे करुणा की अेक कणिका भी न प्रवाहित करते हुअे अुस चलान में के अुन बहुतेरे बेचारो ने आधा कलकत्ता जलाकर खाक कर डाला होता, और बचे हुअे आधे कलकत्ते की गर्दने मरोडकर हाहाकार मचवा दिया होता। सरकस के रीगन मे भाले और कँटीले चाबुक फटकारते रहनेवाले नियामक लोग

जबतक सामने और आजूबाजू मे बने रहते है, तबतक सिंहव्याघ्रभी जैसे सुसभ्य नागरिको की भाति रीगन मे अनुशासन के साथ चलते है वैसे वह 'चलान' अनुशासन में चल रहा था, वे सगीने और वे डडे अुसे घेर कर खडे थे अिसलिये! अपवाद को अेक ओर रख छोडें तो, अुस चलान मे के बहुतेरो की वह सभ्यता, वह विनय, वह दीनता, वे बूंदे, नीति की नही थीं, थीं तो केवल निरुपाय भीति की!! अैसे अुच्छृखल खलो को भी समाजस्वास्थ्य-पोषक अनुशासन मे लाया जा सकता है, पर गीता के पारायण से नही, सगीनो की फौलादी नोको से!!

बिलकुल गोगलगाय की तरह बेचारे दिखाअी देनेवाले अिस चलान के दसपाच व्यक्तियों का थोडासा परिचय यदि आप लोगो को करादें तो मिचलाती दयाभावना को सिर्फ अुनकी अिस दुर्दशा की ओर देख कर जो करुणा फूट अुठती है वही नफरत के रूपमें बदल जायगी! और अैसे हिंस्र मानवी श्वापदो में भी मनुष्यता जो थोडीसी रहती है, अुसी को जीवित रखकर अुस हिंस्रता के रोगाणुओ का प्रतिरोध करने के लिये अूपर से अत्याचारी प्रतीत होनेवाली अिन धारबद सगीनो की चुभने (अिंजेक्शन) क्यो जरूरी है, यह ध्यान मे आजायगा। यह आ ही गया देखिये, वह 'चलान'!

पुलिस की सगीनो और डडो के चौफेर पींजरे मे बद वे सौ-सवा सौ श्वापद चार चार की कतारो मे अुस पटागण में अेक झुडमे आये वह अजस्र समस्त पीजरे का पीजरा ही मानो आगे ढकेलते हुअे पटागण मे लाकर खडा कर दिया। अुनमें से प्रत्येक काले पानी की सजा पाये हुअे शख्स के पैरो में पडी हुअी और कमर मे चमडे की गाठो से बंधीहुअीं दो-दो लोहे की बेडियाँ खनखना रही थी। प्रत्येक की छातीपर अेक जस्ती बिल्ला, अुसपर सजा के बरस और नाम खुदा हुआ, प्रत्येककी काखमे अुसके बिस्तरे की गठडी,—अेक हाथमें अपना अपना जस्तका बना तसला, अुस बोझ के नीचे, जो अुन लोगो में कच्चा ढीलाढाला, वह-वह कैदी झुकता—कन्हाता, जो अभ्यस्त और हट्टाकट्टा वह-वह अकडके साथ, किंतु तो भी डडे से दुबकता और दांत पीसता हुआ अपनी कतार में खडा था! अुनमे से अिस पहली कतार में विद्यमान काले पानी के अुद्भूयमान नागरिको का ही, सिर्फ बानगीके लिये, परिचय आअिये, प्राप्त करें!

यह पहला बेचारा। रामदयाल नाम अुसकी छाती परके विल्ले में खुदा हुआ है और सजा १४ वरस काला पानी। अिसने अपने सगेभाअी की मौत के बाद अुसके अिकलौते छोटे बच्चे को विष देकर मार डालने का खडयन्त्र किया था। और अुस वजह से लडका मर गया। वजह ? अुस सगे भतीजे का काटा राह में से निकल गया तो अुसका वंश नष्ट हो जायगा और सम्मिलित कुटुंब की सारी मालमत्ता अिसे हडपने को मिल जायगी।

यह जो दूसरा दंडित, वह अेक अर्थ मे सुधारणीय अपराधी कहा जा सकता है। अुम्र सतरह-अठारह वरस की—नाम गोपाल, मुद्रा गवारू। अुसके घर के पिता, चाचा वगैरे बडे आदमियो ने अपने खेतो को नीलाम पर चढा देने के गुस्से की वजह से, अुस गाव के साहूकार से बदला लेने के लिये अुसके घर डाका डाला। बडे आदमियो के साथ यह लडका भी गया। साहूकार को नीचे गेरकर वे लोग अुसकी मरम्मत करही रहे थे कि अिसने चक्की का अेक पाट अुठाकर अुस बेचारे साहूकार के सिरपर दे मारा—अुस का मगज ही बाहर आ गिरा। साहूकार का अपराध यह कि, अिस परिवार ने अुसका कर्जा चुकाना तो दूर रहा, अुलटे अुसकी अनाजकी ढेरी, खलिहान और जानवरो तक को जला डाला था—मारडाला था, अत अुसने अिनपर खटला किया और यथा रीति नीलाम करके अिन लोगो के खेत बेच डाले अिसके पिता को फाँसी की सजा हुअी—यह लडका दूसरे नम्बर का, अत अिसे आजन्म काले पानी की सजा सुनाअी गअी।

पर अिस तीसरे बेचारे को देखा आपने ? कितने नियन्त्रण मे खडा है, कितना व्यवस्थित, निर्बंधशील (Law-abiding) दिखाअी देता है वह अिस धारबद संगीन की चमक-दमक में। पर जबतक वह चमक अुसकी राह पर पडी नही थी और अुस राह पर वह अपने स्वभाव के अंध-प्रकाश मे ही निहारता-निहारता स्वतंत्र रीति मे चला जा रहा था, तब यह नागरिक किस तरह चल रहा था मालूम है ? यह बात आप अुसकी सजा के अिन नोटो में पढिये। यह बलूची। तत्रस्थ अुद्दंड टोलियो में का अेक मनुष्य। नाम अल्लाबख्श। सिंध प्रांतवासी अिन गिने हिंदुओकी बस्तियो पर अिस टोली के जो बार बार डाके पडते थे अुनमे भाग लेता लेता यह अितना मरूर बन गया कि अिसको हिंदू लडको लडकियोके मास के लचके तोड तोड

कर खाने की राक्षसी आदत पड़ गअी। आखीरकार, अेकदफा पेशावर की तरफ जानेवाली अेक रेलगाडी के स्त्रियो के डिब्बे म अेक हिंदू स्त्री अपने नन्हे दुधमुंहे को लेकर अकेली बैठी है, यह पता चला कर वह अुस डिब्बे म घुस गया, छुरी तान कर अुस स्त्रीकी लज्जा की बलि ली और अुस आसुरी आवेश मे अिसने अुसके दोनो गालो के मास के लचको को दाँतो से तोडकर अुन्हे चबाचबा खा डाला। वह और अुसका बच्चा जोर जोर से बिलखने लगे, अत वह गुस्से मे और भी अधिक बवरा गया। और अुसने छुरे से अुस निरागस, असहाय स्त्रीके बच्चे के पेटकी पोटली फाड डाली अेव अुस स्त्री के मुंहपर छुरे के घाव डालने लगा–अितने अचेतन क्रोध से कि रेल गाडी थम गअी है, अिसबात का भी खयाल अुसे नही रहगया। गाडी रुकते ही वह नीचे कूद पडा–मार धाड करता हुआ भागा–पकडा गया तो पकडनेवाले पुलिस की अुगलियो को कच् से तोड डाला और अुन्हे कचाकच चबाने लगा। कोर्ट मे अुसने पागल का स्वाग बनाया। पर नरमासभक्षण की अघोरी अिच्छा के अतिरिक्त अुसमे पागलपन का कोअी चिन्ह नजर नही आया। अुलटे, वह हिंदुओ के ही कोमल लडके-लडकियो के मास के लचके तोडकर खाया करता है और खून मटक मटक कर पीता है, अुमके अुस राक्षसीपन को भी अेक शैतानी धर्मबधन है, अुसके पैशाचिकपने मे भी अेक व्यवस्थित पद्धति है, अैसा सिद्ध हुआ।। अुसे आजन्म कालेपानी की सजा देकर पागलो के रुग्णालय मे कुछ दिन बद किया। वहाँ भी वाहियातपना करने के कारण जब दो दफा पचास-साठ कोडे खाने को मिले तब से अुसने अपने पागलपन का स्वाग भरना छोड दिया, अनुशासन के साथ रहने लगा, और अब अुसे कालेपानी भेजा जा रहा है। कोड की अेक फटकार ने ही अुसके पागलपन को झाडकर रखदिया। सगीनो की धार पर राक्षसवृत्ति को तराशते ही राक्षसो को भी कभी कभी मनुष्यका आकार प्राप्त होता है सो अिस तरह।। अेक मात्र अनुमान पर आधारित मत्रो के पानी मे जो पालतू नही बनते अैसे हिंस्र श्वापद भी तनी हुअी सगीनो के पानी मे पालतू बनाये जा सकते है—कम अज कम निरुपद्रव तो बनाया जा सकता है सो अिस तरह।

मिचलाती हुअी दया भावना को जो व्यक्ति 'बेचारे' नजर आये वे अिस चलान के आदमी अुस समय अुस प्रकार 'बेचारे क्या नजर आये अुसे समझने

के लिये, अुनमें मे तीनका परिचय बानगी के तौरपर अूपर हमने दिया है। अुनकी जो विशेष बातें हमने अूपर दी है, वे सब बातें अुपन्यास की रोमहर्षक अद्भुतता को बढाने की बुद्धि से कल्पित की हुअी नही हैं। केवल रोमाच की थरथराहट का अनुभव करने के लिये मनुष्य जाति की मनुष्यताकी विडबना करना, अुपन्यास लेखक की मनुष्यता के लिये अयोग्य अेव सर्वथा लाछना-स्पद है।

परतु यहाँ हमने जो बातें अुल्लिखित की हैं—वे औपन्यासिक कल्पना प्रसूत नही हैं, प्रत्युत वे सृष्टि का ठोस सत्य है। काले पानी के सजायाफ्ता लोगो का अितिवृत्त अुनकी History sheet, यदि आप पढे तो आपको अुस अघोरी नगरी के पचहत्तर प्रतिशत नागरिको के सबध की टिप्पणियाँ अूपर बतलाये हुअे दो-तीन आदमियो के बारे की टिप्पणियो के समान ही पाअी जायेंगी। अपवाद पच्चीस प्रतिशत ! और यह सब होते हुअे भी हमारे धार्मिक मेलो मे जितनी हुल्लड मचती है, अुतनी भी अुस राक्षस राष्ट्रमें सहसा नहीं मच पाती। वहाँ के हत्या और डाकेजनी के आकडे अमेरिकाके आकडो से भी कम बैठते है। कारण ? पसीजनेवाली, सहिष्णु दया भावना नही ! सगीनदड ! वह दुर्धर्ष दडही राक्षसो को मनुष्य बनाता है।

शरीर मे व्याधियो की भाति मनुष्यता मे राक्षसवृत्ति भी निसर्गनिर्मित होती है ! राक्षसवृत्ति के सुधार का अुपाय दड ! तो मनुष्यता को सुधारने का अुपाय—दया !

अिस प्रकार वह 'चलान' खुले मैदान मे अपने पैरो की बेडियाँ खन-खनखनाते हुअे, सैनिक दल की भाति अनुशासन के साथ चार चारकी कतार मे ज्योंही आया त्योंही 'ठैरो' अैसी आज्ञा हुअी। तत्काल वे सारे दडित अेक साथ खडे होगये। 'बैठो' कहतेही बेडियो की अेकदम खनखनाहट के साथ वे तत्काल अुकडू बैठ गये। सामने जिस समुद्रपर अुन्हे अब चढना था, वह समुद्र बडी बडी लहरो को अूँचे फेकता हुआ, तत्पश्चात् अुस प्लेटफार्म पर अुन लहरो को धडधडाहट के साथ पटकता हुआ, झाग देता हुआ अत्यत गुस्से से दाँत चबाताहुआ सा खल् खल् कर रहा था। अुन दडितो मे से बहुतो का समुद्रदर्शन का वही पहला अवसर था। अुस अगाध जलराशिको अुस तरह गुस्से मे अुबलते हुअे देख कर, केवल अुस भीषणदृश्य की धसक से ही अुनकी

छातियाँ धडकने लग गअी ! दडितो को आपसमें वातचीत करनेकी सन्त मनाही होती है । तो भी अस वसक की वजह से किसी न किसी के साथ कुछ न कुछ वोले विना अुनसे रहा नही गया । अत हरकोअी अपने अपने पास वाले दडित के साथ काना फूसी करने लगा, " यही है वह काले पानी का समुद्र!" " वापरे, अिन अूँची लहरो को अुछलते देख कर ही मेरी तो आवी जान निकली जा रही है ! " " अरे, जिन्हे काले पानी भेजा जाता है, अुन्हे अिस अथाह समुद्र के परे किसी टापू मे भेजा जाता है, यह सच है क्या रे !" " मैन ता सुना है यह विलकुल गप्प है, अैसी गप्प हाक कर हम लोगो को जहाज पर चढा कर मध्य समुद्रमें लेजायेगे और साफ अुसमें डुवा देगे ! " नये दडिता को थरथर कँपाने वाली शकाओ के पके हुअे खुरींट दडितोद्वारा दिये गये प्रत्यु त्तरो की कानाफूसी वढते वढते दवेहुअे कोलाहल का स्वरूप धारण करने लगी । तव पुलिसवालो की सहनशीलता समाप्त हुअी और अुन्होने डाँटा— " चुप ! नही तो दडुके से पीटे जावोगे ! "

अेकदम सव के सव चुप होगये । पुराने घुटे हुअे अेव कारागार में वार-वार दरम किये हुअे वदी लोग रखवालदारो की नजर चुकाकर नियत्रणभग करने की विद्या मे पूर्ण प्रवीण होते है । पर नये वदी अुनका अनुसरण करके अनुशासन भग करने जाते है, तो पट् से पकडे जाते है । दूसरी वात यह है कि अनुशासनभग करनेवाले परिपक्व दडम कैदियो के रास्ते पर न जाते हुअे रखवालदार भी नये और नरम मिजाज के कैदियो पर ही अनुशासन भग-जन्य गुस्सा निकाला करते है, क्यो कि वह आसान होता है । अत फिर कोअी हल्लागुल्ला करता है क्या यह देखनेवाले अेक गुस्सेवाज रखवालदार ने अपने परली ओर वैठे हुअे दो तीन पहले ही से कानाफूसी करनेवाले किंतु परिपक्व अेव दडम न दिखाअी देनेवाले दडितोपर खुल्लमखुल्ला अुसकी नजर अुधर नहीं है, अैसा दिखाते हुअेभी चुराकर अपनी नजर रक्खी ! थोडी ही देर मे फिर जिवर-तिवर धीमेधीमे कानाफूसी वढती जारही है और पचती भी जारही है, यह देखकर अुन-दोनो मे से जो कमअुम्र, नया कैदी—समुद्रमें लेजाकर कैदियो को डुवा दिया जाता है, अिस कल्पना मे पहले ही से घवराया हुआ सा हो गया था, वह अपने पासवाले अेक शिक्षितवत् दृष्टिगोचर होनवाले दडित से अत्यत गिडगिडाता हुआ पुन पुन पूछने लगा,

"बाबूजी, कहो ना ! अिसी समुद्र मे डुबायेंगे क्या हम सबको ?"

"बच्चा, नही नही" अेक परिपक्व दंडित बीचही मे, पुलिस अुसकी ओर पीठ किये खडा है, यह देखकर झटसे बोला, "अे बात झूट है ! काले पानी से भागकर आये हुअे अेक अुस्ताद पट्ठे को मैंने खुद कैदखाने मे देखा है—अदमान कहते है अुस टापूको। अुसपर लेजाकर छोडनेवाले है, हम सबको !"

"आँ ? क्या बोले ?" वह लडका जानमें जान आये हुअे की तरह बोला, "काले पानी पर से कोअी भाग कर वापिस भी आ सकता है ? बाबूजी, तुम कहो तो हम सच मानेगे अिस बात को !"

"दस हजार मे से अेक आध ही कोअी ! अैसा अेक नराधम अपराधी काले पानीपर से भागकर आया हुआ, मैंने भी देखा है !"

यह वाक्य वह बाबूजी (साक्षर कैदी को किंवा क्लार्क को या बडी भारी योग्यताके दंडित को बंदिवानो में 'बाबूजी' कह कर संबोधित किया जाता है !) यथाशक्ति सावधानीके साथ अंत में बोलही रहा था कि, अुसी क्षण पीठ फेरकर अुनपर नजर रखनेवाले अुस पोलिस रखवालदारने झट से भागकर दौडकर बाबूजी को पकड लिया। क्योंकि पकड मे न आते हुअे अनुशासन भंग करने की विद्या में, संपूर्ण जन्ममें पहलीही वार कैद की सजा प्राप्त होने के कारण, अेव सरल, सत्य वस्तुको जोरसे कहने की सभ्यजगत् की आदत जा कर कैदखाने के लिये आवश्यक लुच्चेपने की आदत न पडने के कारण बाबूजी के वे शब्द अिच्छा न होते हुअे भी मुँह से जरा जोर से ही निकल गये थे।

रखवालदारने बाबूजीपर टूटकर अुनके कुडते की गर्दन पकड कर अुन्हे खडा कर दिया और अपने जमादार की तरफ खीचते हुअे लेजाकर कहने लगा, "बार बार चुप बैठने के लिये कहने पर भी यह कैदी लगातार शोरगुल मचा रहा है, यही नही, अन्य कैदियो को अकसा रहा है कि, हम लोग काले पानी का जेलखाना तोड कर भाग निकले !"

"क्या ?" गुस्से से लाल हो कर जमादार चिल्लाया, "काले पानी से भाग आने का षडयन्त्र ! नाम क्या है अिस पाजी का ?"

रखवालदारने अुन बाबूजी की छाती पर का बिल्ला देखकर जमादार को नाम बताया "कटक !"

जमादारने वह नाम और अुसके बिल्ले पर से वर्दी-क्रमांक अपने जेबकी नोटबुक में नोट कर लिया और डपटकर बोला—
"कटक! तेरा यह अपराध यदि मैं अूपर कह दूं तो तेरे गले में फंदा पड़ जायगा! काले पानी मे भागनेवाले को भागते हुअे गोली से अुड़ा देते हैं, पकड़ मे आया तो फांसीपर लटका देते है, मालूम है? काले पानी में यह अपराध सब से बड़ा माना जाता है!"

"पर जमादारजी, मैंने तो कालेपानी से भाग आने के षडयंत्रके बारे मे अेक अक्षर भी कह कर किसी को अुकसाया नहीं है। मुझे—"

"चुप! बदमाश, तूने अुसी तरह अुकसाया है" रखवालदार झल्लाया!

"मेरे पासवाले कैदियो से पूछ लीजिये, मैं कहता हूं सो सच है कि झूठ है!"

जमादारने अुसे लड़के को और अुस पक्के खुर्राट कैदी को अुठाकर पूछा, "क्या रे, यह कटक तुम्हें क्या सिखा रहा था?"

लड़का सिर्फ थरथर काँपता खड़ा रहा। पर कटक के अूपर के अिस आरोप के विषय में पुलिसवालो के साथ चलनेवाली अुस सारी बातचीत को शुरू से सुनते हुअे बैठनेवाले अुस सधे हुअे कैदी ने पट् मे जवाब दिया—

"जमादारजी, यह बाबू हमसे कह रहा था कि, काले पानी मे भाग खड़े होने की तरकीब अुसे मालूम है, अुसतरह भागकर आयाहुआ अेक शख्स अुनका मुखिया है और हम सब यदि अुसके षडयंत्रमें शामिल हो जायें और गुप्त निश्चय किसी पर भी प्रकट न होने देने की शपथ ले तो अेक बरस के अंदर सब लोग जेल को तोड़कर कालेपानी से निकल कर घर वापिस आ सकते हैं! मैंने अिससे कहा, 'हम नहीं आते बाबा, अैसे भयंकर षडयंत्रमें और नाहीं लेते शपथ-विपथ!"

अुस पक्के बदमाश कैदी की यह साक्षी सुनते समय वह कटक केवल दिङ्मूढ होकर मुंह बाये खड़ा रहा और पीछे से अेकदम बोल अुठा, "अरे, कैसा यह मिथ्याभाषी! अितना अुलटे कलेजे का मनुष्य भी हो सकता है अ! अेक अक्षर भी अिसके वक्तव्य का सच्चा नहीं है! जमादारजी सौगंध है देवकी! मैं—"

दनदनाता अेक डंडा कटक की जाघ पर विठा कर जमादार ने गर्जना की, "चूप !" बस, अुस सारे साक्षी, सबूत, आरोप, बचाव का न्यायनिर्णय अुस अेक डंडेके भीतर ही समारोपित हो गया !

अुतने ही में घनघनघन करके अेक घटा घनघनाने लगी। अुन तीनो को फोड कर निराली निराली कतारो मे बिठाने की आज्ञा पोलिस रखवालदार को देकर जमादार दौडते हुअे ही जिधर घटा बजी थी अुधर निकल गया। अुस चलान को अदमान की तरफ जानेवाली अग्निनौका पर चढाने तक ही सारी जवाबदारी जमादार पर रहती है, वह घटा आग्निनौका आने की ही थी अत कटक के अुस प्रकरण का जमादार को वही विस्मरण होगया। अेक दफा अपने हाथ से अुस चलान की विपत्ति अग्निनौका पर पहुँचा दी गअी कि हो गअी मुक्तता अपनी ! फिर चाहे वे वहाँ से भाग जायँ या जल मरे ! अुसकी झझट वह जमादार अूपर के अधिकारियो को अुस घटना की खबर देकर काहे को मोल ले ?

जमादार निकल गया ! वह प्रकरण वही विस्मृत होगया ! पर जमादारने डंडे की जो मार अुस की जाघ पर बिठाअी थी अुसे भला, कटक कैसे भूलता ! जाघ मे दर्द पैदा हुअी और वह बिलबिलाता हुआ बैठाली गयी कतार में जाकर बैठ गया ! अुस अन्याय, अपमान और विशेषत अुसका प्रतिकार करने की पूर्ण अक्षमता के कारण कटक को जीवित रहने की भी शरम महसूस होने लगी। काले पानी में जीवित रहने के लिये जितनी तितिक्षा आवश्यक है, अुतना अुस सद्‌गुण मे वह अभीतक प्रवीण नही हो पाया था।

पर कारागृह और कालेपानी का जीवन जिन लोगो के अस्तित्व पर आश्रित अेव समर्थित हो सकता है, अैसे सधे हुअे निर्लज्जो मे से वह साक्षी देनेवाला दडित बैठेबैठे अुस कटक की ओर देख कर दाँत निपोर कर हँस रहा था अुलटे ! पास के दडितो को अपनी अेक बडाअी समझकर कटक के बारे में कही गअी अपनी झूठी साक्षी की बात कहने लगा, "भय्या, आअी थी मेरी ही जान पर बारी, पर मैंने अुस भोले बाबू के ही मत्थे मढवा दी! कटककी टाग पर अैसा अेक डडा बिठवाया कि बस !—"

कटक की जाघमें दर्द अुठ रही थी, अत अुस से अुकडू नहीं बैठा जा रहा था। सिपाही तो चिल्लाता ही रहा, "हा, अुकडू बैट, सीधा बैठ!" कटक-पर अनुशासनभग की दूसरी अन्याय्य विपत्ति टूटने ही वाली थी—

पर अितने ही मे जहाँ तहाँ अुन सगीनवाले रखवालदारो का शोर मचा-"अुठो! महाराज आया!"

कटक चमक कर अुठा और जिज्ञासा से देखने लगा, अैसे कौन से महाराज अिधर आ रहे हैं?

सधे हुअे अनुभवी कैदी समुद्र की तरफ अुगली दिखा कर कानाफूसी करने लगे, "महाराजा आये देखो, वे!"

कटकने देखा, अेक बडी भारी आगबोट भो ऽ ऽ अैसा बब भौंकती हुअी अुन खलबली मचानेवाली लहरो के जगल में से राह निकालती हुअी प्लेटफार्म की ओर धीरे धीरे आरही है, अुस पर 'महाराजा' अैसा मोटे मोटे अक्षरो में नाम लटक रहा है!

"महाराज आया" का मतलब अिस जलयान, अिस जहाजके आने मे है! यही क्या अब मुझे अुस काले पानी पर ले जायगा? अुस जलयान को देखते ही कटक के पेट मे धडकी घुसे बगैर न रही!

आजतक सहस्त्रावधि भलेबरे स्त्री-पुरुष अपराधियो को अिस 'महाराज' जलयान ने अिस प्लेटफार्म से अुठाकर काले पानी पर ले जाकर छोडा होगा-पर अुन मे से हजारमे अेक को भी फिर मे अिस प्लेटफार्म पर वापस लाकर छोडा नही! जो कोअी काले पानी के दडित के रूप में अिस जहाज पर चढगया-काले पानी मे चला गया—वह चलाही गया! अिस दुनिया की खातिर वह मर गया और अुसकी खातिर यह दुनियाँ मर गअी! मरघटकी ओर लेजाये जानेवाले प्रेत को यदि कुछ अनुभव होना मभव हो तो, अुसे जो महसूस होता होगा, वही कालेपानी की तरफ ले जाये जानेवाले अिन दडितो को 'महाराज' पर चढाते समय महसूस हुआ करता है! कम अज कम अुमके न 'महसूस होने' की मनुष्यता जिनमे अवशिष्ट होगी, अुन लोगो को तो यही प्रतीत होगा कि यह 'महाराजा' जहाज नहीं है, बल्कि अेक कब्र है! अिसमें जो गाडदिया गया, वह फिर यदि अुससे बाहर पडेगा ही तो अुस काले समुद्रके परली ओर की यमपुरीमे! यमलोक मे! अिस लोकमें नही!! कटक की

समझमें आरहाथा, और अिसी लिये अिस 'महाराजा' को देखने ही अुसकी छाती में धडकी वैठ गअी। तवतक वह अपने मनसे पूछ रहा था–अिस समद्रको 'कालापानी' क्यो कहते है ? यो देखा जाय तो ममुद्रका लाघना ही जाति पाँति और धर्म का नष्ट होना है, हिंदू समाज की दृष्टि से अेक प्रकार की सामाजिक मृत्युही है, अैसी जव सिंधु-प्रतिवध की प्रथा हिंदुओ में प्रबल हुअी तव से सारा समुद्र ही हिंदू समाज के लिये कालापानी प्रतीत होने लगा। काल का मृत्युका समुद्र भासने लगा। पर अुसमें भी अिस अदमान टापूकी ओर जन्मभर की सजा के रूपमें जानेवाले लोगो को ही कालेपानी की ओर जाने वाले अैसा भीषण नाम क्यो दिया गया ? अुस समुद्र के पानी की ओर कटक बहुत देरसे विशेष ध्यानपूर्वक देख रहा था, परतु वह काला क्यो, अिसकी कोअी वजह अुसे नजर नही आती थी। पर अुस महाराजा जलयान को देखतेही और 'अव वह मुझे अिस सगे सवधियो के जातिगोत्र के जग मे ही नही प्रत्युत जीवन ही से छिनाकर अत्यत दुर्दशावाले किसी मृत खड में लेजाकर अवश्य अवश्य गाड डालेगा। अिस बातके प्रत्यक्ष होजाने पर, अुम के हृदयमें जो धडकी घुसकर वैठ गअी अुसकी वजह से वह सारा समुद्र सचमुचही काला-काला भैंसे का सा दिखाअी देने लगा ! अुसे काला पानी नाम क्यो दिया गया सो समझमें आया, अितना ही नही, कालेपानी नाम से भिन्न कोअी अन्य यथार्थ नाम अुसे दिया जाता तो वह किस प्रकार वदतोव्याघात सिद्ध हुआ होता, यह भी पूरी तरह अुसके ध्यान में आ गया।

यह कटक ही वाचकवृद ! आपके परिचय का वह किशन ! अुसको और मालती को जव से काले पानी की सजा हुअी और वे अेक दोनो से जो विछुडगये सो विछुड ही गये ! मालती को किस कैदखाने मे भेज दिया गया, यह अुसे अनेक प्रयत्नो के पश्चात् भी मालूम न पडा। अिसको भिन्न भिन्न कैदखानो मे भींचते भीचते प्रत्येक चार-पाँच महीने के पश्चात् काले पानी के दडितो को अेकत्र करके काले पानी भेजने के कायदे के मुताविक, जव अिस टोली को काले पानी भेजने के लिये कलकत्ता लाया गया, तव अुस प्राणसकट मे भी अेक स्निग्ध भीषण जिज्ञासा अुसको वेचैन किये रखती थी। किसे मालूम, मालती को भी अिसी 'चलान' मे आजन्म काले पानी की सजा के लिये न ले आवे ? अुसको तादृश दुर्दशा मे देखना–धकेलना–कितना असह्य

कितना कटु! पर अुस निमित्त से भी क्यो न हो, कम-अज-कम मालती को देखना–सकट ही भोगने हो तो अेकत्र भोगते हुअे अेक दूसरे को बाँटकर भोगना यह कल्पना कितनी मधुर! चुपचाप अुसने खोजने की वहुत कोशिश की पर दडित स्त्रियाँ अुस चलान में भेजी जानेवाली नही थी और होती भी ता अुन को यथाशक्ति पुरुपचलान की नजर तक से दूर रख कर भेजने की स्वत व्यवस्था रहती है–वही योग्य है। अेनादृश अुच्छृखल कलि पुरुपो के अेव क्रूर पशुओ के झुड में अुन क्रूर तथा दडित स्त्रियो की भी देखते ही देखते मट्टी पलीद हुअे विना थोडे ही रह सकती है!

मालती अुस चलान मे नही है, यह मालूम पडने की वजह से किशन को अेक दृष्टि मे अच्छा महसूस होने पर भी जैसे वुरा महसूस हुआ, मालती को सिर्फ देखने का भी अवसर प्राप्त नही होता, अत जैसे अुसके प्राणो को तिलमिलाहट होने लगी थी, ठीक अुसमे अुलटा और अेक व्यक्ति अस चलान मे दृष्टिगत न होने के कारण अुसके सिरपर मे अेक वला टलने जैसा सतोप हुआ। वह व्यक्ति था रफिअुद्दीन! अुसे भी आजन्म काले पानी की सजा हुअी थी–किशन को सजा होने मे कुछ ही दिनो पूर्व! वह भी अिसी चलान मे अुसके साथ तो नही आता! अुसका नाम अव वदल गया है, किशन की जगह कटक रखा हुआ है। पर शकल तो वही है! रफिअुद्दीनने कही अुसको पहचान लिया तो! वह क्रूर नराधम अपना वदला लेने के लिये पुन अत्याचार का मार्ग पकडे विना नही रहेगा। अुसके अुपर भी प्रत्याघात किये विना नहीं रहेगा। पहले ही से अुपस्थित विकट प्रसग मे अेक और भीषण यातनाओं का पत्थर गलेमे वँध जायगा। जो होना हो, होने दो! जो अनभीप्ट वस्तु होनी थी, सो तो हो ही गअी है–काले पानी की सजा, यह सजा क्या और मौत क्या–अुडद मे काले गोरे की परख काहे को? अिस प्रकार मे विचार करते हुअे किशन मन ही मन अुस विपत्ति का मुकाविला करने की तय्यारी कर रहा था, तथापि वह विपत्ति टल जाय तो अच्छा, अैसा ही अुसे लगता था! अत अेव अुस चलान मे वह रफिअुद्दीन तथा अुसके साथियो मे कोअी भी नजर नही आरहा है, यह देख, अेक नअी वला तो टली, अिस वात का अुसको सतोप था। फासी पर चढाते समय भी यदि आँखो पर पट्टी वाधकर चढाया जाय तो वह भी भला ही महसूस होता है–थोडी देर के लिये!!

वह सारा का सारा चलान, बेडियाँ खनखनाता हुआ, काँख मे बिस्तर, हाथमें तसला लिये, चार की जगह अेक अेक की कतार बनाकर, सँकरी सी सीढीपर से, समुद्र की तरगो की वजह से हिलने डुलनेवाले अुस ' महाराजा ' जलयान पर जैसे तैसे अनिच्छा के कारण सकुचाते हिचकिचाते अेक बारगी चढ ही गया। वह ' महाराजा ' जलयान केवल काले पानी ही की ओर आने जाने के लिये रखा गया था। गत तीसचालीस वरसो से अिस प्रकार के सैंकडो चलानो को वह काले पानी पहुँचा आया होगा। अुस पर पैर रखतेही लहरो की आदत से शून्य, हृदयमें अुदास, निराशाजन्य घुकधुकी को हिलकोरियो से पहले ही चकराये हुअे किशन को अेकदम मूर्च्छा सी आगअी। यह अग्निनौका आजन्म काले पानी ही क्यो साक्षात् मृत्यु की ही ओर लेकर जा रही है, अैसा अुसे भासित हुआ। अेक खभेका सहारा लेकर अपनी मर्च्छा को वह सभाल ही रहा था कि, सिपाही ने 'आग बढो' कह कर डड से अुसे ठोचा। अुस के साथ ही फिर पक्ति म ठीक ढगसे खडा होकर सब कदियो के साथ वह अग्निनौका के बिलकुल नीचे के, पानी के अंदर डूबे हुअे कठिन तले पर अुतर आया। देखता है तो क्या, सीखचो का पिजरा का पिजरा ही सामने खडा है। अुस जलयान मे काले पानी के कैदियो ही के वास्ते की हुअी यह सहूलियत थी। वह पिजरा ही अुन सम्माननीय अदमानी प्रवासियो का सुरक्षित कक्ष—Reserved Cabin !!

पचास अेक आदमियो के सो सकने लायक अुस पीजरे में सौ सवासौ दडितो को झटपट ठूसकर भर दिया गया। जिसको जहाँ जगह मिली अुसने वही अपना बिछौना डाल दिया। कोअी पजाबी ब्राह्मण, कोअी बगाली चमार, कोअी बलूची मुसलमान, कोअी मद्रासी अय्या, कोअी भील, कोअी मच्छीमार, कोअी वराडी, कोअी कारकून, कोअी भिखारी, कोअी सेठ, कोअी भूमिदार, कोअी बहेलिया, कोअी छोटा, कोअी बडा, कोअी निरोगी, कोअी क्षयी, कोअी ज्वरी, कोअी अतिसारी, कोअी आमाशी—सब को अेक जगह धकेल धकेल कर समता से अेकत्र ठूस दिया था। आपत्ति में क्यो न हो, पर समानता अैसी अच्छी, कि अुसकी अपेक्षा वर्गभेद, जातिभेद, धर्मभेद, स्थितिभेद,

अधिक दृढता के साथ अिनकार करने के लिये रशिया के बोल्शेविको की भी छाती न हो सके।

किशन भी अुस भीडमे जैसे तैसे अपना बिछौना डाल अेकदम नीचे बैठ गया। अुसका जी पहले ही-से मिचला रहा था। डोगियो म से बोटपर आते समय जैसे अनेक कैदियो को भडाभड अुलटियाँ हो रही थी वैसेही असे भी होने लगी। अुलटी करने के लिये अलग-से जगह कहाँ वहाँ? जो जहाँ बैठा, वही ओकने (अुलटी करने) लगा। अुनमें भी निर्लज्ज डराअूपने में जो जितना अधिक आततायी, अुसकी अुतनी ही अधिक सुविधा। जबर्दस्ती धक्के मार कर जितने पैर वे पसार सके अुतने वे पसारते थे। सिपाहियो ने गालियाँ दी या अेक दो डडे कसे, तो अुसकी अुन्हे शरम ही नही। आदत पड जाने के कारण अुन्हे अुतना डर भी नही था। किंतु जिन लोगो को वह डर था, और दूसरो की गर्दन मरोडने मे थोडी ही क्यो न हो शरम महसूस होती थी, अैसे डरपोक किंवा मनुष्यता को जो घोल कर नही पी गये हैं, अैसा को ही वह दुर्दशा, वे पुलिसवालो और नीच दडितो की गालियाँ और अमगल गिल्लाजत अधिक तकलीफ पहुँचाती थी—अधिक खटकती थी। किशन को भी अुसकी अेक बाजू में विद्यमान अेक अुग्राकृति दडित अेकसरीखा ढकेलता और खिसकाता जा रहा था। किशन को वही अुलटी होगअी-असके छींटे अपने बिछौनेपर अुडे देख कर वह किशन को अभद्र-अभद्र गालियाँ दे रहा था। और दूसरी ओर अेक दमा पीडित निरतर खासता जा रहा था—खखार थूक रहा था, परवशता के कारण और भीडमें अुपायातर न होने के कारण अुसकी थूक किशन के बिछौने पर तथा पैरे परैं भी पडती थी। यथाशक्ति अपने अवयवो को सिकोड कर, घुटनो को पेटसे चिपटाकर, अपने बिछौने के हाथभर भाग को ही फैला कर और जगहकी तगी के कारण बाकी को अुर्सी तरह लिपटा हुआ छोड कर, अुसीपर टेका लेकर पडगया। अुस बडे जलयान की—छूटने से पूर्व की कर्कश घर्‌घर्‌ बीच बीचमे होने लगी। बबा बीच बीच मे बबराये हुअे राक्षसी कुत्तो की टोली की तरह भो ऽ ऽ करते हुअे चिंघाडने लगा।

अुस किमाकार अग्निनौका की वह घर्घर्‌ प्रत्यक्ष मृत्यु की घर्घराहट के सदृश किशन को त्रासदायक प्रतीत होने लगी। बबे की वह भो ऽ ऽ, यमके

किसी काले-कलूटे और रक्तपिपासु प्रचड कुत्ते की भौंक के सदृश भीषण भासने लगी। पेट में अेक सरीखी मिचली, हृदय में निरतर भावनाओ का अुतार चढाव, सिरमे चक्कर, 'मैं कालेपानी मे आजन्म निवास के लिय चलाहूँ, जीवित भी रहा तो अिस गिलाजत की, गाली गलौज की, लातो और मुक्को की असह्य दुर्दशामें मृतवत् जीवन व्यतीत करना होगा, और यह दुर्दशा कभी समाप्त होगी अिसकी लेशभर भी आशा नही '—यह जानकारी मनमे ! ! किशन मदग्रस्त सा बिछौने के तकिये पर अुमी तरह पडा रहा—अितने ही में अुसके अुन अस्तव्यस्त विचारो में अेक विचार—जैसे कोअी जोर से पुकारते हुअे अुठ्ता है, अुसी तरह पुकार मचाता हुआ ही अुठा—

"क्यो ? अिस दुर्दशा का अत क्यो न होगा ? काला पानी—आजन्म कैद ! पर छुटकारा करनेवाले न [illegible] भी अपने आप छुटकारा पा लेना सभवही नही—यह किस आधार पर ? वह रफीअुद्दीन नही क्या कालेपानी पर से ही भागकर आया था ? मेरे लिये वैसा करना सभव नही, यह किस बिना पर ? "

अिस विचारतद्रा के अस्तव्यस्त किंतु बलोत्कट विचारो के साथही अुस की घुटकर मरजाने वाली आशा अेकदम अेक अुछाल मारती सी चमककर अुठ खडी हुअी ! मरणासन्न मनुष्य अकस्मात् प्रबलतया हाथ पैर झाडता है, तद्वत् अुसकी आशा भी सहसा ही झडझडा कर प्रबल हो अुठी ! अुसने तर्कशास्त्र का अभ्यास किया था। और कुतर्क, यह भी अेक तर्क ही है ! शक्याशक्यता, साध्यसाधन अित्यादि की कोअी रुकावट आशा के और बात के झटके को रोक नही सकती। डूबता जो तिनके का आधार लेता है, वह जिस प्रकार लिये बगैर अुससे रहा नही जाता, अिस लिये लेता है, अुसी तरह अुसके अुस काले पानी के अथाह समुद्र मे डूबनेवाली आशाने अुन विचारो को पट् से छाती से लगा लिया और अुसकी अुस अचेतन तद्रा की सारी चेतना वही अेक वाक्य अिकट्ठा करके अुद्घोषने लगी "काले पानी परसे भाग निकलना है ! बस्, भागना ही है ! "

"खल् खल् सल् सल् करते हुअे अग्निनौका के चक्र, पक्षयत्र, समुद्रके अुदर मे गतिमान् होने लगे। "निकलेगी ! छूटेगी ! वोट काले पानी की

ओर छूटेगी ! " पोलिस, कैदी, मल्लाह, अधिकारी नौकर, सभी के मुहसे यह आवाज अुठने लगी !

अुतने ही में खड् खड् बूट अुडाते हुअे दो गोरे सार्जेंट बेडी-हथकडी ठोके हुअे अेक कैदी को सख्त पहरे मे नीचे अुतरवाते हुअे अुस पिंजरे के दरवाजे के पास आकर पहुँच गये, धड् से वह दरवाजा खुला, और अुस पीजरे में, अुस विशेष बदोबस्त के साथ लाये हुअे दुर्दंड दडित के साथ वे सार्जेंट अंदर प्रविष्ट हुअे।

अुस खडखडाहट के होते ही चमक कर अितने सार्जेंट किसको लेकर आ रहे हैं, यह देखने के लिये किशन पडे पडेही आँखें खोलते हुअे अुस तरफ देखने लगा। त्योंही !—कौन ? यह तो —?

अरे ! यह तो रफीअुद्दीन अहमद है ! सिर्फ चार हाथ की दूरी पर अकड के साथ खडा हुआ !

मुट्ठी तानते हुअे, आध से ज्यादा खड् से अुठते हुअे, गुस्से से, धसक से, अचरज से कापते हुअे ओठो में ही किशनने गुनगुनाया—

" रफिअुद्दीन ! वही है यह रफिअुद्दीन अहमद !!"

पुराना वैर किशन के हृदय मे अेकदम अुबल कर आगया। स्थल काल परिस्थिति का विस्मरण होगया। मानो रफिअुद्दीन अपने को देखते ही वाघ की मानिंद अपने अुपर टूट ही पडेगा, अैसी लहर किशन के खून में अुछल आअी-और अुसके टूट पडते ही प्रतिकारार्थ स्वयमपि टूट पडने की पक्की तय्यारी के साथ वह दुबक कर अपने बिछौने की आड में बैठा रहा !

त्यो ही रफिअुद्दीनकी दृष्टि भी अुसकी दृष्टि से भिड गअी !!

रफिअुद्दीन की दृष्टि के किशन की दृष्टि से भिडते ही यह अभी मेरे अूपर टूट पडेगा अिस कल्पना से किशन की मुट्ठी मारामारी के आवेश से अपने आपही तन गअी, पर अेक क्षण में रफिअुद्दीन ने जिस तरह अुसकी तरफ देखा था, अुसी तरह अन्य कैदियो की तरफ भी वह देखने लग गया है, वह किसी भी प्रकार से विचलित नही हुआ है, अुसका सारा ध्यान, विस्तरा कहाँ डालना ठीक होगा अिसी अेक विचार में अुलझा हुआ है, अैसा किशन को दिखाअी दिया। अुस अवकाश में, अुसे थोडी देर तक सोचने विचारने के लिये समय मिल गया। अिसने यदि मुझे पूरी तौर से पहचाना न हो तो? तो मुझे भी अपनी पहिचानत नही होने देनी चाहिये। मैं कटक नामका कोअी दूसरा ही कैदी हू, जहाँ तक हो सके अुसकी समझ अैभी ही कर देनी चाहिये। जहाँ तक हो सके अिस से परिचय ही न हो अैसा प्रयत्न किया जाय। अैसा अुस अवकाश में किशनने निश्चय किया और वह फिर अपने बिछौनेपर सिर टेककर, मुद्रितवत् भासमान किंतु वास्तव में अर्वोन्मुद्र नेत्रों से, रफिअुद्दीनकी गति विधि को देखने लगा।

रफिअुद्दीनने अपना बिस्तर पीजरे के अेक अैसे कोने में डाला, जहाँसे, लोहे की छडो के पास पहरा देनेवाले सिपाहियो के साथ आसानी के साथ बातचीत की जा सके। गोरे सार्जेंट अुसे अितने विशेष बदोबस्त के साथ पींजरे में छोड कर, पीजरा बद करके चले गये है, यह देखते ही, अुन सारे कैदियो पर अुसका आतक पहले ही बैठ गया था। दडितो में, जिसको अेतादृश भयकर दडित समझ कर भारी से भारी हथकडी-बेडियाँ पहनाते हैं, अुस को दडित लोग अत्यत तिरस्कारास्पद पापिष्ठ मनुष्य न समझ कर, यह कोअी अेक अत्यत कर्तृत्ववान मनुष्य है, अैसा समझने लग जाते हैं। अुसका वजन अुन अपराधियो में बढ जाता है और भयान्वित आदरबुद्धि के कारण वे स्वयमेव अुसके अधीन होकर व्यवहरने लगते है। दडितो की अिस प्रवृत्ति के कारण ही तादृश जनसम्मर्द में भी रफिअुद्दीन को, कोने के दडितो ने बगैर किसी

ननुनच के, स्वत अेक दूसरे से सटकर भी, खुली जगह करके दे दी। हरकोअी अुसके बारे में जिज्ञासा व्यक्त कर रहा था। कुछको मालूम था कि वह काले पानी से भागा हुआ अेक प्रसिद्ध कैदी है। थोडी ही देर मे यह बात सबको मालूम पड गअी। रफिअुद्दीन यह समझता था कि सारे कैदी अुसे आतक युक्त आदरभाव से देख रहे है। वह मानो अेक सम्राट् ही हो अैसी अदा से, खासता था खखारता था, तथा पुलिसवालो की आख बचाकर, जितना बोलना सभव था अुतना बोलता था। अुसके सम्राट् पद के जो विशिष्ट राजचिन्ह– पैरो में पडी सब से भारी बेडियाँ, अुन्हे वह पुन पुन खनखनाता हुआ, अपना श्रेष्ठत्व प्रकट करता था।

अब सूचीभेद्य अधकार फैल चुका था। वह जलयान कलकत्ते का बदर छोडकर कालेपानी के रास्ते पर, समुद्रमे पूर्ण वेग से चल रहा था। कलकत्ते से अदमान जाने के लिये ४-५ दिन लगते है। अुस बीच कैदियो को सिर्फ परमल और भुने चने ही खाने के लिये दिये जाते है। क्योकि अुन दडितो म से बहुत से घबराये हुअे–पली दफा समुद्रप्रवास के कारण अुलटियाँ करते हुअे–भोजनकी अिच्छा से शून्य होते है। दूसरी बात यह कि, अितने सैकडो कैदियो के रसोअी–परोसे की सुविधा और व्यय करनेकी गर्मी अधिकारियो मे बहुत कुछ नही रहती। अत शामको पीजरा बद करते समय कैदियो को जो चने परमल वगैरे बाँटे गये थे वे–अुलटियाँ करनेवाले कैदियो में बहुतोंने अुसी तरह रख छोडे थे। पर रफिअुद्दीन के लिये तो काले पानी का समुद्र पुराना दोस्त था। न तो वह घबराया हुआ था और नाही अुसका जी मिचलाता था। अुसे खासी भूख लगी हुअी थी। अुसकी छाप तो सारे दडितो पर पहले ही पड चुकी थी। सम्राट् ही था वह अुनका। अत जिस तरह राजा अपनी प्रजा से कर वसूल करता है, अुसी तरह अुसने भी आसपास के दडितो मे बचा हुआ चना-चुरमुरा साफ साफ माग लिया, दो अेक ने आना कानी की तो अुन्हे किसी दूसरे निमित्त से झगडा खडा कर गालियाँ दी तथा डाँट बता कर अुनका खाद्य ले लिया। चने-चुरमुरे का वह सारा ढेर अुदरस्थ करके रफिअुद्दीन अब पीजरे की सलाखो के नजदीक किसी के आने की राह देखते हुअे थोडी देर खडा रहता तथा थोडी देर बैठ जाता। अुस से कोअी बदीपाल कुछ पूछता तो कहता—

"थोडा ठहरिये, पीछे बोलेगे।"

त्यो ही असका प्रतीक्षित अवसर असे प्राप्त होगया। रात के नौ बजते ही पीजरे पर का पहरा बदला। अस 'चलान' को काले पानी तक ले जाने के लिये काले पानी के भी कुछ सिपाही कलकत्ते तक भेजे जाते है। अनमें से दो का यह दूसरा पहरा था। वे काले पानी के पोलिस रफिअुद्दीनके अच्छे परिचय के निकले। वह अुन्ही के पहरे की बाट जोह रहा था। अुनके आते ही सलाखो से हाथ थोडा बाहर निकाल कर असने अुन पहरेवालो के साथ परिचय का हस्तादोलन किया। पर पहरेवालो के हाथो में कुछ न कुछ हलदी कहिये या मिश्री कहिये--अर्थात् सोने की मुद्रा किंवा चादी की मुद्रा पडी अवश्य! पहरेवाला तत्काल दूसरी छोर तक फेरी मारता हुआ गया। फिर थोडा सा नि शब्द वातावरण होते ही रफिअुद्दीन के कोने की सलाखो मे से बीडियो का पुडा और दिया सलाअी टप् से गिरी। अुस पीजरे की रियासत में अुसका प्रभाव अेक सर्वाधिकारी की तरह अस समय से अच्छा पड गया। अस सर्वाधिकार का अुपयोग भी किन्ही प्रकरणो मे वह अच्छी तरह करने लगा।

जैसे पेढारी लोगो के कुछ नेताओ की आगे चल कर रियासते कायम हो गअी, अुसी तरह कुछ साहसी डाकू जब कभी राज्यो की स्थापना करके राजा बन जाते हैं, तब राजा बनते ही राजाओ की भाँति आचरण भी करने लगे जाते है! अपने आप अन्याय कितना भी क्यो न किया हो, पर अितरो के न्यायान्याय का निर्णय बहुत ही अच्छी तरह करते हैं। अपने आप कितना भी क्यो न लूटा हो पर दूसरो को आपस में लूटने नही देते है। स्वय कितने भी अुपद्रव क्यो न मचाये हो,पर वे अन्य प्रसगो में दूसरो के आपस के अुपद्रवो को कम करने के लिये दयालु वृत्तिकी अुदारता भी दिखाते हैं।

रफिअुद्दीन अेक क्रूर मनुष्य था। अुसकी क्रूरता को जागरित करने के लिये अुसके मनोयत्र के बटन को जबतक कोअी दबाता नही था, तबतक वह भी पूर्ण मनुष्यता के साथ ही व्यवहार करता था। वह काले पानी के नामसे घबराये हुओ में से कितनो ही को ढाढस बँधाता था--"घबराव मत! दस हजार लोग वहाँ अच्छी तरह पच्चीस-तीस-चालीस बरस तक जीवित रहते हैं, कितने ही बीबी-बच्चोवाले होकर अपना प्रपच निर्माण करते हैं। खेती है, गायबैल है, घरदार है सबकुछ है वहाँ! अरे! मै तेरी ही तरह पहले

घबराया था—पर वहाँ जाने पर खासे हजार रुपये गाठमें बाँधकर बैठा था! घबराव् मत्, पटठे घबराव मत!" कितनेही लोग दस्तो और अुलटियो से पीडित हो रहे थे। तब अुसने सिपाहियो से और समय पर डॉक्टर के साथ भी झगड कर, अुन्ही को कैदियो के साथ व्यवहार करने के नियमो का अुल्लघन करने के अपराध मे बुरी तरह फटकार सुनाकर, कप्तान साहब को अित्तिला करने की धमकी देकर, अुन बीमारो को दवाअी देने लगाता था। अुसके लिये अभिलषित चने-चुरमुरो की मुट्ठी जो लोग अपने हिस्से में से दिया करते थे, अुन्हें वह अपने लिये अनावश्यक बीडियो के टुकडे चुराचुराकर पीने के लिये भी दिया करता था। अपनेही चरित्र की कुछ खरी खोटी घटनाअें वह अुन्हे अिस अवाच्य पद्धति से कह कर सुनाता था, अैसे पद, भजन, गायन करता था कि, अुन कैदियो को अपनी बीमारी और दुर्गतियो काभी कुछ क्षणो के लिये विस्मरण हो जाता था—मन रमता था। अुनमे से प्रत्येक कैदी के सामने पीछे—अुपर नीचे पिशाच की तरह अेक ही प्रश्न अुस दुर्धर प्रसग में खडा रहता था, "काला पानी कैसा होगा? कैसी कैसी भयकर यातनाअें वहाँ भोगनी पडेगी, वहाँ से सभव हो तो छुटकारा पाने का क्या अुपाय किया जा सकता है?" प्रत्येक मनुष्य को येमपुरी कैसी होगी, अिस बातकी जैसी असह्य जिज्ञासा रहती है, अुसी तरह 'महाराजा' के अूपर के आजन्म कैदी के सिर पर भी 'काला पानी कैसा होगा? अिसी अेक प्रश्न का पागलपना सवार रहता है। जिससे जो मिले अुससे वही पूछने की अिच्छा प्रतीत होती है! अैसी मन स्थिति में प्रत्यक्ष काले पानी की सजा भोग कर आया हुआ वह रफिअुद्दीन अुन लोगो के लिये यमपुरी का भूगोल रेखाकित करनेवाला मूर्तिमान् गरुडपुराण ही प्रतीत हुआ! किशन के मनमें भी अुससे वह जानकारी पता चलाने की और विशेषत वह काले पानी पर मे कैसे भागा यह रोमहर्षक कथा सुनने की तीव्र अुत्कठा पैदा होती थी। पर भेद खुलजाने के डर से 'भीख न सही पर कुत्ते को रोक' की नीति का अवलबन कर के किशन ने पहले अेक दो दिन तक तो रफिअुद्दीन की तरफ खुल्लमखुल्ला देखने के मौको तक को टालने की कोशिश की।

पर रफिअुद्दिन थोडअी चुप बैठनेवाला था? अुसका पहला कार्यक्रम दृष्टिगत प्रत्येक विशेष कैदी के खटले की और चरित्र की मालूमात हासिल

करने का था। आजन्म काले पानी की सजा भुगतने के लिये जानेवाले प्रत्येक कैदी की कथा का अभिप्राय अेक अद्भुत अुपन्यास का कथानक! असाधारण दुष्टता, सुष्ठुता, विक्षिप्तता, सकट, भक्ति, रक्तपात, हत्या, अुपद्रव, बदला, सुखदु ख, दुर्दशा—अिन सब का अेक कोलाहल! वह पीजरा क्या है—दुनिया के किसी भी ग्रथालय में न मिलनेवाले, भावनाओ को अुभाड और अुखाड डालनेवाले अुपन्यासो की अेक अलमारी! नही, खलनायको का सजीव प्राणिसग्रहालय! पहले दर्जेका मुसाफिर किसी आगबोट पर जैसे रोमहर्षक अुपन्यासो की किताबें पढता हुआ कैबिन में तल्लीन होकर पडा रहता है, अुसी तरह रफिअुद्दीन अुस पीजरे मे अुन दडितो में से प्रत्येक का रोमहर्षक चरित्र बाँचने मे रग गया था। किशन चुपचाप था। समुद्र लगने की वजह से बिछौने पर चुपचाप सुस्तसा ढीला ढाला सा पडा हुआ था। तथापि रफिअुद्दीन का दो तीन मर्तबा ध्यान अुसकी ओर गये बगैर न रहा। अपने खटले के अुस अल्लु 'किशन' से अिसका चेहरा बहुत अधिक मिलता है—अिस बातका अचभा भी रफिअुद्दीन को अेक दो दफा हुआ। पर किशन सरीखा अेक 'मुर्दार अुल्लू' अेकदफा अुस जैसे भयकर खटले में से निर्दोष छूटजाने के अनतर पुन अैसी झझट मे पडेगा अिसकी कल्पना तक असभव प्रतीत होने के कारण, वह विचार मन मे स्पर्श करजाने पर भी वही चिपक कर नही रह सका। तो भी, अुन सजीव रहस्यकथाओ को पढते-पढते अिस पुस्तक के बारे में भी अुत्सुकता पैदा होने के कारण रफिअुद्दीन ने दोतीन आदमियो से आखिरकार पूछ ही लिया—"यह प्राणी कौन है बाबा, न हिलता है, न हँसता है, न बोलता है न चालता है। बिलकुल सुस्त! भुट्टा चोर दीखता है कोअी।"

अुसपर अुससे अेक दो ने कहा—"अह, हमारे चलान में वह आज दस बारह रोज से है। 'बाबू' है वह! अग्रेजी, ससकीरत—न जाने क्या क्या सीखा है, सुनते है! सजा मिलने पर जेल में लिखा पढी का ही काम दिया गया था अुसे! अिन्सान भी क्या अिन्सान है जी, वह बाबू!"

रफिअुद्दीन की अुत्सुकता बढी, "नाम क्या है अुसका?"

"कटकबाबू अुन्हें कहा करते थे साहब लोग भी!"

"अुसका अपराध क्या था?"

"हत्या ! खून ! "

यह मालूमात दोतीन मर्तबा सुनते ही रफिअुद्दीन को मानो वही मिल गया जिसकी अुसे मुराद थी । अुसे बडा आनद हुआ । कटकवाबू को साहब लोग भी मर्यादा की दृष्टि से देखते थे, जेल में अुसे कैदीक्लार्क का काम पहलेही से मिला हुआ था और अुसे सिर्फ हत्या के ही जुर्म मे काले पानी की सजा हुअी है, यह सुनतेही कालेपानी के नियमो के पहले ही से जानकार रफिअुद्दीन के तत्काल ध्यान मे आया कि, अिस कैदी को काले पानी पहुँचते ही आज नही तो कल अवश्य ही ' बाबू ' का महत्त्वपूर्ण काम मिलनेवाला है। मनुष्य हत्या का अपराध तात्कालिक आवेशमें घटित होना यह सब अपराधों में अेक सौम्य अपराध समझा जावे यह, रफिअुद्दीन सरीखे अुलटे कलेजे के सधे हुअे नृशस पापी ही जिस काले पानी पर यत्र तत्र फैले हुअे हैं, अुस यमपुरी मे सर्वथा न्यायानुकूल ही था। अत वहाँ पहुचे हुअे दडितो में से जो अैसे तात्कालिक आवेश मे घटित हुअी हुअी हत्याके समान अपराध का कैदी होता है, अुसे सुधारणीय कैदियो के वर्ग मे लिख लिया जाता है, और अुस के साथ बहुत ही सौम्य रीति से—काले पानी की क्रूरता की तुलना में जो सौम्य रीति सभव है, अुससे—व्यवहार किया जाता है । अुस पर भी अुस 'सुधारणीय' वर्गांतर्वर्ती कैदियो में से अगर किसी को लिखना पढना आता हो तो अुसे काले पानी में कैदी क्लार्क की जगह दी जाती है । अुसके हाथ में साहबके सान्निध्य की चाबी पडने के कारण अितर सधे हुअे डाकू वगैरे कैदियो के भवितव्य का बहुत कुछ दारोमदार अुस क्लार्क-कैदी के प्रतिवृत्तात पर रहता है । किसी को वॉर्डर बनाना, वॉर्डरो को लाभ और सुविधा के काम बाँट देना—काराद्वार पर आगत निर्गत को नोट करना सिपाहियो की अुपस्थिति लेना, बडे बडे कारखानो के आय-व्यय का गणन रखना—अित्यादि काम अिस क्लार्क कैदी के हाथो में धीरे धीरे सुपुर्द किये जाते हैं, तस्मात् सधे हुअे कैदी-वार्डर प्रभृति दडितो ही पर नही प्रत्युत, स्वतत्र सिपाही और श्रमजीवियो पर भी अिस क्लार्क वर्ग की बडी भारी छाप पडी रहती है । अुन लोगो की सारी घूसखोरी के अड्डो पिल्लो को बाहर ले आना किंवा गरमी देना अधिकाश अिन्ही लोगो के हाथमें रहता है । अिन्ही कैदी क्लार्को को ' बाबू ' कहते है, आजन्म दडितो की परिभाषामें !

रफीअुद्दीन काले पानी पर से भाग कर जाने के घोर अपराध के लिये पुन काले पानी की सजा होने के कारण वहाँ, अुसे पहले पहल तो कठोर स्थिति में मसक्कत करनी पडेगी यह भली प्रकार जानता था। अैसी स्थिति मे अुसी चलान में अेक शख्स यदि अिस तरह बाबू होनेवाला हो तो अुससे घनिष्ठ परिचय अपने लिये बहुत ही अुपयोगी साबित होगा यह अुसके तभी लक्ष मे आया और अत अेव अुस 'कटकबाबू' को प्रसादित करने की अुसे अितनी अधिक लालसा अनुभूत हुअी। अुसने तत्काल कटकबाबू के पास जाकर परिचिति प्राप्त कर ली। अुसका नाम कटक, अपराध सादी हत्या का, तस्मात् अुसकी मुद्रा किशन से मिलती जुलनी प्रतीत होने पर भी अितर बातो में किसी से भी मेल न होने के कारण रफिअुद्दीन बहुत कुछ सदेहशून्य वृत्तिसे कटकबाबू के साथ घनिष्ठता स्थापित करने लगा। कटकबाबू की भरसक मदद करके पुचकारने लगा। अुसकी परिचिति अेव ऋणानुबध के सिपाहियो का पहरा आया कि कटकके ही पास आकर अुसने आखीर की दो रातो में अपनी गप्प-बाजीका अड्डा जमाया। कटक को भी अुसकेपास से बहुतसी जानकारी प्राप्तव्य थी, अितना ही क्यो, अुसके साथ यदि जम सके तो काले पानी से भाग कर जाने का अेक आध रास्ता अुसे भी मिल नही जायगा किस पर से ? अैसी आखीर की साहसी आशा भी कटक को मोहने लगी। सँपेरा जैसे साँपसे तथैव कटक भी रफिअुद्दीन से—अुसके विषैले दश की परिसीमा से यथाशक्ति बाहर रहकर, जैसा खेल खेला जा सकता था, वैसा खेलने लगा। अुसकी अपने को कुछ भी जानकारी नही है, यह रफिअुद्दीन के मन पर पूर्ण रूप में विवित करने के अुद्देश्य से रात को गपशप लडाने के वक्त किशन बोला,

"पर मियाजी, आप के सदृश साहसी और चतुर आदमी काले पानी से भाग जाने सरीखे दुष्कर अेव लुकाछिपीके साहस में अुधर सफलता प्राप्त करता है, और अिधर देश में सुरक्षित पहुँचने के अनतर भारतीय पुलिसवालो के जाल में पुन न फँसने की जो बिलकुल सादी चतुराअी अुसमें गलती खाकर अुनके फंदे में अितनी पक्की तरह से फिर फँस जाता है—यह हुआ तो कैसे ? चोरियाँ, डाकेजनी अित्यादि दुष्कृत्यो के पैरो पड कर अेकदफा भयकर ठोकर खाने के बावजूद भी आप हिंदुस्तान मे भाग कर आने के अनतर पुन अुस सकटमय अुपद्व्याप (झमेले) मे न पडते तो अच्छा नही था क्या ? आपको

काले पानी से भाग आनेपर जिन प्राणातिक सकटो को भोगना पडा होगा वह सब अिस गलती के कारण निष्फल होगया और पुन दुर्दशा के चक्कर मे पडने की नौवत आगअी अिस वात का मुझे अत्यत खेद होता है, अत पूछे वगैर रहा जाता नहीं।"

"कटकवावू, क्या कहू। मैने सचमुच वडे प्रामाणिकपने से अपना जीवन चलाने का निश्चय किया था। काले पानी पर से भागकर हिंदुस्तान पहुँचते ही मैंने फकीरी ले ली। हिंदू साधूपर भी मेरी भक्ति वैठ गअी अत मै योग का अभ्यास करने लगा। कटकवावू, तुम सव लोग सच मानो या न मानो पर देवकी सौगध लेकर कहता हूँ कि, पहले डाकेजनी, चोरियाँ, अुपद्रव आदि जो पाप मैंने किये-वे किये, पर काले पानी से आने के वाद मैंने यदि किसी वात का लोभ रक्खा तो वह भक्ति का, योग का। भोग के वारे में अव आस्था ही नहीं रह गअी। और सचमुच मुझपर अिसवार जो यह सकट आपदा है, वह मेरे किसी नवीन दुष्कृत्य के कारण नही, वल्कि धर्मन्याय मे आचरण करने का निश्चय करने के पश्चात् जो अेक सत्कृत्य मेरे हाथ से करालेने की अिच्छा देव के मन मे आअी अुस सत्कृत्य ही के कारण।" वह गभीर विचारो मे गडा हुआसा चुप होगया।

वह सुनने वाले अनेक कैदियो के मुंह से अेक ही साथ प्रश्न वाहर निकला, "अैसा? वोलो ना मिय्याजी, कहा क्या वात हुअी? वह कौनसा सत्कृत्य?"

अपना पूर्ववृत्तात जाननेवाला यहाँ अेक भी कैदी नही है, अैसी अच्छी तरह निश्चिति हो जाने के वाद रफिअुद्दिन किसी धर्मवीर के आविर्भाव में कहने लगा, "क्या कहू वावूजी? अच्छा, आपने गवालियार का नगर देखा है?"

कटकवावू वोले—"नही।"

तस्मात्, अव ग्वालियर के वारे में जो मुंह मे आये सो हाक देने मे कोअी आपत्ति नही है, यह जानकर रफिअुद्दीन आगे हिंदी मे कहने लगा, "ग्वालियर के अेक वडे सरदार की अेक अत्यत सुस्वरूप लडकी थी। अुसका नाम था, मालती। वह जितनी गोरी-सौंदर्य मे निर्मल, अुतनी ही श्रद्धालू देवभक्त थी। मै योग का अभ्यास करने के लिये हिंदू साधू के पास भगवा पहन कर देवालय

में वैठा रहा करता था । वही वह पूजा के लिये आया करती थी । मुझे देखते देखते अुसकी मेरे साधुत्व पर कहिये या रूपपर कहिये, वहुत अधिक भक्ति जड गअी । वह फूल भी मुझपर चढाती थी, नैवेद्य भी मुझे दिखाती थी । भजन के लिये रात होने तक वैठी रहती थी । अेकवार अुसे अिसी तरह रात होगअी । तव 'अकेली घर जाने में डर लगता है, आप घर तक मुझे पहुँचा आअिये ।' अेसा अुसने आग्रह किया । अपने गुरुजी की आज्ञा ले, नि सकोच होकर मै भी अुसे पहुँचाने के लिये चला । देवालय गाव के पास से दूर था, वीचमें अेक आमराअी थी, जनशून्य! वहा आतेही अेकदम घवराये की तरह करके मालती मेरे शरीर से लिपट गअी ! स्त्री स्पर्श मेरे लिये तो वर्ज्य ! पर क्या करता ? वह गले से लिपट ही गअी ! कापती हुअी वह वोली, 'मेरे अूपर अेक मनुष्य पापी दृष्टि रखकर आज कितने ही दिनो से मुझे सता रहा है । मै आप को देव के सदृश समझकर भजती हू, तुम्हारे पास आती जाती हू, यह सहन न होने के कारण कल अुसने मुझे यही पर रोका था, और जान से मार डालने की धमकी दी थी, अिसी लिये मैंने आज तुम्हें अपने साथ ले लिया है ! मुझे अभी अभी अुसकी आहट सी लगी हुअी मालूम देती है !' मैंने पूछा, 'वह कौन है ? अुसका नाम क्या है ?' वह वोली, 'किशन ! अुस नीच का नाम है किशन !'

"वह नाम सुनते ही मेरे शरीरपर काटा खडा होगया ! क्यो कि अुस शख्स को मैं अच्छी तरह पहचानता था । पहली वार काले पानी जाने से पूर्व हम लोग जो डाके डाला करते थे, अुस समय की हमारी टोली मे ही यह अुलटे कलेजे का डाकू, किशन भी शामिल था । भाग कर आने के पश्चात् वह मुझे ग्वालियर ही में गुप्त रूप से आकर मिला था, और फिरसे अुस के अुस पापो दुष्कृत्य में हिस्सा रखने के लिये अुसने मुझसे कहा था । पर मैंने अुससे कहा, 'मेरे हाथ ही नही वल्कि मेरा मन भी सब प्रकार के पापो से शून्य हो गया है, अुसे मैंने देवता के चरणो में अर्पित कर दिया है । तू भी अव वैसा ही कर !' मेरा यह अुपदेश सुनकर वह शात होने के वजाय और भी अधिक खौल अुठा' मेरी तीव्र निर्भर्त्सना करके मुझसे वदला लेने की धमकी देने लगा । अिन सव वातो से मै किशन को अच्छी तरह पहचानता था । किशन अेक अधम था, किशन अेक निर्दय गुडा था । किशन भयकर दुराचारी था, कुतिस दुष्ट

होते हुअे भी वुद्धि से वह विलकुल गद्धा था। कटक वावूजी! आप जो क्षमा करेंगे तो केवल हसी की अेक वात वतलावूगा, वनाअू? हँसी आती है। मुझे अुस वात की! पर मैं अिस पींजरे में वद किये जाने के वाद पहले पहल जव आप को देखता भया, तव अुस किशनकी मुखाकृति जैसी ही मुझे आपकी मुखाकृति भी नजर आती थी!"

रफिअुद्दीन हसने लगा, कैदी भी हसे, तत्काल किशन की छाती म चस्स् सा हुआ! यह वदमाश अिस तरह ताने कसकर निर्भर्त्सना कर रहा है, में ही किशन हू यह पता चलाने का अिसका हेतु तो नहीं न है? अैसी शका भी 'कटक' को आअी और वही यदि अुसका हेतु हो तो अुसे निष्फल करने के लिये रफिअुद्दीनद्वारा किशन को दी गअी गालियो की गुप्त चिढ, मालती के नाम का अुसके मुँहसे होनवाला अुद्धार सुन कर प्रतीत होनेवाला सोनहास तिरस्कार और वह शका अिन सव विचारो की खलवली अदर ही अदर दवाकर कटक रफिअुद्दीन की ओर कैदियो की हँसीमें अपनी भी हँसी मिलाता हुआ वोला, "ठीक, मिय्याजी, ठीक! वह किशन अेक पक्का गदहा था अैसा कहते हो और मेरा चेहरा अुस जैसा ही नजर आया, अैसा कहते हो, तो मेरा चेहरा गदहे जैसा है, अैसा है क्या तुम्हारा कहना?"

हसते-हसते पर हाथ जोड कर रफिअुद्दीन क्षमा मागने लगा, "यह क्या वावूजी, किशन की अक्ल गदहे जैसी थी, पर चेहरा अच्छा ही था, यह मैं आपके चेहरे मे तुलना करके सूचित करनेवाला था! कहा सदाचारी कटक वावू और कहाँ वह गुडा दुराचारी किशन!!"

"अच्छा! आगे क्या हुवा?" कहानी मे मग्न हुआ हुआ अेक कैदी जल्दवाजी करने लगा!

"आगे क्या कहू भाअी, मैं मालती को धीरज दे ही रहा था कि अेक झाडी मे से पत्थर पर पत्थर आने लगे। अुस अवला का रक्षण ही अपना धर्म समझ कर मैं अेक हाथसे अुसे अपने साथ लिपटा कर दूसरे हाथ से अुलटे पत्थर फेकने लगा और यथाशीघ्र गाव में जा पहुँचा। अुसका मकान आतेही वह भावाविष्ट होकर वोलने लगी, मेरे कमरे की तालियो का गुच्छा मेरे पास है, और मेरा कमरा स्वतन्त्र रूप मे मेरेही अधिकार मे है, आप जरा अूपर चले और जवतक मेरे हृदय की भीति युक्त धडधड दूर न हो तव तक

मेरे ही साथ रहे ! और पीछे से जाअियेगा ! मेरे लिये अुसके कथन का अिनकार करना अेक अवला के साथ कठोर व्यवहार करने का पाप ही था ! मै अुसके साथ अूपर अुसके कमरे में गया । अदर पैर रखाही था कि अुसने दरवाजे को अदर मे वद करके ताला लगा दिया ! देखता हू तो जिधर-तिधर साजसजावट, सरदारी सौंदर्य,सुगध ही सुगध, आअीने, चित्र, पलग, पुष्पपात्र केवल अिद्रभुवन ! और मध्य मे वह गोरीपान मालती—रूपकी केवल अप्सरा ! मेरे गले मे अुसने पुन मजवृत गलवही डाल दी ! कामोन्मत्त पुरुषोने स्त्रियो पर वलात्कार किया है, यह तुमने बहुतवार सुना होगा, पर अुस काम-लपट स्त्रीने, मालतीने, मेरे जैसे अेक साव् पुरुष पर वलात्कार किया। अैसी कहानी कभी सुनी है क्या ? "

"वो सब् जाना देव परतु—" अेक लुच्चा कैदी छद्मीपने से हसा "सच वोलो मिय्याजी,वह वलात्कार क्यो न हो, पर तुम्हे वह चाहिये-चाहियेसा प्रतीत हुआ कि नही ? अुसके अुस गोरीपान मृदु-मृदु देहकी मजवूत पकड वैठतेही तुम्हे क्या मालती पर गुस्सा आया ? शपथ देवकी ! सच वोलो !"

जोर से हँसते हुअे मानो जो चाहता था वही प्रश्न हुआ, अैसा प्रतीत होकर रफिअुद्दीन मटक मटक कर कहने लगा—'मित्र, शपथ देवकी ! मालती पर गुस्सा अुस स्थितिमें, वहाँ यदि शुकदेव रहता तो भी न आता । मालती ! हाय ! मेरी गोरीपान मअूमअू (मृदुमृदु) मालती ! अुसपर गुस्सा ? अरे मित्र, वह मेरी जान है जान ! —"

सारे कैदी कहकहा मार कर हँस पडे ।

भरी सभा में, अभिनयमचपर किसी काले कलूटे नटके मुँहपर मली गअी रग की पुडिया वीच मे ही कही पुँछ जाय तो काला रग अुतनेही स्थानपर तारकोल के चट्टे की तरह जैसे दीखने लग जाता है, अुसी तरह अुस ढोगी मनुष्य के मन का असली कालापन अुस साधुत्व की पुडिया के अुस तरह पट्से पुँछ जाते ही वाहर आगया । पर नट जैसे लोगो के हँसते ही सावधान हो कर अुस काले चट्टे को रुमाल से ढाँपकर पहले का अभिनय आगे जैसे तैसे पूरा कर डालता है, अुसी प्रकार के गडवडझाले मे रफिअुद्दीन ने अपने को सँभाल लिया ।

"परतु हाय हाय! जोहड से निकला सो कुअें मे जा गिरा! क्या कि राजमार्ग पर गिर कर अुठा और ज्यो ही अपने को सँभाल कर दौडने की सोच ही रहा था कि अुतने में मुझे कमर से मजबूती के साथ पकड कर कोअी जोर जोर से चिल्लाकर शोर मचाने लगा! वह किशन था! वह नीच क्रिशन! वह गुडा किशन! मेरे अूपर आँख रखकर, गुप्त रूपसे पीछा करते हुअे अुस आमराअी से आकर यहाँ छिपा हुआ था। मैंने गुस्से के मारे वेहोश सा होकर हाथ मे का धारवद चिमटा अुसके पेटमें घुसेड दिया। वह पापी वही का वही ढेर होगया! पर अितने मे आदमियो के झुडके झुड अुस चीखने चिल्लाने के कारण आन की आनमे वहाँ जमा होगये और मुझे पुलिसके हाथ में देदिया! और अतमे मालती का नाम लाछित करने की अपेक्षा मैंने स्वयमेव हत्याका दायित्व अपने अूपर ले लिया, तत्फलरूप पुन मुझे अिस काले पानी की सजा होगअी! अेक अवला के रक्षण के लिये मैं जिस जजालमे आफँसा! धरम के लिये मैंने यह वलिदान किया!!"

"और वह राजकुमारी? अुस मालती का आगे क्या हुआ?" अेक कैदी दुखोच्छ्वास निकाल कर पूछने लगा।

"क्या—पुछते हो, भाअी! वह प्यारी मालती! मेरे विछोह से पगली—होगअी! हाथ में अेक माला, अुसके साथ 'हाय रफिअुद्दीन, हाय रफिअुद्दीन!' अैसा जप करते हुअे मथुरा के रास्तो पर जो मिले अुसी के सामने यह सुरीला पद गाती हुअी पूछती भटक रही है—'वतादे सखी कौन गली गये—श्याम!"

रफिअुद्दीन वह पद गाकर दिखाने की तय्यारी ही में था! पर अपने अुपमर्द की अुस कथा का पल्लव—प्रसव (शुष्क-विस्तार) कटक को सर्वथा असह्य होगया था, अत अुस विषय को पूर्णतया वदल डालने का अुचित अवसर पाकर कटकने कहा—

"पर मिय्याजी, मत्रविद्या से समुद्रपर पैरा-पैरो चलने की अलौकिक शक्ति यदि आप में है तो आप अभी छलाग मार कर वापस देश को क्यों नही चले जाते?"

"कितने भोले हो कटकवावूजी आप! पुलिसवालो के गमक्ष छलाग मारने से भूमिपर पैर रखने पर वे फिर पकड लेगे! और दूसरी

चान अैसी है कि वह विद्या स्त्री–स्पर्श होतेही अनुपयोगी हो जाती है। मालती
स्पर्श से पूर्व स्त्री–स्पर्श मैंने कभी नही किया था। अब कम–अज–कम तीन
बरसतक अखड ब्रह्मचर्य पालन किये बगैर देह अुतना हलका नही हो सकता कि
वह पानी पर असस्पृष्ट रूप मे पैर सके। वीर्य सचय हो जानेसे अुसका तेजो-
मय ओज मस्तक में से होकर अूपर जाने का प्रयत्न करता है। तन्मूलत
देह आप ही आप अूपर अुठने लगे जाता है। अिसी को योग विद्या मे लघिमा-
सिद्धि कहते है। अुसे साधते ही जलस्तमन मत्र फलीभृत होता है। तब काले
पानी का समुद्र बगले में बिछाअी गअी सतरजी (दरी) के समान हो जाता
है। अुसपर सिर्फ मन मे आते ही चलने लगे।। ”

“पर मिय्याजी, अिस आजन्म कैद की जगह को भी काला पानी क्यो
कहते है ? ” अेक कैदी ने प्रश्न किया।

“गवार लोग कहते है वैसा। अुसका असली नाम काला पानी न
होकर अडेमान है अडेमान। ”

“पर अुसका अडेमान नाम भी काहे को पडा ? वहाँ मुर्गी के अडो
की पैदावार कसरत से होती है या कुछ और बात है ? ” कैदियो ने
जिज्ञासा की !

अुन के अज्ञान पर दया आये जैसा हँसता हुआ किसी अैतिहासिक तत्त्वा-
न्वेपक की अदा के साथ रफिअुद्दीन कहने लगा—“ अडेमान नाम कैसे पड गया
यह बडे बडे अग्रेजो तक को मालूम नही पडता। हिंदू लोगो मे से कुछ गवार
लोग कहते है कि, हनुमानजीने अपने नाम की यादगार के तौर पर अुस टापू
को ‘हनुमान’ कहा जाय अैसा लका से वापिस रवाना होते समय सीताजी से
विनति की थी। पर वह झूठ है। सच बात तो मेरे गुरुने कही वो ही है।
सुनो। सृष्टि से पहले जब जिधर-तिधर पानी ही पानी था, तब मक्का
शरीफ में अेक ओीश्वर का प्यारा अवलिया रहता था। अीश्वरने अुससे कहा,
‘अेक नौका ले और पूरब की तरफ रवाना हो। सर्वथा, सूर्य अुगता है वहाँ
तक। जहाँ तुझे चाहिये वहाँ, तेरे अभीष्ट आकार की भूमि अुसी आकार
का पदार्थ तेरे समुद्र में डालते ही निर्माण हो जायगी। मनुष्यो के वास्ते
अब समुद्र मे से अधिक स्थल मैं निर्माण करना चाहता हूँ।’ अीश्वर की
आज्ञा होते ही अवलिया अुसी हालत में नौका मे बैठ समुद्रमें रवाना हुआ।

मक्का छोडकर कितनेही महीने गुजर गये तो भी मनपसद जगह् का निर्माण कहाँ किया जाय, यह अुसके ध्यान मे नही आ रहा था। अितने में आकाशवाणी हुअी, 'तू जहाँ नाव खे रहा है, वही स्थल निर्माण कर।' तत्क्षण अवलियाने अपनी वेलवूटो से सजी हुअी दरी समुद्रपर विछा दी।—और कौन अचरज। अुस सतरजी (दरी) के साथ ही साथ नानाविध लता-पुष्प-पर्णो से मडित अेक विस्तीर्ण, अूर्वर, समतल भूमि होगअी। वही यह हिंद।—यह हिंदुस्तान।। अुस पर अेक मेमने की अीश्वर के नाम से वलि चढा कर अवलिया वहाँ से नाव खेता हुआ लका का फेरा मार कर आगे चला। अितने में अेक जोर का तूफान वरपा हुआ। अुसकी नाव अुलट गअी। सारी चीजें डूवने-डावने लगी। अवलिया भी पानी मे नीचे अूपर डूवने अुतराने लगा। वह डूव ही गया होता। पर कुरान शरीफ अुसके हाथ मे था, अुसको वादल (तूफान) का वाप भी न डुवा सकेगा। अुस कुरान शरीफ को छूँचा करतेही वह तर गया, अुसने नाव को फिर सुलटी कर दी—त्यो ही आकाशवाणी हुअी, 'अिस समुद्र मे अैसे तूफान हमेशा वरपा होते रहते हैं। तव, अत्रत्य समुद्र के जलप्रवास को सुरक्षितता प्राप्त हो, अिसके लिये तू यहाँ अेक स्थल का निर्माण कर।' यह आकाशवाणी सुनते ही वहाँ कोअी वस्तु फेंकी जाय यह अवलिया देखने लगा तो क्या, अुसके पास कोअी भी वस्तु नही। अेक हाथ मे कुरान शरीफ और दूसरे हाथ में खाने के लिय अत्यत यत्नपूर्वक पकडा हुआ मुर्गी का अडा वस यही था। तव अवलिया ने समुद्रपर वह अडा फेक दिया और कहा, 'हो जाव भूमि!' वस्स्, तुरत ही अडे से वेट (टापू) वना। अिस लिये अुसका नाम पडा 'अडेमान। अडे का वेट।'"

"या खुदा। क्या तेरी करामत।" अेक मुसलमान फकीर दडितो में था वह धर्माभिमान से परिस्फुरित हो अपने सव्यापसव्यवर्ती सव हिंदू वदियो को हीन ठहराते हुअे वोला—"देखो, हमारे अिस्लाम धर्मकी वडेजावी। कैसे कैसे अवलिया। कुराण शरीफमे अिमान रखने से आदमी कैसे करामती वनते हैं। क्यो कटकवावू, अिस किस्से को सच मानते हैं या नहीं?"

सारे हिंदू कैदी कटक वावूके मुंह की तरफ, 'अिस फकीरने अपने हिंदू धर्म के अदर जो न्यूनता प्रदर्शित की है, अुसका व्याज सहित मूलधन चुकाकर

रहिये' अिस लालसा से भरी निगाहो से देखा—कटक बाबू हँसा। "यदि मिय्याजी द्वारा कथित यह अवलिया की अजब कथा सही है तो हमारे पुराणो में की अगस्ति ॠषि की कथा भी सही होनी ही चाहिये! और अिस अवलिया भर के लिये देखना हो तो हिंदू अवलिया अगस्ति ही अिस मुस्लिम अवलिया से अधिक करामाती था यह स्पष्ट है या नही यह तुम्ही बताओ—क्योंकि जिस समुद्रका पानी नाक मुहमे भरकर यह मुस्लिम अवलिया डुबकियाँ खा रहा था, वह समुद्रही मूलत अुस अगस्ति ॠषिकी थी—केवल लघुशका!!"

सारे हिंदू कैदी विजयानद में कहकहे मारकर हँसे! हर कोअी कहने लगा—"अच्छी पिघलादी।"

पर अिस आकस्मिक गुलगपाडे से क्रुद्ध हो पीजरे का पहरेदार चिल्लाया, "अे बदमाश लोग! तुम्हे चुपचाप बोलने की सहूलियत दी,अुसका यह परिणाम करते हो क्या? काले पानी के पीजरे में हो, या अपने बाप के बगले में? अुठो, जाओ, अपने अपने बिछौने पर जाकर सो जाओ! जाव जाव!"

सारे लोग अुस सख्त हुक्म के छूटते ही पटापट अपने अपने बिछौने पर जा कर पड गये! तो भी पहरेदारने रफिअुद्दीन की आधी हलदी से पीला हुआ हुआ होने की वजह से रफिअुद्दीनकी तरफ हुक्मका रुख प्रत्यक्षतया नही दिखलाया था। तस्मात्, रफिअुद्दीन अुसी हालत मे अकेला कटकबाबूके बिछौने के पास धरना दिये बैठा रहा। थोडी देर वह चुप रहा। वातावरण शांत हुआ देखकर, अेकात साधकर, कटकबाबू के बिलकुल कानो मे बोलने लगा—

"कटकबाब्, आज की यह अिस पीजरे मे अितने अधिक मुक्त रूप से बोलनेकी आखीर की रात है! कल यह आगबोट काले पानी पर लग जायगी। हम सब लोग अुस भयकर जेल की कोठरियो मे से तनहाअियो के भीतर बद कर दिये जायेंगे! मुझे पहले पहल अत्यत सख्त पहरे मे रखा जायगा, अत्यत कठिन दु साध्य मसक्कत करने को दी जायगी! जुल्म किया जायगा। पर तुम शीघ्र ही 'बाबू' हो जाओगे। तुम्हारे सबध ऑफिस के क्लार्क वगैरह से आयेंगे तब हम जैसे सख्त पहरे के कैदियोपर अुपकार करने के हजारो मौके आयेगे। यदि तुम मुझे अिस पहले बरस में, जब भी तुम्हें मौका हाथ आयगा तब, जरा सहूलियतें दिला सको तो बाबूजी, मैं भी तुम्हारी कल्पना से बाहर

तुम्हारे लिये अुपयोगी सिद्ध होअूगा ! यह देखिये, पहला अेक वरस ही मे वास्ते मुश्किलात से भरा है। वह गुजर गया कि मुझे वहाँ रीति के अनुसा और मेरे परिचय पैसा-वसीले की वजह से जेलसे वाहर छोड देगे। शीघ्र ही मै कैदियो का जमादार वनाया जाअूगा यह आप लिख लीजिये ! और तव पहले अुपकारो का वदला मै सौगुना अधिक अुपयोगी सावित होकर चुकाअूगा। और—और कह क्या ? यदि तुम्हे मेरे शब्दो पर यकीन होता हो और मुझसे भाअीचारे का नाता मन.पूर्वक कायम करना चाहो तो—तो जव फिर अेक दफा काले पानी के अधिकारियो की आँखो मे धूल झोककर अुस पीजरे में से अेक पक्षी वाहर निकलेगा तव वावूजी,तुम्हे भी तुम्हारी यह आजन्म कैदकी असह्य वेडी तुम्हारे पैरो में से अचानक टूटकर गिर गअी है, अैसा दिखाअी देगा-अर्थात् वह टूट जाय अैसी तुम्हारी मनीषा हो तो ! "

"मनीषा ? मिय्याजी, मेरा तो सकल्प है—केवल अिच्छा ही नहीं ! पर मार्ग क्या है ? साधन क्या है ? तुम्हारा यह कहना अितमीनान-वख्श है, यह मै कैसे समझू ? तुम काले पानी मे पहले कैसे भाग कर आये थे अिस की सही सही माहियत यदि तुम तसल्ली-वख्श स्वरूपमे मुझे कह सुनाओ तो मै तुम-पर विश्वास कर सकता हू ! "

"अच्छा कटकवावू, तुमको वह सव वात मै सधि मिलते ही सच मच कहूगा। देखो, भाअी भाअी का नाता जितना आपने घरमे प्यारा लगता है अुतना ही जो नाता तो काले पानी में प्यारा समजा जाता है, वह 'चलानी' यह है ! अेकही चलान में जो आते हैं वे सारे दडित अेक दूसरे के 'चलानी' अिस नाते से वधु-वधु हो जाते हैं। यह अेक नवीन गोत्र ही वन जाता है वहाँ ! अपना भी वही नाता जुडगया है। तुम मेरे चलानी हो,—मेरे भाअी हो ! कटकवावू, तुम मुझपर यकीन करो या न करो, पर मैने तुम्हे अपना वचन दे दिया। तुम मेरे भाअी हो—चलानी हो ! मैं तुम्हारे प्राणो के लिये प्राण दे दूगा ! करूगा तो तुम्हारा भला करूगा। विश्वासघात तो कभी भी नहीं करूगा !

डाकू तो हम हैं यह सही है पर हमारे में अेक खामियत है, वह यह कि, हम जितने दुष्ट हो सकते है, मन में आया तो अुतने ही सुष्ठु भी हो सकते है। तुम मेरेसाथ निष्कपट वधुत्व का नाता जोड कर तो देखो !

अुपकार किया तो, अस्मादृश हिंस्र पशु भी कभी कभी अुपकारकर्ता को विसारते नही, अुपद्रवते नही, प्रत्युपकारे विना नही रहते !—जैसे अुस अँड्रोक्लीज को वह सिंह ! "

"रफिअुद्दीन" पहरेदार जल्दी जल्दी मे चिल्लाया, 'अूठ जावो ! पहरा वदलने के लिये जमादार आता है ! जा अपनी जगह ! हमारे पहरे की वारी समाप्त हुअी ! "

रफिअुद्दीन तत्काल अुठा । "कैदियो को आपस मे वातचीत की सख्त मुमानियत है ! अपने परिचय का पहरेदार होने के कारण यह जम सका ! अब कल सवेरे काले पानी को यह अगिननाव लगेगी ! अब यही सलाम !—भुलना नही जो कुछ वात अभी हुअी अुस को ! आज से कटक, तुम मेरे भाअी हो ! आप चाहे मुझे कुछ भी समजो ! "

अितना कटक से गडबडी मे बोल कर रफिअुद्दीन अपनी जगह वापिस लौट गया ।

सवेरे ही जिधर तिधर गडवड अुडी "आया ! कालापानी आया ! "

अुसके साथ ही कठोर, क्रूर, अुलटे कलेजे के आजन्म दडितो के हृदय में भी धस्स होगया ! धडकी घुस गअी ! "आया ! काला पानी आया ! ! "

अुन दडितो के हृदयो की भाति ही, मानो अुसके भी हृदय को धक्के वैठ रहे हो, अुस प्रकार की वह किमाकार अगिनवोट भी धक्केपर धक्के खाती हुअी धडधड, घडपड करती वदर गाहमे प्रविष्ट हुअी और अुसका ववा भोकार फैला कर भोऽऽ भो ऽऽ भ्कने लगा !

—आया ! काला पानी आया ! !

जग मे आज भी कुछ भूभाग अैसे हैं कि, जिन का भूगोल तो अुपलब्ध है, पर अितिहास नही । काला पानी जिसे आज कहते है, अुस अंदमान के द्वीपपुंज का भी अुन्ही भूभागो मे अंतर्भाव करना चाहिये ।

जिस काल मे हिंदूराष्ट्रने अपने स्वत के पैरो में सिधु-त्रय की बेडी स्वयमेव नही ठोक ली थी, विधर्मियो के साथ ही नही, स्वधर्मीय हिंदुओ के अंदर भी विजातीय के साथ खाने या पीने मे जात ही जाती है, धर्म ही डूबता है, अैसे बाष्कल धर्म-भोलेपन की वजह से हिंदुस्तान के बाहर जाने से विधर्मी, विदेशी, विजातीयो के साथ अन्नोदक व्यवहार होकर अपनी जात नष्ट होगी ही, यह भ्रामक भीति हिंदूराष्ट्र के पेट में अुत्पन्न हुअी नही थी, और अुसके योग से तीनो बाजुओ के समुद्रपर ही नहीं बल्कि चौथी बाजू की भौमिक सीमा पर भी 'अटक' की धार्मिक चौकियाँ बैठ गअी और कोअी भी हिंदू देश से बाहर जिस काल से जानेही न लगा, अुस साधारणत अीसवी सन की नौवीं दसवी सदी के काल से पूर्व हिंदूराष्ट्र के त्रिविक्रमशील चरण, अिस सिंधु-त्रय की बेडी मे जकडे हुअे न होने के कारण पूर्व पश्चिम दक्षिण समुद्रो और महासागरो को लांघकर, राजकीय, धार्मिक, सामाजिक, दिग्विजय करते हुअे अुस काल के ज्ञात जग मे अपने हिंदुओ के महासाम्राज्य निनादित करते चल रहे थे । परदेशगमन अुस काल मे बिलकुल भी निषिद्ध नहीं होने की वजहसे, परदेश-गमन-निषेध की अवदशा अुस कालमें किसी को भी स्मृत न हो आने की वजह से, हिंदू रणतरियो (War ships) के प्रचंड नौ-साधन दिग्दिगंत मे अप्रतिहतरूप से संचार किया करते थे । जिस को परकीयोंद्वारा लिखे और पढाये गये आज के हमारे भारत के भ्रष्ट भूगोल मे 'अरब सागर' अैसे मानहानिकारक नामसे पुकारा जाता है, अुस हमारे पुरातन 'पश्चिम समुद्र' में से होकर अेक बाजू को और जिसे हमारे आज के कूप मंडूकों ने 'काला पानी' अैसा समुद्रगमनभीरुता द्योतक नाम दिया है, अुस, अिन अंदमान द्वीपोंवाले पूर्व समुद्र में से होकर कनिष्ठ पक्ष में, चंद्रगुप्त मौर्य के

अर्थात् ओीसवी सन से तीनचार सौ वरस पहले के विलकुल अैतिहासिक काल से लेकर हिंदू राष्ट्र की शतावधि वणिग्नौका और रणनौका दूर दूरके विदेशो को अव्याहत रूपसे जाया आया करती थी। हिंदू राष्ट्र के लिये यह सागर अेक सडक बनी हुआी थी।

अिस पूर्व समुद्र में से मगध, आन्ध्र, पाडच, चेर, चौल प्रभृति हिंदू राज्यो ने वडेवडे दिग्जयिष्णु नौ साधन (वेडे) भेजकर सयाम, जावा, वोर्नियो से फिलिपाअिन्सपर्यंत हिंदू अुपनिवेश, राज्य, धर्म और सस्कृति स्थापी। हिदचीन (अिंडोचायना) और फिलिपाअिन्स मे हिंदुराज्य स्थापित थे, अेतद्विषयक निर्विवाद ताम्रपट शिलालेखादि प्रमाण परकीय अनुसन्धाताओ ने आज प्रकाश में लाये हे। बौद्ध हिंदुओ के ही नही वल्कि वैदिक हिंदुओ के ये क्षत्रियवशीय राज्य, भारतीय प्रात नगरो के वहां स्थापे हुअे अुपनिवेशो अेव नगरो को दिये हुअे नाम, शिव, विष्णु, बुद्ध प्रभृति देवताओ के देवालय वेद, मनुस्मृति प्रभृति शतावधि सस्कृत ग्रथो के ग्रथालय, हिंदु वाणिज्य, कला, सस्कृति अित्यादिक, सयाम, जावा, ब्रह्मदेश, हिंदुचीन, वाली से फिलिपाअिन्स तक तो सदियो तक पूर्ण विकसित अवस्था मे थे—यह निर्मल अितिहास है।

पर, अुस अितिहास मे अदमान द्वीपपुज सदृश छोटे मोटे द्वीपो के नामनिर्देश भी आजतक हाथ न लगे, अिसवात पर अुस कालके प्राचीनत्व के कारण अेव अितिहास विरलता के कारण बहुत ज्यादह अचरज करने की जरूरत नही हैं।

तोभी, अडमान से अपने भारतीयो के विद्यमान स ध का निर्देश करनेवाला प्रथम चिन्ह है अुसका नाम। जावा यह नाम जैसे अुस देश के आकारपर से यवद्वीप अैसा रखा गया, तद्वत् 'अडमान' यह नाम भी अुस की अडाकृति पर ही से भारतीयो न रखा होगा, 'अैसा जवतक अिसका खडन करनेवाला प्रमाण आगे चलकर मिल न जाये तव तक समझने में कोअी आपत्ति नही हैं। अुससे आगे के द्वीपो पर भारतीयो के प्रत्यक्ष जाने और अुन टापुओ को जीतने का निर्विवाद अैतिहासिक प्रमाण अर्थात् पाडय राजाओ की शिला-लेखीय प्रशस्ति अुपलब्ध है। अिस अेक प्रशस्ति पर से यह सिद्ध होता है कि, पाडयो का अेक प्रवल सेनापति ओीसवी सन की दसवी सदी के आसपास अिस समुद्रपर दिग्विजय करने के लिये वडी वडी रणतरियो का अेक प्रवल

नौसाधन (बेडा) लेकर निकला था। परतीरवर्ती आज के पेगू पर अुसके जल सैन्यने चढाअी करके अुस देश को जीत लिया। वापिस आते समय अुस भारतीय हिंदू सैन्य ने अंडमानादिक टापुओं पर स्वामित्व स्थापकर अुन्हें पांड्य साम्राज्य मे मिला लिया। अिस स्पष्ट अुल्लेख पर से अिन द्वीप-पुंजो के अितिहास की सिर्फ पहली पंक्ति ही लिखी जा सकती है।

पर वह पंक्ति भी लिखते लिखते अपूर्ण ही रह जाती है। भारतीय सैन्य वहाँ गया था, यह भले ही निश्चित हो जाय, तथापि वह हिंदू सैन्य अथवा अुस हिंदू राजा का कोअी अधिकारी अथवा नागरिक वहाँ रहा या नहीं, अिस का पता अभी तक लगा नहीं है। हम जब अंडमान मे थे तब अेक दफा अेक विश्वसनीय अंग्रेज अधिकारी ने हमें बताया था कि अंडमान मे खुदाअी करते समय किसी अेक जगह राजप्रासादके अवशेष मिलते हैं। पर आगे चलकर अुसका क्या हुआ, यह आज तक भी हमे कुछ समझ नही पडा। तादृश अेक आद्य अुत्खननीय खोज का पता लगे या न लगे तथापि यह बात निश्चित है कि अंदमान मे बाहर के लोगो का अुपनिवेश गत तीन हजार बरसों के अैति-हासिक काल में तो टिककर नही रहा।

पांड्य राजा की अुपरिनिर्दिष्ट प्राचीन प्रशस्ति को अेक ओर रख दें तो अंडमान का अस्फुटसा अुल्लेख अर्वाचीन काल के मार्कोपोलो, निकोलो, यूरोपियन तथा कुछ अरबी प्रवासियो के प्रवासवृत्तो में मिलता है। पर वह अिस टापूपर आकर वास्तव्य करने का नही बल्कि अिस के बारे में सुनी गअी बातो का है, अुसके अस्तित्व का, केवल भौगोलिक।

बाहर के लोगो के संबंधमे अुन बाहर के लोगो के अितिहास में अंडमान का अितिहास जैसे मिलता नही, अुसी तरह अुनके खुदके लोगो में भी अितिहास अेक अक्षर मे भी नहीं मिलता यह कहना अनावश्यक है। क्यो कि अंडमान मे अुन के अपने लोग है तथापि अक्षरज्ञान अुन्हें बिलकुल भी नहीं है।

और परंपरागत दंतकथात्मक अितिहास के विषय में पूछेंगे तो, अुन अंदमान के मूलनिवासियो के दांत यद्यपि अत्यंत बलोत्कट और तीक्ष्ण हैं, तथापि अुन्हें कथा किस चिडियाका नाम है, पता नही। कथा की कल्पना तक अुनलोगों में नही है। क्योंकि जहाँ स्मृति रहती है, वहाँ कथा की संभा-वना होती हैं। पर अंडमान के मूलनिवासियो की स्मृति शक्ति अद्यापि अितनी

अपक्वावस्थामें है कि अुन्हे २–४ बरस पहले की बाते भी याद नही रहती। जिसे हम याद कहते है, वह अुन्हे रहती ही नही। परिचय भी वे बहुत जल्दी भूल जाते हैं। तब जातीय सुसगत साधिक स्मृति और परपरा की प्राचीन कथाअे अुन्हे कहाँ रहेगी? प्राणियो के झुडोको किंवा वानरों के समूह को जितनी परपरा और सामाजिक स्मृति होती है, अुससे कुछ ही अशो में अधिक अुनकी सामाजिक स्मृति विकसित दिखाअी देती है। तन्मूलत दनकथात्मक भी अितिहास अडमान के निवासियो का नही हैं।

मिल कर क्या? जग के अन्य राष्ट्रो के वाङमय मे अेक अुपर्युल्लिखित पाड्य राजाओ की प्रशस्ति को छोडकर अडमान के विषय में अैतिहासिक अुल्लेख नही हैं। यूरोपियन और अरबी प्रवासियो का मध्यकालीन अुल्लेख केवल भूगोलविषयक, अडमान सबधी अितिहास कहनेवाला नही है। और अडमानी जाति बिलकुल जगली, आदिम, अविकसित मानव। अुनकी स्वत की लिखी हुअी कथाअे तो रहे, जातीय पूर्व वृत्तो की दत कथाअे तक नही हैं! जिसको भूगोल है, अितिहास नही, अैसा अडमान अेक अजस्र भूभाग है! अुसका सारा अितिहास कहे तो अेक पक्ति!—पाड्य राजा की प्रशस्ति मे की!

अडमान का अितिहास न भी हो तो भी मनुष्यसमाज मात्र है! अितना ही नही, अुसका जो मूल का मनुष्यसमाज आज अडमान मे है, वह अैतिहासिक गणना की भाषामे तो सर्वथा अनैषरश अनादि है। क्यो कि वहाँ आज जो मूल की जगली, आदिम मनुष्यो की जातियाँ निवास करती है, अुनके अस्तित्व का आरभ ही नही मिलता। अत्यत प्राचीनतम काल से लेकर, क्वचित् मर्कट का मनुष्य होता आया तब से लेकर वे जैसी की तैसी आज भी लगभग जहा थी वही, बहुताश मे जैसी थी अुसी अवस्थामें निवास करती है।

मर्कट से मनुष्य का निर्माण होने लगा तब प्रथम पूछें झडने लग कर सिर्फ मर्कटास्थि ही बची रहने लगी। मर्कटास्थि यह नाम यद्यपि हम लोग भी अपनी अुस जगह की मेरुदड की अेक अस्थि को देते हैं, तथापि वह अस्थि अब मूल की अपेक्षा सर्वथा सपाट हो गयी है। पर अुधर बिलकुल अडमान मे नहो तोभी अुस द्वीप–पुज के आजू बाजू के भू-भागो में आज भी अैसे मनुष्य कभी कभी दीख पडते है, जिन की मर्कटास्थि,

डेढ दो अिंच अूची और आगे आयी हुअी रहती है। हम लोग जब अंडमान में थे, तब अैसा अेक जंगली आदमी वहां के डॉक्टरने हमें औषधालय में आया हुआ दिखाया था। अुसकी मर्कटास्थि–पूछ की वह हड्डी अिसी तरह आगे आयी हुअी, जिसकी वजह से कुर्सी के पृष्ठभाग को टेककर सीधा बैठा न जा सके, अिस तरह लंबायी हुअी थी। अुसके पास ही पूछ के बालो के गुच्छे का स्नायु अुतना लटकता हुआ नही था। वह लुप्त हो चुका था। अुसकी ठोडी और गाल भी मर्कट (बंदर) से बहुतसी बातो में मिलते जुलते थे। अुस की चालीस पचास शब्दो की क्यों न हो, अेक भाषा थी। यह भाषा जातिवंत मर्कट मनुष्यो की 'ओरांग ओटांग' 'गुरिल्ला' की रहती है। अिन ओरांगओटांग, वानर मर्कटो की भी अेक भाषा है, अुसके बहुत से शब्द कुछ प्रवासी प्राणि-शास्त्रज्ञो ने गिनने का यत्न किया है। पर हमने अिस जिस पुच्छास्थियुक्त मनुष्य को देखा था, अुसे मानव भाषाओ में अंतर्भूत होने वाली भाषा आनी मनुष्यवाणी थी। यह मुख्य फरक दिखाअी दिया।

यह अपवादात्मक प्राणी हमने बतलाया है, पर अंदमान मे बिलकुल तज्जन्य अनादि काल से निवास करती हुअी आने वाली अेक 'जावरा' नाम की जात है, जो लांगूलास्थिविहीन है। अुस जाति के आदमी साधारणत चार साडेचार फूट अूचाअी के, वर्ण कालाकलूटा, बाल खडे और कडे, छोटे और गुच्छो मे अुलझे हुअ वलयाकृति होते है दाढी मूछे तो पुरुषो की भी नदारद। वे सारे सर्वथा अुल्लिग! मनुष्यप्राणी 'सुधारते सुधारते' अपने यहाँ, आज के यांत्रिक युग में जिस अवस्थातक पहुंच गया है, वह अपनी सुधारणा और वह अपना यंत्र युग ही अपने लोगों के जिस अेक संप्रदाय को मनुष्यजाति के लिये अेक दुर्धर शाप मालूम पडता है, सादे रहने सहन के यंत्रयुगविद्वेषी पथ के मुंहसे भी लार बहने लग जाय, अितना सादा रहन सहन अिस 'जावरा' जाति में अनादि काल से लेकर आजतक चलता चला आया है। कपडे पहनने का मोह अुन्हे कभी होता ही नहीं। नंगापन यदि साधुत्व की निशानी है तो, जावरा लोग अपने यहां के साधुओ की अपेक्षा भी बढेचढे साधु है। अपने यहां के साधुओंको कमर में अेक पचा लपेटन या कमअजकम लंगोटी तो पहनने का मोह होता ही है। पर अिस जावरा जाति मे पुरुष तो क्या–स्त्रियाँ तक कमर में अेक अंगुश्तभर कपडे का चीथडा नहीं

वावती । और हम अुल्लिग रहकर कोअी शतकृत्य कर रहे है, अैसी भावना भी अुन लोगो में नही है। क्यो कि वस्त्रो की कल्पना का स्पर्श तक अुन को नही हुआ है । अुनकी 'सादगी' अितनी है कि, बडी बडी मिलो का 'शाप' तो क्या 'चर्खा' और 'तकली' तक का शाप भी अुन्हे नही लगा है । शान शौकत के व्यसन की वजह से मनुष्य अधोगति को प्राप्त हो रहा है, अिस विवचना के कारण जिन्हे अन्न भी मीठा नही लगता है, अुन अपने यहाँ के 'सादगी' के अभिमानियो को यह सुनकर आनद ही होगा कि, ये 'जावरा' लोग शानशौकत से सर्वथा अलिप्त है । अुनकी औरतो मे यदि कोअी तरुणी बहुत ही विलासलोलुप निकली तो किसी पेड के कुछ पत्ते लेकर अपनी कमर के सामने लटका लेगी । और कोअी पुरुष बहुत ही बनने ठननेवाला निकला तो अुसकी सारी शानशौकत रगदार लाल-लाल मिट्टी के पट्टे शरीरपर खीचने मे ही समाअी हुअी और सतुष्टी हुअी रहती है । यत्रयुग को अधोगति मानने वालो की भाषा में ही बोले तो ये जावरा लोग बहुत ही प्रगतिशील है । यत्र-युग के प्रलोभन से वे सर्वथा अलिप्त है । अुन लोगो को मोटर और रेलगाडी की तो बात दूर, बैलगाडी और गाडी तक का ज्ञान नही है । अुन्हे कुर्सी नही मालूम, दिया सलाअी नही मालूम, जूता नही मालूम, बगला नही मालूम, खेती नही मालूम, जिलेबी नही मालूम, अगूर नही मालूम, मक्खन नही मालूम, बाजरा नही मालूम, तब 'भिशी वाटर' की तो बातही दूर है ! मनुष्यजाति पर मनुष्य के असमाधान का, कलह का, कृत्रिम जीवन का सकट जिस अेक ही कारण से टूट पडा है, अैसा 'सादगी' के अपने यहाँ के अध्वर्यु समझते है, अुस 'सुधारणा' के नाम ही से नही, बल्कि अिच्छा से भी ये जावरा अलिप्त और अकलकित हैं ।

पर अतअेव 'सादगीसे', 'यत्रयुग के शापसे मुक्त होने से', निसर्ग की ओर वापिस फिरने से, मनष्यो मे निरपवाद समाधान विराजन लगगा, अैसा समझकर जो 'Back to Nature' वादी लोग कहते है, अुसके अनुसार अिन जावरा लोगो के जीवन मे वह समाधान विद्यमान है क्या ? बिलकुल नही । खेती नही हल नही, बैको मे नोट नही, बगला नही, पर जो किसी अेक सघन अरण्यातर्वर्ती गर्तमे की जगह किंवा मास का टुकडा तात्कालिक अग्राधिकार से अेक जावरा का होगा,

अुसपर दूसरेकी नजर जाते ही, या नजर न पडे अिसबुद्धि से, अुनको जो चिता करनी पडती है, निपटारा करना पडता है और प्रसग पडने पर जूझ देनी पडती है, वह अुतनी ही अुत्कट और भयकर होती है, जितनी कि किसी कैसर की, जार की अथवा लेनिन की! तुम्हे हमें खेतीके जितने कष्ट अेव चिता होती है अुससे भी अधिक चिता, वन्यफल अथवा मृगया सपादन में, और वह मिलेगी या नही अिस विवचना में, प्रत्यह प्रात काल के समय, जावराकोभी करनी पडती है। सूअरो के पीछे तीर लेकर फिरते समय किवा मछलियाँ पकडते समय कष्ट सहन करने पडते हैं! डरके मारे जान लेकर भागना पडता है, बीमारीमे कराहना पडता है, विषैली जगली मच्छरमक्खियो के डसते ही बिलखना पडता है, मत्सर से जलना भुनना पडता है, आपस मे गाली गलौज मारपीट, टोलियो की लडाअी, यह मारा हुआ मच्छ मेरा है या तेरा,—अिस पूजी वादी प्रश्न पर, यह सोने की खान मेरी है या तेरी, यह राज्य मेरा है या तेरा—अिन बातो के लिये जिस तरह हम लोग मरते दमतक लडते है, अुसी तरह जावराओ को भी अेक दूसरे के साथ मरते दमतक जूझना पडता है। केवल सादगी से, 'यत्रयुग का शाप' छूट जाने पर ही यदि शाति अेव समाधान विराज सकता होता तो ये जावरा लोग जीवन्मुक्त ही समझे गये होते! क्यो कि वे लगभग बदरो जितने ही 'सादगी' के अुपासक है, 'निसर्ग' के अनुकूल जीवन बिताते है, पर असतोष, असमाधान, जीवन कलह अित्यादि का स्तर अेव प्रकार भले ही भिन्न हो, किंतु अुनकी तीव्रता और अपरिहार्यता अुन जावराओ के 'नैसर्गिक' युगम भी हम लोगो के यत्रयुग से कुछ भी कम नही दिखाअी देती। अुलटे, अुनके जीवन का विकास बदर के जीवन से जो बहुत ज्यादा हुआ हुआ नहीं है, अुसका कारण यह सादा बदरो का रहन सहन ही है, यह भी स्पष्ट ही है।

अडमान मे अुपर्युल्लिखित जावरा जाति यह अेक अुस मे भी बिल्कुल आदिम, जगली, सुवरे हुअे आज के हमारे प्रकार के परकीय लोगो से भय से और द्वेष से दूर रहने की अिच्छा करने वाली है, तो भी अडमानवासी मूल लोगो की अन्य अनेक जातियाँ अुन जावराओ से रीतिनीति, रहनसहन, शरीररचना अित्यादि बारे में भिन्न प्रकार की है। और अपनी अपनी जगह कुछ सुधरी हुअी भी है। अुनके पार्थक्य और साम्य का गहन अध्ययन किये

हुअे अेक अग्रेज समाजशास्त्रज्ञने अुनके विषयमे जो जानकारी दी है, अुसकी साधारण रूपरेखा अपन अिस कथानक के साथ सुसगत मात्रा मे नीचे दे रहे है—

अडमान मे जो दस बारह तत्रस्थ मूल लोगो की जातियाँ है, अुनके कुछ नाम–'कारि, कोरा, टबो, बी, बलवा, जावरा, जुवअी, कोल' अित्यादि प्रकार के है । अतिम 'कोल' यह नाम ध्यान देने योग्य है । क्यो कि अपने यहाँ के वन्य अथवा पहाडी 'कोळी' लोगो से वह नाम और अुन कोलो का जगली चरित्र तुलनार्ह प्रतीत होता है । अिस जाति के सघ, कोअी सघन जगल मे, कोअी अूँचे पहाडो मे तथा कोअी समुद्रतट वर्ती प्रदेश में रहते चले आये हैं, तस्मात् अुनकी चालचलन, भाव-भावना, रगरूप वगैरह भी अुपरिनिर्दिष्ट परिस्थिति भेद से और क्वचित् वश भेद से भिन्न-भिन्न हैं । तन्मूलत अुनके अेक साथ वर्णन मे जो कुछ विसगति नजर आयेगी अुसका स्पष्टीकरण वाचको को कर लेना मभव हो जायगा ।

जावरा प्रभृति जातियाँ अत्यत क्रूर होती हैं । पहले, तूफानो की वजह से कितने ही परकीय जलयान अिस टापू से टकरा कर टूट फूट जाते या फस जाते थे । अुनपर के नि सहाय लोगो पर टूट पडकर अुनको ये जावरा प्रभृति अडमानी लोग अत्यत क्रूरता से कत्ल किया करते थे । आज भी अुनके परिचय के तत्रस्थ जाति से बाहर की किसी भी परकीय किंवा अडमानीय जाति के आदमी नजर आतेही ये जगली लोग अुनके अूपर तीक्ष्ण बाणो का प्रहार करना शुरू कर देते है। किंवा अकेले दुकेले को पकड कर जान से मार डालते है । कभी कभी किसी को जीवदान मिला तो अुसका भाग्य अद्भुत है, अैसा ही समझना चाहिये । जावराओ द्वारा जान से मारे गये व्यक्तियो के शवो पर पत्थरो के ढेर रक्खे जाते है । अुनके द्वारा जगल मे मारे गये प्राणियो की खबर पक्षी अुनके पक्षवालो को जा कर दे आते हैं अैसी अेक धारणा अुन लोगो मे प्रचलित है । क्योकि वे पशुपक्षियो को मनुष्यो से बहुत अधिक भिन्न नहीं समझते हैं ।

अिन लोगो मे स्त्री–पुरुषो के सबध में रीति-नीति विभिन्न प्रकारकी रहती है । स्त्री पुरुषो के काम बहुधा बँटे रहते है । स्त्रीका स्थान पुरुष की अपेक्षा अधोवर्ती समझा जाता है । बूढी औरतो के साथ सम्मान से व्यवहरते

है। शादी से पहले स्त्रियाँ पुरुषो के साथ वहुत ही अधिक आत्मीयता प्रदर्शित करती है। अविवाहित स्त्रियो के लिये लैंगिक निर्वंध वहुत कुछ नही रहते। किन्ही जातियो मे वे अपना वर अपने आप चुन लेती है। किन्ही में मावाप ने शादी पक्की की कि वह पक्की होगी अैसा मानते है। यहाँ वहुपत्नीत्व भी अधिक नहीं है और वहुपतीत्व भी नही है। कुछ जातियो मे पुरुष अपनी अपेक्षा तरुण दूसरो की विवाहित स्त्रियो के साथ वहुत करके नही वोलते। अिसी तरह अपनी पत्नी की वहिन को वे छूते भी नही है। लडको लडकियो के नाम भी भिन्न प्रकार के हो अैसा रिवाज वहुतसी जातियो में नहीं है। माही नाम रखती है। गर्भिणी होने के चिन्ह नजर आते ही गर्भका नाम रख दिया जाता है। पर किन्ही जातियो मे लडकियो के अुम्रमें आनेपर अुने लोगो के लिये निश्चित किये गये फूलो मे से जो फूल अुनके अुम्र मे आने के समय फूल रहे हो अुन्ही मे किसी अेक फूलका नाम रखा जाता है। यह अिन जगली लोगो की ललितप्रवृत्ति हमारे नागर लोगो की लडकियो का नाम दगडी, धोडी, भिमी वगैरे रखने की अरसिक प्रवृत्ति से अधिक सुभग नहीं क्या? पुरुषो की शादियाँ २५ वरस की अुम्र के वाद तथा लडकियो की अठारह के वाद वहुधा होती है।

अिन्हे लडके वहुत पसद है। पर कुछ जातियो में लडके सात आठ वरस के हुअे कि अपने मा वापके साथ अेकत्र नही रहते वे अपना अलग आयुक्रम वनाते है। आयु क्रम सव का अेकही और मपा हुआ होता है। भवष्यके लिये दिनभर शिकार करना और रात को नींद आनेतक नाचना। नाचने के समारभ में स्त्री-पुरुष अुल्लिग, अेकत्र।

अिन लोगो मे पुरुष कुछ अच्छे मालूम पडते है। स्त्रियाँ तो अेकदम वध्यड। स्त्रियो का कटि पृष्ठनिम्न भाग तो अत्यत ही वेडौल और शरीर के मानसे वहुत ही स्थूल रहता है। अुनके सौंदर्य मे और वृद्धि करने की ही वुद्धि से कदाचित् अुन स्त्रियो के वाल निकाल कर अुनकी खोपडियाँ विलकुल चिकनी चुपडी वनाअी हुअी होती है। अुस अतमानीय सौंदर्यसृष्टि के लिये तरुण स्त्री अेवविध केशहीन चिकनी चपडी खोपडियो मे ही अधिक सुरेख शोभित होती हैं, अैसा लगता सा प्रतीत होता है। अपने कवियो को सुदरी के ओठ विव फल के सदृश हैं, अैसी अुपमा जैसे भाती है, वैसे ही अुन लोगो में यदि कोअी

कवि हो तो अुसे वहाँ की सुदरियो की खोपडियाँ छीले हुअे नारियल की तरह लोभनीय प्रतीत होती हैं अैसी अुपमा सहज ही सूझती और रुचती होगी। क्यो कि, छिला हुआ नारियल, नारियल के वृक्षो के सुभिक्षवाले अुस अंडमानीय अरण्य के अुन नैसर्गिक नागरिको का अत्यत प्रिय पदार्थ है ।

अुन लोगो की अक्ल छुटपन मे तेज होती है । पर अुस की वृद्धि शीघ्र ही कुंठित हो जाती है । स्मरणशक्ति तो और भी कम अर्थात् बौद्धिक दूर दृष्टि अुनमें कतअी नही, अैसा कहना मौजू होगा । आगे और पीछे देखकर व्यवहार करनेवाला ही मनुष्य है, अैसी अेक मनुष्यत्व की व्याख्या है । अुसके ये अदमानी अपवाद हैं । अुन्हे चालू क्षण मे काम, क्रोध, लोभ प्रभृति विकारो की अूर्मि आयेगी--अुसके अनुसार ही वे व्यवहार करेगे । पिछले दस बरसो का शेष या अगले दस बरसो की योजना अित्यादि अिन लोगो में नही है । क्षुधा, तृष्णा, राग, द्वेष अित्यादि की अुसी वक्त तृप्ति होगयी, तो वह प्रश्न वही का वही मिट जाता है । शत्रु का तथा अपराधी का बदला भी वे अुसी अूर्मि में हो सका तो लेगे । कुछ काल बीत जाने के पश्चात् वह विपक्षीय मनुष्य यदि फिर अुनमें आया तो अुसके बारे का गुस्सा, अुसका अपराध तथा बदले का निश्चय अित्यादि सब बाते वे लोग बहुधा भूल जाते हैं, वह मनुष्य अुनमे फिर मिल जाता है । अर्थात् स्मृति अैसी टटपूजी होती है, अैसा जो अुन के बारे में कहते हैं वह अपनी स्मृतिशक्ति के और बौद्धिक दूर दृष्टि के दरदीर्घ कालीन टिकाअूपने से तुलना करके ही कहा जा सकता है । क्यो कि, अुन जातियो को भी कुछ स्मृति और दूरदृष्टि होनी ही चाहिये । जातितः जन्मजात और व्यक्तिश अर्जित स्मृति और दूरदृष्टि बदरो के झुड मे भी रहती है । तब ये लोग तो भले ही आदिम हो--मनुष्य ठहरे !

अुनकी भाषा बिलकुल गिनेचुने शब्दो की, जो कि प्रत्यह बिलकुल शारीरिक और प्राथमिक भावनाओ, आवश्यकताओ को व्यक्त करनेवाले होते हैं, होती है । अुनमे भी वे अपूर्णही होते है । क्यो कि, अुनकी भाषा में अेक मुख्य शब्द बोल दिया कि अुसका वाक्य बनाने का काम अुनके हावभाव ही पूरा कर देते हैं । हाथ के सकेत, गर्दन, आँखे, अिनके अभिनय से वे शब्दो की अपेक्षा अधिक आपस मे बातचीत करते हैं । कोअी अतिथि किसीसे,

मिला, तो वे पहले अेक दूसरे की ओर टक लगाकर देखते रहना—अिसे पहला शिष्टाचार समझते हैं। अर्थात्, अेक दूसरे को पहचानने में जो खतरा होता है, अुनकी हीन स्मृति के कारण और परकीयो के कपट के कारण अुन्हें सहन करना पडता है, अुस जातीय अनुभव के कारण ही ठीक ढंग से परख लेने से पहले किसी से भी न बोलने की यह प्रथा पडी होगी। और तब खास कर खखारकर आगत व्यक्ति से बोलना शुरू करना यह दूसरा शिष्टाचार। प्रत्येक जाति की अेक स्वतंत्र अुपभाषा होती है। साधारणतः बीस मील के पश्चात् यह अुपभाषा बदल जाती है।

कोअी मर जाये तो अुसके संबंधी मुक्त कंठ से रोते हैं। छोटा बच्चा मर जाय तो मा-बाप के झोपडे ही में गाड देते हैं। अन्य कोअी, विशेषतः बडा आदमी मर जाय तो अुसकी गठडी बांधकर पहले पेडकी खोखल में व्यवस्थित रूपसे रखदी जाती है, अुस जगह के अतराफ बेंत के पत्तों की मालाअें बांधी जाती हैं। अुस जगह की ओर तीन अेक महीनेतक कोअी नहीं जाता। अिस स्मशान की जगह को अलग रखा जाता है। जबतक यह सूतक चालू रहता है, तब तक वे लोग अपना नाच बंद रखते हैं तथा सिर में भूरी मिट्टी मलते हैं। कुछ महीनों के बाद मृत व्यक्ति की हड्डियाँ धोकर अुनके टुकडे कर डालते हैं। और अुसके बाद अुनके नाना प्रकार के आभूषण बनाये जाते हैं और अुन्हे मृत व्यक्ति की यादगार के तौर पर पहना जाता है। रोग हो जाय तो अिन हड्डियो के आभूषणो के स्पर्श से वह ठीक हो जाता है, अैसी भी धारणा अिन लोगो में प्रचलित है। पर अिन सब हड्डियो में मृत व्यक्ति की खोपडी का मान विशेष रहता है। अुस खोपडी की अन्य हड्डियो के साथ गूथी हुअी माला बनाकर अुसे गर्दन के अूपर से पीठ पर लटकाये रखते हैं। और अुस खोपडी के अुपयोग का अधिकार, विधवा, विधुर, किंवा नजदीकी रिश्तेदार ही को रहता है।

मरने के बाद भूत हो जाता है, अैसा कुछ जातियो का विश्वास है, कुछ की समझ है कि अंडमान में अुनके परिचय के जो भी प्राणी फिरते नजर आते हैं, वे सब अुन्हीं के पूर्वज वैसा रूप धारण कर के फिरते हैं। अगले भूत की कल्पना, अपनी छाया की अपेक्षा भी समुद्र में पडनेवाली अपनी परछाअीं के अूपर से ही पहले पहल आअी होगी। क्यों कि परछाअीं को वे लोग भूत

समझते है । और वे मरजाने के बाद दूसरी जगह रहने के लिये चले जाते हैं, अैसा वे मानते हैं।

अिन लोगो में धार्मिक दृष्टि का कर्मकाड बिलकुल नही है, कहे तो कोअी बुरा न होगा। शादी, मौत, वगैरह के मौकोपर निर्धारित रीतिया, व्यावहारिक प्रथाअे होती है। पर धार्मिक स्वरूप मे, किसी देवदेवता की प्रार्थना अथवा पूजा, अथवा मत्रतत्र--किंबहुना, धार्मिक पुरोहित तक अिन लोगो में नही होता। परतु अुनमे से कितनो ही में ब्रह्मज्ञान बिलकुल नही है, अैसा कह कर कोअी अुन्हे हीन दृष्टिमे न देखे, क्योकि हमारी बिलकुल अीश्वरदत्त पुस्तको मे बताअी गअी धार्मिक बातो तथा ब्रह्मज्ञान की बातो से हार न माननेवाला थोडासा ब्रह्मज्ञान और कुरान-पुराण अुन लोगो में भी है। अुदाहरणार्थ, पुलगा नामक दैवतने अिस जगत् का निर्माण किया, मरने के बाद जिस जग में भूत निवासार्थ जाते है, अुस अद्भुत जग को अेक जगद्व्याल नारियल के वृक्षने सँभाल कर रखा हुआ है, जैसे शेषके मस्तक पर पृथ्वी। पुलगा आजकल अुसी अद्भुत और अूँचे जगत्में रहता है। पर पहले वह अडमान के सब से अूँचे पर्वत 'सैडलपीक' के शिखरपर रहा करता था। कैलासपर यदि हमारे महादेव शकर रहते है, मूसा पैगबर का महादेव अल्लाह यदि 'सीनाय' पर्वत पर आया करता था, आय् सी अेस् के महादेव गवर्नर जनरल यदि शिमला पर जाते है, तो अडमान का महादेव पुलगा भी 'सैडल पीक' पर क्यो न रहे? मृत्युके बाद अडमानीय जीव अेक वायुरूपी पुलके अूपर से पातालमे जाता है, जैसे क्रिश्चियन-मुस्लिम जीव कब्र मे जग के अतिम न्यायनिर्णय के दिन तक राह देखता रहता है। यह अडमानी महादेव पुलगा मुसलमानी महादेव की तरह बिलकुल अकेला नही है। अुसकी हमारे हिंदु महादेव की तरह अेक पत्नी है और क्रिश्चियन महादेव का जैसे जीजस पुत्र है तथैव अेक पुत्र भी है। अितना ही नही, अपने अिधर के किसी भी महादेव के भाग्य मे जो सुख नही है वह खुद की अनेक कन्याओ के भी कुटुंब मे रहने का भाग्य अुसके हिस्से मे आया हुआ है।

अिस पुलगा से व्यतिरिक्त अदृश्य शक्तियो मे समुद्र का भूत 'जुरुवीन' और अरण्य का भूत 'अेरम चौंग' बहुत धूर्त है। पुलगा को भी वे नही मानते, जैसे शैतान अल्लाह की भी सहसा पर्वाह नही करता। पर अुसमे भी अितनी

बात अच्छी है कि, यह जगल का धूर्त भूत ' अेरम चौग ' आग से डरता है। अिस धारणा के कारण ये अडमानी जगली जाति के लोग आग को सदा अपने साथ रखते है, बुझने नही देते, जैसे पारसी और हम हिंदू अखड अग्नि-होत्र का पालन करते है ।।

अुत्तर ध्रुव के सदृश, बिलकुल हिम—मय अेव शरीर जमा डालनेवाले ठडे प्रदेश मे मनुष्य जब रहा करता था, तब अुसे अूष्णता के लिये अग्नि का अखड सान्निध्य अत्यत आवश्यक और अतअेव प्रिय रहेगा ही। पर अुस काल में दिया सलाअी सदृश आग सुलगाने का आसान साधन मनुष्य को अुपलब्ध न होने के कारण और लकडीपर लकडी से किंवा पत्थर पर पत्थर से रगड पैदा करके अत्यत प्रयत्न से अग्नि पैदा करनी पडती थी अत अेक बार आग के पैदा होने के बाद अुसे सहसा बुझने न देकर निरतर जागरित अवस्थामे बनाये रखना अुनके लिये अपरिहार्य था। अुसी वजह से अुत्तर ध्रुववर्ती आर्यों में अग्नि का मूल्य बहुत बढा होगा, अुसी को पहले सदाचारका और पश्चात् धार्मिक कर्तव्य का रुप प्राप्त होकर हमारी अग्निहोत्रसस्था बनी। हमने अग्निहोत्र सस्था के बारे मे जो अुपपत्ति लगाअी है, अुसे अडमान-वर्ती वन्य अनार्य जाति के अिस अुपरिनिर्दिष्ट अग्निपूजा से बहुत अधिक पुष्टि प्राप्त होती है। क्यो कि, अुस घनदाट (सघन) जगल में बडे बडे विषैले मच्छरो के और मक्खिओ के समूह, सर्प, जोंक वगैरह की बहुसख्या, यत्र तत्र दलदल, बहुधा अधकार, अैसे जगल के ये भूत डरेगे तो आग ही से डरेंगे। आग अुपजगह अत्यत अुपयुक्त। पर जगली लोगो में आजभी आग सुलगाना दियासलाअी के अभाव में अत्यत प्रयासपूर्ण है, पत्थर रगड कर चिनगारी पैदा करनी पडती है, अत अेकबार सुलगी हुअी आग को, आग सुलगाने के लिये, जहाँ तक हो सके सुलगी हुअी ही रखना आवश्यक हो जाता है। अत जगल के भूत 'अेरम चौगा' को सर्वदा डरा कर दूर रखने के लिये सदोदित प्रदीप्त अग्निहोत्र आवश्यक होगया।

पर तथापि अुनकी दैवीकरण की कल्पनाशक्ति अुस अग्नि के सदृश जाज्वल्य न होने के कारण आग का अग्निदेव नहीं हुआ। अग्निधानिका या अग्निहोत्र नही हुआ। हुमारी आग देनेवाली लकडियो की भी अरणी देवता बन जाती है और जैसे मत्रपूर्वक अुस देवता का आह्वान किया जाता है, अुस

तरह अुनके पत्थरो से "चिनगारी दे, प्रसन्न हो" कह कर प्रार्थना नही करनी पडती। अुनका अग्नि मनौती नही मागता, सिर्फ सुलगता है। गुस्से में नहीं आता, सिर्फ बुझजाता है। वह अग्नि जगल के भूतो को भगानेवाला होनेपर भी अेक पदार्थ, सिर्फ अेक वस्तु है,– देव बना हुआ नही है।

और कुलजमा अुनकी जातियो मे से बहुत सी जातियो में किसी भी देव की प्रार्थना, अथवा मत्रतत्र अथवा परलोक में अुपयोगी हो अिस बुद्धि से की जानेवाली पूजा का सर्वथा अभाव है। स्वर्ग–नरक की कल्पना अपने कुरानपुराणवाअिबिलीय ठाठ की बिलकुल भी नही। पुलगा की भी सकट-निवारक पूजाप्रार्थना नही है।

अैसे ये अडमानीय जगली नागरिक अिस अेक दो जिलो के बराबर के टापूमें कुल मिलाकर तीन चार हजार भी होगे या नही कहा नही जा सकता। वे भी बिखरे हुअे। बाकी सब घनदाट जगल ही जगल! अितना घनाऔर औपनिवेशिक मनुष्य के चरण स्पर्श से हीन कि, अुसकी निश्चित देखभाल भी गत तीस अेक बरसपर्यंत नही हुअी थी! बडे बडे वृक्ष! अुनके अुपर तथा भीतर सघन, कटकाकीर्ण, अुलझी हुअी लताअें, अूपर से बारहो महीनें-कमसे कम नौ महीने तो–निरतर पडने वाली बरसात! कभी मूसलाधार तो कभी-रिम झिम! अत वृक्षो के तल्ले सदा अिकट्ठा हुआ पानी ही पानी, अुसमें वृक्ष लतावल्लरियो के अुस अथाह सघन अरण्य के पत्र-पर्णों का वर्षानुवर्ष निरतर ढेर का ढेर जमा हुआ हुआ। वर्षानुवर्ष अुसी तरह गलता सडता हुआ। यत्र तत्र अुस दलदल मे भिनभिनाने वाली लक्षावधी मक्खियाँ, बडे बडे दश, जोंके, भयकर सर्प, जहरीले जीवजतु वगैरह का बाजार गरम! वृक्षो से वृक्ष, बेल से बेल, काटे से काटा, झाडियो से झाडियाँ जमा होकर अुलझकर अैसी अेक जगली छत मीलो तक फैली हुअी कि, अूपर सूर्य कितना भी प्रचड प्रकाश फैला क्यो न रहा हो, पर अुसकी किरणो का स्पर्श अुस छत से नीचे तलपर, अुस दल दल को सुखा सके अितना युगानुयुग न हो सके! प्रकाश भी पूरी तरह युगानुयुग पड न सके! जगलो का फैलाव सिर्फ मैदान ही पर नही बल्कि, बीच बीचमें जो पहाड मौजूद हैं, अुनपर भी वह जगल अुसी तरह चढकर बैठा हुआ! अुसकी वजह से ये टापू दूर से भले ही हरे भरे और मोहक नजर आवे, किंतु मनुष्यो के निवास के लिये पूर्वकाल ही से सर्वथा प्रतिकूल साबित हुअे। जो

कुछ अंग्रेज साहसी अुपनिवेश स्थापना का प्रयत्न करते रहे अुन्हे भी बिलकुल अठारहवी सदी के साधनो से भी वहाँ पर अपना पैर जमाये रखना असभव होगया। दो बार स्थापित किये हुअे अुनके अुपनिवेशो को तत्रस्थ लक्षावधि विषैले जीव जतुओने और दलदल के रोगाणुओ ने कत्ल कर डाला। अेक अेक आदमी रोगो ने खा डाला, अुपनिवेश अुठ गये।

अिस अडमान बेट (टापू) मे जो परकीय लोग, अपघात के कारण जलयानो के तूफानो में फँस जाने की वजह से या अुपनिवेश स्थापित करने की भावनासे आते थे, अुनके अूपर जावरा प्रभृति तत्रवर्ती आरण्यक मनुष्य विषैले तीरो की मार करके, पकड कर फाड डालते थे, यह तो सत्य ही है, पर तादृश तत्रत्य मानवीय प्रतिकार मे अिस टापूका 'स्वातत्र्य' अनादि काल से अीसा की सतरहवी सदी तक जो अबाधित रहा, वह कदापि न रहा होता। अिस टापूका स्वातत्र्य जो अिस तरह अबाधित रहा, वह तत्रस्थ अुन सर्प, जोक और अुस दलदल की असख्य जहरीली मक्खियो, मच्छरो और रोगाणुओ सदृश कट्टर देशभक्तो की, लक्षावधि सूक्ष्म सैनिकोकी 'स्वातत्र्य भक्ति' ही से। परकीयो की चढाअियो के अिन्ही रोगाणुओ ने परखचे अुडादिये।

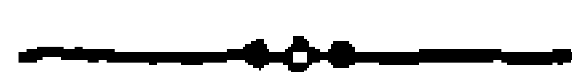
तत्रस्थ अीदृश सघन जगलो में जावराओ की अपेक्षा जोको की सेनाओ का पराक्रमही बढाचढा है। आज भी जगलो को काटने के लिये जब कैदियो की टोली वहाँ जाती है, तब अुन्हे ये जोके रक्तबबाळ (खूनमें लथपथ), करके पीछे हटा देती है। वृक्षो पर अुन जोको की तहे चिपटी होती है नीचे जमा हुअी पत्र-पर्णों की तहो पर तहे, सचित दलदल म अुन जोको के लक्षावधि देशभक्त सैनिक छिपकर बैठे होते है। मनुष्य अदर घुसे अुनकी बू आअी कि, वृक्षो पर से वे जोके पटापट अुनके शरीर पर सिरपर कूदने लगती है, पैर के नीचे से भराभर जाँघोतक चढ जाती है। हाथो से पकड कर अुन्हे निकाल फेंके तो भी अुनपर बस नही चलता। दश ही दश। अुन्ही मे जहरीले मच्छर, कँटीली झाडियाँ, और भयानक साप-सुरलियाँ। अेक, अेक फूट लबी! सौ सौ पैरोवाली घनी तहो की तहे। अुन्हे 'कान खजूरे' कहते है, अुनके कँटी —। दश अितना विषैला कि शरीर भयकर सूजता है आग सनस्वी (बहुत ज्यादह), कभी कभी तो वह अग लूला ही पड जाता है, क्वचित् प्राणघात भी होता है। अुस प्रमाण मे साप वहाँ थोडे होते है—

पर अेक अैसी जाति के साप वहाँ होते है, जिनके डसते ही आदमी खत्म ! त्रिच्छू पहले नही थे अैसा कहते है, पर आजकल वे भी नजर आने लगे है। अैसे अुन जगलो मे कैदियो मे के कटको के कटक और क्रूर से क्रूर कैदी भी, जब टोलियो की टोलियाँ बलपूर्वक धकेलते हुअे, जगल काटने के लिये ले जाअी जाती है, तब चल् चल् काप अुठते है ! मारते हुअे पीटते हुअे ले जाये गये अैसे सौ आदमी दिन भर अुस भयकर अरण्य में वह सख्त मशक्कत करके शामको जब लौटते है, तब किन्ही किन्ही के शरीरपर चिपटी हुअी जोको के सूक्ष्म दशो मे से बारीक धाराअे बहती रहती हैं, पैरो में काटे, शरीरपर मच्छरो के दशो की सूज, दलदली कीचड से लथपथ, अुन कैदियो की टोलियाँ बिलकुल रुआँसे को आअी हुअी होती हैं, अिसमे अचरज की कौन बात ? तिसपर अुस जगल में मधुमक्खियो और भूडो का राज्य आजतक अबाधित ! अुसमें यदि कोअी मनुष्य अिस तरह अुपद्रव पैदा करे तो वे मधुमक्खियाँ और वे भूड अुन परकीय शत्रुओ पर टूटकर अपने अिस स्वदेशके और स्वराज्य के सरक्षणार्थ अुन देशभक्त जोको, कानखजूरो और रोगाणुओ द्वारा चलाये गये 'स्वातत्र्ययुद्ध'में भाग लिये बगैर छोडते नही !!

अैसी भी परिस्थितियो मे टक्कर देकर, अिन जावराओ, जोको और रोगाणुओ के प्रतिकार का मुकाबिला करके, मलेरिया प्रभृति रोगो ने दो मर्तबा अुपनिवेशो के अुपनिवेश खत्म कर डाले तो भी प्रयत्न करके आज अग्रेजोने अुस अदमान बेट मे अतत अेक चिरस्थायी और बढता जानेवाला अुपनिवेश स्थापित करने मे यशस्विता प्राप्त की है। अुमी को ' काला पानी ' कहते है।

आजन्म कैदियो की वह 'महाराजा' नामकी अग्निबोट अुसी अदमान पर आकर लगते ही जिसके तिसके हृदय में धडकी बैठने लगती है,

" आया ! काला पानी आया ! "



काला पानी आतेही अगिननौकामे मे कैदियो को पैरो में ठाकी हुअी बेडियो के साथ जो अुतारते है, वह सीघा अुस बेट (टापू) पर समुद्र में अुतार के नजदीक ही बाघे गअे टोलेवाज (बडे), विस्तीर्ण, और मुख्य कारागृह की तरफ सशस्त्र पुलिस वालो के पहरे मे ले जाते है।

अिसी कारागृह का कक्ष–कारागार (Cellular Jail) अैसा नाम है। अुस 'सेल्युलरजेल' नामका, कैदियो की बोली में 'सिल्वर जेल!' (रुपहरा कैदखाना) अैसा मोहक रूपातर हुआ है! अर्धशिक्षित कैदी, जो अिन जन्म कैदियो मे रहते है, अुन्हे "सिल्वर जेलमें ले जाओ" ये पुलिसवालो के मुह से निकले हुअे शब्द सुनते ही बडा अचरज होता है! रुपहरे कैदखाने में जाना है? कुछ देवालयो के खभो और कलशो पर रुपहरे-पत्रे जैसे मढे हुअे होते है, अुसी तरह चादी से जिसका कमसे कम दर्शनी भाग तो मढा हुआ है, अैसे अेकाघ विलक्षण अेव भव्य कारागृह का दृश्य अुनकी आखो के सामने वह "सिल्वर जेल" नाम सुनते ही अकस्मात् खडा हो जात है! काले पानी मे सभी कुछ विचित्र! कौन कहे कि जिस तरह पानी काला नही अुसी तरह तत्रस्थ कारागृह भी रुपहरा नही!!

कम अज कम 'सिल्वर जेल!' यह नाम कैदियो और पुलिसवालो के मुँहसे वार वार सुन कर कटक को तो आकर्षक प्रतीत हुआ। असल म, भयकर और अटल पापियो को अुनके भीषण पापो का कठोर दड देने के लिये जिस वेट मे ले जाकर छोडते है, अुसका नाम जिस तरह शरीरपर काटा खडा करने योग्य 'कालापानी' अैसा रखाहुआ है, अुसी तरह कारागार का नाम भी 'नरक भूगृह' किवा 'जुल्म घर' जिसे सुनकर दिल दहल जाय, होना चाहिये था, पर वह नाम तो कम अज कम कितना मोहक! 'सिल्वर जेल!' रुपहरा कैदखाना!!

सिर्फ नाम ही मोहक नही—वह देखो, यहाँ से वह भव्य बदीगृह दीख रहा है, वह देखो! वही वह सिल्वर जेल! था? वह? बिलकुल सिल्वर

(रुपहरा) नही तो भी कितना आकर्षक है वह भवन ? रेखाओद्वारा ठीकठीक अंकित, साफ सुथरा, कोरा, नया ताजा, लंबा, प्रशस्त, समानांतर, सुरेख खिडकियाँही खिडकियाँ, अेक मंजिल पर प्रमाणबद्ध तीन मंजिले, ठीक मध्य में अूँचा, बाँधा हुआ अेक टॉवर!! कटक को क्षणभर को लगा, मेरी मजाक तो ये पुलिसवाले नही कर रहे ? मुझे काले पानी पर का मुख्य बंदी भवन कह कर कोअी आरोग्य भवन तो दिखा नही रहे है न श्रीमान् लोगो के लिये बांधा हुआ ? यह सिल्वर जेल है या सैनिटोरियम ?

अंदर पैर डालने पर भी बंदीगृह कहते ही सादे भारतीय कैदखाने का भी जो अेक अुदास, भयानक, अँधेरा, आतंक प्रतीत हुआ करता है, वह यहाँ प्रतीत नही होता! प्रकाश और वायु भरपूर, रेखाओदार, और सुंदर, अेक जैसे कमरोवाली, तीन मंजिले, पाँच छह पक्ष, मध्यस्थित टॉवर के अतराफ दूरतक व्यवस्थित रूप से फैली हुअी अिमारते, बडे बडे आंगन बीचमें, वर्तुलाकार, चारो ओर सघन नारियल का जंगल!! अुस अंदमान के घने जंगलो मे कभी कभी मुलायम मुलायम तीस तीस फूट लंबे प्रचंड अजगर जैसे कुंडली मारे सोये हुअे नजर आते है, अुसी तरह वह कारागार भी अेक अजगर ही हो मानो! अजगर ही की तरह कितना मोहक दीखने को!

अुसमें प्रत्येक कैदी के लिये स्वतंत्र तनहाअी, लोहे के सीखचो के दरवाजे बंद हैं जिस मे, अैसी रखी रहती है। अिस किस्म की वे सातसौ साढे सात सौ तनहाअियाँ ही है। कोठरियाँ अुसमें हैं, अिसी लिये अुसका Cellular Jail कक्ष कारागार यह यथार्थ नाम रक्खा हुआ था।

अुन हर अेक कोठरियो मे बाहर से देखनेवाले की आंखो को भरपूर प्रकाश दिखाअी देता था। पर अुस प्रकाश की खासियत यह थी कि, अुस कोठरी में पैर डालने के बाद सीखचो के दरवाजो को अेकबार बाहर से ताला ठोककर बंद कर दिया कि बस, आँखो को कितना भी चुँधियाने वाला प्रकाश क्यो न नजर आये, पर हृदयमे अेकदम अंधेरा फैल जाता है! दम घुटने लगता है! अुस प्रशस्त कोठरी की काल कोठरी बनजाती है!

वैसी अेक अेक कोठरीमे, काले पानी के कैदियो के अुस चलान कोभी अेक अेक कैदी को अलग करके, बंद कर दिया गया। तीन चार दिन अुन अलग अलग कोठरियो में अकेले अकेले कैदी को बंद रखके, अुनकी सजाके

विवरण पत्रो पर से सारी जानकारी का निरीक्षण किया जाकर अपराध अेव पूर्ववृत्त के अनुरोध से अुनकी अलग अलग श्रेणियाँ बनाअी गअी। जो लोग तात्कालिक अुत्क्षोभ मे आकर अपराध कर बैठे और पहली ही मर्तबा दडित हुअे है, अुन लोगो की सुधारणीय नाम की अेक श्रेणी बनाअी गअी। जो सधे हुअे अपराधी थे, अुनकी—दुस्सुधारणीयो की 'भयकर' नाम की दूसरी श्रेणी। अिस तरह अपराध शास्त्र (Criminology) के अनुसार दो श्रेणियां बनाअी गअी! कटक पहली श्रेणी म गया। अग्रेजी-हिंदी शिक्षित होने की वजह से महीने दो महीने मेंही लेख्यालयमे बदी लेखको की जो श्रेणी होती है, अुसमे थोडा बहुत लिखने का काम मिलकर कैदियो मे वह 'बाबू' के नाम से प्रसिद्ध होगा यह स्पष्ट होगया। परतु रफिअुद्दीन की सजाका वृत्तात 'भयकर' श्रेणीके अतर्भूत था। अुसपर पाच बरसोंतक अुस कारागारमें रखने का और सख्त पहरे में, जबतक व्यवहार ठीक नजर न आये तबतक, कडी मशक्कत करने का प्रतिबध डाला गया।

अदमान मे आजकल भयकर अेव सधे हुअे (Habitual) कैदी भेजे नही जाते है। तस्मात् तत्रस्थ कैदियो को बहुत सी सहूलियत आजकल मिलने लग गअी हैं। पर, तीस पैंतीस बरस पहले, भयकर और सधे हुअे, अटल दडिता कोही वहाँ भेजा जाता था, अिस कारण अनसे मशक्कत करवाने के लिये वैसेही कडे नियम, और अुनकी दुष्टता को जीर्ण करने के लिये वैसी ही कडी मशक्कत व्यवहार मे लायी जाती थी। अुसके बगैर किसी भी ढीली ढाली व्यवस्था से तादृश राक्षसी दडितो को सीधी राहपर लाना, और समाजके अर्थ हितकारक काम अुनसे कराना, कम अज कम समाज को अुनके स्वैर अस्तित्व मे पहुँचनेवाली बाधाका निवारण करना, लगभग असाध्यही ठहरता।

रफिअुद्दीन के सदृश अुलटे कलेज के दडित (Convicts) तादृश कडी व्यवस्था को भी धूल चटाकर कालेपानी पर से भी भाग जाते थे, देश को वापिस पहुँच जाते थे और समाज के अूपर अघोरी अत्याचार करते थे अैसा नजर आनेकी वजह से रफिअुद्दीन के भाग जाने के पश्चात् के मध्यवर्ती कालमें यह व्यवस्था और भी कठोर बनाअी गअी थी। अुन दुर्दमनीय बैरियो को भी मात देनेवाले, अुनके साथ अवसर पडनेपर अुनकी अपेक्षा भी अधिक

कठोरता से व्यवहार करनेवाले, चतुर अधिकारी अुस कक्ष—कारागारमे अिस बीच नियुक्त किये गये थे। रफिअुद्दीन को अबके जब पुन कालेपानी भेजागया, तब अुसका सात्रिका अैसेही अेक सवाअी दहम जेलर के साथ पडनेवाला था।

अपने पूर्व परिचय की व्यवस्था अेव अधिकारी बदले हुअे है, यह रफिअुद्दीन के ध्यान मे तभी आगया। और अिन नये अधिकारियो की आख मे भी धूल झोकने के लिये जहाँ, जो कुछ अनुकूल बैठे वहा वह सब, अर्थात् चुगलियाँ, मनोबल, पैर पडना, वाहियात बकझक, गाली गलौज, गुडापन अक्खड पना, हास्ययुक्त मुखपूजन, अित्यादि प्रकार के व्यवहारके साधनो का अवलबन अुसने आरभ कर दिया।

वह नया जेलर, भयकर और अधम अधम जितने भी नये कैदी आते, अुनके पूर्व वृत्तातो के सरकारी विवरणो पर से अुनके साथ किसप्रकार की नीति बरती जावे, यह सब मनमे स्थिर कर लिया करता था। और तब अुनकी प्रस्तुत कालिक मनोवृत्ति को जाचने के लिये अुनलोगो से अेक दो मर्तबा समवप मुलाकात लेता रहता था। जहाँ जरूरी हो वहाँ पहले अत्यत मुक्त भाव से बोलने का अभिनय करता था, सौम्यपना दिखलाता था, और पश्चात् स्क्रू को जितना चाहिये अुतना मजबूत कसता चला जाता था। अुस प्रकार, अुस नये चलान के कैदियोको भी अुसने जाच कर देखना धीरे धीरे शुरू किया। पाँच-छै दिनतक अुन्हे अकेली कोठरी मे सडाते हुअे रखने के बाद अेक बदीगृहके मुख्य जमादार को साथ में लेकर वह जेलर रफिअुद्दीनकी कोठरीमे भी अचानक आ पहुँचा।

जेलर साहब स्वत जिसकी तनहाअी (Solitary cell)के सामने बगैर बुलाये जाते है, अुस कैदी का महत्त्व अितर दुर्लक्षित कैदियो मे अेकदम बढ जाता है। अुन नगण्य सामान्यो मे वह अेक गण्य व्यक्ति है, अैसी अुस कैदी को भी अहकार की मात्रा का स्पर्श हो अुठताहै। वही अवस्था अुसकालमे रफिअुद्दीनकी भी हुअी। वह अितने सख्त पहरे मे, तनहाअी मे निरतर सडता हुआ पडा था कि, यदि अेक चिडिया भी अुस से बात करने के लिये आअी होती तो वह अपना भाग्य समझता—तब, अब तो खुद 'साब' अुसके पास स्वेच्छा से आया हुआ था और आतेही पूछने लगा था,

"क्यो रफिअुद्दीन! ठीक है न, तेरा! कोअी शिकायत विकायत?"

"सरकार! आपही मा-बाप है अब हमारे!" रफिअुद्दीन बिलकुल नम्रता का बुर्का डालकर गिडगिडाने लगा। "मुझे आपकी मर्जी होतो फांसी पर चढा दीजिये, पर अिस तनहाअी मे अिस तरह अकेले को बंद करके मत रखिये। अेक शब्द तक बोलने की चोरी! मै अिसी तरह अकेला अिस भयकर अेकात में और कुछदिन रहा तो पागल हो जाअूगा पागल!"

"अकेला रहने से तू अूबगया है?" जेलर हसा, "अितनाही है न, तेरे अिस तिलमिलाने का कारण? अच्छा, जमादार, अिसे अेक बीवी ला दो साथ रहने के लिये! हमारे अुस स्त्रियो के कैदखाने मे जितनी चाहियें अुतनी बीवियाँ है!"

जेलर मजाकिया है, यह देखतेही रफिअुद्दीन अेकदम पिघल अुठा, अुसमें भी बीवी की बात! अुसका चेहरा तत्काल रगीन हो अुठा और वह बोला,

"साब, अुसे स्त्रियो का बदीखाना क्यो कहते है आप? बहुतेरे कैदी तो अुसे बीबीघर कहते हैं, और हमारे म जो सच्चे रसिक है, वे तो अुसे कहते हैं "चिडिया खाना"! पर साब, अुस चिडियाखाने की चिडियाको आप हम जैसो के हिस्से में भला कहा से आने देने लगे? वह सामने बैठा है न, रस्सी कूटता हुआ, वह काला कुरूप कोयला! वैसे पहाडी कौओ का ही आप देंगे वे चिडियाँ! साब, सचमुच यह कैसा है भला, पक्षपात सरकार का? वह पहाडी कौआ—वह कटक—मेराही चलानी है, वह भी गलेकाटू, दडित, आजन्म काले पानी का अपराधी! मैं भी वैसाही हूँ। पर मुझे पाच बरसतक अिस कैदखाने मे—अिस अकेली कोठडी मे सडते हुअे पडे रहने की सजा, और अुसे तत्काल कोठडी से बाहर निकाल कर रस्सी कूटनेका हलका काम दे दिया और कह दिया कि तुझे शीघ्रही वदिलेखक के कामपर नियुक्त करेंगे! अुसे लिखना-पढना आता है तो मुझे भी तो कुछ आता है न साब? अिस बाबूको लिखना आता है तो हमें भी लडना आता है! पलटन मे था मे सरकार! मर्द हू मैं साब!—पर हमें 'भयकर' कहकर अिस काले पानी में तनहाअी मे सडने के लिये डाल देते है, और बाबूओ को, अिन पहाडी कौओ को, अिन मेषपाओ को "सुधारणीय' कहकर चुनकर अुन्हे शादी की

अनुमति दे देते हैं ! और अुस चिडिया घर की किसी भी चिडिया को पालने के लिये ले जाकर दे देते है ! यह बिलकुल अन्याय का नियम नही है क्या ! साव ! हम सिपाही लोग, दरवाजेपर के शिकारी कुत्ते ! प्राण-सकट में भी जो पोसेगा अुसके लिये जान देने में न हिचकनेवाले ! अैसो को कोठडी में सडा कर मारनेकी अपेक्षा सरकार मुझे किसीभी लडाअी पर भेज दे, शत्रुओ की तोपो के मुखपर बाध देवे ! सरकार के काम में मै अपना सिर देने के लिये कभी हिचकिचाअूंगा नही देखलीजिये ! "

"अरे वाह ! विलकुल ठीक मौके पर बतलाया तूने देख, यह ! सरकार को अेक सिर चाहिये ही था अिस वक्त ! वे जरर्रेवाले है न ? अिस-कालेपानी के घने जगल मे रहनेवाले राक्षस ? आदमियो के सिर के अदर की खोपडी को निकालकर वे अुसे तराशकर, घिसकर, अुसमें रगीन सीपियो को बिठाकर अैसा अेक सुरेख शरावका प्याला तय्यार करके देते है, सुनाहै कि यव् ! वैसा अेक प्याला लडन के प्रदर्शन में रखना है सरकार को ! अुन जरर्रे वालो की ओर देता हू भेज तुझे ! तेरा सिर अच्छा है, अुन लोगो को जैसी चाहिये वैसी खोपडी मुहय्या करने के लिये ! " साव जोर से हँसे !

"मेरा सिर ? अेह ! अुस सामने के पहाडी कौअे का—अुस कटक का सिर ही अुस कामके लिये ज्यादह अुपयोगी साबित होगा । सिरके काम में बाबू लोगही अधिक अुपयुक्त होते है !—लचकीला सिर होता है वह, तराशने और घिसने के लिये, वैसे जडाअू काम के लिये ! "

"पर वह अुस कटक का सिर ब्राह्मण का है—है न जमादार ! ब्राह्मण की खोपडी सुनते हैं, भरी हुअी होती है, मगज भरा होता है अुसमें ! हमे खोखली खोपडी चाहिये तेरी जैसी ! हमे पुलिसवालो ने बतलाया है कि, अुस कटक का खानदान बडा है ! कुलशीलयुक्त और बुद्धिमान् समझा जाता है और अुसका बाप सुनते हैं बडा भारी शास्त्री था ! "

" हा ना, केवल शास्त्री ही नही, अिस कटक का बाप बडा दानी और परोपकारी भी था साव ! अुसके बापने अपने पास की अपरपार सम्पत्ति अतमें अेक अनाथालय को धर्मार्थ दे डाली थी ! "

"ह ? अैसी कितनी सपत्ति थी अुसके पास ? " आश्चर्य से जमादार बीचमे ही पूछ बैठा ।

"तीन मरे मुर्दे लडके और अेक लडकी ! ! " रफिअुद्दीन हसा ! भोले जमादार की फजीहत होगअी बेचारे की । रफीअुद्दीन आगे कहने लगा– "वे सारे लडके अुसने अनाथालय को दे डाले ! अुन भुक्खड लडको का वडा भाअी यह कटक है–यहा बाबू बनना चाहता है ! और वह बहिन कलकत्ते के मछली बाजार की बीबी बनके पान-पट्टी की दुकान चलाती है साब ! मैंने खुद अुसको देखी है, पान भी चबाया है अुसके दुकान का ! किधर का कुल और किधर का शील ! पोलिस को अिसने जो गपोड बाते बताअी वे अुन्होने भी लिख मारी और क्या, अैसे भुक्खड आदमी को आप बाबू बनाते और हमारे सरीखे सरकारके विश्वासू पल्टनवाले मर्द सिपाहीओ को कुत्ते के मोतसे मरवाते है अिस कोठडीओ मे ! "

"परतु तुम काले पानी मे पीछे भागा हुआ बदीवान है ! यह भूलो मत ! "

"सरकार ! मेरा अक्षम्य अपराध है वह ! पर पश्चात्ताप मे मेरा मन राख होगया है पहले ही ! अुस दुष्कृत्य मे मैने क्या कमाया ? पहले से भी सौ गुनी अधिक यातनाओ मे मात्र आ गिरा पुन अिसी कोठडीमे बेडियो से जकडे हुअे हाथो पैरोवाले बदियो मे आकर ! अब अगर आपने मुझे बकेल भी दिया तो भी कालेपानी पर से वापिस जाअूंगा नही मै ! जो काम देंगे सो करूगा । जब आप कहेंगे तब यही अपना घर दार बनाअूगा ! पर शादी मात्र आप मेरी करवादे अ । यही अब मेरी मिट्टी पडेगी ! तथापि अिस अकेली कोठडी मे मुझे आप बाहर निकाले यही मेरी आप से विनति है । "

"अच्छा, जमादार, कलसे अिस को तेल के कोल्हू का काम दो ! अगर तू ठीक ढग से पूरा पूरा काम करता रहा, तो छह महीनो के बाद तुझे हलका काम दूगा । पर देख, अपनी यह वाहियात बकवास करने की बदतमीजी अब तुझे छोड देनी होगी ! किसी के साथ अबनाका अेक अक्षर शब्द भी नही बोलना । और ध्यान मे रख, अगर फिर कैदखाने का नियम तने तोडा, मस्ती की, तो अेक अेक हड्डी तोडकर निकालूगा ! भाग कर जाने की कोशिश करनेवाले दडित को अेकदम गोली से अुडा डालने का नया अधिकार

इमे अब दिया गया है। पहले की सरकारी ढिलाभी के भरोसे पर पहले के फदे में पडने की कोशिश न करना। तेरा साबिका अब मुझसे है। तेरे पहले के भयकर अपराधो को अब मैं भूलता हूं, पर समाज को आगे से अपद्रव न पहुँचाते हुअे कष्ट करके पेट भरेगा तो। जमादार, अिसे अिस अकेली कोठडी मे से निकाल कर भेजो कोल्हूपर और वहाँ कैदियो मे हिलने मिलने देते जाओ दिनभर। रात को बद करते जाओ यही।"

अुस कक्ष-कारागृह मे प्रत्येक चाल (बैरक) के आगनमे अेक छपरी बाधी हुअी थी। अुसी में वह पैरकोल्हू का काम चला करता था। अेक बडे लकडी के कोल्हू से अेक जूअे जैसा बडा लकडी का डडा जोडकर प्रत्येक जूअे मे दो आदमियो को जोता करते थे। कोल्हू मे सरसो डालकर अुसमे से हरेक को शामतक ३० पौंड तेल निकालना पडता था। बैलो की जगह जोते गये वे आदमी अुस कोल्हू के अतराफ गरगर फिरते थे। अुनमे से अगर किसी ने कमी बेशी की तो अुन्हे बैलो की तरह हाँकने के लिये वॉर्डर नियुक्त किये रहते थे। अुस छपरी मे अैसे कोल्हुओ की कतारकी कतार मौजूद थी और अुन सब पर निगरानी रखने के लिये अेक ताडेल–दडितो मे से ही चढाया हुआ अेक दुय्यम जमादार–नियुक्त किया हुआ था। अिस कामके कष्ट अितने अधिक रहते थे, कि पक्के दडितभी अुस छपरीमे पैर रखतेही रुआँसे को आजाते थे। अुनम से कुछ अकडबाज बदमाश बहुत ही टालमटोल करने लगे तो शामको तेल पूरा निकालने तक अुन्हे अुसी तरह जोत कर रखा जाता था और वह भी कभी कभी तो रातके सात आठ बजे तक। साझका खाना भी रात को तेल पूरा करनेतक दिया नही जाता था। अैसी सख्ती थी, अिसी लिये वे पक्के डाकू, हत्यारे, गुडे वगैरे मधे हुअे दडित थोडे बहुत नियत्रणमे रहते थे, अुनके हाथो से कुछ काम करवा लेना सभव हो पाता था। जो लोग दुर्बल अथवा बदीगृहमे तो जो सद्‌वर्तनपूर्वक रहने लगते थे अुन्हे अुस कष्टके काम मे सहसा जोतने नही थे। कमअजकम जोता न जाय अैसा रघात (प्रथा) तो था ही।

अिस कोल्हू के काम का रफिअुद्दीन को पहले ही से परिचय था और अिसलिये, वह काम न करके भी किसतरह पूरा किया जा सकता है, ये अतस्थ खूबियाँ अुसे मालूम थी। तिसपर वह कोल्हू ही नही, बल्कि अिस बदन

अुसपर देखरेख करने के लिये नियुक्त वह दडितो में से ही अेक दुय्यम अधिकारी (Convict petty officer), वह ताडेल, वहभी रफिअुद्दीन के पहले के कालेपानी के वास्तव्यकाल का परिचित निकल आया। तस्मात्, जेलर ने जो कडी मे कडी मशक्कत समझकर अुसको दी थी, वही वह कोल्हू अुसको सुगम से सुगम काम लगा। पहलेही दिन ताडेल के हाथमे अेक 'हरिद्राखड' रफिअुद्दीन ने हाथ हिलाते समय चुपचाप पकडा दिया। तत्काल अुनकी पुरानी दोस्ती ताजी हो गअी और रफीअुद्दीन दिन भर पालथी मारकर गप गप लडाते हुअे पडा रहने लगा। अुसकी जगह ताडेल ने अेक थप्पडखाअू दडितको चोरीसे कामपर लगाया। शाम होने के अदर अदर रफिअुद्दीनके हिस्सेका तेल पूरी तरह से मापकर दिया जाने लगा। अिस तरह चार पाच दिन बीत गये।

अिस दडित ताडेल के हाथ के नीचे जो दडित वॉर्डर थे, अुनमेंसे जोसेफ अुसके बहुत अधिक भरोसे का हो गया था। क्योकि ताडेल को वह बडे बडे लोटे दही के भर भरकर चुराकर ला दिया करता था। कैदियो को अठवाडे (हफ्ते) मे दो दफा दही मिला करता था। वह बँट चुकनेके बाद अिस बैरक के कैदियो के आगे से सारा दही यह जोसेफ वॉर्डर डरा धमका कर निकाल कर लेजाया करता था और वह ताडेल को दे दिया करता था। और वह अुस छपरी की आडमें बैठकर गटक जाया करता था। अिस जोसेफको जेवर और पैसे हजम करने के अिरादे से अपनी दोनो छोटी छोटी सालियो को भुलावे मेंलाकर खाने के लिये घरपर लाकर अन्न में विष देकर मार डालने के घोर अपराध मे आजन्म काले पानी की सजा हुअी थी। दस बरस हो चुके थे। अिस किस्म की अुस ताडेल की और अुस जोसेफ वॉर्डरकी जोडी थी। अुस बैरक के कोल्हुओ में जोते हुअे चालीस पचास कैदियो को ठोंचते रहने का काम तथा जिसभी अुपायसे हो सके तेल पूरा पिसवा लेने की जबाबदारी इस जोडी पर थी। जो लोग पैसे चटाते थे या अत्यत दडस होकर भी ताडेल के दास थे अुन्हे साफ तौर से बिठाये रक्खा जाता था और अुन लोगो का काम-अुनमें से जो सद्वर्तनी सौम्यस्वभाव, सहनशील होते थे अुनकी ओर से मरते दम तक मशक्कत करा कर पूरा करवाया जाता था।

ताडेल के सारे छद्मकर्मों में हस्तभार लगाते रहने की वजह से जोसेफ पर अुसका विश्वास बैठ गया था, अत वह जोसेफ से कुछभी छिपाकर रखता नही था और रखना आसानभी तो नही था। रफिअुद्दीनने जोसेफ को भी जरूरत के मुताबिक तमाखू और मौका पडने पर राअीके बराबर अफीमकी गोली भी देकर आत्मीय सा बना लिया था। परतु ताडेल को कितना भी प्रसन्न करे, वह अपने को वॉर्डर से अूपर की पदवृद्धि प्रदान कर के अपनाताडेल-पद नही दे सकता—वह सिद्ध करने के लिये जेलर की ही कृपा प्राप्त करनी होगी यह जोसेफ भूला नही था। अिस लिये जेलर की कृपा प्राप्त करने का यत्न जेसेफ निरतर कर रहा था। और अुसका साधन कैदखानो में बढती का जो बहुधा अेक ही 'तुरतदान महा कल्याण' देनेवाला साधन हुआ करता है, वह—चुगली! अिसके लिये, अपन छद्मी वर्तन का बहुत कुछ सबध जिसमे न आये, अपना नुकसान जिसमें बहुत कुछ न हो, अैसी अुसको कोल्हू की छपरी मे के अुस ताडेल के अनेक दुष्कृत्यो की चुगलियाँ यह जोसेफ किसी को भी पता न चले अिस सफाअी से मौका साधकर जेलर को चुपचाप कह आया करता था! 'शठं शाठ्य समाचरेत्' के न्याय से शठो के राज्य में व्यवस्था रखना आवश्यक होने के कारण जेलर साहब भी अैसे गुप्तचरो को हमेशा अपने हाथो में रखा करते थे। अुनके द्वारा लाअी गअी चुगलियो में से अनेक दुष्कृत्यो को अपरिहार्य समझकर हजम कर जाते थे। जो बिलकुलही अक्षम्य अपराध होते थे, अुन्ही को वे स्वय जाकर अचानक पकडते थे, पर अिस सफाअी के साथ कि जोसेफसरीखे चतुर गुप्तचरने ही वह चुगली की है, यह कैदियो के ध्यानमें सहसा न आवे, ये लोग गुप्तचर है, यह बाहर न फूटे। नहीं तो अुन के समक्ष अुनपर विश्वास करके कोअी भी किसी किस्मका दुष्कृत्य नही करेगा।

आठ दिनके बाद दो पहर को बारह बजे, लेख्यालयके सारे लेखक, गणक, घर गये हुअे थे, अुस समय जेलर असमयमें अकेलाही लेख्यालयमें आया। 'सिपाही' कहकर पुकारते ही अेक पहरेपर का सिपाही अदर आया। "जोसेफ वार्डर को बुलाव!" अैसी जेलरकी आज्ञा होतेही सिपाही वर्दी-

गृहमें गया और जोसेफ को बुला कर जेलर के पास भिजवा दिया तथा स्वय पहरेपर बाहर आकर खडा होगया।

"क्यो जोसेफ?" जेलर पूछने लगा, "कोल्हू का तेरी चाल की छपरी के अदर कैसा क्या चल रहा है काम? वह नया दडित रफिअुद्दीन कोल्हूका अपने हिस्सेका तेल पूरापूरा पीस कर दे देता है क्या? अुसका किसीके साथ कुछ सूत-अूत जमता है क्या?"

"साव, अुसका तेल वह पूरा पूरा माप कर देता है—"

"ह? पहले दिन से पूरा काम करता है वैसा निठल्ला दडित भी? सच बोल, हिचकिचा मत!"

"साव! तेल पूरा पूरा मापकर देता है वह, पर वह सब वह स्वत नही पीसता। आपकी सवेरे के वक्तकी जेलमे फेरी लगाने के वक्ततक वह जैसे तैसे कोल्हू खीचता है, पर अुसके बाद वह बैठा रहता है, और अुसका काम कोअी दूसरा दिनभर कोल्हू चला कर पूरा कर देता है। ताडेल ही अुसके बदले आदमी लगाता है।"

"क्या?" जेलर सन्तप्त हो अुठा, "तूने यह बात मुझे अबतक न बताते हुअे दबाकर रक्खी थी? तब मैंने तुझे यह सब देखने के लिये काहेको रक्खा है?"

"माफ कीजिये साव! पर अिससे पहले, अन्य कुछ दडितो को अिसी तरह बिठाये रखकर और बदले में आदमी लगाकर तांडेल काम करवा लेता है, अिस बात की सूचना गुपचुप तौरपर मैंने आपको दी थी, अुस समय आपने अुसे नजरअन्दाज कर दिया था, अिसी लिये अिस मर्तबा वही बात बताने के लिये मैं डर गया।"

"किस बात को नजरअदाज करना है, और किस बात को नहीं वह सवाल मेरा है। वास्तवमें जो दुर्बल या सुधारणीय है, अुन्हें अनुशासन में थोडी ढील दे भी दी तो भी कुछ बिगडता नही। काम पूरा होगया तो बस। पर यह रफिअुद्दीन अनेक अधमाधम अपराधो का अपराधी, तिसपर काले पानी से भागकर गया हुआ, अुसके साथ किसी का भी सूत जमना ठीक नहीं। बता, ताडेल अुसे क्यो बिठाकर रखता है? वह क्या रफीअुद्दीन से दबता है?"

"सरकार, वह बात मुझे अभी पक्की तरह से मालूम नही है। नही तो वह गुप्त समाचार मैंने आपको पहले ही दे दिया होता। पर हो न हो रफिअुद्दीन ने तांडेल को पैसा चटाया होगा!"

"पैसा? रफिअुद्दीन के पास? अुसकी तलाशी साझ-सवेरे कसकर स्वत जमादार लेता है न? मेरा सख्त हुक्म है वैसा!"

"तलाशी कसकर लेता है जमादार! पर रफिअुद्दीन के पास पैसे है अवश्य, कही न कही छिपाये हुअे। अन्यथा स्वत के पैसो से तांडेल अुसके लिये तमाखू और अफीम चोरी छिपे काहे को मँगाता!"

"हा, अुसीमें से कुछ तमाखू और अफीम तुझे भी वे लोग चटाते होगे, तभी तूने अुसकी चुगली मेरे से नही की!"

"देव की शपथ साब! मैंने छुआ नही तमाखूकी चुटकी को भी अुनकी। पर तांडेल को वह पैसा देता है, अिसका पक्का सबूत मिले बगैरे अगर मैं आपको सूचना देता तो आपही मुझे खोटा ठहराते—अिस लिये मैंने अुस पर सिर्फ अपनी आख गडा रक्खी थी। तांडेल के पेट में घुसकर मै अुस बात का शीघ्र पूरा पता चलाअूगा साब! बहुधा कलही अुनका कुछ लेन देन होने वाला है फिर, अैसी भाषा मैंने छपरी की आड में से सुनी है। साब, पर मुझे तांडेल का डर लगता है, मैं सिर्फ वार्डर हू! यदि मुझे आप, धनी-साहब, तांडेल कर देंगे न—"

"तो तू अुस तांडेल से भी बढकर पैसेखाअू और दुर्जन निकलेगा! अच्छी बात है तू प्रमाणसहित रफिअुद्दीन से पैसे लेते हुअे अुस तांडेल को पकडवा दे, किंवा रफिअुद्दीन पैसे कहाँ रखता है, अिस बातही का पता चला दे, तब देखूगा तेरी बढती की बात क्या है सो! जा, लग अपने काममे। पर ठहर, तुझे मैंने अकेले को बुला भेजा है, यह जान कर अिन कैदियो को तेरे बारे में शुबह पैदा हो जायगा, गुप्तचर है अिस बात का! अितनी बातके लिये मै तुझे यह खुल्लम खुल्ला काम देता हूँ सो लेजा। तांडेल से कह कि, तीन चढाकर रवाना करने के अभी के अभी भरकर रखदे, मद्रास की नावपर चढाकर रवाना करने के हैं अेकदम! यह ले चिठ्ठी! ह, जा! अितनेही के वास्ते बुलाया था अैसा जाकर बोल!"

प्राय कैदखानो मे, दुपहरिया में वारह से दो वजेतक का समय सबसे बढकर ढिलाअी का रहता है। अूपरके सारे अुत्तरदायी अधिकारी अपने अपने घर गये होते हैं। अुस वजह से सिपाही क्या, और जेलके अधिकारी (Convict officer) क्या, अनुशासन की गाठ खोलकर पैर खुले छोड पसार कर वैठे रहते है। सर्वथा अपरिहार्य स्वरूप की व्यवस्था और कामही चलते रहते हैं।

अिस समय हमेशाकी तरह जेलर अपने अुस कवप–कारागार के महाद्वारपर विद्यमान वगले की खिडकी में खडा था। अुतने ही में जोसेफ वार्डर नीचे से अुसकी तरफ आता हुआ अुसे नजर आया। अुमे जेलरने अूपरही से वगलेपर चले आने की अनुज्ञा दी। जोसेफ को पहरेपर के सिपाहीने वगले में जाने दिया।

जाते ही जोसेफने वदगी करके कहा—"साव! अभी के अभी अगर आप चले तो प्रमाण सहित ताडेल को पकडना सभव हो सकेगा। रफिअुद्दीन ने सोनेकी अेक गिनी ताडेल को दी है। वह अपने कुडते की नीचे की पट्टी मे विद्यमान गुप्त जेवमे डाल कर ताडेल ने सीकर रक्खी है। रफिअुद्दीन के पास और दो गिनियाँ तो अुसके शरीरपर ही हैं। तमाखू और अफीम ताडेल ने अुसे लाकर दी है, वह भी सरसो के थैलेमे अिस वक्त के लिये ठूसकर रखकर वे दोनो छपरी के पीछे के हिस्से में आड लेकर निश्चिंत रूप से अूघते हुअे पडे हैं। मैं कपडे धोने के वहाने से वैरकमें से वाहर आया हू! जब देखा कि कहीं कोअी नही है, तो आपकी तरफ चला आया। पर मालिक! मेरा नाम मात्र मत वताअियेगा। नही तो मेरा सिर ही फोड डालेंगे अुनमें से कुछ कैदी मुझे पकडकर कहीं न कहीं! पर आप मात्र जल्दी जाअिये!"

"ठीक जा तू। ये सारे पकडे गये तो तुझे वढती मिलेगी! तू अपने काम पर अुस छपरी मे जाकर वैठ जा चुपचाप!"

जोसेफ के जाने के वाद जेलर ने जमादार को अपने साथ ले लिया और हमेशा का नीचे का रास्ता छोडकर अूपर के टॉवर की तीसरे मजिल के घेरे में आकर और सारी वैरकों के दरवाजे जो अुस टॉवर में गोल रूप में लगे

हुअे थे, अुनमें से रफिअुद्दीन के रहने की बैरक का वह तीसरी मजिल का दरवाजा अेक के वाद दूसरा खोलता हुआ वह जेलर अचानक अुस छपरिया के आगन मे नीचे जा अुतरा। किसी के देखने न देखने से पहलेही वह अुसके पीछे की आडमें चला आया, जोसेफ के कथनानुसार रफिअुद्दीन और ताडेल दोनो अूघते पडे हुअे हैं, और रफिअुद्दीन के कोल्हूमें अेक दूसराही बेचारा कैदी–जिसे ताडेल ने डरा धमकाकर लगाया था वह– पैरका कोल्हू फांसे को आया हुआ, पसीना पसीना होकर फिरा रहा है, अैसा दिखाअी दिया।

"ताडेल!" जेलर गरजा।

तड् से दचक (घबरा) कर ताडेल अुठा, पैर लटपटा गये, मुह रोना सा हो गया, हाथ जोडकर खडा हुआ।

"तेरे पास कोअी नियम विरुद्ध वस्तु है?–नही? अुस कुडते में क्या सी रक्खा है?– कुछ नही? जमादार, लो अिसकी तलाशी। अुस कुड़ते की वह नीचे की पट्टी फाडो!"

जेलर अुस जमादार के साथ यह बोलही रहा था कि अुतने में रफिअुद्दीन अुलटे पैरो निकल कर अपने कोल्हू की तरफ जाने लगा।

"ठैरो! अै वदीवान! रफिअुद्दीन! ठैरो! पकडो अुसको!"

दो तीन वार्डरो ने, जेलर की आवाज सुनी अन सुनी सी करके अुसी तरह निकल कर छपरी में जाने की कोशिश करनेवाले रफिअुद्दीन को रोका। वह खडा रहा, पर डरके मारे भीगी बिल्ली की तरह नही, वल्कि अेक आध सरकस में के विगडे हुअे बाघ की तरह–अुसकी सारी हिंस्रवृत्ति शरीर में अुफन आअी थी–आँखे दिखाते हुअे, अकडके साथ अुन रोकनेवाले वॉर्डरो कि हाथो को वीच वीच में झटका देता हुआ।

जमादार ने ताडेल का कुडता निकाल कर पट्टी फाड़ी, अेकदम खलूसे अेक सोने की गिनी नीचे गिरपडी।

"अिस रफिअुद्दीन की भी तलाशी लो!" जेलरने हुक्म दिया। जमादार सामने आया। जेलरकी आड मे थोडासा जमादार आतेही, रफि-

अुद्दीनने अपनी पेटगोली में (कमर के पास के कसे हुअे कपडे की लपेट में) खोसी हुअी कोअी चीज कमर के पीछे हाथ लेजाकर चालाकी से निकाल ली। यह देखते ही जमादार चिल्लाया,

"साव ! साव ! अिसने पेटगोली के पैसे हाथमें लिये है, गिनियाँ है साव, अिस्के हाथमें ! अिस, अिस हाथमे ! पकडिये, यह हाथ, यह !"

जमादार और वॉर्डर हाथ के साथ झगडही रहे थे कि, अुसी वीच, रफिअुद्दीन ने अेक गिरकी (चकफेरी) मारकर जेलर की तरफ पीठ होते ही हाथमे की वह चीज मुहमे डाल ली !

"मुहमे डाल ली गिनियाँ अिसने ! हा, हा, मालिक, विलकुल गिनियाँ ही ! मैंने देखी ! अव अिसके मुँहमे है !" जमादार और वॉर्डर प्रतिज्ञा-पूर्वक चिल्लाये।

जेलर चिल्लाया, "मुँह खोल ! रफिअुद्दीन, खोल, मुँह खोल !"

अेक दो दफा जमादार के हाथ को झटका मारकर गर्दन नीचे अूपर करने के वाद रफिअुद्दीन स्पष्ट शव्दो मे ठमक कर वोला,

"क्या निष्कारण जुल्म यह साहव, हम वेचारो पर ढाये जारहे है आप अिन झूठे नीच आदमियो की चुगलियाँ सुनकर ! यह देखिये, मुँह खोलता हूँ ! हूँ क्या कुछ अदर ? वोलना भी सभव था क्या मेरे लिये यदि मुँहमें सोनेकी खान होती तो !"

मुँह खोलकर रफिअुद्दीन जमादार को पागल वनाने लगा, जेलर के सामने मुँह खोलकर दिखाने लगा। "जीभ अूपर अुठा, पीछे मोड, यह जवडा ठीकसे खोल, वह खोल !" जेलरने जैसा कहा, वैसा रफिअुद्दीनने किया। पर मुँहमे कुछ न निकला !

"क्यो, जमादार, किधर है अिसके मूँहमे गिनिआँ ?" जेलरने पूछा।

शरमाया हुआसा जमादार थोडा हिचकिचाता हुआ, पर फिर वही कहने लगा,

"कुछ भी कहिये, साव ! अिसके मुह में कुछ न कुछ था जरुर !"

"कुछ न कुछ तो मेरे मुँहमें थाही, हैभी—पर वह 'कुछ' था मेरे सोने की तीलियाँ जडे हुअे दात ! वे चमकने वक्त तुम सरीखे मुक्खड को

सोने की तरह मालूम पडे होगे, और आज नही तो कल रे दुष्ट, तेरी नरडी (गलेकी नली) को वेही फोडे बगैर नही रहेगे ! "

रफिअुद्दीन निष्प्रतिरुद्ध अवस्थामें जमादार को गालियाँ देने लगा ! यह दुर्जन बिगड अुठा है, अैसा देखतेही जेलर गरजा,

"बेडियाँ ठोको अभी की अभी अिसके हाथो में ! और पकड कर रक्खो अुसे यहाँ ! गर्दन की हिसडफिसड कर रहा था; सभव है, निगल लिया हो अुसने लोगो को समझने न देते हुअे कुछ ! "

रफिअुद्दीन के हाथ मे बेडियाँ पहनाकर सिपाही अुसे पकडकर रखही रहे थे, अुतने में जेलर छपरी में गया और अुस कोने के सरसो के थैले को खोलकर देखा, तो अदर अेक बडी पुलिया और अुसीमे अफीम की डिबिया भी मिल गअी !

जोसेफ का दिया हुआ गुप्त समाचार पूरी तौरपर सही था। दूर से जोसेफ यह सब अपरिचित की तरह देख रहा था। पर अितनी गडबडी में, मुख्य अपराधी रफिअुद्दीन को कैंची में पकडने लायक कुछ भी मिल नहीं पाया था। तो भी हजारो में अेकाध कैदी अितना बेडर और कुकृत्यशील होता है कि पकडे जाने की अपेक्षा चीज को निगल कर अविद्यमान्वत् करने से बाज नही आता, अिसके दो तीन अनुभव जेलर को प्राप्त हो चुके थे। अुनका विचार करके अुसने रफिअुद्दीन का पीछा करने की सोची। ताडेल को तत्कालार्थ पदच्युत करके अुसपर अुसने अभियोग लगाया और डॉक्टर को बुला कर रफिअुद्दीन को अुलटी की दवा पिलाने के लिये कहा।

हथकडियाँ डालकर कोठी मे लेजा कर, रफिअुद्दीन के सामने अुलटी की दवा रखते ही अुसने वह प्याला दीवार पर पटारकर दे मारा। वह पूरी तरह से बबरा अुठा था। "जबर्दस्ती पिलाओ अुसे" जेलर गरजा। वॉर्डर, जमादार, सिपाही आगे बढे। खींचातानी करते हुअे, लात मुक्के खाते और मारते, रफिअुद्दीन अत में नीचे पड गया। अुसके हाथ पैर कसकर दवाके मुँहमें नलकी घुसेड अुममे से अेकबार अुलटी की दवा अुसके गले के नीचे अुतारही दी गअी। पहरा बिठा दिया गया। साझतक दो चार अुलटियाँ हुअी। पर अुनमें से बाहर कुछ भी नही पडा। जेलर भी थोडा सा सकुचाया !—

क्यो कि रफिअुद्दीन को पैसे निगलते हुअे अुसने खुद नही देखा था। रफिअुद्दीन तो 'जमादार ने ही कुभाड किया है, अैसा कहकर धडावड बिल्कुल गलीज गलीज गालियाँ जमादार के नामपर दे रहा था। पर पहले बार की तलाशी लेनेवाले वॉर्डर भी 'अुसने गिनियाँ निगली है निश्चित!' अिस तरह शपथपूर्वक कहने लगे। डॉक्टर की समति भी 'रेच दिया जाय, कोअी चिंता नही, अुलटे पेटमें गिनियाँ अटक गअीं तभी दडित के प्राणो को खतरा है' अैसी पडी। अैसी हालत में फिर रफिअुद्दीन को वलपूर्वक नीचे गिरा कर मुह खोलकर रेच (दस्त) की दवा पेट में रहने तक पिलादी। और अुसकी कोठडी में हमेशा प्रत्येक कैदी की तनहाअी में जितनी रखी जाती है, अुस से वडी अेक कुडी रखकर पहरा विठा कर, कोठरी को ताला ठोक दिया गया। डॉक्टर, जेलर प्रभृति सारे लोग रातकी पद्धति के अनुसार गिनती लेकर वैंरको को ताले ठोककर अपने अपने घरकी ओर चले गये।

वह रात रफिअुद्दीनने अत्यत असह्य और अस्वस्थ अवस्था में गुजारी। रेच होते समय पेट के दूखने की वजह से शरीर को जो अस्वस्थता प्रतीत होती है, वह तो थी ही, पर अुसके अूपर अुस दिन जो जुल्म और अन्याय की भरमार की गअी थी अुसकी याद आतेही असके शरीर की सतापसे खीले खीले हो रही थी। अुसने जग पर पहले या अव कोअी जुल्म किया था क्या? अथवा किसी दूसरे को कोअी अुपद्रव दिया था क्या? अैसा प्रश्न आजतक अुसके सामने कभी अुपस्थित तक नही हुआ था। जुल्म का मतलव सिर्फ अुसे कष्ट पहुँचने लायक लोग जो काम करे वही। जुल्म की सिर्फ अितनी ही कल्पना अुसके मास्तिष्क म थी। अुसकी अिच्छा के खिलाफ दूसरे लोग जो करे वह अन्याय! अिससे अधिक अिन शब्दो का अुसके कोशमें कोअी अर्थ ही नही था। अुस जमादार ने यदि अुसे गिनियाँ छिपाते हुअे न देखा होता तो यह सब काहे को हुआ होता? देखकर भी यदि अुस जमादार ने कहा न होता तो सारा निभ जाता! तिसपर भी, जेलरने अुधर तवज्जह न दी होती और अुसे अुसकी मर्जी के अनुसार वर्ताव करने देता, तो भी क्या विगडने वाला था? अर्थात् वैसा न करके, वह जमादार देखे, कहे और जेलर अुसे सतावे, अुसकी तमाखू-अफीम तोडे, अुसकी गिनियाँ पकडने की गुडगिरी करे, यह कितना दुष्टपना अुसका! कितने अन्यायी और जालिम है ये सारे!

'मुझ अकेले को गिरा दिया नीचे, पैरो से कुचला और दवा पिला डाली '— बारबार यही विचार अुसके तप्त और बवराये हुअे मस्तिष्क में निरंतर चक्कर मारने लगे। वह पूरी तरह सतप्त हो अुठा ! अुस जमादार और अुस जेलर का गला घोटे या खून पिये। पर क्या अुपाय? तोभी बदला तो कुछ न कुछ लेनाही चाहिये। कोठडीमें बद करके जाते समय जमादार ने अुसके हाथ की हथकडियाँ निकाल डाली थी। पर केवल हाथ से क्या होगा? पर हा रे हा, लाहोर के कैदखाने में अुस नूरमहमद ने पागल का स्वाग भरा था, तब अुसने ठीक अैसाही किया था नही? बस, बस, अुसने पागल का स्वाग रचने के लिये जो कुछ किया था, वही मै बदला लेने के लिये करूगा। यव् रे यव्, आने दो अब अुस जमादार को मेरा दरवाजा खोलने के लिये सवेरे! जेलर और वह डॉक्टर भी अुसी वक्त यहाँ आजायें तो कितना अच्छा हो, रेच देते हो क्यो सा .लोगो मुझे! ह- ह ह! अैसी अुड़ेगी अेकेक की कि, यव् रे यव्!'

अैसा बदला लेने का अुसने जो निश्चय किया था और योजना बनाअी थी, वह क्रियामे परिणत होतेही अुसके अपमान की पूरी भरपाअी हो जायगी और अुन छलवादी जमादारादिको की जो दुर्गति होगी, अुसैका, जैसे वह अभी होगअी हो, अैसा चित्र अुसे दीखने लगा! वह पेट पकडकर खुशी के मारे अपने ही आपमें हँसने लग गया।

कैदखाने में हजारो में से कोअी अेक दडित जब कभी अैसा कोअी अुलटा सुलटा पदार्थ निगल बैठता है और अुसे रेच की दवा जबर्दस्ती देनेमें आती है, तब सवेरे अुसका कमरा अधिकारी लोग खुद आके खोलते है, और भगी की ओर से अुसकी कूड़ी की तलाशी लेने में आती है। वह पदार्थ बाहर पडा या नहीं यह निरीक्षण में आता है। अुसके अनुसार भगी को लेकर जमादार और दो वॉर्डर सवेरेही रफिअुद्दीन के कमरे के सामने आये। सीखचो के दरवाजे का ताला खोलकर जमादार ज्योही अदर पैर रखता है, त्योही—

रफिअुद्दीन ने अपना पानी पीने का टमरेल अुठाकर फडसे जमादार के मुंहपर दे मारा! अुस टमरेल ही में अुसने रेच किया हुआ था। वह सारा

मैला जमादार के मुँहपर, आंखो में, मृछो मे, कपडोपर फवारे की तरह पडकर, नियरकर, जमादार के शरीर पर मैलाही मैला होगया, दमघुट गया, अुलटी आअी! जमादार अेकदम "शी शी शी!" करके चिल्लाया।

वह अघोरी रफिअुद्दीन "हा, हा, हा" कर के जोर से खिलखिला ने लगा।

"मेरे पेटका सोना चाहिये था न तुझे? रे पाजी, रे भगी, ले वह सोना! खा, पी! मढ डाला देख, अुस सोने से मैंने तुझे! हरामी "

गालियो के कीचड की बौछार करते हुअे रफिअुद्दीन अेक कोने का आश्रय लेकर, वह टमरेल हाथमें लेकर, आसन जमाकर बैठ गया!

लज्जा से, गुस्से से, मैला मैला हुआ हुआ, गडबडाया हुआ जमादार चिल्लाया,

"देखते क्या हो! वॉर्डर, घसीटो अुस सूअर को आगे!"

वॉर्डर आगे दौडे, पर अुसके शरीर पर जाने ही वाले थे कि, ठिठक गये! अितने आदमी होकर भी अुसके शरीर पर कोअी हाथ नही लगाता था। क्यो कि, अुस निर्लज्ज पशुने कोअी छूने का साहस न करे अिस हेतुसे अेक विलक्षण गलीज युक्ति पहलेही ढूढ निकाली थी!—अुसने अपना भी शरीर अपने ही मैले से लुबडा कर रखा था! अुपासनी महाराजका ही मानो गुरु-मत्र लिया हुआ था अुसने! वे वॉर्डर अुस मैले से जुगुप्सायुक्त होकर मैले को न छूने की भावना से रफिअुद्दीन के शरीर के साथ लिपटने से कतराने लगे! सताप के आवेश में अपना ही डडा रफिअुद्दीन के सिर पर दे मारने की अिच्छा से जमादार दौडा, पर जेलर की आज्ञा के बगैर कैदी का सिरबिर फूट गया तो वह ही सकट में पड जाय ा, अिस ख्याल से अुसने अपने गुस्से को फिर रोक लिया! केवल हाथो से रफिअुद्दीन अुसके अकेले के बस में आजायगा, अैसा अुसे लगता नहीं था, अिस लिये वह फिर ठिठक गया।

जेलर आही रहा था, अितने में अिस चीखने पुकारने को सुनकर वह सिपाहियो के साथ दौडता हुआ ही वहाँ आया। वह प्रकार देखते ही करोध से लाल हो गया और सीमे की भरी मूठ वाली अपनी लाठी अुसने रफिअुद्दीन के सिर में बिठा दी। रफिअुद्दीन ने भी टमरेल के भीतरका मैला जेलरके अूपर छिड़क दिया। अुसके साथ ही, जमादार, सिपाही वगैरे सभी टूट पड़े! दन-दन

डडे पर डडे पडने लगे और रफिअुद्दीन नीचे गिर पडा, बैल की तरह जोर जोर से डुरकियाँ मारने लगा—

"मारो मत्! साब, तुमको बदीवान् को मारने का हुक्म नही! बदी गृह का नियम तोडते हो तुम! अन्याय, अन्याय! गले काटू! कसाअी! डरपोक हो तुम सारे!"

"रे डुक्कर (सूअर)!" जेलर गरजा, "बदीगृह के नियम तुझे अब याद आते हैं क्या? लोगो की गर्दने कचाकच कुचलकर कतरनेवाले राक्षस, तेरी गर्दन मरोडी जातेही सूझने लगा अब न्याय और अन्याय तुझे अ? 'गले काटू' यह गाली है मालूम पडगया न तुझे? ठोको और! मर भी जाय तो चिंता नही! पशु! मैले के अदर का कीडा!"

रफिअुद्दीन अब असलियतमे नरम पडगया! वह हाफने लगा।

भगीने रफिअुद्दीन की कूडीमें पडा हुआ रेच जेलर के सामने अुँडेल कर देखा। अुस मैलेमे रफिअुद्दीन के पेटमें से कोअी अदर निगला हुआ पदार्थ बाहर आया है क्या? अुसमें अुन्हे कुछ मिलेगा, रफिअुद्दीन को अिसका डर ही नही था। क्यो कि, अुसने गिनो बिनी कुछ निगलीही नही थी असल में! जेलर की फजीहत हुअी देखकर अुलटा वह आनदित हुआ। वैसी घायल हालत में भी वह लापर्वाह सूअर गँदले विनोद से अुपहँसा—

"क्या? सोना ही सोना पडा है न पेटमे से मेरे? लो, लो वह बाँटकर तुम सभी, जितना मर्जी अुतना!"

डॉक्टर भी परेशान होगया।

"हमने निष्कारण अिसे त्रास दिया। पर्यवेक्षक महाशय (सुपरिटेंडेट) गुस्से में तो नही न आयेंगे? अिसने कुछ निगला था अैसा नजर नही आता!" डॉक्टर बाहर आकर जेलर से अग्रेजीमें बोले।

जेलर ने कहा, "वह दायित्व मुझपर! तुम्हे मनुष्यो के तबीयत की परख आती है, राक्षसो और सूअरो की नही! जेलखाने का जग कैसा होता है, अिसका तुम्हारे सरीखे अिस विभाग में नवीन ही नौकरी करने के लिये आये हुमे डॉक्टरो को पूरीतरह से अनुभव आया हुआ नही है! अिसे फिर अेकमर्तबा अुलटी की दवा देनीही चाहिये!"

"क्या ? अुलटी की ? अुसका कोअी अुपयोग नही ! अिसके पेटमें पैसेवैसे नहीं होगे । होते तो पहली ही मर्तबा बाहर आगये होते ! "

"पेटमें नही ही है ! पर–ठहरिये, पुन निश्चित रूपसे देखकर बताअूगा । " अैसा कहकर जेलर जमादार से बोला, " ह, अिसको हथकडियाँ पहनादो, भगियों के हाथ से धोकर निकालो ")।

यह वाक्य जेलर मुँह से निकालही रहा था कि रफीअुद्दीन चिढ गया—

"क्या ? भगियो के हाथो से धुलायेगा मुझे ? मैं क्या पैखाने का फरश हू ? मेरी जात भ्रष्ट करेगा ? भगी को जान ले लूगा । तू साहब नही है ! किसी भगी के ही पेटका —"

यह अपशब्द सुनतेही फिर सबने अुसे लातो और घूसो के नीचे ले कुचला और जेलरने स्वत अुसके गलेकी पसली के पास अितने बल से दबाकर चूटा कि रफिअुद्दीनने अेकदम अेक जोरकी चीख फोडी ! डॉक्टर घबरा गया, आगे आकर जेलर का हाथ पकड अुसे अेक ओर लेगया और समझाने लगा-

"यह क्या ? गुस्से के आवेश में मार ही डाल रहे थे न, आप गला दबाकर अुसे जानसे ! अुलटासुलटा मामला हो जायगा समझे, अेक आध वक्त ! "

"अुलटा तो नही, मगर सुलटा मामला तो जरूर हो गया है ! " जेलर हँसा । " डॉक्टर, अिस आदमी के गले में 'खोवडी' (खोखली जगह) है, और वह भरी हुअी है, अिस में शका नहीं । मैंने अिसी लिये गला दबा कर देखने का मौका पानेकी कोशिश की थी समझे ? मैंने ज्योही अुस खोवडी को दबाया, अुसके अदरकी वस्तु अेकदम अुसे चुभी, अिसी लिये वह चिल्ला कर पुन पुन अुस वस्तु को निगलते हुअे दबाकर धरता था मुँह के स्नायुओ से ! अुलटी की दवा दो अेक जोरदार–बस खोवडी खुली ही समझो अिसकी !

"पर 'खोवडी' का मतलब क्या है ? " डॉक्टर ने जिज्ञासा की।

"अुसका विवरण थोडे में अिस प्रकार है–पशु गेमंथ करने के लिये गलेकी जिस खोखल में चर्वण सगृहीत करके रखते है, वह खोखल मनुष्य भी अपनी अुसी जगह निर्माण कर सकता है । अत्यत मधे हुअे अपराधी गुरुपरपरा से अिस विद्यामें प्रवीण होते है । मुँहमें अेक सीसेकी गोली, अुसमें मांसदाहक अेक रासायनिक पदार्थ लगाकर ये लोग रख लेते है । वह गलेकी फानकी

चाकू में बैठकर काफी दिनोतक निरतर बनी रही कि, भारी होनेसे मासमें भुतरते भुतरते भुस खोखल मे छेद बनाती हुभी अदर जाती है। बहुतो से यह काम पूर्णतया सिद्ध नही हो पाता। भुनका छेद कम गहरा रह जाता है। दुअन्नी चवन्नी समाने लायक भितना जिनका छेद बन जाता है, वह बडा होता है। जादूगर अेक खेलमें मुंहमें से नाना प्रकार की वस्तुअें निकालकर दिखलाते हैं। वे वस्तुअें भिसी खोखलमें सगृहीत रहती हैं। केवल भुलटी से भुन वस्तुओ को बाहर न आने देकर प्रवीण दडित भुन्हे रोक सकते है। पर स्नायुओ के थकजाने पर थोडे से दबाव से वे वस्तुअें बाहर आ सकती हैं। मुझे दोतीन भिस किस्म के अनुभव हुअे है! भिसका भी पीछा मै अपनी शका का पूर्ण निरास होने तक करूंगा। अब भुलटियां हुभी तो सूखी ही होगी, भुसकी दमन शक्ति भी क्षीण हो ही गभी है! दायित्व मुझपर! मेरी आज्ञा समझकर दवा पिलाओ!"

डॉक्टरने भुलटी की दवा हा हां, ना ना, करते करते देना कबूल किया। पर वह लाने के लिये जाते समय मनमे कहताही था कि, 'यह जेलर भी विक्षिप्त! जिदपर पिला हुआ दीखता है! व्यर्थ ही भुस बेचारे दडित को सता रहा है! क्या है, कहता है कि, गले में गिनियां रहती है! कल मुझे यह यहभी समझाने लगेगा कि, दडितो की चिच्ची भुगली में प्याज के थैले भरे रहते हैं। अतमें फजीहत ही हाथ आयेगी भिसके!'

भुलटी की दवा के फिर लाये जातेही सब लोगोने मिलकर वह रफी-भुद्दीन को बलपूर्वक पिला डाली। कुछ ही वक्त में भुस दुर्जनको पुन. बडी बडी सूखी भुलटियां आने लगी—अतडियां बुरी तरह तन भुठी—और भुसके औसान फाख्ता हो गये। भितने में भुचकियोपर भुचकियां आरही हैं अैसी भुलटी देखकर जेलरने हाथमें कडियां पहनाकर नीचे गिराये हुअे रफिभुद्दीन के गलेकी पसली की कानके नजदीक की दोनो खोखलो को बुरीतरह भीचकर पकडे रक्खा और भुंगलियों को भूपर सरकाते हुअे ले आया त्योंही अेक भुचकी के साथही तीन, चार, पाच गिनियां खल्खल् खल् करती हुभी रफि-भुद्दीन के मुंहमें से जमीनपर गिरपडी! और अेक छोटी सी डिबिया—भुसमें अफीम!

"गिनियाँ, गिनियाँ, पडगअी अुन्मूलित होकर! गिनियाँ!" वॉर्डर, सिपाही, डॉक्टर, भगी सारे लोग अेकदम हल्ला गुल्ला करके अुठे!

सबमे आनंद से बेसुध हुआ वह जमादार! पुत्रजन्म का आनद हुआ अुसे अुन गिनियो की सुखप्रसूति होतेही! अुसपर झूठ बोलने का जो दुष्ट आरोप आनेवाला था, वह टलगया। अुलटे अपराव को पकडनेवाला प्रवीण जमादार वही साबित होनेवाला था अब!

आजतक रफिअुद्दीन 'खोवडी' में भरकर जो गिनियाँ ले जाता था, अुनके बलपर ही वह जिन जिन कैदखानो में गया वहाँ जिदा बचा रहा—चैन करता रहा। पर अब वह पहली दफा कैद की जिंदगी में अिस तरह हताश हुआ था! अैसी पाच गिनियो का मतलब कैदखानेमे ५ लाख रुपये की सपत्ति समझी जाती है! क्यो कि तमाखूकी अेक चुटकी का मतलब कैदी जीवनका अेक रुपया! अेक रुपया देकर बाहरकी दुनियाँ में जो काम होता है वह यहाँ तमाखूकी अेक चुटकी से हो जाता है। और सौ रुपये देकर बाहर जो काम कराया जा सकता है, वह यहाँ अफीमकी अेक राअीभर की गोली मे कराया जा सकता है! अिस तरह 'अेक चुटकी अेक रुपैया' के भाव से पाँच गिनियाँ अुसके पाच लाख रुपये थे। अुनके बलपर खुद कुछ भी काम न करते हुअे, पचास कैदियो को अपनी सेवा में रखकर पाच बरसतक अुस कष्टकारा-गहमे अपना सारा श्रीमन्ती ससार बसानेवाला था! — पर अब वह निष्काचन, भुक्खड होगया! अब अुसे कौन पूछता है कैदियो में! आज वह पूरी तरह हताश हो चुका था!

और अुसीमे, अुसपर चलाये गये अुस दिन के सारे आततायी दुर्वर्तन के बारे के अभियोग का निर्णय देते हुअे पर्यवेक्षक ने रफिअुद्दीनको बदीगृहीय नियमानुसार सजा दी—तीस कोडे! ! !

कोडो का नाम सुनतेही रफिअुद्दीन सिरसे पैरतक काप अुठा! हिंस्र श्वापदो की भाति हिंस्र स्वभाव मनुष्यभी यदि किसी दड से वास्तव मे डरते हैं तो वह शारीरिक दडही से—मानसिक से नही! मन नामकी वस्तु लगभग अिनके पास रहती ही नही! हिंस्र श्वापदो को यदि पालतू बनाना हो तो चाबुक ही से बनाया जा सकता है! हिंस्र स्वभाव मनुष्यो को कोडो से! यह अुन सैकडो अघोरी दडितो को पालतू बनानेमें जीवन खर्च कर डालनेवाले

जेलरका तखमीना रफिअुद्दीन के प्रकरणमें भी सही ठहरता हुआ नजर आया! जन्म कैदकी सजा को वह हँसते हुअे सुना करता था, कोडो की सजा का नाम सुनते ही आज पहली ही दफा वह थरथर कापा—सचमुच डरा!

कोडे मारे जाने से अेक दिन पहले की रात को रफिअुद्दीन को नीदही नही आयी। कोडो की सप् सप् आवाज अुसे सुनाअी देती थी। अुसकी छाती थर्राने लगी। तथापि, अेक प्रकार का वैद्यकशास्त्र, जो अुस जैसे अघोरियो के सम्प्रदाय में प्रचलित है, वह भूला नही था, अुसपर से विश्वास भी अभी अुडा नहीं था! कोडो से अेक रात पहले यदि मनुष्य अपनाही पेशाब पीजाय, तो अुसका शरीर और मन बधिर हो जाता है, और कोडो की दर्द बहुत ज्यादा महसूस नही होती!—यह धारणा अीदृश अघोरी आततायी दडितो मे प्रचलित है, और अुसके अनुसार वे लोग अुस 'औकद' या 'दवा' को लेते हैं, यह बात बिलकुल सही है! रफिअुद्दीन तडकेही अुठ बैठा और पानी पीने के टमरेल में अपना मूत मिलाकर अुसका यथाविधि प्राशन किया! अुसने कुछ कुरान की आयतें—मन्त्र भी पढे और नमाज पढकर देवसे प्रार्थना की, "कोडो की मार को अूपर ही अूपर झेल! आग मत होने दे खालको! मनुष्यो की तरह राक्षसो का भी अेक देव होता है! अुसने नाखून से जमीन कुरेद कर अुस मन्त्रका पाठ करके चुटकी भर मिट्टी भरी और अुसका अगारा लगाया और अल्लाह के नामका अखड जाप करता हुआ वह अकेली कोठडी में सूर्योदय तक फेरे मारता रहा! अेक बडे धर्मयुद्ध के लियेही जानेवाला था न वह देव का नाम लेकर!!

पर आततायी और खुर्राट दडित अैसे वक्त में अिसी तरह किया करते है, यह बिलकुल सही है! दोतीन अुदाहरण तो हमने खुद अपनी आखो से देखे हैं। और यह भी सच है कि, यमपुरीही का दर्शन करने के लिये जाना हो तो मखमली गलीचों पर पैर रखकर जाना सभव नही वहाँ! चप्पल सेड, और सिबल के काटो के जगलमें से ही राह बनाते हुअे जाना पडता है। मरघटही में जब अपने को रहने के लिये अुतरना है तो, धगधग करती चिताअें, अस्थियो के काटे, पैर भूननेवाली भूभल का ढिगार, तडतड करके फूटनेवाली खोपडियो के पटाखो की आवाज, भूतो की चीखें, यही साथ रहेगी! बीभत्स और भयानक विरसताही रस का काम देगी!! मानवी मनका काला पानी कैसा

रहता है, यही यदि जाननेकी अिच्छा हो तो जैसी वस्तुस्थिति है, अुसी रूपमें काला पानी दिखाना चाहिये न, अुसे निरर्थक अपना शिष्टाचार समझ कर गुलाबपानी का रूप देने से क्या हासिल होगा ? यह तो अुसकी वचना होगी! गुलाबपानी यही काले पानी की विडबना है—शोभा नही!

"अल्लाह, तू रहीम है! देव, तू दयालू है!" अैसा नामघोप करते हुअे अुस अेकातकक्षमें फेरियाँ लगाने वाले रफिअुद्दीन को अुस मत्र तत्र से थोडी तसल्ली महसूस हुअी। अिसी वक्त सिपाही वहाँ आये और खडाखड् दरवाजा खोलने में आया! बदीगृह के बीचके चौकमें सारी बैरको के बदीवानो को दीख सके अैसी जगह अुसे खडा किया। तीन मजबूत लक्कडों का अेक तिकोना रहता है, अुसे 'टिकटी' कहते हैं, वह 'टिकटी' वहाँ लाअी गअी! अुस टिकटी की सीढियोपर चढाकर टिकटी की तरफ मुँहकर के अुसे अुसके साथ बाध दिया गया! अुसके दोनो पैरो को दोनो बाजुओ में मौजूद लोहे की कडियो म पक्की तौर पर अटका दिया गया, अुसके दोनो हाथो को अूपर अुठवा कर दोनो लक्कडो के सिरेपर मौजूद दो लोहेकी कडियो मे जकड दिया गया। गर्दन अेक पट्टे मे अटका दी गअी।

अेक थाली मे कृमिनाशक औषध और कोडे खत्म होतेही घावोपर बांधने के लिये पट्टियाँ हाथमें लेकर औषधालय का मिश्रक (Compounder सचूर्णक किंवा सपिंडकार) और अुसके पीछे पीछे डॉक्टर भी वहाँ आ पहुँचा। सिपाही लाअिन लगाकर खडे हुअे। शरीरपर अेक लगोटी छोडकर रफिअुद्दीन को सिर से पैरतक नगा कर दिया गया। अुसने कोअी गडबड या बडबड नहीं की। शून्यभाव से वह अपनी दुर्दशा अबतक अिसतरह देख रहा था मानो किसी दूसरे ही आदमी को देख रहा हो! अब अुसका अक्खडपनो सब जिर गया था। वह सारी व्यवस्था वहीं खडे होकर करवानेवाले अुस अपने शत्रुभूत जमादार से भी अुसने चकार शब्द नही कहा। कहही नहीं सका!

घनघन घन घटा बजी। तत्काल टाप टाप बूट अुडाता हुआ टॉवर में बैठा हुआ जेलर बाहर आया। और ठीक पीछे पीछे चड्डी (अेक किस्मकी निकर किंवा घुटन्ना) और जाकेट शरीरपर डाले हुअे, बाल बिखेरे हुअे, भुजाओंकी बलोत्कट स्नायुअें फुलाये हुअे कोडे वाला आया। अुसके हाथमें लबी और तीन अंगुलियो के बराबर मोटी सीधी बेंत थी।

रफिअुद्दीन बँधा हुआ था–पीठ अिधर किये हुअे। अुसे वह दीखा नहीं। पर दोखन जैसाही भास हुआ। वह थर्रा अुठा।

"मारो!" जेलर गरजा। यह सुनकर मानो बेंतही अुसके चूतड पर आकर बैठी हो, रफिअुद्दीनने करुणा भरी अेक हाक फोडी–"साब! साब! आहिस्ता, अलगत (=असस्पृष्टरूपसे) तो मारिये!"

हाथकी बेंतको आगे करके सिरके चारो ओर फिराकर कोडेवाले ने निशाना जमाया।

"अेक!" जेलर चिल्लाया! फाड् करके रफिअुद्दीन की चूतड पर बेंत जा बैठी।

"मैय्या मैय्या! या!" रफिअुद्दीन ने चिंघाड मारी!

"दो" फिर सिरपर से फिरा, ताकत के साथ कोडेवाले ने दूसरी बेंत जमाअी! रफिअुद्दीन जानवरकी तरह रँभाने लगा। आजूबाजूके कैदियों के शरीर भी लट्लट् कापने लगे। कितनोंही को दया आअी! अुन्ही में कटक भी था! पर अुसे दया आनी ही थी कि याद आगया–यही है वह रफिअुद्दीन! कुल्हाडी से आदमियों को तोडनवाला! जैसे लकडियाँ फोडते हैं अुस तरह! अेक बरस में कम अज कम अेक अेक तरुणी की तो विलास समझकर जान लेनेवाला–नृशंस नर राक्षस!

"तीन!" चार!" "पाच!" "छै!"

अेक अेक बेतके फटके के साथ रफिअुद्दीनकी दोनो चूतडो में से खूनके फव्वारे अुडने लगे और मास का भूसा! और वह बीचही में रँभाने लगा। बीचही में, "छोडो, बस, पैर पडता हू" अैसी प्रार्थना करने लगा। कभी बीचही में, जमादार और जेलर की मा–बहन का नाम लेकर बीभत्स गालियाँ गिनने लगा।

"सात! आठ! 'नौ! दस!" बेंतो पर बेंते सटकती चली मास में घुसती चली! रफिअुद्दीन आधा बेसुध होकर निश्चेष्ट पडगया! केवल कुचला हुआ साप जिस तरह लाठी लगाते ही अुतने भरके लिये दल्दल् करता है, अुसी तरह बेंतके फटके के साथ अेक अेक चीख सिर्फ शारीरिक प्रतिक्रिया भर के लिये अुसके मुँहसे बाहर पड़ने लगी!

"अट्ठाअीस! अुनतीस! तीस!!"

वह तीसवा फटका मारतेही वेंत फेंककर पसीना-पसीना हुआ हुवा, हाँफते हुअे मट् से नीचे वैठगया वह कोडे मारनेवाला! वह भी अितना थक गया था!

डॉक्टर झट् से आगे आया। टिकटी पर से छुडाकर नीचे औंधा सुलाये गये रक्तववाल (खूनही खून हुअे हुअे) रफिअुद्दीनकी अुसने नाडी परख कर देखी, जिंदा है या नहीं वह अितनाही देखने भर के लिये! घावो पर तात्कालिक मलहमपट्टी करके रफिअुद्दीनको कैदखाने के हस्पतालमें अेक तनहाअी में लेगये। कोठडी में ताला ठोक कर वद करदिया!

अुस रात को घावों में दर्द पर दर्द अुठकर, आग आग होगअी और रफिअुद्दीन को जोर का वुखार चढ आया। वखार में दिमाग की गरमी वहुत वढ जाय तो मज्जाकेंद्रभी अुत्पुप्त हो जाते हैं। अुन मज्जाकेंद्रो (B a n C l s) में विचारो के धक्के मे जो कुछ आकस्मिक रूपसे हिल्लोलित हो अुठता है, अुसकी चित्रावलि (I ılm) तत्काल अितने अुत्कट रूपमें प्रकाशित होकर अुठती है कि, वह वह घटना जीवित अवस्थामें चालू हो अैसा, सुध भूलकर वैठहुअे जीवी को भासित होता है। अितने वीच अुस विचार के सबंध में दूसरा मज्जापिंड सचलित हुआ कि, वह अुसका सवाक् चित्र चालू कर देता है। देशकाल के वरम की जानकारी ही स्थिर नहीं हो सकती, अुसके योग से स्मृत घटना भावभावनाओ का विक्षिप्त मिश्रीभाव प्रारभ हो जाता है तथा अनक असभाव्य दृश्य प्रत्यक्षवत् भासने लगते हैं। रफिअुद्दीन की भी वही अवस्था हुअी।

वुखार आनेके वाद जवतक वह साधारण सचेत अवस्था में था, तवतक अुसके घावो मे वेदनाओ की असह्य परपराके कारण वह विलख रहा था, अुसे, मैंने अपनी यह दुर्गति अपनेही दुष्कृत्यो के कारण व्यर्थ ही मे करवाली, अिसवातका वारवार तीव्र पश्चात्ताप हो रहा था। पश्चात्ताप नामकी वस्तु का सच्चा अनुभव अुसे अपने समस्त जीवनमें अिसी वक्त पहली दफा हो रहा था! पाप क्यो किया अिस वारे मे पश्चात्ताप हो रहा था सो वात नहीं, अुसे पश्चात्ताप हो रहा था अिस वात का कि पाप जवतक पच जाता रहा तभी तक करके अुसे तत्काल छोड क्यों नही दिया! अजीर्ण होने तक, अपपन

होने तक वही भयकर आततायी मार्ग क्यो पकडा रहा, अिस बात का तो कम अज कम खेद अुसे होने लगा। कालेपानी से भाग गया, देश मे पहुँच गया, पुन डाकेजनी करके, अपार धन प्राप्त किया, अनन्वित अिद्रियभोग भोगे वहाँ तक मैंने जो किया, सो ठीक किया। पर आगे अपना हाथ आकुचित करके, किसी भी परप्रातमें जाकर व्यवस्थित जीवन व्यतीत किया होता तो जन्मभर पुनः सकट मे आकर पडने की नौबत ही न आती। अिस प्रकार से अुसका विवेचन चल रहा था। अुसके अुस विक्षिप्त विवेचन से अुसको अपनी जो गलती महसूस हुअी वह अितनी ही कि, बहुतसा पैसा और रगढग के अर्थ समाजपर भयकर अत्याचार करते करते जब वह अुस बिहार की तरुणी को अुडाकर बागलाण में आकर छिप गया, तब अुसे अुन भयकर अुपद्रवी दुष्कृत्यो को हमेशा के लिये अलविदा कहना चाहिये था। वह तरुण स्त्री और वह पैसा लेकर, सिधकी तरफ किसी अेक जगह सद्‌गृहस्थ बनकर, निर्भवशील अवस्था में जो चैन की जा सकती थी वह करके शाति से जिदगी बसर करनी चाहिये थी। अगन कृत्यो को दुष्कृत्य का नाम देकर भी अपनी मनोभाषा मे वह सबोधन कर गया। जैसे जैसे बुखारकी बमुबी और डिग्री बढती चली गअी वैसे वैसे यह आखीरका विचार अुसके चित्तमें ताडव मचाने लगा,

"अरेरे, अुस बिहारी को—अुस बिहार की खूबसूरत छोकरी को ही यथा रीति निकाह लगा कर औरत बनाकर मैंने सुख से जिदगी बसर क्यो नही की ? अरेरे, मैंने अुसे भरपूर महाप्रवाहमें खप्परकी तरह फेक दिया न, रे ! नीच ! – अरेरे ! – पानी में दम घुटकर क्या रे अुसके जीव की— सिर ठम् करके खडक पर !—टकराया !——फूटगया ! अबबब ! मैया री ! कैसी य वेदनाअें ! ! "

बारबार कनहाते (कराहते), बडबडाते बेहोशी में कुछका कुछ देखते, समझते अुसके दिमाग में गुलाम हुसेन की स्मृति का केद्र कही से हिल्लोलित हुआ !

"हरामी अे दुष्ट ! दे वह मेरी मालती वापिस ! धरोहर के रूपमें रखखा था मैंने अुसे तेरे नजदीक ! मेरी, मेरी है वह रखखी है तेरे बापने! गुलाम ! देता है कि नही—मारो—पीटो !—पैर खीचा ! मैय्या या ! मरा ! मरा !"

पुन थोडा जागरित हुआ वह। बुखार का जोश बढ रहा था। बेहोशीमे गुलाम हुसेन के साथ हुअी हुअी मारपीट में पैर पटके थे अुसने त्वेष

में, और अुसके साथ ही साथ अुसके घाव पर धक्का लगने की वजह से बिलखता हुआ अुठा था वह। अुसे वही याद आने लगा।

"मालती को गुलाम हुसेन भगा कर ले गया नही? कहा होगी वह? अरेरे! चोरपर मोर होगया न वह! अपने पिंजरेमें ही रक्खी होगी अुसने मेरी छबीली को!"

मथुरामें मालती को अुस रात रफिअुद्दीनने गुलाम हुसेन के घर जो छिपाया, अुसके बाद अुसका क्या हुआ, वह अुसे कुछ भी मालूम नही पडा था। और किशन अुसके साथही हुअे हुअे हत्या, डाकेजनी आदिके खडयन्त्रके खटलेमें जो निर्दोष छूट गया था, अुस की भी वही आखीरकी जानकारी थी। वही विचार अुसके क्षीणता स्वैर मनमें अब अेक सरीखा चक्कर मारने लगा! बेहोशी और बात के झटके बैठने लगे—

"मालतीका क्या हुआ होगा? गुलाम हुसेन के जनाने में? हां, जनाने मेही! पर मालती—ती—आ? लाहोरमें! यहां बाजार में तू कैसे?.."

वह फिर अकस्मात् बुखारकी अुत्क्पुब्व बेहोशी में अिसी विचार की अुतरनी पर से नीचे अुतरते हुअे कूअेमें गिरपडा हो, अैसे ढग से वह नीचे नीचे गहरा गडता चला गया!

लाहोर के बाजार में खडी हुअी मालती को अचानक देखतेही अुसने मानो अुसे गलबहियामें चिपटा ही लिया, "प्यारी!—मालते!— 'ओ! आव प्यारे रफिअुद्दीन, मेरे को छोडके किदर गये थे पीतम आजतक'!"

गलेमें गला डाल कर मालती जैसे अुसे अपने बगले में लेगअी, दरवाजा अदर से लगा दिया, अुसके सारे कपडे अुतार डाले, और अितनेही में वहां पर मौजूद अेक बडी सदूकची में से खाड्से किशन छुरा निकाल कर बाहर आया! —बापरे! घात घात! अिस दुष्ट औरतने घात किया! अिस जल्लाद के, अिस किशन के हाथमें मुझे सौंप दिया गया? चाण्डालनी, मालने! राक्षसी! 'चुप राक्षसके बच्चे! किशन, बाघ अैसे अुस टिकटीपर! यात्र! मेरे स्नेह की यह देख मैंने अेक बलोत्कट घुमावदार बे। तयार की है। तू किशन! जिसपर यह अब मेरे साथ बैठना चाहता था अुसी अिस पलग की टिकटी तैयार कर! .

पलग की अकस्मात् टिकटी बन गअी, मालती के त्वेषकी भयकर बेंत बनी, बोलते बोलते स्वत मालती की अेक, बाल बिखराअी हुअी, माथे भरमें सिंदूर मली हुअी, लाल लाल जीभ साप की सी निकालनेवाली, कोअी विकराल कृत्या बनगअी ! ! किशन ने अुद्दीन को टिकटीपर पक्की तौर से जकड डाला–और मालती के त्वेषकी अुस बेत को अुसने (मालतीने) अुठाया और खून का फव्वारा अुडानेवाला अेकही भयकर फटका मारा !

"अबबब, मैय्याय्यो !— पैर पडता हू, मालती, छोड ! मैय्याय्या– धुलके से ! मालती ! क्षमा–क्षमा–क्षमा ! —"

. पर मालती गिनती ही और मारती ही चली वे रक्ताक्तकटकित फटके !

"तीन ! चार ! पाच ! पचास ! सौ ! ! ! "

बात के झटके में रफिअुद्दीन खुदही चिल्लाकर अुठ बैठा,

"सौ ! "

मिलाओगी न, तुम्हारी मैत्रिणी ! : : : १३

"अुपे ! अे अुपे ! अरी, आज बोलती क्यो नही ? घरमें क्या कर रही है अुधर, आ आ ! "

साठ बरससे ज्यादा अुम्र का पर अभी तक सपन्नसत्व स्वर अेव सुदृढ शरीरयष्टिवाला अेक पुरुष अपने अेक सादे, बैठे और खपरैल के घरके अग्रवर्ती, बुहारे–छिडके आगन में खाट पर आकर बैठते बैठते अपनी अेक सात आठ बरसकी छोटीसी पोतीको विनयपूर्वक बुला रहा था। दो पहरको अुस आगन में दो-तीन बजे, छाह आयी कि वह अुस खाटपर आकर आजकल अिसी तरह बैठा करता था। कामकाज खतम करके, दिन ढलने के वक्त, गाय भैंस खेतो से, बच्चे स्कूलसे और अुसकी स्नुषा–अुन पोतो-पोतियोंकी मा–अपने नौकरी

के काम पर से घर पर आती थी तबतक, वह बूढा अुस खाटपर जब अिस तरह बैठता था तब अुसके साथी के तौरपर अेक चची (पानतमाखूका बटूआ) और अुसकी अेक पोती अुषा तथा अुसका बडा भाअी बारह अेक बरसका मोहन! अुन्हे कुछ सिखाते, कुछ कहानी सुनाते, बीचमें ही समक्षवर्ती पुष्प-वृक्षों को पनियाते अथवा बौर आये हुअे आमो-कटहलोंके दिनो में आगन से लगकर मौजूद बाडीमें के अुन अुन झाडो की रखवाली करते हुअे वह वहापर बिलकुल तल्लीन हुआ दिखाअी दिया करता था।

अुसके घरके आजूबाजू अेक तीस चालीस तादृश किंवा तदपेक्षयापि अधिक सीधे सादे झोपडो का मिलकर बना हुआ अेक खेडा बसा था। वह खेडा यद्यपि बसा था अडमान में तो भी दिखाअी देता था बिलकुल अेक आध कोकण के खेडे-गाव की शुद्ध प्रतिमूर्ति! क्यो कि सब बातो मे अदमान अपने आपही सर्वथा पूर्व समुद्रतीरवर्ती अेक प्रति–कोकण है। झाड ऋतु, पक्षी, पैदावार, सब बहुत कुछ कोकण का ही ठाठ है! यदि पश्चिम समुद्र के कोकण तटको मोडकर पूर्व समुद्र पर अुठाकर रखदें क्षणभरके लिये तो अुस पूर्व समुद्रमे कोकण का जो अस्पष्ट सा प्रतिबिंब पडेगा, तादृशही अडमान है! कोकण के जगल वगैरे तोडकर मनुष्योंने आजतक जो बहुत सा काया-कल्प कर डाला है, वही थोडाबहुत फरक रहेगा।

"अुषे! 'ओ' तक री, क्यो देती नही तू? मोहन, कहाँ है रे, अुषा?" बूढेने पुन पूछा।

"वह यहीं गुडिया के साथ खेलती बैठी है। वह कहती है कि मै अप्पा पर रूठी हू आज।" मोहन ने अदर से जबाब दिया।

"क्यो बाबा, क्या गुनाह होगया मुझ से? अच्छा, मोहन तूही आ अ, तो फिर अिधर। पके पके पानो का बीडा आज मै अुषाको देने वाला था। पर रूठ गअी हो नो फिर तू ही ले ले, चल!"

अुस बूढे अप्पा का आमत्रण स्वीकार करके मोहन तत्काल दौडा। मोहन अब बीडा हथिया लेगा यह देखते ही गुडिया को अेक ओर फेंककर अुषा भी धीमे से अुठी, दरवाजे के नजदीक आअी, पर बिलकूल ही शरण जाना प्राणो पर आ बीतने की वजह मे दरवाजे मे से अपना सुहावना मुखड़ा बाहर

निकाल कर और अपना वकील अपने आपही बनकर रूठी हुओी आवाज में बोली,

"मैं रूठी हू तुमपर अ अप्पा ! "

"अरी पर क्यो, वह बतायगी कि नही ? यह पीला जर्द पान का बीडा नहीं चाहिये न तुझे ? "

"चाहिये, पर वही से भिजवा दीजिये, मेरे लिये मोहन के हाथ से ! मैं वहा नही आअूगी तुम्हारे पास। तुम फिर मेरा पापा (चुबन) ले लोगे कलकी तरह। मुझ तुम्हारी मूछे चुभती है यह मालूम ही नही तुम्हे ! तुम बलपूर्वक चुभाते हो अुन्हे मेरी गालो पर। तुम्हे अिच्छा हो तो बीडा अिधर ही भिजवा दो ! " अुषाने समझौते की शर्त सुझाओी !

"मेरा काम रुका नही है अितना ! जिसको बीडे की जरूरत होगी वह पापा दे देगा ! अच्छा, मूछे न चुभाते हुओे लू तब तो देगी न पापा ? " अप्पाने समझौने की अुलटी शर्त जतलाओी।

अुस अुलटी शर्त को अुसने यद्यपि मुँहसे स्वीकार नही किया तथापि अेक अेक पैर जमीनपर घसीटते घसीटते अुषा धीरे धीरे अुस आजोवा (दादा-पितामह) के पास पास आने लगी—मानो वह खुद अपनी मर्जी से न आरही हो पर अुसे आजोवा जबर्दस्ती खीच कर लेजारहे थे अिसी लिये वह आगे बढ रही थी ! अिस ढगसे आते आते अक बारगी वह अपन आजोवाके हाथो की पकडमें आकर ठिठक गओी ! त्योही आजोवाने अुसे पकड कर हँसते हँसते अपने पास लेलिया और यथाविधि अेक मीठ पापा का कर वसूल कर के अेक बीडा अुषा और अेक मोहन को दिया और अुन अपने लाडले नन्हें नन्हें पोतो को दोनो बाजूओ में लेकर अप्पा खुदके हाथपर अपने पान के साथ खाने की तमाखू की बुकनी को मलने लगे।

जैसे जैसे अुषा का बीडा मुँहमें घुल घुल कर अुसे मीठा लगता चला, त्यो त्यो अुसकी कली खुलने लगी। वह अपनी मर्जी से आजोवा की गोदमें कब आकर बैठ गओी और हँसते हुओे अुनके साथ मीठी मीठी बाते कब करने लगी वह अुसके ध्यान तक में नही आया ! अुषा और मोहन ये दोनो बच्चे बहुतही मोहक, खिलाडी, वाचाल, और तर्रार थे !

अितने में सामने के टीलेपर से अेक आदमी को अुतरता हुआ देखकर मोहनने ताली पीटी,

"अप्पा, अप्पा, कटकबाबू आते हैं, कटकबाबू! वे ऽ देखो, वे!"

अुषाने भी अनुमोदन किया,

"हा रे हा, कटकबाबूही हैं वे!"

अप्पाजी अुस समय पासमें पडे हुअे कलकत्ते के अेक हिंदी समाचार पत्रको पढते थे। अुसे अेकतरफ हटाकर दृष्टि गडा गडाकर आगेकी ओर देखने लगे, पर अुनकी आखोंको ठीक से नजर नही आया, अुन्हे मालूमपडा कि दूसराही आदमी आ रहा है

"कटक बटक बाबू नही हैं वे, कुछ का कुछ चिल्लाते हो होगया!"

अुनके नकार को बरदाश्त न करके अुषा बोली,

"कटकही हैं अप्पाजी। तुम्हे ठीक नजर न आता हो तो मेरी आखों से देखो। हा,—देखो न! नही जाओ, मेरी आँखोमें से होकर देखो!"

अुसने अपना नन्हा सा सिर अप्पाजी के मुँहके बिलकुल पास ले जाकर धर दिया, वह अुनकी आखो के सामने तक पहुँच सके अिस खियाल से अुनकी गोदमें वह चढ गअी, अपने मुलायम बालो से आच्छादित सिरका पिछला पासा अुनके मुहपर टिकाकर, अुनकी आँखो के ठीक आगे अपनी आखे आसकें अिस तरीके से वह पिठमूही बैठ गअी, और वह नन्ही अुषा आग्रह करने लगी,

"अप्पाजी, देखिये न, मेरी आखो मे से! दीखता है? अैसे न, अब दीखता है?"

अुसके लिये वह अेक खेलही हो गया क्षण भरके लिये!

अुस अल्हड बच्चे की खेल के विनोद में विरसता अुत्पन्न न हो अिस खयाल से आजोबाने भी अपनी अुस नन्ही सी पोती के कुंतल-मृदुल मस्तक को अपनी आँखो के सामने अेक आध दूरबीनकी नाअी, अत्यत गभीरता से पकड कर अुसकी आखो में से होकर देखे जैसा किया और क्या क्या दीखता है सो बतलाने लगे,

"अरी सचमुच! अुषे! दीखता है री, दीखता है तेरी आँखो में से मुझे अब बिलकुल साफ साफ दीखता है! देख, कटकबाबू ही वे अिधर आ रहे है! और वह देख, हमारी नन्ही अुषा अेकआध बडी, सुन्न और,

समझदार लडकी की तरह अपनी स्लेट, पेन्सिल और पहली किताब लेकर अुनके पास किस तरह सीखने के लिये वैठ्नी है देखो! वह हमारा मोहन भी पाठ पढने लगा अ! देख, सारा कुछ मुझे तेरी आखो में से कैसे साफ नजर आरहा है! अब यह सब अिसी तरह सही सही साबित होना चाहिये अ! नहीं तो तेरी आँखो में से सब खोटा खोटा नजर आता है, अैसा कहूगा मैं! तब टालमटोल न करते हुअे वैठगी सीखने के लिये कटकबावू के आतेही?

"ह। सीखन के लिये बैठूगी—पर—" अुषा किंचित् असतुष्ट मुद्रा करके बोलने लगी, "पर तुम्हारे पासही बैठूगी, कटकबावू के पास नही।"

"क्योंगी? वे कितनी अच्छीतरह पढाते हैं तुम दोनो को! गुरुजी पर गुरुजी है वे—कैसे अच्छे।"

"हिश! कहा से है अच्छे वे! अप्पाजी, सच कहती हू अुन्हे ठीक से बोलना तक नही आता बिलकुल।"

"वह काहे पर से? कटकबावू को कुछभी नही आता? और वह तुझे कैसे मालूम पडा?"

"अजी, अुसमें रखाही क्या है समझने के लिये? स्पष्ट दीखताही है वह मुझे! सच अप्पा! कटकगुरुजी ही अुलटे हमारे मोहन से और मुझ से सब कुछ पूछ लेते हैं। अुन्हें याद नही आया कि मोहन से पूछते हैं कलकत्ता कहा है? ववअी कहा है? अग्रेजीमें अम्मा को क्या कहते हैं? बिल्ली को क्या कहते है? और मुझसे भी पूछते है दो पचे कितने? तीन बहाग कितने? अिस तरह दिनभर हमी से पूछते रहते हैं सब कुछ। अुन्हें खुदको आता होता तो हमसे जी, किस लिये पूछते वैठते वे? पहाडे तक आते नही अुन्हें।"

यह सुनते ही "वाहरी वाह, गवार री गवार" अिस तरह अुसे खिजाते हुअे मोहन अेक सरीखा हसने लगा। आजोबा को भी हसी आअी! अुषा बहन पूरी तौर से चिढने की अवस्था में आगअी—

पर अुननेही में कटकबावू आगन में आये और हमेशा की तरह भेंट की तौर पर अेक मिठाअी का पूडा अुनके हाथमे देखतेही चिढ की वजह से हाथा-पाअीपर आनेवाला प्रकरण वही मिट गया। अुषाका लक्ष्य अुस पूडे की ओर गया और हसते हसते कटक बावूके सामने वह चली गअी।

"क्या कटकगुरुजी ! " अप्पा हसे, "परीक्षा में आपके विद्यार्थियो ने आप ही को नापास (फेल) कर दिया है, समझे ? "

"सो कैसे बावा ? " कटकगुरुजीने जिज्ञासा की ।

"अजी, हमारी अुषा कहनी है कि, आपको पहाडे तक नहीं आते आपही को कुछ भूलभाल गया तो आप अुससे हमेशा पूछते रहते है कि, दो पचे कितने ? तीन दहाम कितने ? और अुसने वतलाया तव कहीं वह आपकी समझमें आता है ! अुसे जितना आता है, अुतना भी आपको नही आता ! "

"अैसा क्या ? " कटक अुस आक्षेप को मुनकर कौतुक से हसा "अच्छा तो, मै अव जो हिसाव डालता हू वह यदि अुषावहनजी ने छुडवाया (हल किया) तो तभी मै सही समझूगा ! डालू अेक हिसाव तेरे लिये ? "

"हू, डालिये । अभी छुडाये देती हू देखिये । पर मुझे आसके अैसाही हिसाव डालना चाहिये अ ! " अुषाने शर्त पर आह्वान स्वीकार किया ।

"अच्छा, वतला तो । अेक औरत आमो की अेक छवडी भर कर आअी । अ ? अेक छवडी भर कर ले आअी । अुसकी कीमत दो रुपये स्थिर हुअी । अव अुसने वे आम आघे आघे करके दो वरावर वरावर छोटी छवडियों में भरदिये । समझमें आया ? आघे आघे आम दो वरावर की छवडिया में भरदिये । तो अुन दो छवडियो में से प्रत्येक छवडी के लिये क्या कीमत देगी तू ? तूभी वता हू मोहन । "

मोहन ने चट्से अुत्तर दिया,

"प्रत्येक छवडी के लिये अेक अेक रुपया दूगा मैं ! "

पर थोडी देर आकुंचित नेत्र करके विचार करने के वाद अुषा झिझक कर वोली,

" मैं दमडी भी नही दूगी अुन छवडियो के वास्ते ! "

"क्योरी ! " अप्पाने अुषा से पूछा ।

" वोले नो, सुरेख सम्पूर्ण आम वाजारमें जितने चाहियें अुतने मिलते हो तो अुस (औरत) के आघे आघे किये हुअे वे गदे आम कौन लेगा भला ? "

"आम आधे आधे किये हुओ" अिस वाक्य पर अनजाने शब्दक्रीडा करके अुषाने बिलकुल अप्रत्याशित अुत्तर दे दिया।

अुस लडकी की अनजान किंतु स्वतंत्र विचारशक्ति की निदृष्टि देखकर, वह सर्वथा अनपेक्षित अुत्तर सुनतेही आजोबा अुषाकी पीठपर हाथ फेरकर कटकबाबू से बोले,

"क्या गुरुजी, हमारी अुषा को जितना आता है अुतना भी आपको नही आता, यह बात बिलकुल सही साबित हुओ या नही?"

"बिलकुल सही साबित हुओ, सच बाबा। और हमारी अिस नन्ही विद्यार्थिनीने गुरुजी को जो पाठ पढाया है, अुसके वास्ते गुरुजीही अिस विद्यार्थिनी को यह फीस भी देंगे।"

कटकने मिठाओीका अेक पुडा अुषा को दिया और दूसरा मोहन को दिया। और खाटपर कटकबाबू बैठने लगा। अैसे स्थान देने के लिये अप्पाजी जाघ सिकोडकर अेक ओर सरकने लगे। पर अुतने ही में अुनके घुटने में अेक जबर्दस्त दर्द पैदा हुओ और वे 'अम्मारी"। कहकर जोरसे कनहाने लगे।

"अ? अेकदम अितनी जोर की दर्द अुठने लगी? क्या हुआ पैर में?" कटक जल्दी जल्दी मे पूछता हुआ अप्पाजी का पैर दबाने लगा।

"यहाँ, यहाँ घुटने में।" अप्पाजी घुटना धीरे धीरे आगेपीछे करते हुओ पैर पसारने का यत्न करते हुओ और कनहाते हूओ बोले,

"अिस घुटने में दो दिन से अिसी तरह की असहय दर्द पैदा हो रही है। थोडा पैर फैलाकर रखने से कुछ देर बाद थम जायगी। अेक बहुत पुराना घाव है जो वहाँ स्थायी होगया है, अब अशक्तपन के दिन आये है अत वह फिर बाधा देने लग गया है।"

"पुराना घाव? कैसा वह?" कटक ने जानना चाहा।

"वह? वह अेक अितिहास है। वह घाव सत्तावन के स्वातंत्र्य युद्ध में मुझे लगी हुओ अंग्रेजकी अेक गोली का है। हा, अंग्रेजकी गोली का। क्योंकि मैं विद्रोहियो की तरफसे लड रहा था। मैं अेक विद्रोही था।" बोलते बोलते दूसरा पैर खाटपर टेककर, दूसरे पैरपर तन कर खडा होकर,

छाती फुलाते जानेवाला वह वृद्ध मानो जितना था अुससे भी अधिक अूंचा दिखाओी देने लगा।

"आप विद्रोहकारी थे। प्रत्यक्ष लडे थे आप अुस विद्रोहमें अंग्रेजों से?" कटक यह प्रश्न खंडित शब्दो में जमाकर, पूछ कर, अुस वृद्ध पुरुष के गर्व से तनी हुआी अपनी गर्दन स्वीकारार्थ में किंचित् हिलाते समय, अुनकी तरफ विस्मयपूर्ण आदर से देखता रह गया। अुस दृष्टि से देखतेही वह आजतक का अेक सादा बूढा गृहस्थ कटक को अेक कसा हुआ योद्धा, अेक वंदनीय वीर, अेक पौराणिक महारथी भासित होने लगा।

क्षणभर अुस वृद्धकी तरफ अुसी तरह विस्मयपूर्व आदर भावसे देखते रहने के बाद कटकने पूछा,

"अप्पा, आजतक आपने यहबात कहा बताओी मुझसे? गत छह महीनो में आपके अिस प्रेमल कुटुंब में मै घुलमिल गया हूं तथापि मैंनेअपने आप कभी आपसे आपका पूर्ववृत्त क्यो नही पूछा, अिसका कारण स्पष्ट है। जिन्हें आजन्म कैदकी सजा होती है, जो अपनी सख्त कैद के दस बारह बरस बिताते है, और अुस अवधिमें अपना वर्तन ठीक रखने के कारण जिन्हे अिसी टापूमें स्वतंत्र परिवार का निर्माण करके रहने की आपकी तरह अनुज्ञा मिलजाती है, अुन अिस अंदमान टापूके अंदर के दाखले वाले (pas- holder) आजन्म कैदीगृहस्थों को जिन घृणित अपराधो के लिये पहले सजा हुआी होती है, वह बतलाने में बहुधा संकोच प्रतीत होता है। अपना पूर्ववृत्त अिस आपकी श्रेणी के वे दाखलेवाले स्त्री पुरुष बहुधा छिपाने की कोशिश करते है। अिस कारण अनेक मर्तबा जानने की अिच्छा होने हुअे भी मैंने आपसे आपका पूर्ववृत्त पूछना ठीक नहीं समझा, टालता रहा। पर आप खुदनो सत्तावन के अुस स्वातन्त्र्ययुद्धमें लडना (राजकीय अपराध भलेही कोओी गिने पर) नैतिक नीचता नही है, अैसाही माननेवाले है, यह स्पष्ट है। तब आपने बजाने बुद्द अपना अुतना पूर्ववृत्त मुझे भला क्यों नही सुनाया? सत्तावनके विद्रोहकी कहानी सुनने का छुटपनही से मुझे बडा शौक रहा है।

छुटपन में मेरे पिता मुझसे कहा करते थे। सेनापति तात्या टोपेका नाम तो अुनके मुँहपर सदा चढा रहता था।"

"अुसी वीरवर तात्या टोपे की सेनामें का मैं भी अेक था!"

"क्या कहा, अहाहा! सेनापति तात्या टोपे! जिनका नाम छुटपनमें हमें अेक आद्य पौराणिक वीरके सदृश अद्भुत प्रतीत हुआ करता था! अुस सेनापति को प्रत्यक्ष देखा हुआ और अुन के स्वातंत्र्य सैनिकों में से अेक सैनिक पुरुष प्रत्यक्ष रूपसे मेरे सामन अिसवक्त खडा है—यह कल्पना भी मेरे लियें अत्यंत अद्भुत है! यह देखिये, अप्पा, यदि आपको कोअी खतरे की वात न मालूम पडे तो कमसे कम आपने जो वातें अपनी आखो से देखी है वे तो मुझे सुनाअियें—सुननेकी मेरी अुत्कट अिच्छा है। है क्या कोअी खतरा अुसमें?"

"खतरा? वावारे, पहले अेकदफा तात्या टोपे को मै पहचानता हू यदि अितना भी कह दिया होता तो, जो झाड सामने नजर आता है, अुस पर मुझे टाग दिया गया होता!—मैं तात्या टोपे की ओर से होकर लडा हू यह कहने की तो वात ही दूर रही! अुन दिनों अुन वातो को कहने के लिये जो अेक डर हमारे मनमें वैठ चुका था, और अुन स्मृतियो को हमने चित्त के जिन गहरे भूमिगृहो में गाड दिया था, अुन्हे अव अुखाडनकी कोशिश करने पर भी अुखाडना वन नही पडता! यो, अव वह काल वदल चुका है। वह स्वातंत्र्ययुद्ध अव अितिहास वन गया है। प्रस्तुत परिस्थिति से अव अुसका सबवही वाकी रह नहीं गया! होगा भी तो अितिहास का वर्तमान से जितना सवध रहता है, अुतनाही! स्वयं अंग्रेज लेखकोंने अुस समय की जानकारी के सैंकडो ग्रंथ लिखमारे है। खुद मुझीसे अेक दो अंग्रेज गृहस्थ अत्यंत अुन्मुक्त रूप से मेरी आखो देखी जानकारी पूछने के लिये यहाँ आये थे। पर वह पुरानी दहशत जो हमारे मन पर अेकवार वैठ गअी थी, अुसकी वजह से कुछ भी खुले दिलसे कहते नही वनता। अिसी लिये, मै गपन आप तुम्हे आजतक वह वृत्त कहता नही था। अन्यथा आज अुसमे छिपाने की वात ही क्या रहगअी है? फिर अुसके कारण जो सजा भोगनी होती है, अुसे भोगन के लिये ही तो हम यहां अदमान में आय हुअे है। और अव तो हम अुम जन्मकैद को पूरी करके भी वैठ गये है!"

"अर्थात्, सत्तावन के साल के विद्रोह में लड़ाअी करने की वजह ही से आपको जन्मकैद की सजा हुअी? अदमानमें तभी से क्या जन्म कैदके सजायाफ्ता लोगो को भेजने में आता रहा है?"

"सत्तावन से पाच पचास वरस पहले अेक दो दफा अदमान में अुपनिवेश बसाने का यत्न अंग्रेजो ने किया था। पर अुस समय जो थोड़े बहुत भारतीय मनुष्य यहा लाये गये थे वे अुन भयकर जगलो और दलदलो में अनादि काल से भिनभिनाते आनेवाले रोगजतुओ और जलवायु के भक्ष्यस्थान में पड़गये। विशेषत ठडे बुखार से तो वे बेचारे पूरी तरह अुच्छिन्न हो गये, और ये टापू मनुष्य की वसति के लिये सर्वथा अयोग्य समझ कर फेंक दिये गये (अुपेक्षित हुअे)। पर सत्तावन के बड (=विद्रोह) के अनतर, क्वचित् अिन टापुओ का अुन्ही सद्गुणो के कारण, अुस बडमें अंग्रेजों के विरुद्ध लडते हुअे परास्त हुअे हुअे हम जैसे शतावधि बडवालो को अिन्ही टापुओं में जन्म कैद भोगने के लिये भेजा गया। और अचरजकी बात यह कि हम लोग अिस टापू में भी सारे के सारे आते ही मर नही गये अुन सघन अरण्यवनो को, अुन सडे गले दलदलो को, अुन भीषण रोगाणुओं को, अुस मारक वातावरण को, अुस असाध्य ठडे बुखार को हम पूरे पढ़कर भी बचगये! और अिस रीति से अिस आजके अुपनिवेश के हमही मूल सस्थापक, आद्यपूर्वज, कुलपुरुष स्थिर हुअे! अिस टापू में अुपनिविष्ट होने के लिये भेजे गये अुन पहले बडवाले के जमाव में का ही मैं भी अेक हू!—अभी-तक जीवधारण करके अवशिष्ट अुन बडवाले चार पाच व्यक्तियो में वृद्धतम! पर अिस दीर्घ जीवन के आनद की अपेक्षा जब मेरे सेनापति तात्या टोपे फासी पर चढे—"

"तात्या टोपे को फासीपर चढाया गया था, अुस वक्त आप वहीं थे?"

"नहीं नही! वही तो शल्य मन में चुभ रहा है! काले पानी पर भेजे जाने की अपेक्षा हम लोग अपने सेनापति के साथ फासी गये होते तो हमें अधिक आनद हुआ होता, यही तो मैं कहता था! अंग्रेज अुन वक्त हमारा दुश्मन था, पर तो भी अंग्रेज यह जाति से वीर! वीरता की मनसे अुसे खरी परख, पहचान हम जानते थे! देखो, तात्या टोपे मरतेतक सशस्त्र युद्ध में अंग्रेजभी दातो तले अगली दबाले अैसी दृढता और शूरता के साथ लड़े।

मृत्यदड के वक्त सीधे फासी पर चढते समय अुन्होने कहा कि, 'मैं महाराष्ट्र के राजा का, श्रीमत नानासाहेब पेशवा का सेनापति, मैं अंग्रेजो का अंकित, प्रजाजन नही हू! अपने राजा की आज्ञा से स्वातत्र्य के अर्थ जूझा हू, अत मैं वडवाला अपराधी हो ही नही सकता!' अिस अुसके वीरो चित कथन का अंग्रेजो के दिलपर भी अितना अधिक आतक बैठा, अंग्रेजो के मनमें भी अितनी अधिक आदरबुद्धि जागरित हुअी कि, तात्या टोपे को फाँसीपर मरण आते ही, वह देखने के लिये जमा हुअे सैंकडो गोरे लोगो ने अुस शूर पुरुष के प्रेत के अतराफ गराडा (घरा) डाला और अुसके स्मृतिचिन्ह समझकर कितनेही अंग्रेज फरेंच स्त्री-पुरुष अुसके सिर के बालो की लटें कतर कर लेगये। फ्रांस के पत्रो में अुपके दु खद मृत्युलेख आय! पर हम अुनके सैनिक होते हुअे भी अुनके साथ हो अुस स्वातत्र्य युद्धमें मरनेका भाग्यलाभ न कर सके, अुनका अतिम दर्शन तक न कर सके!" अुस वृद्ध वीरने दीर्घ अुच्छ्वास फेंका!

"आप पहले ही से तात्या टोपे की सेनामें थे क्या? अुनकी मृत्युसे कितने दिन पहले घायल हुअे? कैसे पडे अंग्रेजो के हाथो में?"

"वह कहानी लबी है। थोडेमें कहना हो तो, मेरी और पेशवाओ के किसी भी आदमी से प्रत्यक्ष पहचान पहले बिलकुल भी नही थी। हम महाराष्ट्रीय ब्राह्मण है। मूल बुंदेलो के आश्रित होकर अुत्तर हिंदुस्तानमें रहने के लिये गये। आगे चल कर मेरे पिताकी पीढीमें अरानगर की ओर हमारा कुटुंब स्थायिक होगया। सत्तावनसे अेक दो बरस पहले श्रीमत नानासाहेब के दूत हमारे गाव मे आय और शीघ्रही अेक बडा भारी विद्रोह होनवाला है अैसा कहकर हमारे तरुणो में महाराष्ट्र की हिंदुपदपादशाही पुन स्थापित करने की चेतना का सचार करने लग। मराठो का राजा स्वराज्यार्थ पुनः शस्त्र हाथमे लेनेवाला है, अिस कल्पना के आतेही मेरा तरुण रक्त जागरित हो अुठा! अुतनही मे खबर आअी कि, कानपुरमें अेक बडा भारी विद्रोह हो गया है, श्रीमत नानासाहेब ने कानपूर जीत लिया है। तथा अब खुल्लम खुल्ला लडाअी छिड दी है! हररोज खबरें आन लगी। दिल्ली, लखनअू, जगदेशपूर-जिधर देखो अुधर राष्ट्रिय युद्ध की वनवन्हि प्रज्ज्वलित होकर राजे, महाराजे, सरदार, भूमिदार, सैनिक, नागरिक—सारा हिंदुस्थान विद्रोह

कर अुठा है ! यह सुनते ही हमारी नगरी अरामें भी अेक सैनिक पथक (जत्था) खड़ कर अुठा और हम सब तरुण अुसमें शरीक होगय।"

"फिर ? तत्रवर्ती अग्रेज सेना नें आप लोगो को अेकदम पकडा नही ?"

"अग्रेजी सैन्य था कहाँ, तालुके तालुके मे। भारतीय सैनिक थे–वेही अुलटे हुअे ! अग्रेज अधिकारी अकेलाही था वहा। वह बोले तो, कलेक्टर, मैजिस्ट्रेट आदि के सारे अधिकार चलाने वाला, अे ओ ह्यूम साहब ! सारा अरानगर अुलटा हुआ देखकर ह्यूम साहब नें अपनी जान मुठ्ठीमें लेकर भागजानें का निश्चय किया। पर भागें तो कहाँ ? तब अुन्हो न अपने थाने पर घेरा पडने के पहले ही अेक युक्ति की। हाथ, पैर और मुंहपर काला रग मला, अपनी अेक भारतीय नौकरानी का बुरखा माग लिया, अुसे तत्रस्थ स्त्रियो की तरह शरीरपर लपेट कर स्त्रियो का भेस बना। रातही रात में ह्यूम साहब अरा से निकल भागे। अुन दिनो, जहा अग्रेज दीखे वहा बडवाले मार डालते और अग्रेजो को जहाँ कोअी बडवाला दीखता तो अुसे वे लोग मार डालते। पर तादृश भयकर स्थिति में भी अुनके साथ अुनके विश्वास से रहे हुअे दो-तीन भारतीय सैनिको की मदद से अनेक प्रसगो में अुनकी जान बची और अतमें वे ह्यूम साहब दूसरे थाने पर मौजूद अग्रेजो की छावनी में सुरक्षित रूप से पहुँच गये।"

"अे ओ ह्यूम साहब ? अर्थात् राष्ट्रीयसभा निकालने वाले ह्यूम साहब ?"

"हा। अुन्होंने आगे चल कर वह सस्था निकाली। अितनाही नहीं, अिस विद्रोह में, अुन पर आअी हुअी भयकर अवस्थाओ के कारण ही भारतीय जनता मे पुन तादृश भयकर असतोष न फैलने देनही में अग्रेजी राज्य की सुदृढता है यहबात अुनके मस्तिष्क मे पक्के तौरपर बिंबित होगअी, यह अुनके परवर्ती कालके कुछ भाषण जो मुझे यहा अदमान में अेक साहब के पास से पढने को मिले, अुन मे मेरी समझमें आया। 'सत्तावन के विद्रोह में अग्रेजी राज्य पर टूटपडे हुअे भयकर अरिष्ट में जिन लोगो को दिन निकालने पडे अैसे किसी भी अग्रेज अधिकारी को यह मान्य होना ही चाहिये कि, हिंदुस्तान में मचनवाले असतोष को अदर ही अदर कढने और बढने देना योग्य नही। जिस तरीके से असतोष के बाष्प को स्फोट मिलता रहे, अुसकी भाफ

सचित होने से पहले ही निकलती चली जाय अैसी कोअी न कोअी सुविधा ढूढ निकालनी चाहिये। भाफ को बेखटके निकलने देने के लिये यदि कोअी खतरे मे शून्य छिद्र–सेफ्टी वॉल्व–तुम रखोगे नही, तो वह अेंजिन को फोडकर बाहर निकल आयेगी ! वह खतरे से खाली छिद्रही मै जो निकालने के लिये कहता हू वह अेकाध राष्ट्रसभा है ! ' अैसे अुसके सयानेपन के भाषण आगे चलकर जो हुअे, वह सयानापन ह्यूम साहब अुस अरा के अरिष्ट ही में सीख सके ! "

" अुसके बाद अरासे कहाँ गये आप लोग ? "

" जाने दे रे वह सारा ! होगअी सो होगअी ! अब अुससे क्या करना है ? अब तो नयी अीट नया राज्य है ! जो है अुसी को निबाहना चाहिये ।"

" वह तो हअी है ? पर अपने बारे में तो कुछ कहिये ना, कैसे पकड में आगये आप ? "

" अरा से हम सीधा कानपूर गये और सेनापति तात्या टोपे के सैन्य मे प्रविष्ट हो गया। बीस हजार अग्रेजी सैन्य के साथ चढकर आये हुअे जनरल विंद्याम का कानपुर की जिस भीषण लडाअी मे सेनापति तात्या टोपे ने पराजय किया था, अुस लडाअी में बडवालो की ओर से मै स्वत लडाथा। और अुसी लडाअी में अिस घुटने पर अग्रेजोकी गोली लगने से घायल होकर गिरपडा और अुन लोगो के हाथमे जा लगा। परतु मै अग्रेजो ही के भारतीय सिपाहियो मे से अेक हू, अैसा कहकर वह बेर किसी तरह मारले जाने की युक्ति मैंने ढूढ निकाली। और अुस अधाधुदी के लडाअी के मौकेपर अनेक असभव बाते घटित होती है तद्वत् यह भी घटित होकर मेरी युक्ति फलीभूत होगअी ! जनरल विंद्याम तात्या टोपे के हाथ से परास्त होकर जब अव्यस्थित रूपसे पीछे की ओर लौटा, तब अपने सैकडो घायल सैनिक अुसने जल्दबाजी में अेक सुरक्षित अग्रेजो की छावनी मे भेज दिये। अुनमें मै भी भेज दिया गया ! वहा ठीक हो जानेपर पुन निकल भागनेही को था कि अेक भारतीय सिपाही नेही मै बडवाला हू, अैसी चुगली की, पर अितर सैनिको मे से कितनोही ने वह चुगलखोरही बडवाला है, अैसा कहकर चुगली की थी।

"अुस वक्त अैसी अुल्ट मुलट चुगलियाँ बराबर चालू रहती थीं। अैसे गडबडी के अेक अंग्रेजो की जानपर आबीतने वाले विपत्ति के प्रसंग में वैयक्तिक पूछताछ और पताचलाअी नामका पदार्थही नहीं था। अेक साथ सजा—फांसी तो फांसी, जन्म कैद तो जन्मकैद! बड जल्दी समाप्त हो अिस बुद्धि से अेकसाथ खपमा! अुस बादल (गडबडी) में और अुस छुटकारे में, मैं जिनमें था अुन कैदियों की सारीकी सारी टुकडी के नामपर आजन्म कैदका टिकट निकला! और हिंदुस्तान में विद्रोहियो की वंशवृद्धि ही नहीं हो अिस शर्त के कारण से शतावधि विद्रोहियो की जन्मकैदी टोलियाँ नावों में भरभर कर, 'मनुष्य निवास के लिये अयोग्य अेवं मारक' के रूपमें अंग्रेज अधिकारियो द्वारा अुस कालमे निर्धारित किये गये अिस अदमान बेट मे लाकर छोडदी गअी! अुन्ही में मैं भी अेक था। बिलकुल पच्चीसी के अंदर! मनुष्यवस्ती के लिये मारक समझकर ही अिस बेट (टापू) में लाकर छोडे गये अुन अस्मादृश शतावधि सत्तावन के बंडवालो ने अपने असह्य कष्टो की, घोर यातनाओ की, जमे हुअे खून की, भग्न आशाओ की, क्षीण हड्डियो की, और प्रेतो की राखकी खाद और पानी देकर अुसी टापूको आज मनुष्य निवासके लिये, योग्य बना डाला है। वही यह अदमान अपने हिंदुओ का दिनोत्तर वृद्धिगम्यमान अेक नवीन अुपनिवेश हो बैठा है। अितनीही है हमारे जन्मकी किंवा जन्म कैद की सार्थकता!"

"पर अब अेकदफा हिंदुस्थान में जाकर आने की अनुज्ञा क्यो नहीं मांगते आप? अब तो आप दाखलेवाले स्वतंत्र वर्ग के है, अैसे फरीपास होल्डर्स को अनुज्ञा देते हैं न देस जानेकी? किन्ही प्रकरणो में हिंदुस्थान अब बहुत सुधर गया है। अुसे आपको अेकबार देखना चाहिये!"

"क्या देखना है अब वहाँ? जैसे यह कालेपानी का अुपनिवेश दिनानुदिन समृद्ध होता जा रहा है, अैसा मैंने कहा, अुसी तरह हिंदुस्तान सुधरता जा रहा है, अैसा तुम कहते हो! पहले हम सत्तावन के दाखलेवालो को ही कोअी भेजता नही वापिस, वह नियम हमें लागू नही है, और गये भी तो जो हिंदुस्तान हमें देखना था, वह अब है कहा? अब जैसे यह जन्मकैदी अदमान वैसेही वह हिंदुस्थान!" अपने हृदय के भीतर दीर्घकाल से गडे हुअे शल्य के छेडे जाने की वजह से अुसने अेक दीर्घ नि:श्वास छोडा।

मैंने व्यर्थ ही अिसको दु:खित किया अैसा प्रतीत होकर अब कुछ दो चार सात्वना के शब्द बोलने चाहिये यह सोच कटक कहने लगा,

"चाहे कुछ भी हो, देव तो न्याय का पृष्ठरक्षक है। न्याय की ही जीत अतमे—"

"हत्! न्याय और अन्याय का जय और पराजयके साथ कोअी सबध नही है, यह हम जितना जल्दी सीखे अुतना अच्छा। न्याय और अन्याय यह प्रकरण निराला है और जय अेव पराजय निराला! जयापजयका यदि किसी के साथ सबध है ही तो वह पराक्रम से है न्याय से नही! ध्यान में रख, पाठकर वह शब्द पराक्रम! जय का यह मत्र! वह शब्द सीख!"

"अप्पा, अप्पा, अप्पाजी!" अुसके चित्तको अुस उच्च वातावरण मे से खम् करके नीचे लाती हुअी वह नन्ही सी अुषा हसी, "यह देखो, अप्पा, अप्पा, तुमभी कटक बाबू को नये शब्द सिखा रहे हो! मैंने कहा था, अुन्हे कुछभी नही आता, आखिर वही सही निकला! वही सही निकला! वही सही निकला!!" अुस बच्ची को अुस विषय मे से अुतनाही समझा!!

अप्पा भी हँसे। "कम्बख्त कही की!" अैसा कहते हुअे कटकने अुसके गालपर अेक टिचकी मारी!

अुतने ही मे आगन के फाटक तक गया हुआ मोहन खिल खिलाता हुआ आया,

"आगअी! मा आगअी! मा आगअी!"

अुषाने भी सामने देखकर अुसी तरह ताली पीटी,

"मा आगअी, मा आगअी!"

और कौन पहले जाकर मा से लिपटता है, अिस बात की स्पर्धा मे दोनो बच्चे दौडे। फाटक मे मा के आते ही मोहन ने अुसे पहले पकडा। पश्चादेव, अुषा अुसकी जाघो से लिपट गअी। मा भी अुन दोनो के सटासट चुम्मे लेते हुअे, अुनकी लिपटनो के पेच ही मे जितना चला जा सके अुतना चलते हुअे, अुनके मृदुल कुतलो पर क्रमेण हाथ फेरते हुअे खाट के पास आअी! अुतने ही मे कटक अुसको नजर आया!

"बापरे, राहही देखते बैठे थे न यहाँ? मिलगअी न, अेक बारगी आपकी मैत्रिणी मुझे! बिल्कुल पेट भरकर बातचीत करके आअी हू, अुससे।"

अुस महानुभूतिशील वृद्ध ने अपनी स्नुषा को अदर जाने के लिये अेक अूपरी चाय बनाने का निमित्त भी सुना दिया। अनसूयाने भी वह समयज्ञत्व से पहचान कर अदर जाते जाते कटक बाबू को बुलाया।

"आअिये न, कटकबाबू, अदरही। मैं चाय तय्यार करती हू, तबतक बातचीतही करे, आअिये! मीठी मीठी खबरे कितनीही सुनानी है आपका आपकी अपहृत मैत्रिणी की। आअिये न।"

बोलते बोलते अुसने झुककर नन्ही अुषाके माथे की बिंदी कुछ ठीक की, मोहन के कमीज की कॉलरकी तह को थोडासा व्यवस्थित किया। तत्पश्चात् दोनो बच्चो के हाथ अपने दोनो हाथो में लेकर अदर चली। अुसने "आअिये न, अदरही आअिये!" अैसा अेकबार फिर घरके दरवाजे में घुसते समय आमत्रण दिया—अुसके साथही वापिस आयेहुअे मोहनने अपने नन्हे हाथो से कटककी चिच्ची अुगली पकड कर अुसे खीचना शुरु किया। कटक अुठा, और मानो मोहन की ताकत ही मे वह खिचा चलाजा रहा हो अिस बातकी तसल्ली मोहन को देने के लिये पर वास्तव मे, अूपर अूपर बहाना करने के लिये "अरे, मुन्ना, आया आया! तोड डाली न, मेरी चिच्ची अुगली!" अिस तरह हसता हुआ मोहन के साथ अदर गया। अप्पाजी भी वह देखते हुअे मनही मन थोडीसी नटखट हसी हसे। बादमे पासही पडे हुअे "साप्ताहिक टाअिम्स नामक अंग्रेजी पत्रका अक हाथ में लेकर पढते हुअे बैठ गये।

कटक के अदर आने के बाद अनसूया बाअीने अुसे जो जो जानकारी अभीष्ट थी सो यथाशक्ति रसाल रुपसे कह सुनाअी। दूर गये हुअे, नहीं, नही, लापता हुअे हुअे प्रियजन का अैसे अप्रत्याशित रुपसे पता लगने के बाद प्रेमी हृदय के लिये अुसका समाचार कितना पूछू और कितना न पूछू अैसा कस प्रकार हो जाता है और अैसे समय अुसके बीच बीचमें अुकता देनेवाली जिज्ञासा का भी विरस न करते हुअे समाधान करना यह प्रेमी दूतका किस प्रकार आद्य कर्तव्य होता है, यह जान सकने की सहृदयता अनसूया मे थी। अुससे कटकने अेक महीना पहलेही विनयपूर्वक कहा था कि, "जिस स्त्री कारागारपर वह स्त्री जमादारनी का काम करती थी, अुसमे अुसकी अेक बहन आअी हुअी होनी चाहिये। अुसके साथ ही अुसको भी जन्मकैद की सजा

हुओी थी । पर अुसे हिंदुस्तान ही में अेक अलग कैदखाने मे भेज दिया गया था, अत अुसका आगे चलकर क्या हुआ, अुसे भी अुसकी तरह काले पानी भेज दिया गया है, या हिंदुस्तान ही के कैदखाने मे रखा गया है, अिस बातकी बहुत खोज करने पर भी कुछ पता नही चलपाया था। तब अुसका पता खोज निकालने का प्रयत्न जितना हो सके अुतना अनसूया देवी करे।" कटकने जबसे अुससे यह विनति की थी, तब से अनसूया अुस खोजमे थी । पर कटकद्वारा बताओी गओी 'कटकी' नामकी अुसकी बहनसरीखी कोओीभी लडकी अुस वक्त काले पानी के स्त्री कारागार में नही थी । पहले भी आने का पता नही लगता था । परतु अिस महीने जो 'चलान' आया अुसमें कटकी नामकी अेक तरुण लडकी, आजन्म कैदकी, कटकद्वारा निवेदित बीस के नीचे की अुम्रकी, रूपवती, जिसके सजा के विवरण पत्रमे दीगओी जानकारी कटकद्वारा दी गओी जानकारी से मिलती है, अैसी अेक आओी है, यह बात अनसूया जमादारनी के ध्यानमें आठ-दस दिन पहलेही आओी थी और अुसने वह बात कटकको सात आठ दिन पहले ही बता दी थी । अुससे प्रत्यक्ष भेटकर अुसकी जानकारी, जितनी हो सके अुतनी अुसी के मुंहसे निकाल लेने का काम अनसूयाने तब अपने अूपर लिया था। और अुसके अनुसार मौका साध कर, 'कटकी' से मिलकर अुसने अुसके कैदखाने की गडबडी मे जितनी सभव थी अुतनी जानकारी आज पता चला ली थी । अुसी की मार्ग-प्रतीक्षा अत्यत अुत्सुक व्याकुलता से करते हुअे बैठा हुआ कटक अुस बारे में निश्चय के अनुसार अनसूया की तरफ से कुछ न कुछ समाचार अवश्य मिलेगा, अिसी अुम्मीद से आज अुनके घरपर बडी हिमत से अुस भाग के वरिष्ठ अधिकारियो की आंख बचाकर और नीचे के चौकीदारो की मुट्ठी दबाकर स्वत आया था ।

क्या कि कटक भलेही कैदियो का बाबू था, पर था अेक कैदी ही, अत अुन 'दाखलेवालो के' स्वतत्र ग्राममे अिस प्रकार समय असमय आने जाने की अनुमति अुसे नही थी । और अिसी लिये सांझकी नाकेबदी चौकी चौकी पर होने से पहले ही अुसे निकलकर वापिस जाने की जल्दबाजी थी ।

अुसी जल्दबाजी मे अुसने घरमें जातेही अनसूया से अितने सवाल, बीच बीचमे, अितने अक्रमसे, कुछ व्यर्थही बारबार तो कुछ अधूरेही पूछे

थे कि, अुनका सुसगत मथितार्थ अुसके ध्यानमें आसके और अुसके अनुसार अुसे अुसके अनुरोधसे जो कुछ निश्चित सदेश कहनेका हैं, अुसकी रूपरेखा स्थिर की जासके अिसके लिये भी मौका अथवा अवधान नही रह गया। चोर जानवर, चोरीके खेतमें घुसने के पश्चात् जिस तरह भराभर जो दीखे अुसी घासके, कडवीके हरी घास के ग्रास तोडकर मुहमे ठूस लेते है, वैसे ही अुस थोडे से समयमे जितना कुछ पूछा और सुना जा सकता था, अुतना पूछ सुन ही रहा था कि, साढे पाचका घटा बजा! लौटने की वह विलवित से विलवित वेला थी। अतअेव अुसने अनुसूया को अितनाही सँदेसा आखीर में दिया कि—

"मेरी बहिन से कहियो कि,—घबराये न। मै अेक अठवारे के भीतर आगे का निश्चय जतला दूगा। तबतक धीरज धरे और आरोग्य की चिंता अुस खूनी बदीगृह की यातनाओ मे भी जो अुपाय सभव हो अुनसे करे!"

अितना सदेसा कटकी मे कहने के लिये अनसूया के पास रखकर और अप्पाजी को जल्दबाजी मे नमस्करके कटक लुकता छिपता अुस घर मे से बाहर निकला और वह झाडो और झखाडो मे ढँकी हुअी पहाडियो से घुमावा-फिरावो से वापिस जाने लगा।

मुँहपर फडाफड जड दिये थे! : : : १४

कटक अप्पाको नमस्करके अुस पहाडी के झाडो झखाडो में से लुकते छिपते जल्दी जल्दी जो निकला, सो अुन दायलेवालों की बस्तीवाले टापूकी जो चौकी थी, वहा तक बिलकुल सुरक्षित रूपमे जा पहुँचा। चौकीवाला अुसके हाथ के नीचेका ही था अत अुसने भी अुसकी ओर दुर्लक्ष करके झटपट आगे निकल जाने का अिशारा किया। वह रक्षित मार्ग सांझके वक्त ७ होनेमे पूर्वही कटक आगे चला गया और कैदियो के लिये खुले हुअे राजमार्गपर अुसके अेक बारगी लगते ही अुसका जीव धोटासा नीचे पडा। (अुसे निश्चिन्तता का सुख अनुभव हुआ)

अदमान में काले पानी के कैदियो को लाये जाने के वाद अुस रूक्ष कारागृह मे प्रथमत ठूस दिया जाता था, जिसकी तिसकी श्रेणी की वारी के मुताबिक प्रथम दडित और न्यूनापराधियो को, वरतावा अच्छा रहातो, वहुधा छह महीनो के वाद कारागृह से वाहर छोडने में आता था। जो सधे हुअे-खुर्राट, वहुवार दडित होते, अुन्हे अुन की अपराध भीषणता और वहा के अुस कारागार के अदर का वरतावा लक्ष्य मे रखकर, अेक से पाच वरस के वाद, साधारणत कारागृह से वाहर भेजा जाता था। कटक जब काले पानी में गया, अुस वक्त कारागार वाहर छोडे हुअे कैदियो के रहने के वास्ते जो सरकारी वैरके वावी गअी थीं, अुन्हीमे रखा जाता था। लकडी का काम, जगल कटाअी, अीटका काम, घर वावने का काम, चाय के वागान, रवरके वागान प्रभृति नानाविध कामो के वडे वडे कारखाने अदमान के भिन्नभिन्न टापुओ में स्थापित रहते थे। अुनमे वे वदीगृह से वाहर छोडे गये कैदी टोली-टोली से भेजे गये कि अुन्हे अिन वैरको में रखदिया जाता था। अुनकी ओर से सख्त काम करवा लिया जाता था। पर किन्ही निश्चित टापुओ मे (तालु-को मे) अुन्हे खुले तौर पर छुट्टी का वक्त विताने की मर्जी के मुताविक खाने पीने की, कुछ चुनीदा अिष्ट मित्रो से मुलाकात करने की, आज्ञा लेकर दूसरे टापूमें जाने आने की, वोलने की छूट रहती थी। अुन्ही में किन्ही दडितो को वदी जमादार अित्यादि वनाने मे आकर मासिक दो-चार रुपये जेव खर्च भी मिलता था। अैसी स्थिति में दस-अेक वरस व्यवहार ठीक रहा तो अुनमें से अच्छो को "दामला" देकर स्वतत्र रूपसे घरवार तथा खेतीवाडी वसाने और करने की छूट मिल जाती थी। अिन्ही को "दाखलेवाले" स्वतत्र कहा करते थे। अुन दाखलेवालो के छोटे-गाव, कैदियो के टापूसे अलग रक्षित वस्तियो मे वसाये जाते थे। अुन 'दाखलेवाले' स्वतत्र गावो में विना दाखलेवाले कैदियो को विशेष अनुज्ञा के वगैर जाने नही दिया जाता। अुन दाखलेवालो मे, दाखलेवाली कैदी स्त्रियो से शादी करने के वाद, जिन लोगो को वच्चे हो जाते अुन लोगो के वच्चे मात्र जन्मत सर्वथा स्वतत्र नागरिक समझे जाते थे। ये परिवार स्वत खेतीवाडी तथा अन्य कामधधा करके अपना पेट भरते थे। अुनमेंसे कितनेही लोग अपने कर्तृत्वसे अच्छे धनवत्तर भी वन सकते थे।

काले पानी पर गयी हुयी दंडित स्त्रियों की भी व्यवस्था अैसीही होती थी। पर अुनकी वढती मात्र शीघ्र होती थी। काम पुरुषों के सदृश कठिन नहीं रहता। स्त्री बंदीगृहमें प्रथम पाच अेक वरस अुन्हे बंद रखते थे। फिर अेक विहार-स्थानमे अुन्हे छुट्टीमे घूमने फिरने की छूट मिल जाती थी। वहा, जिन्हे शादी की अनुज्ञा मिल जाती थी, अैसे कैदी पुरुषों को भी भेजा जाता था। कडे पहरे मे अुन स्त्री पुरुष कैदियो को अुस छुट्टीमे अेक दूसरो से जानपहचान और प्रेमपरिचय प्राप्त करने का मौका दिया जाता था। यह विहार स्थल क्या था, लडन का 'हाअिड पार्क', पूने का बडगार्डन, अुस काले पानी के पापियो का प्रेमोद्यान! वहा होनेवाले प्रत्यक्ष परिचय के अनंतर यदि किसी स्त्री पुरुष का आपस में विवाह करने का निश्चय अुभय समति से स्थिर हो जाता तो योग्यायोग्य का निरीक्षण करके सरकार जिन्हें अनुमति देती वे आपस में रजिस्टर्ड पद्धति मे शादी कर लेते और "दाखला" मिलने पर अुस जोडे को स्वतंत्र गावमे भेज दिया जाता था। शादी के वास्ते जातपात का बिलकुल बंधन नही रहता था। किन्ही निश्चित कारणो के लिये घटस्फोट (तलाक) भी मिल सकता था।

किसीने फिर अपराध किया तो अुसका "दाखला" रद्द करके अुस शख्स को पुन कैदमे डाल दिया जाता था। यथारीति जाच पडताल करके फाँसी तककी सजा अुसे मिल सकती थी। हत्याका प्रयत्न भी बडा अपराध अदमानके कैदियो के प्रकरणमें समझा जाता था। अुद्दड, अघोरी और अमानुष प्रवृत्ति के शतावधि जन्म कैदियो को अीदृश अत्यत कठोर अनुशासन मे रखे बिना, अुस टापूमें जीवनसुरक्षितता, शातता और सुव्यवस्था को कायम रखना पूर्णतया दुर्घट ही था।

अपराध विज्ञान (Criminology) के ध्येय तीन है। प्रतिशोध, प्रायश्चित्त, और प्रगति! अपराधियो से बदला लेना यह मनुष्यकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। 'दातको दात और आख को आख' यह यहूदियो का धर्म दडक (=प्रथा) था। जिस अवयवद्वारा अपराध हो अुसका छेद कुछ प्रकरणो मे तो मनुस्मृति क्या, जग के प्राचीन ग्रीक अित्यादि निर्बंध (कायदे) पठानो जैसे किंवा सर्वथा जगली जातियो में 'जिसने हत्या की वह पकडमें न आया तो अुसके वशमे किसी न किसी को जान से मार डालने

का सदाचार क्या, सभी प्रतिशोधो के ही अुग्र अेव सौम्य प्रकार है। अुसके आगे का विवेक अैसा है कि, राजसत्ता को तो अपराधी का प्रतिशोध, वदला, यही अेक अुद्देश्य न रखके, जिससे कृतकर्म के भोगने पडनेवाले दडसे अुसपर आतक वैठ सके अितनाही दड, प्रतिवधक प्रायश्चित्त देना चाहिये। चोरका हाथ ही न तोड डालकर, हाथ को अितर अुपयोगी कामो के लिये सुरक्षित रखकर, चोरी करने भर का अुसे भय लगे, सजा के डर से तो वह चोरी न करे अैसा अुसके अुदाहरण को देखकर औरो परभी आतक वैठ जाय, अैसा दड देना अुचित है, यह अगली सीढी हुअी। प्रतिशोध यह ध्येय न होकर प्रायश्चित्त यह दूसरा ध्येय अिष्टतर प्रतीत होने लगा। अुससे भी आगे जाकर अपराधियो का मन केवल सजाके डरही से नही, वल्कि मूलत ही स्वेच्छा से अपराधो से परावृत्त किया जावे, जिन परिस्थितियो के कारण सुशील मनमे अपराध की प्रवृत्ति अुत्पन्न होती है अुन परिस्थितियो को पलटा जावे, शिक्षण, सत्सग मनोविकास अित्यादियो के सपोषण से अुनके मनो को ही समाजशील और सुसस्कृत वनाया जावे, अुनके भीतर की मानवता को वढानेवाली, अुनके स्वभावो की सुधारणा की जावे, अुनके भीतरकी मानवता की ही प्रगति होती जावे, यह अपराधियो के साथ व्यवहार करने का तीसरा अुद्दिष्ट रहना चाहिये।

सव मिलाकर देखने से, अदमान के अपराधियो से वरताव करने की जो नीति तीस चालीस वरस पहले आकी गअी थी, अुसमे कटककोटचग्रता न भी हो तो भी वव्हशमे अिन तीनो शास्त्रीय अुद्दिष्टो का अेक अशास्त्रीयही क्यो न हो पर सहेतुक मिश्रण किया हुआ था, यह अुपरिर्वाणित काले पानी के दडितो के अुस काल के वर्गवध पर से, वढतियो के क्रमपर से, सुधारणीय और दु सुधारणीय कसौटियो के अनुसार प्रत्येक के लिये पात्रापात्रता के अनुरूप कठोर अथवा मृदु स्वरूपके विभिन्न वरतावे की नीतिपर से दृष्टिगोचर होगा ही।

जिस कैदी का दस वारह वरस के कठोर अनुशासन से, कडी मशक्कत से और कृतकर्मो के यथेष्ट प्रायश्चित्त के भी अुपभोग से, शील सुधरा हुआसा प्रतीत हो, अुन्हे "दाखला" देकर अदमान के अदमान में ही स्वतत्र रूपसे

रहने की अनुज्ञा मिलनेपर, अुनके गाव अलग से वसाने में और सुधरे हुओ के गावो मे अच्छे व्यवहार के वारह वरस जिनके अभी पूर्ण नही हुअे है, अैसे कैदियो को मुक्त रूपसे जाने आने न देने में भी अधिकारियो का यही कटाक्ष रहता था कि, अिस प्रकार के पृथक्करण से अुन सुधरे हुओ का अिन न सुधरे हुअे चड प्रकृति कैदियो के अुपद्रव से सरक्षण होवे और अुस कुसगति से अुन दाखलेवालो का किंवा वही पैदा हुअी हुअी अुस नअी पीढी का अवपतन न होवे।

कटक को भी तव काले पानीपर आकर पाच अेक वरसही हुअे थे, अत वह अभी कैदियो की श्रेणीमें ही था। अुसे कक्ष–कारागृह में थोडे दिन सख्त हस्तश्रम करना पडा। अुसके वाद लिखनेका काम मिला। वहाँ अुसने वहुतही अच्छा वदीगृहीय व्यवहार रक्खा अत छह महीने के वाद अुसे कारागृह में मे निकाल कर वाहर टापू में लेखक के काम पर भेजा गया। अुसने अगेजी का भी लेखनवाचन वढाया। काम भी अच्छा किया, अधिकारीवर्ग अुसको चाहने लगा। अदमान में के अत्यत कठिन और कष्टप्रद कामो मे गिनेजानेवाले जगल कटाअी के कामपर अव अुसकी, गिनती और देखरेख करनेवाले "कैदी वावू" (Conv ict Clerk) के तौरपर नियुक्ति हुअी थी और अुसके हाथके नीचे सौ सश्रम वदिवानो की टुकडी सघन अरण्यच्छेदन के कामपर भेजी जाती थी। पर तो भी वह स्वत चूकि अभी अुसे काले पानीपर आकर पाचही वरस हुअे थे अिस लिये, नियमानुसार कैदियो के वर्गही में अतर्भूत होता था। और अिसी लिये अुन दाखलेवालो की वस्तीमें अुसे मुक्त रूपसे आनेजाने की प्रत्यक्ष अनुमति नही थी। अण्णाजी के परिवारके साथ जगल कटाअी के लिये जाते आते योगायोगसे पहिचान होकर अच्छी घनिष्ठता भी जो हो गअी वह भी अतस्थ रूपसेही थी और अतअेव आज भी वह अुस वस्तीमें वहाँ के चौकीदारो के साथ अतस्थ सधान वाधकर ही हमेशा की तरह चोरी चोरी भेंटने के लिये जव गया, तव वह भेंट साझको चौकीपर आना जाना वद करने के पहले समाप्त करके और अण्णाजी से विदाअी लेकर अुस टीलेपर से लुकते छिपते अतमे वदीवानो के लिये खुले हुअे और अुस जगल तुडाअी की टुकडी के रोजमर्रा के रास्ते पर आतेही अुसकी जानमें जान सी आगअी।

कटक के खतरे से शून्य रूपमें राह पर लगने के वाद अुसके मनमें अनसूया के मुंह से मालती के वारे मे जो जानकारी वहुत दिनो के वाद मिली, अुसके सवध मे विचार चलने शुरु हुअे। गत पाच वरसों का सारा अपना अितिहास अुसकी आंखो के सामने आकर खडा हो गया। अुन दोनो विषयो मे ही, अुसदिन अप्पाजीने सत्तावन के स्वातत्र्य युद्ध में भाग लेनेकी जो वात अुससे कही थी और अुसके जाननेके साथही अुस कुटुव के वारे मे जो अेक राष्ट्रीय आदर प्रतीत होने लगा था, अुसके विचार भी मनमें आ रहे थे। अुनके अनुषंग से अुस कुटुव के साथ कटक का परिचय कैसे होगया, और कैसे वढता गया, यह चरित्रभी अुसके विचारचक्रो में गुफित होता जा रहाथा। और सवसे महत्त्व की जो चिंता, 'आगे क्या करना चाहिये' यह भावी कालके गर्भ मे विद्यमान घटनाचक्र अुन अतीत कालिक घटनाचक्रो की स्मृतियो को पुन पुन पीछे धकेलते हुअे, 'मेरा निर्णय पहले करो' अैसा जताते हुअे अुसके सामने वलपूर्वक आकर खडा हो जाता था।

ये सारे विचार किसी भी विषय पर क्रमेण अुसके चित्त में नही आते थे, वल्कि अुलझे-सुलझे रूप मे आगे पीछे, वीचके वीचमें आते जाते थे। डेढ दो मीलके अुस रास्ते पर झपटकर चलते समय कटक अुन विचारो की गुरझट में विलकुल अुलझ गया था। अुन विचारो की गुरझट को सुलझा कर यदि विषय-वार क्रम लगाया जाय तो मालती के प्रकरण की जोड तोड साधारणत अिस तरह की जा सकती है।

अप्पा के कुटुव से परिचय कुछ महीनो पहले जव हुआ था तव अुसे मालूम पडा था कि अुसकी स्नुषा अनसूया स्त्री वदी गृहकी अेक 'दाखलेवाली' जमादारनी है। काले पानी पर आने के वाद से, अंदमानके स्त्री वंदी गृहमें मालती आओी हुअी है या नहीं किंवा अुसे आजन्म कैद हो जाने के पश्चात् हिंदुस्तान के ही किसी कैद खाने में रोक रक्खा है, अिसकी वह खोज जोरशोर से कर रहा था। परन्तु स्त्रियो के वदी गृहपर सख्त पहरा रहने के कारण और अुसमें पुरुष कैदियो का प्रवेश भी न हो अेवच सवध तक न आये अैसी पक्की व्यवस्था थी। अत कटकको अुस वातका लेश मर भी ज्ञान नही हो पाया था। जो जानकारी अुसे मिल पाअी थी वह यही थी कि कटकी नामकी कोअी स्त्री कैद

खाने में हिंदुस्तान में नही आओी थी। जब अुसने छे सात महीनो पहले अनसूया बाओी से अिस बारे में जानकारी पहली दफा पूछी थी, तब भी यही पता चला था कि कटकी अुस कैदखाने में आओी नही है। तस्मात्, मालती को सजा हो जाने के बाद अुसका क्या हुआ, अेतद्विषयक चिता अुसे निरंतर व्याकुल करती थी। अुसकी याद आतेही भोजनमें मिठास नही मालूम पडती थी। वह अुसे जब पहले प्रत्यक्ष रूपसे भेटती थी अुस वक्त भी अुसके स्पर्श के लिये वह जितना रोमांचित नही होता था, अुतना अब सिर्फ स्पर्श के स्मरण मात्र से हो अुठता था। अन्न जब मिलता है अुस समय वह जितना लगता है, अुसकी अपेक्षा भी वह जब दुर्लभ हो जाता है तब अुसकी स्मृति ही में वह सौ गुना अधिक मीठा लगता है। पुन अब अुसके मनमें मालती के अुस स्पर्श की याद आतेही पहले की तरह केवल स्नेहकी भावनाही जागरित न होकर अुपभोग की भावनाभी अुद्दीप्त होने लगती थी। वह साक्षात् जब मेरे पास थी, तब मैं अुसका आलिंगन लेने के लिये क्यो प्रवृत्त नही होता था, किस तरह प्रवृत्त नही हुआ, किसे मालूम! अिसी बात का अुसे रहरहकर खेद होता था! आखिरी रात, अुसको सतानेवाले अुस मुसलमान गुंडेको मार डालने के बाद जब अुस भयंकर साहस के परिणाम से आत्मरक्षा करने के लिये मालती के साथ अुस देवालय मे भरे अंधेरे मे जाकर छिपा था, अुस रात को तो नींदमें से डरके मारे थरथर कांपती हुओी वह दचक कर अुठी, अपने आप अुस के गले से लिपटी और 'मुझे अपने संग लेकर सो, आ' असे अपने आप अुसे बुलाकर अुससे चिपट कर सोगओी, अस समय की अुन प्रत्येक चेष्टाओ की स्मृतियां अब अुसे अेकांत में रहते समय बारबार होती थी। मालती के केशो की लट, वह जब अुसकी छाती से चिपट कर सोओी थी, अुस समय, अुस रात अुसके गालो पर जैसे रुलती थी, बिलकुल अुसी तरह पुन मानो अुसके मुखपर और गालोंपर रुल रही हो असा अुसे भास होता था। अुसका सारा अंतःकरण काम-कंपित होकर थर्राता था, पछतावे से तिलमिलाता था कि, अुस रात तो कम अज कम, मैं केवल संयम का और भीरु संकोच का शिकार निष्कारण क्यों बना? अमृत का प्याला ओंठो के पास रखा, पर पीने की ही बात भुलादी। अुसके ससोगसुख से मैं जन्मभर के लिये वंचित होगया!

प्रेमिक व्यक्ति समक्ष सान्निध्यमें रहे तो सर्वथा आलिंगनमे भी अुसकी अिच्छा अनिच्छा का दबाव अुसपर अनुरक्त रहनेवाले प्रणयी जनकी अुन्मत्त अिच्छापर कुछ न कुछ पडा हुआ रहता ही है। पर जब अुस प्रेमिक व्यक्ति की स्मृति के साथही अुसपर अनुरक्त प्रणयीजन कल्पना के मंदिर मे विहरने लगता है, अुस समय अुसके मनकी अिच्छाअे अनिर्बंध रूप से प्रकट होने लगती है। अुसके मनके अनुरूपही सब कुछ हो रहा है, अैसा मनको समझानेकी राहमे किसी किस्मकी बाधा बच नही रह जाती। अुसकी अतृप्त और अव्यक्त वासना सारा सकोच छोडकर अपनी अिच्छा पूर्णकर सकती है। अुस प्रेमिक व्यक्ति का, वह समक्ष सन्निध रहते समय जिस हृद्गत को कह डालने मे मन लजाता है, वह अुसकी स्मृतिमूर्ति मे खुल्लमखुल्ला कहने मे कोअी सकोच नही होता। अपनी लहर के मुताबिक ही अुसकी भी लहर बनाली जा सकती है।

कटक की भी अवस्था अुस अेकात तिलमिलाहट मे वैसीही होती थी। मालती अुसके सन्निध समक्ष रूपमे थी तब अुसके विषय में कामुक भावनाअें अुसके असज्ञ मनके ही भीतर बोआ जारही होगी तो होगी, पर वे अुसके सज्ञ मनसे भी खुली तौर पर अपना हृद्गत कहने मे लजाती थी। पर अब अुन विरहजन्य अश्रुबिंदुओ के जल से सिक्त होते होते अकुरित होकर, पल्लवित होकर, अुसके सज्ञ मन की भूमिका में भी बहार पर आकर रहने लगी थी। पहले प्रथमत अुसके कल्याण के अर्थ, और अपने कर्तव्य के अर्थ अुसे सकट मे से मुक्त करके सुखी बनाने के काममें अपनी जान अुसने खतरे मे डाली थी। पर अब अुसके कल्याण के लिये किवा अपने कर्तव्य के लियेही नही, तो अुनके साथही अुसकी प्राप्ति के लिये और अुसके सभोग के स्वर्गीय सुख के लिये भी वह तडफडाने लगा। अुसे सकटमें से छुडाने के काम मे अपनी जानको पुन अेकदफा खतरेमें डालने के लिये हिचकिचाहट नही हुअी।

और अुसे आज अनसूयाने जो खबर दी थी अुसे देखते हुअे तो मालती अुस स्त्री बदीगृह मे भी जानपर बीतनेवाले सकट मे थी। अुसे यदि छुडाना हो तो कटक को भी अपनी जानको पिछली दफा की मानिंदही अेक भयकर खतरे मे धकेलना लाजमी था। अिस दफा का सकट कोअी दूसरा अुसपर लानेवाला था यह कहने की अपेक्षा यह कहना ज्यादा मौजू होगा कि, वह

खुदही अपनी जान का खतरा मोल लेनेवाली थी। अुसने स्वत ही अनसूया के हाथ तादृश अत्यत करुण-व्याकुलतापूर्ण सदेशा पहुँचाया था।

अनसूयाको अुसने 'कटकी' का पता चलाने के काम पर पाच-छै महीनो से नियुक्त किया हुआ था। पर अुस स्त्रीवदीगृहमे कटकी नामकी कोअी स्त्री तवतक आअीही नही थी, अैसा अुसे मालूम पडा था अुस वक्त। तथापि अुसके घरपर अुसके वच्चो को—मोहन अुषा को पढाने के लिये कटक हमेशा जाता आता था। अनसूयाको वहन मानकर भाअी दूजके मौकेपर तथा अन्य त्यौहारो पर अुसे भेंट के तौरपर कुछ न कुछ दातव्य अवश्य दिया करता था। अुसके सुशील-विलोभनीय स्वभाव के कारण, अुसकी सुविद्य योग्यता के कारण नानाविषयो के सार्वजनिक हिताहित की चिंता के कारण प्रौढप्रज्ञ अप्पाजी को अुसकी वहुत चाह थी। अुसकी यह घनिष्ठता अिस तरह वढती जा रही थी, अत अनसूयाने भी अुसका कटकी के पता चलाने का काम मन से करने का सकल्प कर लिया था।

जिस दिन अुपरिनिर्दिष्ट मुलाकात अुस कुटुव को कटक ने दी थी अुसके आठ अेक दिन पहले ही कटकी नामकी कैदी स्त्री हिंदुस्तान से काले पानी की सजा पाकर अुस अदमान के कैदखाने मे आअी है, यह अनसूया का मालूम पड गया था। अुसकी प्रत्यक्ष मुलाकात का मौका पाकर अनसूया जमादारनीने अुसदिन कैदखाने की अैसी चोरी छिपे मुलाकात में जल्दबाजी मे जितना कुछ पूछा जा सकता था सवपूछ लिया। अुसमें कटकीने भी कटक के सामने पहले हिंदुस्तान मे धरपकड होते समय जो निश्चिय स्थिर किया था, अुसके मुताविक अपने 'मालती' के सवध के पूर्ववृत्त को प्रकट न करते हुअे, कटक की मैं वहन हू, मुझे अपहरनेवाले अेक दुष्ट का वध करने के साहस के कारण कटक को और मुझे आजन्म कालेपानी की सजा हुअी है, अैसाही पूर्ववृत्त कह सुनाया। वह सजा हो जाने के वाद कटक से अलग करके मुझे हिंदुस्तान ही मे दूसरे अेक कैदखाने मे ठूस दिया गया और वही गुजिस्ता पाँच वरस, सडते, कुढते और रोते हुअे विता दिये। कटक का क्या हुआ सो कुछ पता नही चला, पर वह सजा पाकर अदमान भिजवा दिया गया है, अिस वात का पता कैदियों के द्वारा आअी खवर से मिला। अुसके वाद, हिंदुस्तानमे सडते रहने की अपेक्षा अपने को अदमान भिजवा

दिया जाय, अिसवातपर सरकार के यहा वरना दिया। और अतमें अपने को कालेपानी भेज दिया गया—अैसा अपनी सजाके वाद का पूर्ववृत्त भी कटकी ने अनसूयाको वतला दिया ।

तव अुस भेटमें कटकी अनसूया से वोली,

"जमादारीणवाअी, मेरी अुम्रकी अभीतक वीसीतक अुलटी नही पर जगकी अत्यत असह्य यातनाओकी जो भरमार सौ वरस तक जीवित रहे हुओ के हिस्से में सहसा नही आती वह मेरे हिस्सेमें आचुकी है। अितना जुल्म, अितनी विडवना, अितनी तकलीफ, अितना दु ख मैंने आजतक सहन किया। और खास वात यह है, श्रीमतीजी, कि, मैं देवके सम्मुख कहती हू, मेरा खुद का मेरे अेक अपराव को छोड, दूसरा कोअी भी अपराव मेरे हाथसे नही हुआ, जिसके लिये मुझे यह मव सहन करना पडे। और मेरा जो अेक अपराध है, वह है, मेरा रूप। मैं जहा भी जाती हू, वही मेरी राह में अडगा वन कर खडा हो जाता है। अिसी रूपके खातिर मैं मातृगृह से निकलकर कैद खाने मे भी जिसके हाथमे पडी, अुसीने मेरी विडवना की और जिसके हाथमे नही गअी, अुमने केवल अिसी कारण मुझपर जुल्म तोडे। श्रीमती जी! अव तो मुझे अिस जीवन की अिच्छाही नही रह गअी है। हिंदुस्तान के कैदखानेही में मैं अेकदफा जान देने वैठी थी, पर मेरा वह प्रयत्न असफल हुआ, और मुझे अुलटे छह महीनेतक हाथमें कडियाँ और पैरो में वेडियाँ डालकर कोठडी में ठूस दिया गया। जुल्म से छुटकारा पाने के लिये किये गये अपराध के कारण और भी अधिक जुल्म होने लग गया। अतमें अेक ही आगातत् अवशिष्ट रह गया था, अुसी के सहारे लटक कर किसी तरह मृत्युकी खाअी में गिरने से वचगअी। वह आगाततु—आजन्म कैद की मजा मुनाते समय जजकी अेक आश्वासन भरी मभावना थी। अुसने कहा था—'काले पानी पर जाने के वाद कुछ वर्षो के पश्चात् शायद तुझे छोड दिया जायगा, और अुस टापू ही में क्यो न हो, तुझे अपनी पसद के सहचर के साथ ममता और वात्सल्य भरा कौटुविक सौख्य अुपभोगना मिल जायगा।' न्यायाधीश के वे अमृततुपारसदृश शब्द ही मेरे मनकी कोमल स्त्रीय लालसा को पुन. पुन अकुरित करते थे।

"अितने में मुझे मालूम पडाकि, कटक भी अदमान ही में है। आत्मघात से पहले अेक मर्तबा तो अुसकी मुलाकात हो, अिस आतुरता से हर प्रयत्न करके, कालेपानी पर चली आअी हू। पर यहाँ देखती हू तो अभी अुमी गदगी मे मुझे वरसो सडते रहना पडेगा। हरे, हरे, भगवान, मै अव अेक दिन भी अुम तरह सडना नही चाहती। अिस शरीर से मैं अव अूव गअी हू। तुम कटक की चिट्ठी लाअी हो अत मै फिर अेकदफा तुमपर विश्वास करती हू, मैंकडो आत्मीयता का दिखावटी अभिनय करनेवालो ने मुझे अितनी दफा विश्वासघात करके धोखा दिया है कि, आपभी मुझे धोखा देगी ही नहीं यह निश्चित रूपमे मै नही कह सकती। गुस्से में मत आअियेगा। मै आपको झूठा नही कहती हू,—अपने दैव को कहती हू। पर तो भी मैं आपकी गोद में अपना सिर देती हू। काटना हो काट डालिये। मा समझती हू आपको, पैर पडती हू आपके, मुझे आप धोखा न दीजियेगा। नही तो कटक वावूके नामसे मैं जो अपना हृद्गत आपको वतला रही हू, वह आप अधिकारियो को जाकर कही सूचित कर वैठें और मेरे सिरपर अेक नया ही सकट टूट पडे। डरनेकी जरूरत नही न मुझे अुस वात से?

"अच्छा, तो कटकसे कह दीजिये कि, यदि अुन्हें मेरा छुटकारा तीन चार महीने के भीतर करना सभव हो तो मैं जीवित रहूँगी। मै अितनी कठोर, अितनी साहसी और अितनी कृत्या वन गअी हू, दुष्टो में भी दुष्ट लोगो की सगत की शराव जवर्दस्ती पिलाये जानेपर अितनी दुष्ट वनगअी हूँ कि, अपने छुटकारे के लिये मै हर तरह का साहस, कपट, क्रूरता करने से हिचकिचाअूगी नही। पर यदि अिन चार छै महीनो में अिस कैदखाने से ही नहीं वल्कि अिस गलीज दुर्दशा से मुझे छुटकारा नही मिला तो मै आत्मघात का यत्न आत्मघात सिद्ध होने तक निरतर करती चली जाअूगी। और दस पाच वरस तक कारागृह के नियमानुसार मैं यहा विलकुल जिंदा नहीं रहूँगी, यह निश्चित है। देखिये भाजी, यह मेरा निश्चय कटक तक पहुँचाने का, तथा किसी अन्य को सूचित न करने का कष्ट आप करेंगी न? मुझपर ये दो अुपकार करने की दया आप दिखलायेंगी न? हा, अेक और अत्यधिक महत्त्वका शब्द!—कटकवावू मे विनति है कि, यदि वे अिस वक्त सुखमें हों तो मेरे अिस संदेश को सुनकर अैसा कोअी भी कृत्य न करे, जिससे अुनकी

जान फिर खतरे मे पडे ! पर सचमुच, 'मेरा छुटकारा करो' यह मेरी पहली विनति अिस दूसरी विनति से सर्वथा विसगत है, नही ? न, न, माजी, मै चूक गअी, मेरी पहली विनति अुन्हे विलकुल न कहिये, अुनमे अितनाही कहिये कि, मै समाधानपूर्वक हूँ, और तुम आनद से हो यह सुनकर खुशी हुअी—अितनाही कहिये ! शपथ अ ! माजी, मैं जो बोल गअी हूँ, वह बोली ही नही हूँ, अैसा समझ कर ही चलियेगा अ ! नही तो मेरे छुटकारे के लिये कटक कुछ न कुछ खतरनाक काम कर बैठेगा, और कोअी निष्कारण बुरा प्रसग अुसपर आगुजरेगा !—क्या ? अब आपके साथ की यह मुलाकात खत्मही करनी चाहिये ? अच्छा, जाती हू मै ! हा, बिलकुल चुपचाप अिस दरवाजे से अिस प्रकार से लुक छिपकर निकल जाती हू ! पर माजी, हाथ जोडती हूँ, मुझसे अिसी तरह कभी कभी मिलनी रहा करेगी न ?—कौन ? कोअी आरही है ? गअी ही मै, देखिये ! "

अनसूया जमादारनी ने कटक की मुलाकात की जो बिखरी हुअी बाते कही, अुनका अपने मनमें सुसगत क्रम लगा कर कटकने मालती के अुस मुलाकात के भाषण को अिस तरह मनही मन जोड लिया ! अुसको मनमें दुहराया तिहराया, अुस तन्मयताकी स्थिति मे मालती द्वारा हुअे हाथ के अिशारो का अुसने भी बीचबीचमें अनुकरण किया और अुसी झोक में वह झपाझप रास्ता तै करने लगा।

अुतनेही मे अुसे याद आयी ' मालती बदीगृहमे किस कामपर है, अुसकी प्रकृति (तदुरुस्ती) कैसी दिखाअी दी ' अिस तरह अुसने अनसूयासे जब सवाल किया था तब अुसके द्वारा वर्णित अुसकी दुर्दशा ! बदीगृहकी रसोअी के काम में अुसे डाला था। वहा का अुसका चित्र अुसके मन मे खडा होगया ! बिलकुल सूख गअी हुअी, घुटनेतक अेक मोटीबाटी चिथडी पहनी हुअी, मोटीबाटी बदीगृह छापकी अेक अँगिया पहनी हुअी, अेक हफ्ते मे जो कडछीभर तेल मिलता अुसी को बचा बचा कर अिस्तेमाल करते हुअे सिर्फ औषध की तरह जिन बालोपर हाथ फेरने भरके लिये अुपयोगी, जिन बालो को अँछने के लिये यत्न नही, अैसे अुलझे हुअे, पसीना-पसीना होकर प्रत्यह चिपचिपाते जानेवाले, और अुन गँदली, अमगल, अुलटे पजे की चुडैलो जैसी सैकडो स्त्री कैदियो के नीच सहवास मे, जूआ और

लीखोसे भरे हुओ अपने बालो का जैसे तैसे अबाडा बाधी हुअी, जिसके शरीरमे चोर वुखार आता रहता है, अैसी, और वैसी स्थिति में ही बदीगृह के अेक तपे हुओ टीनो की छत के नीचे, भट्टियो की तरह भडके हुओ, वडे वडे चूल्हो की असह्य अुष्णतामें, वडी वडी देगचियो में, भात और भाजियो के ढेरके ढेर पकाती हुअी, अुवालती हुअी, घुटनेतक आनेवाले आटेके ढेरो को कूटती हुअी, अुनकी दो-दो सौ रोटियाँ सेकती हुअी, दिनभर शरीर सना रहता है जिसका अैसी मालती अुसके समक्ष खडी होगअी । अुसी दिन रसोअी के कामपर रहनेवाली स्त्री वॉर्डरने मालतीसे चोरी छिपे ४-५ सेर आटा मागा। मालती ने अधिकारियो की चिट्ठीके सिवाय वह देना नामजूर कर दिया। अिस पर वार्डर ने झूठमूट के आलसीपन का आरोप अुसपर लगा कर नीच और जैसी मुंहमें आअी वैसी गालियाँ देनी शुरु की। तिसपर मालती ने भी अुलट कर अेक गाली दे मारी—अव वह भी कितनी ही नअी नअी गालिया सीख गअी थी ।—यह सुनतेही दो तीन दुष्ट स्त्री वॉर्डरोने पकडकर अुसके फडफड मुहमें मारा था । अनसूया जमादारनी ही वहाँ अुस बीच आगअी अत मालती का पक्ष सही सावित हुआ। नही तो विना कसूर के मार खाकर भी अुसी को अुलटे अुद्दडपने के अपराध के नामपर अधिकारियो के सामने खीचकर ले गये होते, और सजा दी होती ।

कटक के मानस-चक्षुओ के सामने अुन राक्षसियोद्वारा मुह पर फडाफड मारने के कारण धांय धांय रोती, सतापसे चिल्लाती, निरुपाय होकर अदरही अदर कढती हुअी वह मालती विलकुल राह रोककर खडी हो-अुस तरह खडी रही । करुणा से बेचैन हुओ हुओ अुस कटककी आखो में से आसू टपटप करके गलने लगे, अुसकी दृष्टि बाष्पधूसर होगअी ।-पर तो भी अुसके पैर सीधे तौर पर वह रास्ता झपाझप तै करते हुओ चलेही जाते थे आगे ।

अिस सब करुण वृत्तात की दुखद स्मृतियो से भर आये हुओ अुसके चित्त में, पानीयीभूत अुसकी अुस वाष्पाकुल दृष्टि के आगे, अगला कोअी निश्चय सुस्थिर होकर आया ही नही । आगे का विचार वहुत कुछ निश्चित था ही । कुछ भी क्यो न हो जाय अब मालती का और अपना अिस बदीवास से छुटकारा करना ही होगा। अुस का आत्मघात हर हालत में टालना ही होगा । आयुष्य मे के दो ही दिन क्यो न हो, वेही दो दिन अुस साहस कार्य

के कारण आयुष्य के आखीर के सावित हुअे तो भी, मरने से पहले दो दिनही क्यो न हो, पर मालती के गाढ आलिंगन में, प्रीति की गाढ तन्मयता के स्वर्ग सुख का अुपभोग करकेही छोडना है। अुसे सुखी करना है, खुद सुखी होना है ।।

अितने में, विचारो के अैसे असयत कल्लोलमें, अेक आध, दीखने मे विलकुल क्षुद्र दिखाअी देनेवाली अडचन अकस्मात् ध्यान में आते ही वडेवडे मनोरथो की आकाक्षा जैसे अेकदम ठिठका देती है, छोटासा पौर के वरावर का विच्छू किसी महारथी वीर को भी जैसे झट्से विव्हल वना डालता है, अुसी तरह अेक शका कटक के अुस स्वर्ग-सुख की मधुर कल्पना को अेकदम किरकिरा कर गअी। ' गाढ आलिंगन में अुसे सुखी करना है, दो दिन तो अुसकी सगतिका स्वर्गसुख अुपभोगना है ! ' अिस रगमें अुसका मन रगा जा ही रहा था कि, त्योंही मन ही मन किसी ने अुसे झटका दिया, ' अरे, पर वह कितनी सुस्वरूप और तू ?—कितना कुरूप ! अुसका सगम तुझे स्वर्ग प्रतीत होगाही–पर अुसे ? '

अुसका अकस्मात् विरस हुआ। क्षणभर किशन सुन्न होगया ! सुस्वरूप ही मालती को शाप महसूस हुआ, कुरूप ही किशनको शाप महसूस हुआ। अुस चमत्कारिक विचारके आते ही अुसको अपने आप पर हँसी आअी। अुसका मन कुठित होगया। कुठा ही में हँसा–पर अुसकी गति मात्र कुठित नही हुअी। स्वयचल (Automatic) यत्रकी तरह अुसके पैर झपाझप मार्ग निकालते हुअे आगे वढ रहे थे। अपने को सरकारी नियम के अनुसार ठीक वक्त पर वदीवानो की वैरक में पहुँचना ही चाहिये, यह यद्यपि अुसका मन भूल चुका था, तो भी ज्ञानततुओ की कुछ ततुअें अुमे भूले नही वैठी थी !

कुठित हुआ हुआ अुसका मन अनिष्टमें से यथाशक्ति अिष्ट तात्पर्य निकालने लगा कि, ' तो भी चिंता काहे की ! वह मुझ सरीखे कुरूप पर अनुराग मे अनुरक्त हुअी नही तो भी मेरे स्नेह को वह दूर नही करेगी ! रूपकी अपेक्षा शील का आकर्पण अधिक मधुर लगे अितनी वह स्वत ही सुशील और सुरुचि युक्त है ही ! अुसके सग का सुख न सही तोभी सगति का सुख तो मुझे दुष्प्राप्य नही होगा ! अुसे तो वह स्वयही चाहती है, अिसमे सदेह नही ! '

अिन विविध भाव भावनाओ के कल्लोल मे अुसका मन अुलझाही था कि अुननेही में अुनके नेत्रो ने, किसी पहरेदार की तरह हिला कर अुस-

के मनको जगा दिया, 'सावधान, वह देख, वदिवानो की वैरक दिखाअी देने लगी, देख! क्या करना है, यह ठहराने ही में रास्ता खत्म होगया! कैसे करना है, अुसका अुपाय क्या है?'

यो देखें तो, सारा जन्म काले पानी की गदगी में सडते हुअे पडना नही है, मौका मिलते ही कैद की वेडियो को तोडकर निकल भागना है, यह निश्चय किशन का कोअी आज ही का था, सो नही! काले पानी पर आते समय ही अुसने यह निश्चय किया था! रफिअुद्दीन सरीखे अघोरी मनुष्य को अपने अस्थिवैर का परिचय न देते हुअे अुसी अुद्देश्य से अपने नजदीक किया था। अुसके साथ गत पाँच वरसो में कालेपानीपर भी अुस निश्चय के सवध मे अुसने गुप्त रूप से अनेक वार खासी चर्चा भी की थी, और अुस चर्चा के अनुरोध से ही अुसने लकडीकटाअी के काममें अपनी नियुक्ति करवाली थी। अितनाही नही, अुस लकडीतुडाअी के काम पर आनेवाले वदियो का जव वह मुख्य वदीवावू वना, अुस समय अुसने अपने द्वारा तथा दूसरो के द्वारा कोशिश करके युक्ति से रफिअुद्दीनको भी अुस कामपर आनेवाले अपने हाथ के नीचेके कैदियो में भरती करवा लिया था। परतु अुसे मालती का कुछ भी पता न चलने के कारण अुस साहसके वारे मे अवतक अुसने चुप्पी साध रक्खी थी! आज अुसके मन ने जो अुस सवध में चुप्पी तोडी, अुसका कारण मालती का वह संदेसा—वह दुर्दशा की तथा आत्मघात के निश्चयकी अत्यत चिताजनक खवर ही थी!

काले पानी पर के आजन्म कैद की लोहशृंखलाओ को तोडने का साहस कोअी आसान वात नही थी, सिर्फ जीभ हिलानेमे वह सिद्ध होनेवाली नही थी। सिरको काटकर जो हाथमें ले सके वही अुस काममें हाथ डाल सकता है! यह किशन को मालूम था। वह डर अुसके मन को खा रहा था, अिसी लिये आजतक वह सिर्फ स्कीमे ही वनाता जाता था और धीरे धीरे अुस दिशामें वढता जाता था। पर पासा सिर्फ हाथमें लेकर वैठनेवाले और फेंकने से डरनेवाले जुआरी की तरह, कानूनकी मर्यादा से वाहर पैर रखने में वह हिचकिचाता था। आज अुसने वह पग अुठाने का धीरज दिखलाने का भी निश्चय किया। वह साहस कितना भी जानपर वीतनेवाला हो तो भी दिवसगति पर धकेलने का वह प्रश्न नहीं रह गया था—आज वह अत्यत निकट था, अव

अत्यधिक त्वर्य (urgent) प्रश्न होकर वैठ गया था । और अुसकी वैसी निकट की चर्चा भी अव रफिअुद्दीन के साथ करने का अुसने निर्वारण किया।

पर मालती के वारे में मिली हुअी जानकारी ? वह अुस दुर्जन को वताअी जाये या नही ? अेह । किशन का साथही साथ निश्चय हुआ । अुसका अवाक्षर भी रफिअुद्दीनको, कम-अज-कम आज तो वताना योग्य नही । "रफिअुद्दीन को यह भी वताना नहीं है कि अपने साथही अपने को छुटकारा कराना है मालती का भी —"

मनमें ही अुच्चारित अुस नामके साथ अुसने खस करके अपनी जीभ चवाअी । कुछ अर्से से वह मनही मन जव मालती के सवंध मे विचार करता आ रहा था तव अुसके लिये 'मालती' अिस प्रेमल नामही की वह योजना करता आ रहा था। कटकी नामके प्रयोग से अुसके मनमे, मालती नामके साथ सवद्ध मूलकी प्रेमल भावना किसी भी अवस्था में जागती नही थी अत वह जव तक मन की भाषामें वोलता रहा 'मालती' नामही का अिस्तेमाल करता रहा था। पर मन में आकठ भरा हुआ वह नाम यदि भूलकर ओठोपर खिँड गया तो । तो अपना और अुसका आजतक छिपाकर रखा हुआ रहस्य खुल जायगा, रफिअुद्दीन का पुराना अस्थिवैर जाग जायगा, अुसकी (मालती की) माका अपना पुराने खटले का सारा सवध सामने आजायगा, अविद्यमान विघ्न वाधायें सामने अेकाअेक आकर खडी हो जायेंगी । पुन विस्मरण न हो जाय, अिस वृद्धि से वह स्वत गुनगुनाता हुआ घोखता चला, "मैं कटक, कटक !—और वह मालती नही—कटकी ! कटकी ! कटकी ! मेरी मगी वहन कटकी ! "

—और अुसका पैर वैरक के आवार मे ज्योही पडा त्योंही कैदियो की वैरको मे लौट आने की रातकी घटा का पहला ठोका घन्नन् करके घन-घना अुठा। 'पहुँच गया वावा, वापिस ठीक वक्त पर' अैसा कटकने अेक दीर्घ स्वास छोडा। और मट् से दरवाजे के सामने ही पडी हुअी अेक काठकी पेटीपर, पैरो पर पैर डालकर वैठ गया।

थोडी देर में वदीवानो का सारा खानापीना खत्म हो जाने पर कटक-वाबू वैरक से पर्याप्त आगे अेक खुली जगहपर टहलने लगा। वैरको

के कैदियो का रातको सोने की घटा होने से पहले कुछ दूर तक स्वच्छदतया टहलने बोलने-बैठने का वक्त था वह। अुसपरभी कटक तो वहाँ का मुख्य वदी बाबू! कुछ देर अकेला टहलने के बाद वह आजू बाजू से साफ दिखाअी दे अैसी अेक अूची जगह पर बैठगया और अुसने पुकारा,

"अुद्दीन! रफिअुद्दीन!!" यह सुनतेही—

"जी! जी! कटकबाबू? आता हूँ! आता हूँ!" अैसा अत्यत आतुरता से अुत्तर देता हुआ रफिअुद्दीन तत्परता से खडा होगया!

अब रफिअुद्दीन अिसीतरह कटक बाबूके बिलकुल आधे वचन में व्यवहार करता था!

क्यो कि रफिअुद्दीन को जिसदिन वह कोडो की भयकर सजा हुअीथी और बुखार के मारे वह फनफना कर बीमार पड गया था, अुसी वक्त बदीगृह के रुग्णालयमे डॉक्टर के हाथ के नीचे के शिशिक्षिपपित मिश्रको (Apprentice compounder) में कटककी नियुक्त हुअी थी। रफिअुद्दीन अुस रुग्णालय मे बुखारसे बहुत दिनो तक बिस्तरेपर पडा रहा अुस वक्त कटक ने अुसे अुस असहाय स्थितिमें बहुत कुछ मदद की। दवादारू, और कैदियो की अपेक्षा अधिक सहूलियते, चोरी छिपे जरा अधिक दूध की धार, शक्कर की पुडिया, तमाखूकी चुटकी भी अधिकारियो की आँखे बचाकर पहुँचाअी थी। रफिअुद्दीन को पुन कोल्हूके ही कामपर भेजने का दिन यथासभव दूर करने के लिये, 'सख्त काम के लिये अभी अयोग्य' अैसी समति डाक्टरो की ओर से कटकने ही अजीजी करके लिखवाअी थी। रफिअुद्दीन की गिनियो की गरमी अविद्यमान-सी हो चुकी थी, कोडो की मार का अच्छा डर बैठ गया था, अत वह आगे चल कर दीगअी कडी मसक्कतो को चुपचाप करता चला गया। कटक की जैसी जैसी पदवृद्धि होती चली गअी, रफिअुद्दीन भी वैसा वैसा अुसका आज्ञावाहक, चरणचुबक बनता चला गया। अुसके साथ अपना कोअी लगाव नहीं है, अैसा कटक अूपर अूपर अिसलिये दिखाता था ताकि अधिकारियो को सशय न हो। रफिअुद्दीन को भी वैसाही करना चाहिये, यह निश्चय हुआ था। पर अदर से सब प्रकारकी मदद कटकही रफिअुद्दीन को करता था। अिसीवास्ते रफिअुद्दीन के दिन अच्छे गये। और अतमे तीन वर्ष

के भीतरही अुसको कष्पकारागृहसे वाहर निकालकर खुली वैरको के कैदियो के काम पर भेज दिया गया। अुस के वाद कटक की ओर वढती हुअी। वह ज्योही लकडीतुडाअी का मुख्य वदी वावू वना त्योही अुसने अदरकी युक्ति से रफिअुद्दीन की भरती भी अुस कठिन काममें लगनेवाले हट्टेकट्टे श्रमिको में करवाली। कटक के आश्रय के वगैर अपनी दुर्दशा को कुत्तो ने भी न खाया होता, यह रफिअुद्दीन पूरी तरह जानता था। तस्मात्, कालेपानी पर आतेही कटक के साथ अच्छा व्यवहार किये जाने का रफिअुद्दीन के दुष्ट हृदय को जो वैषम्य प्रतीत होता था वह अव नष्ट हो चुका था, और अुलटे अव वह सदा सर्वदा मनसे प्रार्थने लगा था—'दुवा' करने लगा था कि, 'कटक वावू की वढतीही वढती होती चली जाय!' अुसकी दुष्टाअी वदल गअी हो अिस कारण से नही, पर दुष्टो जालिमो में ही अेक खास वात वहुधा अैसी नजर आती है कि, जिन लोगो के हाथमे अुनका हिताहित अगतिक रुपसे पहुँच जाता है, अुन लोगो के वे अुतने समय तक तो पूरी तरह से मन पूर्वक पैर चाटने लगते है।

रफिअुद्दीन तो पहलेही से साहसी, अुलटे कलेजे का, भयकर अुपद्व्यापी! अच्छे कामो में यदि विनियोग किया जाता तो, वही गुण धैर्य, पराक्रम कहलाता—अैसा साहसी—अैसा शिकारी कुत्ता! जो पालेगा, जिसके हाथ मे अुसका हिताहित, अुसके छू वोलते ही जो सामने आये अुसको फाडकर खानेवाला!

वह अव कटक वावू का पालतू कुत्ता था! अिसी लिये कटक वावू के 'यू! यू!' करतेही अुसके सामने अुछलते हुअे आकर अिस तरह लार टपकाता हुआ खडा होगया!

कटकने अुसे 'वैठो' कहा। और यह देखकर कि दूर तक कोअी भी नही है, कटक अुससे धीमेसे वोलने लगा—

"अुद्दीन! तेरी और मेरी कालेपानी की तरफ जव रवानगी हुअी थी, अुसी दिन कालेपानी से भाग निकलने की प्रतिज्ञाअें हमने की थीं न? वस तो! अुन्हे अव सही करके दिखायेगा?—चर्चा की जरूरत नही, कभी की वात नही—! विलकुल आज से सिर हाथमें लेकर, अुस राहपर लगना है। है तू सिद्ध?"

"अेक पैरपर ! आपकी जानके वास्ते जान दे दूंगा, पीछे नहीं हटूंगा। पर योजना मात्र व्यवस्थित होनी चाहिये ! बहुत दुर्घट कर्म है वह ! असफल हो गया तो—"

"जीवितावस्था मे असफल ही न हो, अैसी ही स्कीम होनी चाहिये ! वैसी बनायेगा तभी तू खरा रफिअुद्दीन ! कालेपानी पर से भाग खडा हुआ प्रवीण पापी ! "

वह स्तुतिही थी अुसकी ! छाती फुलाकर रफिअुद्दीन बोला,

"कटक बाबू, वह चर्चा मैंने आपसे अनेक मर्तबा की है। मैंने भी अपनी अेक योजना आकी है पर भयकर "

"पहले सुना तो सही, क्या है वह ? तब पीछे से 'भयकर' की बात देखेंगे ! "

रफिअुद्दीन खासा, खखारा, चारो तरफ कोअी आ तो नही रहा है, यह फिर से देखकर, अपना वह सिर्फ कहते सुनते वक्तही शरीर थर्रा जाय अैसा भयकर निश्चय सुनाने लगा !

हिंदू संस्कृति का नया जानपद : : : १५

आठ दस दिन हो गये, वृद्ध अप्पाजी अपने अुस 'दाखलेवाले' गावकी झोपडी मे बिस्तरपर बीमार पडे थे। सत्तावन के स्वातन्त्र्य युद्धमे सेनापति तात्या टोपे की तरफ से लडते समय गोली लगने से जख्मी हुअे हुअे अप्पाजी के अुस पैर में तीव्र वेदना हो रही थी। जन्मभर कालेपानी के बदिवास कठोर और कडी मसक्कत से जर्जरित अुनकी देहयष्टि अब क्षीण होने और सत्तर से भी अधिक वरस की अुम्रके कारण थक चुकीथी और अब अुनके हृदयमें भी असह्य पीडा अुत्पन्न होती थी। अिस बीमारी के कारण आगन मे खुली जगह हमेशा पडी रहनेवाली अुनकी वह खाटपर की बैठक भी अिस

हफ्ते सूनी पडी थी, और अुनका बिस्तरा अदर झोपडी ही में चला गया था। अिस बीमारी मे न जाने अुनका अत भी कब बोलते बोलते हो जाय, अिसका अुन्हे भरोसा नही था अत अेकदफा कटक आकर अुनसे मिल कर जाय, अैसा अुन्होने कटक के पास बहुत जरूरी सदेशा भेजा था। आज रविवार है, आज अप्पाजी अुस अपनी झोपडी में के बिस्तरेपर कराहते हुअे पडे रह कर भी खिडकीमे से बार बार बाहर झाकते थे और अुस टेकडीपर से कटक अुतरता हुआ कब दीखता है, अिधर अुनकी आख लगी हुअी थी।

अुनके सामने के आगनमें पाच-पचास कच्चे नारियल की फांके सूखने के लिये डाली हुअी थी। अदमानमें अिस तरह कच्चे नारियल काट काट-कर अुनकी फाके किंवा गोल गोल कटोरियाँ सुखा कर के अुन्हें बेचनेका धधा दाखलेवाले लोगो की अुपजीविका का अेक साधन रहता है। अुनका तेल भी निकालते है। वहाँ सहस्रावधि नारियल के घरेलू और सरकारी पेड बोये हुअे है। अप्पाजी का भी वह अेक घरेलू धधा है। अुस सारे आंगनमें सुखाने के लिये डाले गये नारियल की फाको पर पक्षियो के झुडके झुड आकर बैठते थे। अुडाये जाने पर अुड जाते, आजूबाजूके झाडो पर जाकर किलबिल किलबिल करना शुरू कर देते, फिर मौका मिलते ही, फाको पर चढाअी कर बैठते, अिस तरह लूटमारी के धधे में वहा के पक्षियो के झुड पूरी तरह प्रवीण हुअे हुअे थे।

वहां के जगलो और बागो मे रग बिरगी अनेक सुदर पक्षियो की चहल पहल बनी रहती है। अिनमें तोता, मैना, नीले और सफेद सतेज रग का, लबी और बलोत्कट चचुवाला मछलियाँ मारने में प्रवीण राघव पक्षी, मजुल बयाल पक्षी और विशेषत बुलबुल अित्यादि कितनीही जाति के पक्षियो को प्रथमत भारतवर्ष से ही, अुपनिवेश बसाने के समय, सरकार वहा ले गअी थी अैसा कहते है। पर अुनकी समृद्धि के लिये वह अरण्य और वह भूमि पहलेही से अत्यधिक अनुकूल होनी चाहिये, यह अुनकी वहापर आजकी सख्या और चैन देखकर सहजही दिखाअी पडेगा। कौवे चिडियाँ वगैरह का तो बस बाजार गरम है वहाँ। अदमान के बुलबुल तो बहुत ही खूबसूरत! यह पक्षी चिडियो से थोडासा बडा, सिरपर छोटासा सुदर तुर्रा, आखो के पास किनारो पर थोडी सी लाली, नन्ही सी अेक पूछ, अदामे हमेशा अूपर अुठाअी हुअी, अेक

आब तसवीर की भी रेखांकित आकृति, फुर-फुर फुदकनेवाली और भर्र से अुड जाने की चपलता का तो कुछ न पूछिये! और शब्द अितना मंजुल! नन्हा पर चटपटा और मधुर कि मानो कामिनियो के हाथो के कंकणो का कलरव! अैसे अुन अंदमानी बुलबुलो के झुंडके झुंड सुखाने के लिये रक्खे हुवे नारियलो की फाकोंपर चढाअी करते समय अंदमान के आंगनो आंगनो में किलबिल करते हुअे दिखाअी देते है।

अप्पाजी के सारे आंगन में सुखाने के लिये डाली हुअी अुन कच्चे नारियलो की फाकोंपर भी बीचबीचमे अुन बुलबुलो के झुंड चढाअी करते थे और अुन पक्षियो को भगाकर अुन खोपोंपर पहरा करने का कामभी करते थे अप्पाके दो पालतू बुलबुलही! —अुषा और मोहन!

कौवे, चिडियाँ, मैना प्रभृति अितर पछियो को भगाने में यद्यपि अुषा और मोहन बिलकुल कमी नही करते थे तथापि बुलबुलो का झुंड आंगनमें अुतरा कि, अुन्हे भगाने की अपेक्षा अुनका तमाशा देखने की ओर ही अुन अुत्सुक बच्चो का आकर्षण अधिक दिखाअी देता था। बुलबुलो की अुन हमेशा खडी की हुअी पूंछ के नीचे गुलाबी रंगके मृदु मृदु परो का अेक नन्हासा सुरेख फूल रहता है। वह पक्षियो का झुंड चोंच मारमारकर अुन खोपों की मीठी मीठी फाकों के खाने में जब मस्त हो जाता है, तब अुनकी आनंद में खडी की हुअी अुन पूंछो के नीचेके वे रंगीन परो के वृत्त, अैसे सुहाते थे मानो आंगन भर में गुलाब के नन्हे फूलटी फूल बिखर गये हो! अुनसे मोहन और अुषाका बहुत अधिक मनोरंजन होता था।

अप्पा भी अुन बुलबुलो का तमाशा देखते वक्त असावधान स्थिति में अपना दूसरा पैर फट्से सीधा कर बैठे और अुसमें अेकदम दर्द पैदा हो अुठी, 'मैयारी!' कह कर वे किंचित् चिल्लाये और कराहने लगे।

"अुषे! अरी, अप्पा कराहते है!" घबराये घबराये मोहन और अुषा आंगनमें से दौडते हुअे अप्पा के कमरे में गये!

"क्या हुआ अप्पाजी?" मुंह फीका कर के अुषा ने हिंदी भाषामें पूछा। क्यो कि वे बच्चे मराठी की ही भांति किंवा मराठी की अपेक्षा हिंदी ही में अधिक बातचीत किया करते थे। अंदमान में निवास करनेवाले मराठी बंगाली, मद्रासी, पंजाबी वगैरे सब मातापिताओ के पेटमें अुत्पन्न हुअे बच्चे

हिंदी ही में बोलने लगते है । वही वहा पैदा हुओ की असली मातृभाषा रहती है । अपनी अपनी प्रातीय भाषा जिन्हे अुनके मातापिता शौक के खातिर सिखा देते है, अुतनो ही को वह आती है ?

"कहा दर्द होरही है मेरे अप्पा को ? यहा ? मैं दवाअू, देखिये तो सही, अब आराम महसूस होगा !" अुषाने आग्रह किया, मोहन ने भी जिद की । अप्पाद्वारा अनुमति मिलतेही मोहन अुनके कधे दवाने लगा और दूखने वाला पैर अुषा दवाने लगी । अप्पा खिडकी मे से बाहर टीलेकी तरफ देखते रहे । कटक की राह देखते देखते अुससे क्या कुछ कहना है, सो वे विचार करने लगे ।

तीन मिनिट,—चार मिनिट, पाच मिनिट ! अुषा अपने कोमल और नन्हे हाथो से जितना लगाया जा सकता था अुतना बल लगाकर पैर दवा रही थी । पर अप्पा का ध्यान विचारो में लीन था ! वे 'बस' कहना भूलगये ! अुषा के हाथ दूखने को आगये । 'बस अच्छा बेटा ! ' अिस तरह प्रशसा पूर्वक आप्पाजी कहे और कामके पूरे होने की खुशीमे वह दवाना बद करे— अैसी अुसकी अुत्कट अिच्छा रहती थी । पर अुसके हाथ थकने लगे तो भी अप्पा बस ही न कहे । अपने आप 'थकगअी' कहकर दवाना छोड दे तो मोहन हसेगा !! वह अुसके लिये कठिन होगया । अधिक दवाना भी कठिन होगया ! थकते थकते वह रूठगअी, रूठते रूठते वह चिढ अुठी और अतमे अप्पा के पैरो पर वह गुस्सा निकालते हुअे अुसने दो चार चपत मारे और रोना शुरू किया !

"मेरे हाथ टूटगये तो भी तुम बस कहके नही देते !"

अुस चपत और रोनेके साथही अप्पा भी होश मे आये, हसे और प्रशसा पूर्वक अुषाके सिरपर हाथ फेरते हुअे समझाने लगे—

"चुप, चुप ! अरी, तो तू दाबती ही काहे को रही भला, हाथ दूखने तक ? मुझे तेरा दवाना अितना अच्छा मालूम हो रहा था कि बस कहने की अिच्छा ही नही हो रही थी । अिन नन्हे हाथो मे कोअी जादूका गुण है हमारी अुषा के ! वैद्यो की औषध से आजतक जो ठीक नही हुअी वह दर्द बिल्कुल नही सी होगअी देख, तेरे दवाते ही !"

"वह देखिये, वह देखिये, अप्पा, कटक बाबू टीलेपर से आते हैं, देखिये!" मोहन बीचमें ही कहकर अुठगया।

अप्पा सम्हल कर बैठ गये। वे दोनो लडके दुड्दुड् दौडते गये, कटक बाबूके सामने जाकर कौन अुन्हे पहले छूता है, यही अेक अुनके वास्ते नया खेल होगया था।

"कटकबाबू, यह दर्द मेरे हृदयमें बीच बीचमें जबसे अुठने लगी है तब से मैंने यह समझलिया है कि, अब मेरा अंत नजदीक ही है!" अेकांतमें ले जाकर अप्पाजी कटक से कहने लगे, "पर अुसमें दुःखकी कोअी बात नहीं! हम जैसो के मरने का अर्थ है-छुटकारा! पर तुमसे अेक मर्तबा मुलाकात करने की अिच्छा होने लगी थी। तुम कितनेही महीनो से अपनी सुरक्षितता को खतरे मे डालकर भी यहा आते हो, मेरे परिवार की स्वहस्तेन परहस्तेन जितनी हो सके मदद करते हो, प्रेम करते हो, अतः हमें भी तुम्हारे प्रति प्रेम मालूम पडता है। तुम्हारा आभार!

"पर अुसमें आप मेरा आभार मानें अैसा मैंने कुछभी नही किया। अुलटे अप्पाजी, मैं ही आपके अुपकारो का ऋण चुका नही सकूगा। अिस भयंकर बंदीवास में पडने के बादमे ममता के मनुष्य की मेरे हृदय को बिल्कुल भूखही लग गअी थी। आपके परिवार मे मुझे वह ममता अुपलब्ध हुअी। पितृतुल्य आप, स्वसृतुल्य अनसूया भगिनी औरस पुत्रो के तुल्य ये बच्चे-ये अिन सबके प्रेमल सहवास में मेरे जो कुछ क्षण गये है, वेही मेरे लिये, जीवित रहना चाहिये अैसी प्रतीति करावे अितने विलोभनीय! दुष्टता, दुर्गुण और दुराचारोंमें भिनभिनाये हुअे अिस बंदीवास के अुत्तप्त वातावरण में मे अिस आपकी कौटुंबिक-ममता की शीतलछाया में और बच्चो के प्रेमल हास्य की चादनी में क्षणभरके लिये आतेही मुझे नरकवास में नंदनवन का स्वप्न पड रहा हो अैसा प्रतीत होता है!"

"तो फिर कटकबाबू, मेरी भी आपसे यही विनति है कि, आप मेरे पीछे मेरे अिन बच्चो को अपना समझें। अिन्हे अपना समझकर अिस घरको भी अपनाही बनाले। आप जैसा सुबुद्ध, सुशिक्षित और सुशील मनुष्य अिस पापाचारी बस्ती में दुर्लभ! अिसीलिये आज मैं यह अपना परिवार आपके हाथो सौंपता हू! आप अिसे अपने हाथमें ले तो मैं सुखसे मरूगा!"

"अप्पाजी, आपके संबंधमें किसी हुतात्माके संबधमें प्रतीत होनवाली अुत्कट आदर भावना अुत्पन्न होती है मेरे मनमें। अुसमे भी जो लोग सफल होते है, अुन स्वातंत्र्यवीरो की अपेक्षा आप जैसे, जिन स्वातंत्र्य सैनिको के माथेपर सफलता लिखी न होकर केवल जुल्मही जुल्म और यातनाअें ही यातनाअें लिखी होती है, अुनके प्रति ही मुझे अधिक गौरव अनुभूत होता है। आपकी मृत्युको किंचिदपि सुखयुक्त बनानेवाला कृत्य यदि शक्य होता तो मैंने अुसे अवश्य स्वीकार किया होता। पर मै तो स्वत ही सतीका वानः लेकर खडा हू! अिस कालेपानी के भीषण कालपाश को तोडकर निकल भागने का प्राणोपर बीतनेवाला खेल मैं खेलनेवाला हू। अुसमे मै मरूगा या जीअूगा किसे मालूम?"

"मै कहताहू। कटक, अुस खेलमे मरण ही निश्चित है। सफलता की संभावना अत्यंत विरली—अपवाद। आजतक सैकडो मारडाले गये अुस साहस में, डूब गये समुद्रमें। गत पचास वरसो में पचास आदमी भी कालेपानी पर से भाग जाकर देशको पहुँचे हो और सुखसे रहे हो अैसा मुझे तो याद नही आता।"

"पर तो भी अुन पचासो मे मै अिकावनवा बनूगा। नही तो मौतकी राहपकडूगा। यह देखिये, अप्पाजी, अिस कालेपानी के दुर्वृत्त, दुराचारी, और असह्य जुल्मो के क्षुद्र जगत में अिसतरह जन्मभर जीते रहनेमे तो कौनसा राम है। व्यक्ति का विकास नही, भावनाओ की अुडान नही, मनुष्यता का मान नहीं किसी अुच्च और भव्य ध्येय के लिये किंवा परोपकार के लिये शरीर सुखाने का भी पावक पुण्य भाग्य में बदा नही। न स्वार्थ। न परार्थ।"

"ठहरो, अिस तुम्हारे अंतिम आक्षेप के विषयमें ही क्यो न हो, तुम्हें अेक नअी दृष्टि देने की अिच्छा है। परोपकार की—किसी न किसी राष्ट्रिय अेव अुदार कर्तव्यको अपने आयुष्य का साध्य बना कर अपने समक्ष रखने की—अुत्कट आकांक्षा तुम्हारे चित्तमें हो तो वह तुम्हारी मनुष्यता का विकास ही है। पर जिस जदमान में प्रेम की, सुख की, भोग की, किंबहुना, अन्न की बुभुक्षा तक की तृप्ति कितनी भी दुःसाध्य हो, तो भी परोपकार की बुभुक्षा किंवा राष्ट्रिय सेवाकी बुभुक्षा यदि किसी को हो तो अुसके लिये अतृप्ति का

अवसर यहाँ कभी नही आयेगा। पतितो के अुद्धार का, सुधार का काम सदैव राष्ट्रिय अथवा धार्मिक सेवा का अेक महत्त्वपूर्ण अुपाग बनकर रहेगा। और अदमान तो कह सुनकर अपराधियो और अुद्दडो का, पापियो का और पतितो का अुपनिवेश! अर्थात् परोपकार का चुनीदा कार्यक्षेत्र!"

"वह मैं अच्छी तरह जानता हू। और यदि कभी मैं अिस आजन्म कैद की लौहग्रथि से छूटकर और कालेपानी पर से निकल कर स्वदेश लौट सका और दूसरे ही नाम से स्वतत्रतया राष्ट्रसेवा कर सका तो भारतीय कैदियो को अिस कालेपानीपर भेजने की यह क्रूर प्रथा बद करवा कर यह भयकर अुपनिवेश जडमूल से बद करने का आदोलन यथाशक्ति शीघ्रता से और बलसे परिचालित किये बिना नही रहूगा। हिंदुस्तान मे भी कुछ नेताओ का ध्यान अिस प्रश्न की तरफ आकृष्ट हुआ है और कैदियो का अुपनिवेश मूलत बद करने के लिये और अिस पापभूमि के अिन सारे अमानुष अत्याचारो को जडमूल से अुखाड डालने के लिये कोशिश हो रही है।"

"पर वे प्रयत्न अुलटी दिशामें कियेजा रहे है। यह देखो कटक, किसी भी देशमे अत्यत अुद्दड, और समाजके लिये सर्वथा अुपद्रवकारी चोर, डाकू, हत्यारो का अेक वर्ग तो रहेगा ही। अैसा समाजशत्रुभूत जो वर्ग हिंदुस्तान मे रहेगा अुनके लिये नीति और कानून की मर्यादाओं का भग करना असभव कर डालने के लिये शक्ति से और बल से निग्रह किया जानाही चाहिये। फाँसी, आजन्म कैद और कोडो जैसी अुग्र शारीरिक सजाओ के बगैर अुन अुद्दड लोगो को किसी बात का दरारा (डर) नही प्रतीत होगा। अुन्हें कठोर दड और अनुशासन के पेंचमें पकड और जकडकर रखनेही से कायदापसद और समाजशील नागरिको का अुनके अुपद्रवो से बचाव किया जासकेगा, समाजमे शाति और सुव्यवस्था बनी रह सकेगी। अुस अवस्थामे महस्रावधि दडितो को अैसे कालेपानी सरीखे अुपनिवेशो में बदकर के रखना ही राष्ट्रके हित का रहता है। नही तो अुन्हे रखा कहाँ जायगा?"

"देश के अदर जेलखाने नही है क्या? अुन्ही में अुन जन्म कैदवालों को बद कर के डाल दिया जाय! अिस कालेपानी सरीखी पापभूमि में और अैसे अत्यत जालिम परिश्रम में अुन्हे जिंदा गाड कर डाल देना, यह निर्दयता तो हयी है, पर राष्ट्रका हित भी कोअी खास सिद्ध होता हो सो बात भी

नही! आपको हमें जिस नरक-भूमि में जो यातनाअें और जो जीवन असह्य प्रतीत होता है, वह हमारे साथ रहने वाले जिन सब जन्म कैदियों को प्रतीत नही होता होगा क्या? जिस दयाकी अिच्छा हम करते हैं! " अुसी को वे जालिम होनेपर भी करते ही हैं!"

"कटक-बाबू सिर्फ अुथली दया का ही सवाल ले तो दडितो को दड न दे कर खुला छोड देना ही सच्ची दया सिद्ध होगी! तुम्हें और मुझे देशमें के कैदखाने में भी रहना प्रिय लगता है क्या? आजन्म कैद तो अेक ओर रख दो अेक दिनके लिये भी कोअी अपने आपको कैदखाने में बद करवाने के लिये राजी होगा? तब क्या अुथली दया के लियेही अैसे समाजको भयकर अुपद्रव देने के अूपरही अपनी अुपजीविका और चैन चलाने वाले अुग्रप्रवृत्ति अपराधियो को खुला छोड दिया जाय? पुन अुन हिंस्र हत्यारे, बलात्कारी और अुपद्रवी मुठ्ठीभर नर श्वापदो पर दया दिखाने के लिये जेलखाने ही खुले कर डालोगे तो जिन लखूखा सच्छील पापभीरु अेव निरागस मनुष्योको अुनके अुपद्रवों के जबडो में तुम ढकेल दोगे? अुनपर दया करने की आवश्यकता नही क्या? कुछ अेक अत्याचारीयो पर दया दिखलाने के लिये निरपराध असंख्य व्यक्तियोपर अुन अत्याचारो को होने देना यह निर्दयता नहीं? यह लाख गुना अधिक क्रूरता नही? अेतावता दया की दृष्टि से भी लाखो निरपराधियो की अुपद्रवो से रखा करने के लिये अपरिहार्य रूपसे यदि कुछ थोडेसे अुपद्रवी अपराधियो को निर्दयता पूर्वक निग्रहना पडे तो वह अल्पसी निर्दयता साकल्येन विचार करनेपर महनीय दया ही सिद्ध होती है! अपराधविज्ञान का अथवा दडविज्ञानका भी मूल भूततत्त्व अेव समर्थन यही है!"

" अिसमें शका नहीं। पर देशमें के जेलखानो में— "

" वही बतलाता हू। यो देखिये कटकबाबू, देशमें के कैदखानो में आजन्म कैदिया को जन्मभर के वास्ते बद कर दें तो वह अधिक निर्दयतापूर्ण व्यवहार नही होता क्या? अुन्हे चहार दीवारी के भीतर जन्मभर सडते रहना होगा। अुनने स्त्री पुरुषो की प्रेम, मुक्तवृत्ति, सतति आदि की सारी भूख दबा कर मानसिक अुपोषण ही में तडफडाते हुअे मर जाना होगा। यह

मानसिक अत्याचार नही है क्या? पर यदि अुन्हे अिस कालेपानी जैसे किसी स्वतत्र अुपनिवेशमे अुनकी अुद्दड प्रवृत्ति को पालतू बना सकने योग्य कठोर कायदे में यत्रित करके जितनी स्वतत्रता अुन्हे दी जा सकती हो अुतनी अुन्हें दी जाय तो वे कौटुबिक और वैयक्तिक सुख अधिक भोग सकेंगे और देशके सच्छील समाज को, अुन दडितो को भोगने के लिये दी गअी स्वतत्रता से लेश मात्र भी अुपद्रव नही पहूँचता, अुसकी सभावना ही बच नही जाती। अिस कालेपानी पर आज वे हजारो अुद्दड और अुग्र लोग भी देखो किस तरह खुली तौरपर घूम फिर सकते हैं, अपनी अभिरुची के अनुसार खा पी सकते है, घरबार खेतीवाडी कर सकते हैं। अुनकी प्रेमभरी वात्सल्य, कामुक भावना ओ को भी जन्मभर पर्यवरोध नही होता और वे विवाह सुख भी भोग सकते है। पिछले अेक अपराधके लिये अुनके सारे जन्मका और अुनका सत्यानाश नही होता अन्यत्र सुधारका और सयमशील जीवन व्यतीत करने का अवसर बारबार मिलता रहता है।

"हिंदुस्थानहीमें किसी कारागारकी चहार दीवारो में बद करके सजीव कब्रमें गाडने के सदृश अवस्थामें रखना दया है अथवा कालेपानी सदृश अुपनिवेशमें अुन्हे कठोर नियमोंकी कैंचीहीमें किंतु पालतू बना कर मनुष्यता-पूर्वक जीवन का आनद कुछ कुछ अुपभोगने देना सच्ची दया है? कालेपानी पर आने के पश्चात् जो सुधर जाते है और 'दाखलेवाले' बनकर अपने बच्चोकच्चो से भरेपूरे घरो में नयाजन्म पाये हुओ की भाति सुखपूर्वक रहते है, अैसे सैकडों जन्मकैदवाले बदीलोग आज अदमान में मौजूद हैं। अुन्हें 'हिंदुस्तान के कारागृहहीमें यदि जन्मभर बद करके रखा होता तो अच्छा हुआ होता क्या?' अैसा पूछिये तब वे अुस भयकर कल्पनाके आते ही किस-प्रकार डरते हैं और 'हमें कालेपानी पर भेज दिया गया यही अच्छा हुआ' अैसा किस प्रकार कहते हैं यह देखिये।"

"यह सर्वथा सत्य है। आजन्म कारावास तथा दस दस बरस की दीर्घ कैदकी जिन्हें सजा हुअी है अैसों को भारतीय कारागृहो में बद करके रखने की अपेक्षा कालेपानी सदृश अुपनिवेशो में ही अिस प्रकार धीरे धीरे स्वतत्र रूपमें बसने देना ही अधिक दयापूर्ण है। अुद्दंडो और पतितो के सुधा-

रकी दृष्टिसे भी अच्छा है, और राष्ट्रमें रहनेवाले सत्स्वभाव नागरिको को अुनके अुपद्रवोंसे बचाने की अेवच अुन दडितो को स्वयमपि निर्वंधशील अेव सयतजीवन व्यतीत करनेकी अेक नवीन सधि देने की दृष्टिसे भी कैदियों के लिये अीदृश स्वतत्र अुपनिवेश ही अधिक अुपयोग में आयेंगे ।"

"पर अुनमें भी अिस अदमान के अुपनिवेश की तो राष्ट्रीय हितकी दृष्टिसे अत्यत महत्त्व की अेक और विशेषता है। वह यह कि यह जो महत्त्वका टापू रोगयुक्त, सूना और मनुष्य प्रतिकूल होकर पडा हुआ था और जिसको वासार्ह बनाने के लिये ही हिंदुस्थान की किसी भी राज्यसस्था ने हजारो मनुष्य और करोडो रुपये हेतुत जबर्दस्ती कभी खर्च न किये होते, वह यह अदमान का महत्त्वपूर्ण टापू कालेपानीपर केवल मरने के लिये भेजे अिन पतितो के कठोर परिश्रमोसे आज अिस प्रकार पत्र पुष्पोसे प्रतिमडित, धान्यादिकों से समृद्ध, अुपयुक्त, अुपजाअू अेव मनुष्य बस्ती मे भरा-पूरा होकर बैठ गया है। अुपनिवेशोको जीतने के लिये राष्ट्रोको युद्ध करना पडता है, पराक्रम करने पडते हैं। पर अपने राष्ट्रको यह अेक नवीन अुपनिवेश केवल अपने श्रम से सपादित करके अिस पतित अेव परित्यक्त कैदियोंके वर्ग ने मुफ्त ही में प्राप्त कर दिया है यह अेक अर्थ में सच नही क्या ? यदि ये सारे दडित हिंदुस्तान के बदीगृहो में ही बद किये रखोगे तो अुनके परिश्रमका, साहस का, बुद्धि का अितना अुपयोग और अितना लाभ अपना राष्ट्र कभी नही अुठा सकेगा। यह बतलाने की आवश्यकता नही कि अिन दडित वर्गों में सैकडो लोग मूलत अत्यत साहसी, दक्ष, कर्तृत्ववान् अेव कष्ट-सहिष्णु हुआ करते हैं।"

"अिसमें क्या संदेह! समाजको अुपद्रव देनेके दुष्ट कार्य में अुनकी अुन प्रवृत्तियोका दुरुपयोग न हुआ होता तो वही अुनका धैर्यगुण, कष्ट साहिष्णुता अेव शौर्य अेक वीर का अलकरण बना होता। अैसे ही अुद्दड अपराधियो की सेनामें भर्ती करके सैनिक अनुशासन में अुनकी अुस अुद्दडता को अुपयोग में लाकर कितने ही सेनापतियोंने बडी बडी जीतें हासिल की हैं, कितने ही राष्ट्रोंने अपने स्वातन्त्र्य सग्राम की लडाअियाँ लडी हैं। अधिक क्यो, पिंडारियों के अमरखान प्रभृति स्पष्ट-रूपसे डाकेजनी करने वाले नेताओंने ही टोक सदृश रियासतें स्थापित की ही हैं न ?"

"की है! कटकबाबू, तब राष्ट्र में रहते समय अुपद्रवी सिद्ध हुअे अिन दंडितों के अुन सारे गुणों को और अवगुणों को भी कठोर कायदे के, सख्ती के और भय के दबाव के नीचे अुपयोग में लाने के लिये अिस प्रकार के अेकाध कालेपानी को भेजना ही अिष्ट है। जो परिश्रम वे अपनी अिच्छा से राष्ट्र के लिये न करते वे अुनकी ओरसे कठोर सख्ती द्वारा करवा लिये जा सकते हैं और अुनके जीवन का अुपयोग राष्ट्रीय धनसंपत्ति अेवं शक्ति के बढाने के काम में लिया जा सकता है। अिस के लिये यह अन्दमानका बन्दी अुपनिवेश राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत ही अुपयोगी है। अुस में सुधार जो संभव हैं वे करो, पर अदूरदर्शिता के वशीभूत हो, अपात्र में दयाभाव प्रदर्शित करते हुअे अिस अुपनिवेशको कभी बन्द नहीं करना चाहिये। पुनः यों देखिये कि अिस जैसे कालेपानी के अुपनिवेश को न भेजते हुअे अुन हजारों दंडितों को यदि हिन्दुस्तान के वन्दीगृहों में ही, स्त्री को अलग और पुरुष को अलग कोठरियों के पींजरों में ही जनमभर के लिये बन्द कर के रखने लगेंगे तो अुनके तारुण्य का तीन तेरह करनेवाला वह निर्दय पर्यवरोध अुन्हें कितना असह्य प्रतीत होगा और राष्ट्र के लिये भी घाटे का रहेगा! कारण, तद्द्वारा अुन हजारों स्त्री-पुरुषों की संतति से भी राष्ट्र वंचित रह जायगा! राष्ट्र का संख्याबल घटेगा। अुस की अपेक्षा काले-पानी सदृश स्वतंत्र और नवीन अुपनिवेश में अुन दण्डित स्त्री-पुरुषों को विवाहित जीवन अुपभोगने की संधि दी तो प्रेम की और वात्सल्य की कोमल भावनाओं के साथ साथ अुनकी खुद की मनुष्यता भी विकसेगी और अुनकी संतति अिस अुपनिवेश की समृद्धि करके अपने राष्ट्र को अेक नवीन प्रदेश जीतकर दे सकेगी! आज ही देखिये न, अेक नवीन प्रदेश ही नहीं, प्रत्युत अिस अन्दमान में अपनी हिन्दू संस्कृति का अेक नवीन जानपद भी समृद्धि प्रबल करता जा रहा है।"

"पर अप्पाजी, पापी, अपराधी और दुष्ट दंडितों की संतति में भी वे अत्याचारी अथवा दुराचारी दुर्गुण पहुँच जाते हैं अैसा अनुवंश विज्ञान का कथन बतलाया जाता है, अुस बारे में आप का क्या कहना है?"

"वह अेक भ्रमभक्षित अशुद्ध तर्क है, और कुछ नहीं! वैयक्तिक अथवा कौटुंबिक दृष्टि से वह कितना सच्चा है या झूठ है यह मैं नहीं कहूँ,

पर अुपनिवेशका जो अपना प्रश्न चल रहा है, अुसके विषय में तादृश सिद्धांत का प्रतिपादन करना शुद्ध क्षुद्र तर्क है। अजी, यह आस्ट्रेलिया देखिये, कानडा देखिये, अफरीका के अुपनिवेश देखिये। अिग्लैंडके अत्यंत नृशंस और दुराचारी दंडितो की तथा आजन्म कारावासियो की नावे भर भर कर जिन दिनो वे देश निर्जन और सुनसान थे अुन दिनो अुन्हे वहाँ पहुँचाया जाता था। अिग्लैंड का वह अेक कालापानी ही था। पर आज अुन्ही दंडितो के वंशजोका अेक अेक स्वतंत्र राष्ट्र ही बन गया है। बड़ेबड़े वीर कार्यकर्ता, विधिमंडल के सभासद, निर्बंध पंडितअु नालोगो में निर्माण हुअे। आज वहाँ जो लोग अत्यधिक प्रतिष्ठित समझे जाते है अुन में कितनो ही के पर दादा चोर, डाकू, बलात्कारी, पापाचारी दंडित थ। अिस अन्दमान ही को देखिये। यहाँ की तरुण संतति को, स्त्रियो अथवा पुरुषो को, लडको लडकियो को हिन्दुस्थान के किसी नगर में ले जाकर छोड दीजिये और सौन्दर्य, सौशिल्य, बुद्धि, दक्षता अित्यादि गुणो की कसौटी पर अुन्हें परखिये। वे किसी से हार नही खायेंगे, अैसा ही परिणाम आपको दृष्टिगत होगा।

"अिस मेरे परिवार ही का अुदाहरण लीजिये। मेरी पत्नी अेक राजपूत स्त्री थी। हिन्दुस्तान में बचपन ही में अुसकी शादी हुअी। अुस विवाह के अुसके पति की दो स्त्रियाँ थी, अुन सौतो सौतो में भयंकर विद्वेष मच अुठने पर पति अिसी को मारापीटा करता था। अिस के अेक दुष्ट पडोसीने अिसे पाठ पढाया कि, 'अपनी सौत को मैं जो मंत्रित पुडिया दे रहा हूँ वह अन्न में डालकर दे, जिससे तू अुसके कष्टो से मुक्ति पा जायगी।' अिसने अुस पडोसी को अपने गले का सोने की मणियो वाला हार देकर वह मंत्रित पुडिया ले ली और सौत के अन्न में डाल कर वह अुसे परोसा। वह पुडिया जहर की थी। सौत तत्काल मर गअी और अिस अठारह अुन्नीस बरस की लडकी को अुस भयंकर अपराध के कारण आजन्म कारावास की सजा सुना दी गअी। पर अुस सजा के आघात के साथ ही किसी भी तादृश दुष्कृत्य के विषय में अुसके मन में अैसा डर बैठ गया कि अुसका स्वभाव अत्यंत सरल अेवं निर्बंधशील बन गया। बन्दीगृह की मूक कठोर पत्थर की दीवारें ही कुछ लोगों के लिये किसी भी नीतिग्रंथ की अपेक्षा अधिक

प्रभावशाली सयम सिखा सकती है। कालेपानी परके आजन्म कारावास में अुस राजपूत तरुणी का व्यवहार अितना निर्बंधशील था कि मुझे जब शादी की अनुमती मिली तब मैंने अुसीके साथ शादी की, दस अेक बरस अुसने गृहिणी का कर्तव्य निरपवाद रूपसे पालन किया, सुख का गृहजीवन व्यतीत किया। आगे चलकर वह मर गअी। अुस के पेटसे मुझे जो अिकलौता लडका हुआ वह भी अच्छा ही निकला।

' अुसकी पत्नी यह अनसूया, मेरी स्नुषा। यह भी अेक बगाली कायस्थ की लडकी बाल विधवा हो गअी। अुसके देवर ने ही अुसके साथ अनैतिक सबध रखा और अत में अुसके गर्भ रह गया। अत्यत अुग्र औषध देकर अुसके हाथो भ्रूणहत्या का भयकर पाप करवाया। पर समाजभय से अुसने जो पाप किया वही अेक दिन अनावृत हुआ और अुसे समाजदड भोगना पडा। अुस के देवर के लापता हो जाने के कारण अुसी को आजन्म कारावास कालेपानी की सजा हो गअी। पर अितने पर से अुसके स्वभाव पर ही किसी नित्यावस्थायी राक्षसी पने की छाप पड गअी है क्या? अुसने कालेपानी की स्थिरीकृत सजा खत्म कर के जब मेरे लडके के साथ शादी की तब से अितनी प्रेमयुक्त सत्स्वभाव अेव कष्ट सहिष्णु वृत्ति से वह हमारे घर में रहती आअी है कि अैसी स्नुषा देश में भी सौ में से कोअी अेकाध ही निकलेगी। आगे चलकर मेरा लडकानौकापर मल्लाह हो गया। दुर्दैव से दो-अेक बरस पहले दुर्घटनावश वह समुद्र में डूब गया। पर अुसके पीछे रहे हुअे अिन दोनो लडको ही का नही प्रत्युत मेरा भी सरक्षण वह किस प्रकार कर रही है, स्वयमेव रसोअी चौका, घर का काम चलाती हुअी दारिद्रय में भी कितने सतोष के साथ वह व्यवहार करती है यह आपही देखिये। अिन मेरे नातियो का, अिन अपने दोनो बच्चो का यह मेरी स्नुषा अनसूया जितना प्रेम से सरक्षण करती है, अुसकी अपेक्षा कौन मा अधिक वत्सल हो सकेगी भला? सर्वथा सभ्य अेव कुलीन समाज में भी हम सब का यह अनुभव होगा कि, ससार के सभी देशो में कुमारिकाओ की अल्हड अुम्र में भ्रूणहत्याका भयकर दुष्कृत्य समाज के अत्युग्र भय के कारण हुआ करता है, पर अनेको का वह कृत्य यदि छिप

जाय तो वे अन्य कुमारिकाओंके सदृश ही कुलीन अेव सुशील समझी जाती हैं, प्रेममयी पत्नी अेव अत्यत वत्सल माता वन सकती है, जैसे कुती देवी !

"अुसका कारण यही है कि, दुष्कृत्यो की चाट लगे हुअे नराधम जिस प्रकार रहते हैं, तद्वत् दुष्कृत्यो से अत्यधिक घृणा प्रतीत होते हुअे भी केवल असह्य अत्याचारो के भयसे ही, अिस क्षणिक वेसुधीकी सनक ही में जिन लोगोंके हाथोंसे दुष्कृत्य हो जाता है, अैसे भी अपराधी मनुष्य रहते हैं। दण्डित वर्गोमें से अुन पहले राक्षसी प्रवृत्तिके अपराधियोको कठोर दडके भयसे सीधे रास्तेपर लाया जा सकता है। अिन दूसरे पापभिरू प्रवृत्ति के अपराधियो को सहानुभूति के अभयदान से सुधारा जा सकता है, अेतावता, दडित कहते ही वह मनुष्योमें से सदैव के लिये अुठ गया, अितनाही नहीं अुसकी सतति भी वशपरपरया पाप प्रवणही रहेगी अैसा समझना मूलतअेव अेक भ्रम-भक्षित क्षुद्र तर्क है ! और अुसपर आधारित जो यह समझ कि दडितो के अुपनिवेश की सतति भी जन्मतअेव मनुष्यतासे वचित रहेगी ही, वह समझ तो जितनी भ्रम-भक्षित अुतनी ही अत्याचार पूर्ण है।"

"नि सशय ! नि सशय ! और अप्पाजी, अुस क्षुद्र तर्कको जिस प्रकार अदमानकी तरुण सतति ने असत्य सिद्ध किया है अुसी प्रकार अन्य अेक विशेषत हम हिंदुओ के दृढ क्षुद्र तर्क को भी असत्य सिद्ध किया है। हिंदू समाज की सारी जातियाँ—कम अजकम, वहुतसी—अेक ही स्तरपर आअी हुअी है तो भी अुनमें स्पर्श प्रतिवध, भोजन प्रतिवध, विवाह प्रतिवध प्रभृति जो खाअियाँ हजारो वरस पूर्व की परिस्थिति में हितकर समझी गअी थी, अुनको अुसी प्रकार वनाये रखना आज भी हितकर है, और यदि वे खाअियाँ पाट दी और जाति जातियो में भोजन, विवाह व्यवहार प्रचलित किया तो सकर अत्यधिक अनर्थावह हुअे विना नही रहेगा, सस्कृति निकृष्ट अेव प्रजा अधम हो जायगी, अैसी जो अेक धार्मिक स्वरूपकी भीति अपने देश में हिंदू समाजका ग्रास वना रही है, वह कितनी भ्रात है, यह भी अदमानके अिस नवोदित हिंदू जानपद ने प्रत्यक्ष रूप से दिखला दिया है! अदमान में गत पचास-साठ वरसो से सारी हिंदू जाति और सारे प्रातिक वर्ग सर्व मिश्र भाव से अेकत्र वढते चले आये हैं। पर्याप्त मात्रामें अस्पृश्यता की वेडी टूट चुकी है, भोजन प्रतिवध का कमअजकम

स्पृश्य वर्ग में तो स्मरण भी अवशिष्ट नही रह गया। वगाली, पजावी, मद्रासी, मराठी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कौन कौन है यह विचार तक नष्ट हो चुका है और कम, अजकम स्पृश्य हिंदू मात्र तो अेकत्र भोजन करता है और वहुधा अस्पृश्य भी। और मिश्र विवाह खुल्लम खुल्ला प्रचलित रहने के कारण विवाह प्रतिवध नष्ट होकर जाति का नाम ही नही वच रहा। अपने परिवार ही को देखिये न। आप महाराष्ट्रीय ब्राह्मण, पत्नी राजपूत क्षत्रिय, लडके की शादी हुअी वगाली कायस्थ कन्यासे। अव आपके अिन नातियो की जात हिंदूभर ही रह गअी। अच्छा, अिन समिश्र रक्तवीजो के नाती भी कैसे हैं—तो ये मोहन और अुषा! कितने चतुर, दर्शनीय, सुशील! पूना, वम्वअी, कलकत्ते की किसी भी पाठशाला में ले जाकर छोड दें तो पहले पाचो में ही चमकेगे! जातपात तोडकर समिश्र विवाह करने से सतति निकृष्ट ही होगी यह भीति मिथ्या है, यह अदमान के हिंदु जानपद ने सपरीक्षण सिद्ध कर दिया है।"

"भाषी की दृष्टिसे भी अदमानने अन्य अेक अभिनदनीय अेव सफल परीक्षण करके दिखाया है। यहाके सव हिंदू जानपद की भाषा अेक—हिंदी! तरुण पीढी की—मातृभाषा ही हिंदी!"

"पर अप्पाजी, सरकारी विचारसरणी में अेक मात्र वडी भारी गलती हो रही है। वह यह कि हिंदू लडको-लडकियो को भी सारा शिक्षण अुर्दू लिपि में ही जवर्दस्ती दिया जा रहा है। अिस विषय में मात्र आदोलन करके नागरी को ही अदमान की कम अजकम हिंदू जानपदकी तो अेकमात्र लिपि वनानी चाहिये। सरकारी लिखापढी और शालेय शिक्षण अुर्दूही में वनाये रखने की सरकारी विचारसरणी का हठ निर्दय है! अदमान में अैसे अनेक सुधारो का करना और नवीन स्वतत्र पीढीको अपने गुणोका विकास करने के लिये अनुकूल परिस्थिति प्राप्त करा देना—अिन दो कार्यों को सिद्ध करने के लिये कुछ त्यागी पुरुषो का अिसी अुपनिवेश के अुत्कर्ष के प्रश्न को अपने सिरपर ले लेना आवश्यक है।

"हा कटकवावू, यही अपनी अिस आजकी चर्चाका सूत्र अपने अिस सभाषणके आरभके मेरे विधेयके साथ ग्रथित है। यदि तुम्हे यह स्वीकृत है कि अिस अदमानके अुपनिवेशमें निर्माण हुआ जो यह अेक नवीन जानपद

है, वह अपने हिंदुओ के सास्कृतिक साम्राज्य में अेक नवीन प्रात जीतकर जोडने योग्य महत्त्व का है, तो नवीन अुपनिवेश का आर्थिक, सामाजिक, राजकीय और सास्कृतिक अुत्कर्ष करने का ही कार्य अपने जीवन का ध्येय मान लेना क्या यह राष्ट्रसेवा नहीं है ? अेक तुम्हारे हमारे सदृश वदीवास ग्रस्त जीवन की महत्त्वाकाक्षा वनने के लिये वह ध्येय क्या पर्याप्त महनीय नही ? तव आप अुस को अपने जीवन का अितिकर्तव्य क्यों नहीं समझते ? कटक वावू, आप पाच–छै वरस वाद 'दाखला' लेकर थोडे से स्वतत्र हो जायेंगे, यही विवाह करके वस जायेंगे। अिस अुपनिवेश में पाठशालाकी, देवालय, सस्कार, सगठन आदि की जो कमी है, अुसे पूरा कर डालिये। हमारे अिन किशन सेठजी का ही अुदाहरण देखिये। वे भी आजन्म कारावास की सजा पाकर यहा आये थे। पर 'दाखला' लेकर नारियलोंके वडे वडे वाग वनाकर, चाय की पौव को वढाकर लक्षावीश वन गये और मेरे विचार में अुन्होंने हजारो रुपये अिस अदमान में पैदा हुअे स्वतत्र हिंदू तरुणो के अुदर निर्वाह के अर्थ लगाने में, ८पाठशालायें वावने में, अखिल हिंदुओ का अेक देवालय स्थापित करने में, छात्रवृत्तियाँ देने में, वर्मार्थ औपवालय चलाने में दान दिये। पडित, पुराणिक, चिकित्सक, नेता, आदिओं की यहाँ वडी भारी कमी है सो अुसे तुम पूरी करो। अिस अुपनिवेश को हिंदुस्थान का, हिंदूसाम्राज्य का अेक वलिष्ठ सामुद्रिक दुर्ग आजन्म कारावासी तुम सव लोग मिलकर वना डालो। अिस कार्य में हजारो जीवन नष्ट हो गये तो वे व्यर्थ चले गये अैसा नहीं कहा जा सकेगा।।"

"सचमुच अण्णाजी! सामुद्रिक दुर्ग के विषय में ही कहेंगे तो मैं जव पहले पहल अदमान में अुतरा था तभी अिस टापू का सामुद्रिक महत्त्व मेरे ध्यान में आया था। वद्धप्राचीर, शस्त्रास्त्रसभार से सुसज्ज, फौलादी कवच के सदृश दुर्भेद्य——अैसा यदि अिस अदमान टापूका ही अेक प्रचड जलदुर्ग वना डाले तो पूर्व समुद्र में शत्रु के नाविक दल के मार्ग में वह अेक प्राण ग्राही सुरग भी वन जायगा। ये सशस्त्र और वद्धप्राचीर द्वीप हमारे पूर्वसमुद्र के पुरद्वार पर चढाअी गअी अेक महाकाली तोप है।"

"और अव हम यूरोप की खवरें सुनते हैं, अुनपर से, मनुष्य को विमानो की विद्या हस्तगत हो ही गअी है, अैसा दिखाअी देता है। आज

भले ही लडाकू विमान अल्पमात्रा में हो तोभी पाच पच्चीस वरसो में बडे बडे लडाकू और सामान ढोअू विमानो के जत्थे के जत्थे आकाश मे विहरने लग जायेंगे अिस में कुछ भी सदेह नही प्रतीत होता। अेतावता आगे चलकर यह अदमान हिंदुस्तान के पूर्व समुद्रपर पहरा करने वाला अेक लडाकू वैमानिक वेडे का स्थान वने वगैर नही रहेगा। तव सास्कृतिक, सामुद्रिक अेव वैमानिक दृष्टिसे अेतादृश अनेक विध महत्त्वो का यह अुपनिवेश निर्माण करने, वनाये रखने अेव वढाने के कार्य में जिन सहस्रावधि दुर्दैवी भारतीय वदियो की यातनाअें, कष्ट, रक्त, अेव जीवन आज पचासु वरसो से यहाँ व्ययिभूत हुआ, वह राष्ट्र के ही अुपयोग में आया, पापियो का रक्तभी पुण्यकार्य के लिये वहा, अैसा ही कहना चाहिये। अिससे आगे भी जिन को यही जीना है, अुन आजन्म कारावासियो को भी अपना जीवन अिसी कार्य में लगाना चाहिये, यही अुनका अपरिहार्य धर्म है।"

"अितना मुझे भी स्वीकार है। अपरिहार्य अवस्थामें, दूसरा माग असभव हो तो अुस अवस्थामें, आजन्म कारावासियो को अपने जीवन की सार्थकता अिस अुपनिवेश की जनसेवा ही में मानना चाहिये। पर मेरे लिये तो दूसरा मार्ग ही सभव है। मुझे तो अैसा निश्चित रूपसे प्रतीत होता है कि मुझे काले पानी पर से भाग जाने में सफलता प्राप्त होगी। मेरे कारण मैंने आपको पिछली मुलाकात ही में वतला दिये थे। अुसमें भी मेरी वहन कटकी तो पाँच वरस की वात दूर पाँच महीने भी कारावास में जीवित नहीं रहना चाहती। पागलपने का कहिये, पर अुस पर यह आत्मघाती भूत सवार हुआ है अवश्य। अच्छा, यदि मुझे सफलता मिली, यदि मै स्वदेश में अिस वर्ष के अदर अदर जा पहुँचा और यदि मैं अपना आयुष्य वहाँ यहाँ के अिस ध्येय की अपेक्षा भी अधिक अुत्कृष्ट ध्येय के लिये समर्पित कर सका, मेरे गुणो का, शक्तिका और जीवन का अितना विकास अेव सदव्यय हो सका, जितना यहाँ स्वप्नमें भी सभव नही है, तव तो मेरा यह साहस गलत सावित नही होगा न?"

"नही! अधिक क्यो, तुम्हे सफलता प्राप्त हो अैसी मै प्रभुसे प्रार्थना भी करूगा। पर तुम्हारा वही 'यदि' महा दुर्घट है! अस्तु। तुमने जो योजना

बनाओी वह अधूरी थी । निश्चित अवसर कब, किस प्रकार साधोगे यह सब ठीक कर लिया है ?"

"नही ! पर अनसूयाबाओीने कटकी को मैंने जिस जगह कहा था वहाँ काम पर लगा दिया है । स्त्री बंदीगृह से बाहर विवाहेच्छु स्त्री-पुरुष बंदियो की पारस्परिक परिचय प्राप्ति के लिये अुतने ही में जो अेक खुली जगह है, वहाँ झाडने बुहारने के कामपर नियुक्ति के कारण कटकी निश्चित समय पर बंदी गृहसे बाहर निकल कर अुस स्थानपर आती जाती रहती है । वहाँ मेरी और अुसकी दूरसे मुलाकात भी हुअी है । बहुधा नजदीकी मुलाकात भी हो जायगी । अुसके पश्चात् जो कुछ स्थिर करना होगा सो करने का खयाल करता हू । तथापि जब तक योग्य अवसर नही आयेगा तब तक मै बगैर सोचे समझे जल्दबाजी नही करूगा । अच्छा, आज अनसूयाबाओी पडौसके गाव में गअी है अैसा पता चला है मोहनके कहने से, तब अुनकी मुलाकात--"

"अब नही हो सकेगी यह सत्य है ! कल आयगी वह । तुम्हारे जाने का समय हो आया है न ? मुझे तुम्हारे अिस साहसपूर्ण गुप्त अभिसधि के सबधमे बहुत कुछ पूछने की इच्छा होती है—पर समय नही है । अैसी चर्चा सुरक्षित भी नही रहती । तुम्हारा यहाँ आना भी अब तुम्हारे और हमारे लिये खतरनाक ही है ।"

"हा अप्पा !" कटकने अुन्हे सबोधित किया । पर जो विचार वह करना चाहता था, अुसीसे अुसका दिल भर आया । वह लडखडाया, फिर बोला,

'अप्पा, अिस बीमारी के कारण आप और अिस साहसके कारण मै मृत्युके दष्ट्रा करालो में कब जा पडे अिसका अब क्षणभरकाभी भरोसा नही ! पर अप्पा, यदि कालेपानी के भूगृह में से मैं बाहर निकल सका, जीवन की निर्मुक्त वायु पुन श्वासोच्छ्वास कर सका तो मै—स्वदेशमें निर्भयतया रहना सभव हुआ तो स्वदेशमें, न सभव हुआ तो युरोप अमेरिका सदृश्य किसी अेक विदेश में—जहा कही भी रहूगा वहासे आपके अिन नातियो की चिंता अपने औरस पुत्रोकी भाति ही करूगा। अनसूया बहन मेरे बंदिवास काल की मेरी बहन है। मेरे दुर्दैव, सकट अेव दारिद्र्यपूर्ण स्थितिकी

भ्रातृद्वितीया के समय जिसने मेरी आरती अुतारी अुसे मेरे भाग्य मे यदि कभी सगी वहनसे भी अधिक सुदैव की भ्रातृद्वितीया आअी तो, अपने प्रेम और सहायता का अधिक अुपहार दिये विना नही रहूगा। जाता हू अव, जाना ही चाहिये अव मुझे।"

कटक अुठा, अप्पा को अुसने खडे खडे नमस्कार किया। अुसी प्रकार वह अुनकी तरफ थोडी देर देखता रहा, थोडा जानेके लिये मुडा भी। पर फिर लौटकर वोला, "अप्पा, जरा अिस तकिये के सहारे थोडा सा अपने को सभाल कर वैठियेगा? पैर अिस तरह थोडे धीरे धीरे फैलाअिये—नही आपको फैलाने ही होगे।"

रुग्ण शय्या पर जर्जर होकर पडे हुअे अुस वृद्ध वीर को अुस प्रकारसे विठाकर कटकने अुनके पैर अपने हाथो से ही ओढनी के वाहर निकाल कर व्यवस्थित रूपमें रखे और अुनपर अपना माथा टेक कर अुनके समक्ष साष्टाग दडवत् प्रणाम किया।

"अप्पाजी, अिस अदमानका अुपनिवेश हिंदू राष्ट्रके लिये कितना महत्त्व का है यह आप थोडी देर पहले वता रहे थे न? अिस टापूका सामुद्रिक और वैमानिक वेडे के स्थान की दृष्टिसे वहुत अधिक महत्त्व है, यहाँ अेक नवीन हिंदू जानपद का निर्माण हो रहा है, वडे वडे नारियलके वगीचे, चाय वागान, रवड की पौध, प्रचड वृक्षो के विस्तीर्ण अरण्योमें की नाना प्रकार की अिमारती लकडी की अगणित पैदावार—यह सारी राष्ट्रीय सपदा महत्त्व की है। तथापि अिस प्रकार की सपदा अितर अुपनिवेशो में भी अपने हिंदू राष्ट्र को लब्ध हो सकेगी। पर जो सपदा अन्य किसी भी अुपनिवेश में नहीं मिल सकेगी अैसी जो अेक सपदा अिस अदमान ही में सग्रहीत है और अिस भूमि ही में रखी गअी है जिस अमूल्य निधि के कारण अन्य किसी भी अुपनिवेश की अपेक्षा यह अदमानकी भूमि अपने हिंदूराष्ट्र के लिये अधिक अभिलषणीय प्रतीत होगी, अेक क्षेत्र भासित होगी, वह अिस भूमि की हमारी राष्ट्रीय सपदा, अिस भूमि की वह हमारी अनर्घ्य निधि है भवादृश सन् सत्तावन के सहस्रावधि राष्ट्रवीरो की अिस भूमि में विखरी हुअी राख! हिंदुस्थान को अदमान का नाम लेते ही प्रथम अुसीका स्मरण हो आयगा।"

"पर—पर अिस तरह कहने वाला तू ही पहला हिंदू मुझे गत पचास वरसोमें दिखाअी दिया है।" अुदास निश्वास छोडते हुअे अप्पाजी बोले, "कैसा स्मरण लिये बैठा है। अरे, हिंदूपद पादशाही के सताजी, धनाजी, बाजी, चिमाजी, भाअू, विश्वास, मल्हार, महादजी प्रभृति शतावधि विजयी सेनापतियो का भाग्य यदि न भी हो, तो भी निराशामें और अपजय ही में सच्ची कसौटी पर चढनेवाला जो रणचापल्य, निष्ठा, शौर्य, धैर्य, तितिक्षा, कार्यकृति, अेव राष्ट्रभक्ति आदि गुणो से अग्रेजोको नाको चने चबवाने वाला अुस अपनी हिंदूपद पातशाही का सर्वांतिम रण धुरधर सेनापति जो तात्या टोपे—वे जिस स्थानपर स्वराज्य के लिये और स्वधर्म के लिये फासीपर चढे अुस स्थान पर अुनकी यादगार तक की अेक शिलाभी जिस अिस कृतघ्न पीढीने आजतक खडी नही की, अुसे अदमान में धिक्कृत होकर राख बने हुअे हम सैनिको का कैसा स्मरण होगा! कटक, जिस दिन सत्तावन की असिलता टूटी, अुसी दिन हिंदुस्तान की आशा समाप्त हो गअी!!"

"नही अप्पा, नही! आज हिंदू जाति अचेतन पडी है, मानता हू, पर वह मूर्च्छा है—मृत्यु नही! अितिहास तो शपथ पूर्वक कहता है कि अैसी कितनी ही मूर्च्छाओ में से पुन जाग खडी हो अैसी अुज्जीवक शक्ति अिसी हिंदू जातीमें निवास करती है, यह निश्चित है! दशमुखी रावण गये, शत मुखी गये!! अप्पा ये भी दिन चले नही जायेंगे सो काहे परसे? नये नये विक्रमादित्य अवतरेगे ही नही सो काहे परसे? —किंबहुना यह आपकी राख ही अुनके अुद्भव की खाद है—अूरीकारोक्ति है!!"

"तथास्तु! जब और यदि वैसा भाग्य का दिवस कभी सचमुच ही प्रकट हुआ, तो अिस अदमान में बिखरी हुअी यह हमारी राख —"

"सकलित की जायगी और अुसपर यह कृतज्ञ हिंदूराष्ट्र अेक अुत्तुग स्मृतिस्तूप खडा करेगा! और अिस सर्व समुद्र में से होकर जाने आने वाली हिंदुओकी प्रत्येक रणनौका अुस स्मृतिस्तूप को तोपोकी रणवदना दिये बगैर वहा से आगे अेक कदम नहीं रखेगी!!"

कटक के अिस वचन के सुनते ही अुस वृद्ध वीर के शरीर पर रोमाच खडे हो गये, अुसकी जर्जर देहयष्टि में तरावट आ गअी, अुसके नेत्रो के

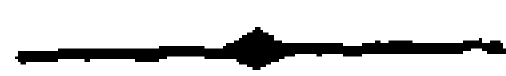
सामने कोअी अुत्तुग स्मृतिस्तूप खडा किया मानो दीखही रहा हो अिस प्रकार सुदूर आकाश में क्षण भर गडी हुअी अुसकी अनिमेष दृष्टि पर से भासित हुआ। दो अेक क्षण पश्चात् अुस अनिमेष दृष्टिको आकाश पर से हटाकर कटक की तरफ फेरते हुअे वह वृद्ध वीर सकप स्वर से बोला,

" कटक, सत्तावन के क्राति युद्ध के अनतर, सहानुभूति की और मेरे राष्ट्रके पुनरुत्थान की सुभव्य आशा की याद दिलाने वाले ये अैसे शब्द चालीस वर्ष के पश्चात् मैने आजही फिर सुने है। देख, मेरे हृदय के भीतर अत्यत गहराअी पर दबाकर रखी हुअी मेरी पूर्वकालिन आकाक्षाओ की अूमियाँ अेक आध तूफान की मानिद मेरे रक्त रक्त में से अुत्स्फूर्त हुअी आ रही हैं। मुझे कटक, सहन होता नहीं अिन अनुकूल भावनाओ का भी कल्लोल कप, यह हृदय की तीव्र गति।"

अुतने ही में चौकी बद होने की घटी दूर पर से वजती हुअी सुनाअी दी। "घँटी।" वृद्व वीर चौक अुठा, "जा, कटक जा, अन्यथा पकडा जायगा।" जल्दबाजी से कटक अुठा और लुकते छिपने अुस टीले पर वेग से चढता चला गया।

और दो तीन दिन के भीतर ही, सन् सत्तावन के क्राति युद्ध के कारण काले पानी पर गये हुअे अुन सहस्रावधि हिंदू सैनिको में से अुस आखिर के वीर वृद्व का भी अत हो गया।

अुस दिन अुसकी अुस सूनी झोपडी में अुसकी याद दिलाने वाले दो फूल ही पीछे वच गये थे— मोहन और अुषा।



अंदमान के जगलो में घर वाघने के काम में अपयोगी लकडी अितनी अच्छी, मजबूत और सुन्दर मिलती है कि यूरोप के बाजारो में भी अुसके लिये भरपूर माग वनी रहती है।

आज कटक जगल तुडाअी के जिस विभाग में काम किया करता था, अुस टुकडी के लिये अरण्याधिकारियो की विशेष आज्ञा हुअी थी कि, लकडियो की यूरोप से आअी हुअी नअी मांग को पुराने के लिये आजतक अरण्य के जिस भाग में तुडाअी का काम किया जाता रहा है, अुस से आगे के नये आरण्य में प्रविष्ट होकर तुडाअी काम चालू करना है। अुस आजतक अकृत प्रवेश सघन अरण्य में प्रथम चलने योग्य रास्ता बनाना है, तदनतर वडे वडे वृक्षो के चारो ओर की घनी जालियो तथा झखाडो को साफ करके अिमारती लकडी के वृक्षोंपर तारकोल से क्रमाक डालने है और तव वडे वडे करपत्र अेव अन्य औजारो से लैस दो–दो सौ कैदियो की टोलियो के जरिये अुन प्रचड वृक्षो को काटकर, तोडकर, तराशकर अुनके लठो की राशिकी राशि रचने का अत्यत कठिन श्रम करवा लेना है।

अिस आवश्यक आज्ञा के अनुसार कटक अपने हाथ के नीचेकी टुकडी को तय्यार करने के काम में लग गया था। अरण्य के आजतक न तोडे गये और सर्वथा सुदूर विभाग में पैर रखना यह अदमान में अेक साहस का काम समझा जाता था। अग्रेजो का प्रवेश जैसे जैसे अुस सघन अरण्य के अतरग में होता जाता था, वैसे वैसे वहाके मूल के जगली और मरने मारने के लिये तय्यार रहनेवाली टोलियो का शत्रुत्व वढता जाता था। कारण अुस अुस अश में पीछे हटना पडता था, अुनका वह जगली राज्य समाप्त हो जाता था। अिस लिये अग्रेज अिस प्रकार सघन अरण्य में और अेक कदम वढाने लगा कि यदि अुस अरण्य में कोअी जगली टोली रहती होगी तो वह अग्रेजोकी जगल तुडाअीवाली कैदियों की टोलीपर कव टूट पडेगी और अुनके मुर्दे गिरा देगी अिसका कोअी नियम नही रहता था। अिन जगली और तीक्ष्ण स्वभाव टोलियो में भले ही अनेक अनेक अुपजातियाँ और

अुनके अनेक अुपनाम होते हो तथापि अुनमें जो अत्यत जगली और अत्यत तीक्ष्ण स्वभाव की जाति है, अुसका नाम जावरा होने के कारण कैदियोकी बोलचाल में अुन सारी जगली टोलियो को जावरा नाम से ही पुकारा जाता था। अैसे नये घने जगल में प्रथमत प्रवेश करते समय वे जावरा लोग सदैव प्रतिरोध करने के लिये आया करते थे अैसी बात नही थी। पर कब आजाय अिसकी निश्चिति भी कुछ नही थी। अिस लिये कटक ने भी अपनी टोली में हमेशा के आलतू फ़ालतू कैदियो को न लेते हुअे निर्भीक, कष्ट सहिष्णु और जगल तुडाअी के काम में अभ्यस्त कैदियो को चुना। अुन में रफिअुद्दीन तो था ही। वह यदि करने बैठा तो अैसे श्रमसाध्य काम किया करता था और जगल तुडाअी के काम में तो वह पहले जब कालेपानी पर था तभी से अितना प्रवीण हो गया था कि, अुसके भागा हुआ कैदी होनेपर भी जगल की लकडी तोडने की आमदनी बढाने के काम के लिये, अुसके बदोबस्त की अुत्तरदायिता अपने अूपर लेकर अुस टोली के मुख्य जमादार ने अुसे बुद्धिपूर्वक माग लिया था।

वह मुख्य जमादार रफिअुद्दीन को मनुष्य कहता ही नही था। रफिअुद्दीन का नाम अुसन रखा हुआ था 'जगल तुडाअी की मशीन!' आज कल अपना खुदका ही दाव साधने के लिये रफिअुद्दीन भी अपने अूपरके अधिकारी की कृपा सपादन में लगा हुआ था। अुस दिन के अुस साहस के काम में आये जाने के लिये वह भी अेकदम पूरी तरह से तय्यार हो गया था।

गत दो तीन दिनसे कटक के साथ रफिअुद्दीन की भाग जाने की गूढ अभिसधि के विषय में खूब चर्चा हुअी थी। पर स्थिरस्वरूप का कोअी भी निश्चय जमा नही पाता था। अितने में यह जरूरत वाला सरकारी काम आ पडा। अतका अवसर हाथ में आने तक और अुसके पाने की अिच्छा ही से कटक और रफिअुद्दीन दोनो सरकारी कामो में खूब श्रम करके अधिकारियो का विश्वास अेव वाहवाह प्राप्त करने में रत्तीभर भी कसर नही रखते थे। अिसी नीति के कारण अुस घने और भयकर अरण्य के अप्रविष्ट पूर्व भाग मे घुसने और जावराओंके यदा कदाचित होनेवाले प्राणग्राही छापे का भी मुकाबिला करने के साहसकार्य में सबसे अगली टोलीमें वे दोनो

आज प्रविष्ट हुअे थे। अुनका सारा ध्यान आज अुस काम ही में केंद्रित हुआ था।

मुर्गे के बाग देने से पूर्व ही बैरक की घंटी हुअी। आधे घंटेके भीतर सौ दो सौ कैदी मैदान में क्रम से खडे हो गये। प्रत्येक के अेक अेक पैर में शृखला कमर से लेकर टखने तक जकडी हुअी थी और अेक पैर खुला था। "अेक, दो, तीन"— अिस प्रकार गिनती हुअी और दो सौ की टोली को अेक ओर निकाल लिया गया।

वह अुनमें भी चुनी हुनी टोली थी ! और आज लकडी की माग पुराने की अत्यधिक आवश्यकता होने के कारण अुस टोली पर जो विशेष जमादार नियुक्त करने में आये थे वे भी अेक जात 'दडावाले!' मेहनती और कामचोर, सरल और अक्खड अैसे दोनो प्रकार के कैदियों से जो जमादार काम केवल निचोडकर निकाल सकता है, सब से ही काम अक्षरश 'ठोककर' लेता है, अुस जाति के जमादारो को कैदी लोग 'दडावाला' कहते है। 'आगे काम पीछे राम' यह अुस जाति के जमादारोका घोषवाक्य रहता है। अर्थात् काम 'ठोक पीटकर' लेने में दया माया का धार्मिक प्रश्नही अुनके सामने नही रहता। सारा रोकड 'ठोक' आर्थिक व्यवहार! अुद्दड और खूसट दडित भी अैसे जमादारो के सामन घोघे बन जाते है। ये 'दडेवाला' जाति के जमादार खुद पक्के डाकू अथवा अुद्दडवर्ग के पूर्वाश्रमके कैदी होते है और अब क़ैदियो पर बढती मिलने से दोयम दर्जेके अधिकारी बने हुअे होते है।

अेक अेक पैर में कमरसे टखनो तक शृखलाओ से जकडे हुअे वे दो सौ कैदी अुस प्रभात में अुस मैदानमें 'गिनती' करवा कर अुस प्रकार खडे हो गये। दडेवाले जमादारो के आते ही 'बैठो' का हुक्म हुआ। साखल बेडियों की अेक साथ खनखनाहट हुअी और वे कैदी पक्तिमें झटसे नीचे बैठ गये। अुनके कटोरो में अुसवक्त दलिया परोसा गया। निश्चित समय के होते ही 'अुठो' की गर्जना हुअी। दलिया किसने खाया या कोअी खा रहा है अिसका विचार न करते हुअे सबको अुठना ही आवश्यक ! तत्काल वह दो सौ कैदियों की टोली दुहरी कतार बनाकर जगल के रास्ते हो ली।

हाथ में वेत की छडियाँ लिये हुअे वॉर्डर और डंडे लिये हुअे हवालदार, जमादार अुन कतारो की दोनों बाजुओ में दस दस कैदियो के अतर से चल रहे थे। जगल के भीतर लकडी तुडाअी का काम सब कामो में खतरनाक। अेकाध दफा अेकाध साहसी कैदी जगल में अदृश्य होकर भाग जाने में कमी नही करता। अिस लिये अेकाध बदूकवाला सिपाही अिन टोलियो के साथ सदैव दिया जाता है, ताकि कोअी भागने ही लगा तो नि शक अुसपर गोली चलाअी जाय। तिसपर आज तो जगल के सर्वथा निविड और हिंस्र जाव राओ के भय से पदे पदे आक्रात भागमें घुसना था। अतः तीन बदूकवाले सैनिक भी अुन सबके पीछे अुनकी पृष्ठरक्षा करते हुअे अेव बीच बीचमें अुन सबसे "चलो! जल्दी चलो! और जल्दी!" अिस तरह चिल्ला चिल्लाकर खदेडते हुअे आ रहे थे।

वारिश जोरोपर थी। जगली हिस्से में बरसके दस महिने तो अद मानमें वारिश निरतर रहती है। कैदी लोगोंके समीप कपडो का अेक अेक ही जोडा रहता है। घुटन्ना और कुडता। वह तो कम अजकम वापिस वैरकमें आनेपर सूखी हालतमें पहननेको मिले अिस खयालसे अुसे भी वैरकोमें ही रखकर जगल तुडाअीके लिये जाया करते थे। अेक लगोटी ही रहती थी शरीरपर। शरीर सारा दिनभर वुरी तरह भीगा रहता था।

जगल आते ही अुस टोलीकी स्थिरीकृत टुकडियाँ वनायी गअी और तुडाअी फुडाअी तथा तराशने का काम शुरू हुआ। आध मील लवाअी के जगल के टापूमें जिधर तिधर चिल्लाहट तथा काम धूम धडाकेसे शुरू हो गया। आरे से चीरते चीरते लायी गयी अजस्र टहनी पर आखिर की चिराअी चालू रहते समय जव वे कड कड करती हुअी नीचे गिरने लगती थी अुस समय 'भगो,' 'वचावो' का अेकही शोर रहता। वडे वडे लठ्ठे दस पाच आदमियो के सिर पर रख कर टाल की तरफ ले जाये जाने लगे। वीच ही में कोअी पेड परसे नीचे गिर पडता था। किसी को विषैले जन्तुके डस लेने पर अेकही वोव मच अुठती थी। वॉर्डर कैदियो को और जमादार वॉर्डरो, हवालदारो को गालियाँ वके जाते थे। जरा कोअी पडा, थका, रुका कि वेंतकी छडी अुसके शरीरपर सपासप अुडती थी। वीच ही में कोअी अक्खड अथवा कामचोर दडित विगड खडा हुआ अथवा हमेशा की आदत

के मुताबिक काममे अिनकार करके गाली गलौजपर अुतर आया कि तीन चार वॉर्डरोको अुसपर डालकर डडे के नीचे वह दनादन पिटवाया जाता था। कारण आज हमेशा के जमादारो का राज्य न होकर " भय्या, आज तो दडेवाले जमादार का राज है ! "

दो पहर के बारह बजे तक अुन कैदियो की हड्डियाँ आरे और कुल्हाडी चलाते चलाते पूरी तरह खीलो की तरह खिल गअी ! बारह बज गये है यह तब मालूम पडा जब घटी बजी । कारण सबेरे की तरह मध्यान्ह में भी अिस जगलकी घनी झाडी में और सदा अभ्राच्छादित अेव टपकने वाले वातावरण में स्वच्छ प्रकाश तो कभी पडता ही नही था। घटी बजते ही सारी टुकडियाँ दौडते धूपते टाल के सामने आअी। फिर ' अेक-दो-तीन-दो सौ ' कैदियो की गिनती कर ली गअी। अुनकी सख्या अुतनी ही थी जितनी सवेरे थी । -परिस्थिति में कितना अतर आ गया था ! कोअी पैरो में जहरीले काँटे गहरे गडकर टूट जाने के कारण लगडा रहा था, कोअी लकडियो के नीचे आ जाने के कारण अथवा वॉर्डर जमादार द्वारा पिटाअी के कारण खून से तर होने तक घायल हो गये थे, बहुतमोने दल दल में का कीचड अपने सारे शरीर पर थोप रखा था-वह बारिशकी वजहसे धुल गया कि फिर शरीर पर कीचड मल लिया-कारण, जगल में सचित हुअे पत्रो-पर्णों के रेंदे में जो जोंके भरी रहती थी वे नीचे से शरीरके अूपर चढती थी और अूपर से लाखो मच्छर तहअियाँ प्रभृति जहरीले प्राणी शरीर पर केवल आग लगा देते थे । कीचड़ की परतोपर परते अुन कैदियोने अपने शरीरपर मल रखी थी। तो भी जोंके जहाँ चिपट गअी वहाँ से अुन्हें अुपाडते अुपाडते नाक में दम आ जाता और त्वचा पर किये गये अुन अुन दशो में से रक्त की बारीक धारायें अुनके कीचड से सने हुअे शरीर पर लबे और लालबाल की तरह जहाँ तहाँ दिखाअी देती ! खुजलाहट निरतर बनी रहती, पर खुजाने के लिये फुरसत नही ! सताये हुअे, थके-मादे, कीचड और खूनसे लथपथ वे कैदी अुस वक्त खुदाको कितने दयनीय और अन्याय परिपीडित समझते थे ! अुन्हें कठिन कष्टों के कोल्हू में पीसकर निकालने वाली दड पद्धति को तथा अुन ' दडेवाले ' जमादारो को कितना दुष्ट समझते थे, कितना शाप

देते थे। पर अिस दडके वे शिकार क्यो वने, अपने हाथो से दूसरो पर ढाये गये किन किन जुल्मो का प्रायश्चित्त वे भोग रहे थे, अुसका पश्चात्ताप, यदि आप पूछेंगे, तो सौ में से शायद ही किसी अिकल्ले दुकल्ले को हुआ होगा। अितना ही क्यो, अुनमेंसे वहुतेरे लोग, वह डडेवाली जमादारी यदि अुन्हे दी जाती तो अुसे अस्वीकार करनेवाले नही थे–कितने तो सवाये दडेवाले भी वने होते।।

वारह की घटी होते ही भोजन आता। भूख से अकुलाये हुअे वे सारे दंडित झाडो झूरमुटो की आड में, अुस स्थिति में जैसे भी वैठना सभव हो सका वैसे वैठ गये। मोटी झोटी रोटियो की राशि आते ही वह मैं अकेला ही खा डालू अैसी अिच्छा हर अेक के मन में अुत्पन्न हुअी। दो-दो चपातियाँ और सब्जी तरकारी का अेक अेक लगदा अुनके हाथों पर डाला गया। जगल तुडाअी की टोलियो को अैसी वावली के दिन थाली तक लेने की सुविधा नहीं रहती। अेक हाथकी थाली वनाकर अुसके अूपर चपाती और भाजीका लगदा ले, दूसरे हाथ से खायें। अूपर से वारिश! खाते खाते चपातियो का नरम आटा वन जाता था और भाजी वह निकलती थी।

जमादार, सैनिक और कटक वावू अितनोने वहाँ वाँधे गये तात्कालिक झोपडे में भोजन किया। अुनकी जी हुजूरी करनेवाले कैदियो में से कुछ वसीले के टट्टू भी झोपडे में लार टपकाते हुअे घुस सकते थे, अेकाध अधिक चपाती भी अुनके सामने फेंकी जाती थी। रफिअुद्दीन भी अिन्हीं वसीले के टट्टुओ में रहा करता था यह कहने की आवश्यकता ही नहीं। कारण जमादार, हवालदार, सैनिक तक टोलीके अूपर जो मुख्य 'वावू' रहता है अुससे जरा सभालकर रहते हैं। कटक तो केवल वावू ही नहीं था, प्रत्युत अपने अुत्कृष्ट कामसे तथा नि स्पृह वृत्तीसे वह अग्रेज अधिकारियो के भी पसद का हो गया था। अुसके सामने वे लोग विशेष ही दवकर रहते थे। अिनकी अनेक गलतियो पर तथा अूटपटाग कामोंपर यदि कोअी पर्दा डालेगा तो वही डालेगा, और अुस कटकवावू के पीछे लागूलचालन करने में रफिअुद्दीन प्रवीण, साहसी और कठिण श्रमो के कामो के कारण जमादार को भी अभीष्ट सा हुआ था। अुस वजहसे

कटक बाबूके परो में लोट लगाता हुआ वह भी झोपडे में जा सका। अेक पैर भर कर जकडी हुअी शृखला को शान के साथ बीच बीच में खन-खनाते हुअे बैल घुगुरुओ की ध्वनी में जिस प्रकार चारा खाता है अुसी प्रकार अपनी अवस्था बनाकर अुसने चार पाच चपातियो का चारा, कटक बाबू जिस झोपडे में था अुसी के अेक कोने में पालथी मारकर चट कर गया।

अुस दिन रफिअुद्दीन ने श्रम भी वैसे ही किये थे। अन्य कैदी जब अुस जगल की तुडाअी कर रहे थे जिसे रोज तोडा जाता था, अुस समय अग्रेजो द्वारा अप्रविष्ट पूर्व आगे के जगल में घुसकर रास्ता बनाने के लिये जो पुरस्सरो की (Pioneer) टोली कटक के हाथके नीचे गअी थी अुसी में रफीअुद्दीन भी था। कुल्हाडी, हँसिया, दरांती आदियोंसे टेढी मेढी टह-नियाँ झुरमुट, कँटेरी जालियाँ काटकर, बडे बडे पत्थरो को अुठा कर अथवा गढे में भर कर पक्का आधा मील का चलने का रास्ता अुन्होने अुन दो तीन घटो में खुला कर दिया था। कौली में न समा सके अैसा अेक भारी अजगर खुद रफीअुद्दीनने कुल्हाडीसे सिर काटकर गिरा दिया था। अुस भारी भरकम प्राणी का वह भयप्रद धड कधेपर डाल कर और अपने शरीर में लपेटकर वह जमादार के सामने नाचता था। तीन दिन का काम तीन घटे में करवा लेने कारण जमादार सहित सारे अधिकारी कटकपर भी प्रसन्न हुअे। कटक भलेही बाबू रहा हो था तो मूल का कैदी ही! अिस कारण अुस घोर और सघन जगलमें सबेरेही जब वह पाच–छे चुनीदा कैदियोको लेकर गया, तब अुसके साथ और विशेषत अुसके सगमें रफिअुद्दीन सदृश पहले भागा हुआ कैदी रहनेके कारण अुन सबपर पहरा देने के लिये अेक बदूकवाला सैनिक दिया ही था। तिसपर अुस जगलके अेक नवीन टुकडेमें पहली ही मर्तबा सरकारी प्रवेश हो रहा था अिस कारण जावराओंके अुपद्रव की भी भीति थी ही। परतु अब आधा मील अदर प्रवेश हो चुका था और अुस जगल में चलने योग्य रास्ता भी निर्विरोध बनाया जा चुका था, अत जावराओ के अुपद्रव की वह भीति खोटी साबित हुअी थी और सबका मन अुस अश म निश्चित हो चुका था।

भोजन की छुट्टी समाप्त होने पर अब पूर्व निर्धारित विचार के

अनुसार कटक का काम अुस दिनभर के लिये अितनाही वाकी रह गया था कि रास्ता वनाये गये आधे मीलके अुस टापू में रास्ते के आसपास जो भी अुपयोगी वृक्ष हाथ लगे अुसपर यथा साध्य तारकोल से क्रमाक डालना और साझ को पाच वजने से पहले पहले लौट आना। अुसके लिये रफि-अुद्दीन के साथ चार पाच कैदी सग में लेकर कटक वावू फिर अुस जगल में अुस नवनिर्मित रास्ते से होकर घुसा। अुसके आगे पीछे पहरा देने के लिये और रक्षण के लिये वह वदुकवाला सशस्त्र सैनिक भी गया। वाकीके सौ डेढ सौ कैदी लकडियो के तोडने फोडने का काम सवेरेवाली जगहपर ही करने लग गये। वचे हुअे वदुकवाले सैनिक अुन्ही में विभक्त कर दिये गये थे।

वारिश वरावर पड रही थी। अुसमें भी कटकवाली टोली जिस निविड अारण्य में गअी हुअी थी, वैसे अरण्य में तो अूपरके आसमान की वारिश घन्टे भर के लिये रुक भी जाय तो भी जगल के भीतर की वारिश नही रुकती। कारण, अूचे और विस्तीर्ण महावृक्ष अुसके नीचे छोटे वृक्ष, अुसके नीचे झाड, अुन सवको लपेटकर अुलझाकर अेक जजाल वनी हुअी लता वल्लियाँ, जालियाँ, झुरमुट, वृक्षरूप अुपवृक्ष आदि की अेकपर अेक छपरियाँ। आसमान की वारिश रुक गयी तो भी घटोतक अुस जजाल में फसा हुआ पानी अैसे जगलो में अुसी प्रकार वरसता रहता है, सरसराता, टपकता, नियरता रहता है। वही वात प्रकाश की। अूपर धूप रही भी तो भी अुस निविड झाडी में तल तक सहसा पहुँचती ही नही। जव चार वजने का वक्त हो आया तव अुस जगह अितना अघेरा छा गया कि सिर्फ पास-वाला आदमी ही नजर आ सके।

अैसा अँधेरा और पानी देखकर पाच वजे तक न ठहर कर चार वजेही लौट चले अैसा कटक ने पहरेवाले सैनिक से कहा। वह तो पूरी तरह तय्यार थाही। लगातार कधेपर वन्दूक रखे रखे वह अितना परेशान हो गया था कि अुतने परेशान जगल तुडाअी के कष्ट से वे कैदी भी न हुअे होंगे। अिस समय साथके दो तीन कैदियोको निशानी लगाये हुअे वृक्षोपर क्रमाक डालनेका काम सौंपकर कटक और सैनिक अुस नये रास्ते के परली ओर के सिरे तक जगल में घुस गये थे। रफिअुद्दीन अन मे भी आगे कुछ फासलेपर

विद्यमान खाडी की अेक शाखाके समीप पहुँचा हुआ था। समुद्र काफी दूर था। अुसकी खाडी भी अुन वृक्षोकी आड में छिपी हुअी थी। परन्तु अुसकी अेक सँकरी किन्तु गहरी शाखा दूरतक जगल में घुसकर अुस जगह खत्म हो गअी थी। अुस शाखा के कारण वहाँ थोडी सी खुली जगह मिल गअी थी। कटक अुस सैनिक के साथ वापस चलने का विचार कर ही रहा था कि अुस शाखातक आगे पहुँचे हुअे रफिअुद्दीन ने दबी जबान में कटकको पास बुलाया। कटक झपटकर आगे आने लगा, त्यो ही अुसका हाथ पकड कर अुसके साथ अेक दीवार जैसे वृक्षके बुधेकी आड में खडा होकर रफिअुद्दीन सशयी स्वर में बोला,

" बाबूजी, वो देखो! – वे गीध, चील और वे कौअे अिस खाडी की शाखा के किनारे मरे पडे हैं! यह चिन्ह कुछ ठीक नही है!"

' क्यो रे बाबा, अिस से पहले अुस सजीव अेव अजस्र अजगरको देखकर डरा नही और अिन मरे हुअे पँखेरुओको देखकर फक्क पडा जा रहा है!" वहाँ अतने में वह बन्दूकवाला सैनिक भी आ गया था, अुसकी ओर देखकर कटक हसा।

"देखो मरे चिडियो को रफिअुद्दीन डरते है! भूतप्रेत जिवपक्षियो का रूपधारण कर के भटकते है अैसा जगली लोग समझते हैं, वे ही ये पक्षी हैं अैसा कदाचित् अिसे प्रतीत हो रहा है!"

" नही बाबूजी, नही! यह चेष्टा (मजाक) की बात नहीं! देखो, अिन जगली लोगो में मैं पहले जब भाग गया था अुसी समय खूब रहा हू। अिन्हे यदि किसीपर गुप्त छापा मार कर अुनकी हत्या करनी हो तो ये लोग आसपास के चीलो, गीधो और कौओ को मार डालते है। कारण अुनकी अैसी धारणा रहती है कि, ये पक्षी अुनकी गतिविधियोका समाचार अुडते हुअे जाकर शत्रुओको बता देते है! चूकी ये अखिल भूत पक्षी यहाँ आज ही मारे गये पडे दीखते है, अत —"

"धाँय्, धाँय्, धाँय" करके बन्दूक की आवाज अुसी क्षण कैदियो की मुख्य टोली जहाँ काम करती थी अुस ओर से सुनाअी पडी! अुसके बाद ही हो हल्ला और शोर शराबा सुनाअी दिया! त्यो ही अूचाअी पर अुस झोपडे के नजदीक विद्यमान घटी की 'घनघनाहट' शुरू हो गअी!

" जावरे आ पहुँचे ! हमारी टोली पर जरूर वे टूट पडे होंगे और सैनिकोने अुनपर बदूके चलाअी होंगी ! !" रफिउद्दीनने भर्राअी हुअी आवाज में पर निर्भयता पूर्वक अनुमान लगाया !

अुस पर सबमें अधिक यदि कोअी घबराया होगा तो वह अुनकी रक्षा के लिये आया हुआ पहरेदार वह बदूकवाला सैनिक !

" अरे बापरे ! तब अब हम क्या करे ? बता बाबा अेक बार ! बोल बदूक चलाअू क्या मैं भी ?"

" नही, नही !" कटकने अुसे रोक दिया, "केवल पेड पत्तो पर बदूक छोड़ने से क्या बनेगा ? अुलटे हम अिस जगह है यह अुन जावरोको मालूम नही तो मालूम पड जायगा और वे अिस झाडी में घुसकर हमें भी घेर लेगे ! मुझे तो अैसा प्रतीत होता है कि हम अब अपना धीरज न खोते हुअे अिसी प्रकार अिस रास्ते से वापिस जा कर मुख्य टोली से जा मिले।"

सैनिक को तो वही अभीष्ट था। अुसने अपने मन में कहा,

" अगर कोअी जावरा हमपर चढ आयगा तो वह दलदल की ओर से ही आयगा। लौटते समय हमारी पीठ अिसी ओरको रहेगी, अैसी अवस्था में अिन कैदियो के आगे आगे मै चलू तो अुसमें अपनी जानको खतरा कम रहेगा। जावरो के दलदल की ओर से आनेवाले बाण प्रथमतः अिन्ही में से किसी की पीठ में घुस जायेंगे। मै आगे का आगे निकलकर भाग खडा होअूगा !" मनमें तो अिस किस्मका डर पर अूपरी तौरपर अुलटे धैर्य का अभिनय करता हुआ वह सैनिक बोला,

" हा चलो सारे ! अरे डरते क्या हो अिस तरह ! यह देखो तुम्हारे आगे आगे चलता हूँ चार कदम ! जावरे हैं क्या ? अुन्होने अिन पक्षियो को जिस तरह मार गिराया है, अुसी तरह मेरी यह बदूक अुन्हें पटापट मारकर नीचे गिरा देगी। चलाव !"

सैनिक आगे आगे रास्तेपर चलने भी लग गया, कटक और रफिउद्दीन अुसके पीछे पीछे हो लिये। पर सैनिक की अुस 'पुरोगामिता की कमजोरी रफिउद्दीन और कटक के ध्यानमें आ चुकी थी अतः कटकने अुस सैनिक की अुस दिखावटी बहादुरी को देख सिर्फ अपनी आँख

झटका करही अपनी अद्‌भुतानुभूति को रफिअुद्दीन पर व्यक्त किया। पर रफिउद्दीन से अुस खतरे और धावली के समय भी मजाक किये वगैरे नही रहा गया। वह अुस अूबडखावड और कंटीले रास्ते को झपट्टे के साथ तय करते हुअे ही कुचेष्टापूर्वक बोला,

" हवालदारजी! देखो ये जावरा लोग रहते है तो बडही शूर! अुनकी रीति अैसी है कि जिनपर छापा मारना होता है अुनपर वे पीठ पीछे से कभी वाण नही छोडेंगे! रास्ते में जो अुनके मुंहके सामने रहेगा अुसी के सामने आकर रास्ता रोककर के खडे हो जायगे और सामना देकर वाण मारेगे!

रफिअुद्दीन की यह गप्प सुनते ही सैनिक का मुंह अेकदम काला पड गया! मैंने आगे होकर ही अपनी जान खतरेमें डाल ली अैसा मनमें आते ही वह अितना घबराया कि जावरो का वाण सामने से सायें सायें करते हुअे आ ही रहा हो अैसी अुसकी अवस्था हो गअी अब अपने डर को छिपाकर सहज ही पीछे रहने के लिये कौनसा वहाना ढूंढा जाय? खासते खासते अुसे अेक वहाना भी अखिर मिल ही गया। वहाना भी अेक नंबर का था!

अेकाअेक रुककर बदूक को जमीनपर टेककर हवालदारजीने काड-तूसो की पेटी निकाली। अुसके रुकते ही रफिअुद्दीन और कटक भी थोडेसे रुक गये। अुन्हें डांट बताकर हवालदारजीने आज्ञा दी,

" क्या गँवार हो! चलने लगो न झपझप। बदूक में कारतूस भरकर तथा पट्टा बाध कर आता ही हू मै! डरते हो क्या अकेले चलने के लिये अिस तरह!"

वह समय सचमुच अेक पलभर भी ठहरने का नही था यह कटक जानता था। मजाक जानपर आ सकती है अत केवल अुपहसने से जितना मनोविनोद किया जा सकता है अुतना ही करके कटक आगे चल पडा। अुसी के साथ रफिअुद्दीन। थोडेसे फासले पर अुन्हें आगे बढा हुआ देखकर काडतुसे भरी अी अपनी बदूक फिर कधे पर डाल कर हवालदार जी भी अब अुनके पीछे पीछे चलने लगे। जावरे रास्तेमें आये भी तो सामनेसे आयेंगे, अुनके तीरो के सामने अिन कैदियो की छाती की ढाल

रहेगी और अुसके पीछे हम रहेंगे अुस परिस्थिति में जितना सभव था अुतना आत्मरक्षा का अुपाय हुआ देखकर हवालदार को भी पर्याप्त मात्रा में सतोप प्रतीत हुआ।

दो अढाअि सौ गज अुस दुर्गम पादमार्ग से अुस निविड अधकारपूर्ण अेव पानी वरसाने वाले अरण्यमें से होकर वे तीनो अुस मुख्य टोली की तरफ जानेके लिअे वापिस हुअे ही थे कि त्योंही—

दलदल के किनारे की निविड झाडी में स्थित अेक अूचे वृक्षपर से अुस सारी हलचल पर काफी देर से निगाह रखनेवाले दो मैले कुचैले जावरे नीचे अुतरे, झाडी में सर्प की भाति सरसरा कर वाहर निकले और अुनकी पीठके पीछे तक चले आये। तीर अचूक मारने योग्य विश्राति और सुविधा के मिलते ही अुन्होने अपने अपने धनुष्य तानकर दस पांच वाण, अुस पीछे रहे हुअे वदूकवाले हवालदार की पीठपर ही झनझनाते हुअे छोड दिये !

"वापरे ! मरा ! जावरे ! मरा !" अिस तरह अकस्मात् चिघाड कर वह सैनिक वदूक के सहित मुह के वल गिर पडा ! पीछेकी ओर मुडकर देखने तक का अुसे अवसर नही मिला। अचानक अुसकी पीठमें दो जहरीले वाण जो घुसे वे रीढकी ओर से सीधे पेटमें जाकर धँस गये। अुसकी पीठपर धँसकर रहे हुअे अुन वाणो के सिरे पर के पर अुडते हुअे पक्षी के सदृश्य थरथरा रहे थे, अितना आवेग और द्वेष अुनमें भरा हुआ था !

अुस चिघाड के सुनते ही कटक खट्से पीछे मुडा और सैनिक की तरफ को दौडा। पर रफिअुद्दीनने अुसका हाथ तत्काल पकड लिया और अुसे झाडी के भीतर खीच लिया !—

"वावूजी, छुप जाव, छुप जाव पहिले !"

कटक और रफिअुद्दीन, जानपर आ पडतेही मनुष्य तत्काल केवल शारीरिक प्रतिक्रिया के कारण जैसा कुछ कर जाता है, वैसे अुस झाडी में जा छिपे। न कांटे न जोक, न साप, न पत्तो पत्तियोका गीला गीला कीचड ! अुनके ध्यान में भी ये न्यूनतर अुपद्रव नही आये। खडे खडे अदर घुसना सर्वथा असभव ! वे सर्प की भाति अुस गीले कीचड में से सरसराते हुअे जहातक जाना सभव हुआ वहातक झाडी के भीतर सते चले गये। अपने हाथ में की कुल्हाडी मात्र

अुन्होने छोडी नही । पाच छे मिनिट तक अुनके मन में और हृदय म चिंता तथा धुडधुडी के अतिरिक्त अन्य किसी भी वस्तुकी अनुभूति नही थी । अुसके वाद कटक के अेकदम खयाल में आया कि सैनिक जो गिर पडा है, अुसके हाथ में भरी हुअी वदूक और कमर में कारतूसे अुमी तरह है ! यदि जावरो के हाथमें वह पड गअी तो बडा भारी अनर्थ टूट पडेगा !

" जावरो को बदूक की अुतनी हविस नही रहती "—रफिअुद्दीन बोला, "और अब झाडीसे बाहर निकलने पर जान का खतरा है ! "

" पर वदूक को अुसीतरह छोड देने में तो वह खतरा और भी भयानक स्वरूप का हो जायगा ! किसे मालूम वे अुसे लेकर चल ही दें ! पुनश्च अिस परिस्थिति में बदूकके अपने हाथ में रहने ही में अधिक मजवूती और सुरक्षितता है ! " अिस प्रकारके आग्रह के साथ कटक छिपते छिपाते फिर झाडी के मुखाग्र पर आया । चारो तरफ सन्नाटा देखकर झपटकर आगे की ओर वढा । वदूक, कारतुसे, शिकारी चाकू, और खजर निकाल लिये । सैनिक के मुंह में से खूनकी अुलटियाँ चालू थी । अुस खून मे अुस का शव वुरी तरह सन गया था ।

" मर गया वेचारा ! " अिसप्रकार निश्वास छोडकर कटक अुन हथियारो सहित फिर झाडी में घुस गया ।

रफिअुद्दीन वोला,

" अेक दो हवा मे बदूक की आवाजे कीजिये । जावरे वदूक की आवाजो से वहुत विचकते हैं । आसपास कही होगे तो आगे घुसेगे नही। नही तो अुस सैनिक की पीठमें घुसे हुअे अपने वाण निकाल लेने के लिये वे कदाचित् चले आयें । अुनके समीप वाण अिने गिने ही रहते है। शिकार करते समय छोडे गये वाण ही वे फिर यथा सभव ढूढकर निकाल ले जाते हैं । अुन्ही को ठीक करके फिर काम में ले आते है । "

अुसके अनुसार कटक रास्ते के किनारे तक आया और अेक दो वदूक की आवाजें की । और फिर अुसी झाडी में वे दुवके पडे रहे ।

टोलीके सैनिक और जमादार कुछ लोगो को साथ लेकर अुन्हे छुडाने के लिये किंवा खोजने के लिये हर हालत में अुस रास्तेसे होकर आयेंगे ही अैसा अुन्हें अेक मर्तवा प्रतीत होता था । पर सकट घटा

(Alarm Bell) जो बज रही थी और जो सुदूर टीले परसे हो हल्ला बीचबीच में से पहले सुनाअी देता रहा था वह अब बिलकुल बंद पड गया था। अुस परसे अुन्हें कभी कभी लगता था कि जावरो के प्रहार से डर कर अुन सारे कैदियोको लेकर जमादार सरकारी बैरको की ओर वापिस भी चला गया होगा।

कटकने पूछा,

" जावरो के कितने लोग छापा मारने के लिये आये होंगे ? "

रफिअुद्दीन ने अुत्तर दिया,

" कितने सौ पूछते हो! सैंकडो में तो वे लोग कभी आते ही नही! है ही सिर्फ मुठ्ठीभर बेचारे! वे लोग जब आते हैं तब वे सिर्फ पाच पचास धनुर्धर ही रहते हैं! झाडियो में दुबक कर पाच पचास जहरीले बाण अकस्मात मारकर, दस बीस मुर्दे गिराकर भाग जाना, यह अुनकी लडाअी है! घनी झाडी, अंधेरी और मार्ग शून्य! बदूकवालोकी सेना भी निकम्मी साबित होती है अुनका पीछा करने के लिये। अुस सुविधा के कारण ही वे अभी तक अिस जगल के राजा हैं। अंग्रेजो को अुनका पीछाही करना हो तो किया जा सकता है, पर अितनी प्राणहानी परेशानी और खर्च करने योग्य अिस य कश्चित् अेक अरण्यमय अुपनिवेश में युद्ध करके मिलेगा क्या अंग्रेज को! अत केवल तभी जब वे अपने रास्ते में रुकावट बनकर खडे हो और अुतनोही को जितने लोग सामने आये काटते हुअे अंग्रेज अपना काम चलाता है। हा, अब ये जो विमान तय्यार हो रहे हैं अैसा कहते हैं न, अुस प्रकार का कोअी साधन निर्माण हुआ तो अुस समय आकाशमेंसे दृष्टि डालकर जावरो के निवास स्थानो को अचूक रूपसे पता चलाने में और सौ सवासौ भयकर स्फोटक गोलक अूपरसे फेंककर जावरोका सत्यानाश करने में अंग्रेज को अेक सप्ताह भी नही लगेगा! पर वह आगे की बात है। आज तो जावरे यदि छापा मारने के लिये आये होंगे तो अेकबार पहले मेरे समक्ष अंग्रेजोके साथ अिसी प्रकारकी हुअी मुठभेड के सदृश्य वे मुश्किल से पचास से लगभग होंगे। टीलीपर बाणो की वृष्टि करके वे निकल भी गये होंगे दूसरे जगल में।"

"वैसीही यदि सभावना हो, तो फिर यहाँ कहाँ बैठे हुअ हैं हम बिलो में चूहो की तरह! चल बाहर निकले। अभी पादमार्ग अपने को दीखता है, समीप बन्दूक हैं, टोलीकी तरफ चलो। टोली के लोग यदि अिधर ही आ रहे होगे तो अुन से मुलाकात शीघ्र ही हो जायगी। वे भी बेचारे सकट में होगे, होगे भी या चले गये होगे किसे मालूम। गये भी हो तो भी नजदीक ही कही हम अुन्हे पकड सकेगे। अभी छै नही बजे है। घटी के समय बैरक में–"

'फिर कैदी बनकर आपने आप ही अुस बैरक में जाकर गिनती करायें? अेह्! कटकबाबू, अब मेरे मन में अेक भयकर विचार आ रहा है! जो भाग निकलने का अवसर अपना अपने हाथ नही आ रहा था, वही स्वय दैवने हमारे हाथ में अिस प्रकार लाकर नही दी है यह काहे पर से मानें? आज सवेरे बैरक में से निकलते समय ही विस्तुअिया ने अनुकूल स्वर में चुक् चुक् किया था। बाबूजी, विस्तुअिया के चुक् चुक् करने से शुभाशुभ की प्रतीति अवश्य होकर रहती है, समझे!"

"तब वह तभी क्यो नही पता चला तुझे? आगे चलकर शुभ हुआ कि पीछे के शकुन याद आते हैं! सौ दफा तो वे सैकडो गलत साबित हुअी चुक् चुक् की आवाजे आदमी भूल जाते हैं। वह कुछ क्यो न हो, अपनी ओर टोली के जमादार ने कुछ आदमियो को भेजा है या नही पहले यह चलकर पता चलाना ही चाहिये! क्यो ठीक है न? तो फिर चल बाहर निकल।"

वे दोनो हथियारबन्द होकर धीरे से झाडी से बाहर निकले। देखते देखते वे लोग रास्ते के प्रारभिक भाग तक आये। देखते हैं तो क्या, चारो तरफ सुनसान–सन्नाटा!

कारण, चार पाच बजने के बीच में जब अुन टोली के कैदियोपर घनी झाडी में से होकर दस–पद्रह जावरो ने भिन्न–भिन्न स्थानो से जहरीले बाणो की अकस्मात् वृष्टि की, तब अुन कैदियो में से दस बारह कैदी घायल हो गये। यह देखते ही अुस टोली में भगदड मच गअी थी। बन्दूकवाले जो दो आदमी थे अुन्हो नें बन्दूके चलाअी, पर वे गोलियाँ और छर्रे अुस घनी झाडी के पत्तो पत्तियो में न जाने कहा बिला गये! अैसी पचास भी बन्दूके

चलाओ जाती तो भी जगल में छिप कर बैठे हुओ का तथा बाण चलाने वालो का बाल भी बाका न हुआ होता। साझ का समय था वह, अधेरे में और बारिश में अुस जगल में आगे बढकर आक्रमण करने की अुन बाजारू भुनगो में से किसकी ताकत थी ?– और अुन कैदियो का बनने बिगडने वाला ही क्या था जो नाहक अपनी जान खतरे में डालते ! मरना हो तो मरे वे अग्रेज और जावरे ! जमादार सहित सारे लोग अिस अुपाय की खोज में लगे कि वहाँ से अपनी जान बचाकर यथाशक्ति जल्दी से जल्दी किस तरह निकल भागा जाय। कटक के साथ गये हुअे और रास्ते के आधे पूरे भाग में वृक्षोपर करमाक डालते हुअे जो चार पाच कैदी थे अुन्होंने ज्यो ही टोली में अिस तरह का हाहाकार पूर्ण शोरगुल सुना तो दौडे दौडे अुलटे पावो वे अपने अड्डेपर जा पहुँचे थे। कन्टक वन्टक जो भी रास्तेके परले सिरेपर अटके हुअे थे वे जिन्दा भी हैं या मर गये अिस की पूछताछ करने तक की किसी में सुध बाकी नही रह गओ थी। क्या बन्दूकवाले सैनिक और क्या जमादार किसी ने भी पैर आगे नहीं बढाया। बस सकट घटा बजाओ, जितने कैदी अिकट्ठा हुअे अुन्हें लिया, घायलो को अिसके अुसके कन्धोपर चढाया और बैरको की तरफ वापिस हो लिये। जावरो ने अुनकी फेरी हुओ पीठोपर भी ज्यो ही और चार पाच बाण ताने त्यों ही वह सारी की मारी टोली सिरपर पैर रखकर जो भागी सो भाग ही खडी हुओ। अुसने अिधर अुधर का और कुछ नही देखा।

बैरको की तरफ आते ही अरण्य विभाग के अग्रेज अधिकारी को सैनिको ने और जमादार ने सारी बाते सुओ का सूआ करके सुनाओ

"जावरो की अेक सेना की सेना अुस जगल में युद्ध के लिये आओ हुओ है साब!"

"कितने होगे वे जावरे साधारणत: ?" साहबने पूछा।

"हजार अेक तो होना ही चाहिये, साब!"

अुस टोली के लोगो की अिस तरह दुर्गति कर चुकने के बाद वे बीस पच्चीस जावरे भी अुस जगल में से भाग कर अपने सुदुर्गम अेव सुदूरवर्ती ग्रामस्थान की ओर चले गये थे। कन्टक की टुकडी पर बाण छोडने वाले दोनो के दोनो भी कन्टक के बन्दूक की आवाज करते ही दलदलकी

तरफ भाग गये थे और अपने अुन वापिस होनेवाले जावरो से जा मिले थे। अुस दिन अुन्होने अग्रेजो के लोगोपर भले ही धावा बोला हो, कुछ बरस पहले हुअी जूझ में अग्रेज ने अपने लिये जो सीमा निर्धारित की थी अुसका आज अुल्लघन कर के अुस से आगे के जावरो के लिये निर्धारित अरण्य में अुसने चोरी छिपे जो प्रवेश किया था, अुस सबध में अुन्होने अग्रेजो के लोगोमें से पाच-पच्चीस आदमियो को घायल करके बदला भलेही लिया हो, तो भी जावरे भी अिस बात को समझते थे कि, अग्रेज भी बदलेका बदला लेनेके लिये तो दो तीन दिन के भीतर ही सशस्त्र सेना की टुकडी लेकर अुस जगल मे घुसे बगैर नही रहेगा। क्वचित वह कलही कलमें धावा बोल बैठे। कारण, अग्रेजो के अेक बदूक वाले सैनिक को अुन्होने जानसे मार डाला था। अुसके तथा अुस जैसे खोये हुअे कैदियोकी तलाश में अग्रेजो के लोग अगर कलही कल में चलेही आये तो? मोर्चा बनाकर निर्धारित रणागणपर सामना भला जावरे क्या कर सकेगे? वह अुनका रण सप्रदाय ही नही। भूतो की भाति अुनका सचार, अदृश्यता अुनका अस्त्र और बल। अग्रेज अुन्हे जहा खोजेगा वहा वे किसी हालतमें नही मिलेगे; जहां खोजेगा नही वहीं से वे जान बूझकर छापा मारेगे। अतअेव अुन्हो ने अुस अरण्य की ओर फिर दोबारा झाककर भी नही देखना अैसा निश्चय किया था। तथा अबके दूसरे ही जगल में से अग्रेजो के लोगोपर अर्थात कठोर श्रमजीवी अथवा स्वतत्र ग्रामवासी कैदियो पर अगला धावा बोलने का निश्चय पक्का भी कर डाला था।

अिस रीतिसे कैदियोकी टोली मे से किंवा जावरो में से कोअी भी अुस रास्तेके अगले तथा पिछले अरण्य में बाकी नही रह गया था अेतस्मात् कटक और रफिअुद्दीन दोनो जब वहाँ पहुँचे तो अुन्हे सर्वत्र नि शब्दता तथा स्तब्धावस्था दिखाअी थी।

तादृश्य स्तब्धावस्था में, अुस प्रकारके प्राणोपर आ पडे हुअे सकट प्रसग में अथवा अुस घोर अरण्य के काले काले होते जाते वाले जबडो में अपने को पडा हुआ देख अेक विशेष दिड्मोहक भीति के कारण अुन दोनोंके हृदय हिल अुठे। और दोनो ही के मनकी प्रवृत्ति नवनवीन

भीषण सकटो का ग्रास वनने के वजाय सरल मार्गसे सरकारी वैरको की तरफ जाकर अपने वडी वधुओंसे और अधिकारियो से मिलने की ओर होने लगी।

पर दोनोही के मनमें भाग खडा होने की सनक, पेट में अुठनेवाली मरोड की तरह, निरतर सवार होती जा रही थी। अुन्हें चैन नही लेने देती थी।

रफिअुद्दीनने अिसके पहले कटक को जव स्पष्ट रूपसे सूचित किया की 'काले पानी के कैदखाने को तोडकर भागना हो तो अुसके लिये यही सवसे वढिया मौका है' तव अुससे भी पहले कटक के मनमें वही साहसपूर्ण कल्पना आअी थी' पर अुस कल्पना के साथ ही साथ अुसे याद आया कि,

"अरे, भागना तो अवश्य है, पर मुझे अकेले ही को नही भागना है' अपने साथ मालती का भी छुटकारा कराकर अुसके सहित निकल भागना है। यदि अव अिस प्रकार अकेला ही में अरण्य में घुस गया, तो पुन मालती को कैदियो के अुपनिवेश में छुडाकर लाने का पीछे की तरफ का पुल ही अुडा दिये जैसा हो जायगा' अेक दफा अरण्य में घुसा कि फिर अुपनिवेश की ओर आना ही असभव हो जायगा। अिसप्रकार अतर्कित रूप से आजही मौका आ जायगा अिसका सपना तक नही आया था। अन्यथा अुसे अन्य कोशिस से छुडा लाने की कोअी न कोअी योजना पहले ही से तय्यार करके तव आजका मौका साधा होता।"

अिस अेक अडचन के कारण कटक तत्काल भाग जाने के रफिअुद्दीन के आग्रह पर ठीकसे 'हा' भी नही कह पाता था और 'ना' भी नहीं कह पाता था। रफिअुद्दीन को कटक की अिस असली कठिनाअी की जानकारी ही नही थी। अिस कारण अुस मौके के अन्य लाभो को कटक के हृदयपर विवित करने का पुन पुन प्रयत्न करके वह अत में वोला,

"वावूजी, सवसे वढकर वात यह है कि आज सरकार आपका पीछा भी नही करेगी' और चार पाँच दिनो तक तो सरकार को अैसाही प्रतीत होता रहेगा कि, हम भागे नहीं है प्रत्युत जावरो ने ही हमें अुस सैनिक की भाति अिस जगल में कही घेरकर मार डाला होगा' सरकारी लोग हमारी

खोज में यहाँ आयेंगे, पर 'भगोडे' समझ कर नही प्रत्युत 'मारे गये' समझ कर ! और अिसी जगल में खोजेंगे पहले पहल । अिससे बढकर सहूलियत और कौनसी मिलेगी अपने को ! सचमुच, जिन्हें भागना है अुन कैदियो को सरकारने खुद ब खुद सरकारी खर्चसे बदूक, काडतूस, हथियार पुरा कर पहरे में से छोडकर अिस घने जगल तक स्वय सुरक्षिततावस्था में पहुँचा कर, अूपर से यह आश्वासन और दे डाला है कि, चार पाच दिन तक हम तुम्हारा पीछा भी नही करेगे समझे, जाओ तुम, तब तक तुम जितनी दूर जा सकते हो अुतनी दूरभाग जाओ ! "–अैसे भाग्यवान् भगोडे (पलायनकारी) कैदी अिस अदमान के सपूर्ण अितिहास में हम दोनो ही निकले हैं ! अब अितने पर न भागकर जो अुलटे अपने पैरो से बैरको की तरफ जा कर सरकारी कैदखाने में पुनरपि घुसकर बैठ जायगा वह केवल कैदखाने में ही सडकर मरने की योग्यता का है अैसा कहना चाहिये ! तब कहिये, आप को वही अिष्ट हो, तो आप बैरक की ओर वापिस चले जाअिये । मै तो अब जान भी गयी तो भी नही लौटूगा । वह अुतनी बदूक मुझे दे डालिये, बस मै घुसा ही समझियेगा जगल में, जाकर पहुँच गया ही समझिये हिन्दुस्तान में ! "

अुसके अिस अतिम निश्चयात्मक वाक्य को सुनकर कहू या न कहू अिस प्रकार चलनेवाला कटकके मनका अतरद्धन्द्व समाप्त हो गया। थोडी मात्रामें क्यों न हो पर अब कह डालना ही अुचित होगा यह समझकर कटक बोला,

"दो चार दिन पहले यदि यह मौका आता तो मै ही अिस भाग खाडे होनेके काम में तुझसे भी चार कदम आगे ही रहता; पर तुझे मालूम नही। अिन तीन चार दिनोंके अिस नये अत्यावश्यक सरकारी काम की झझट में मै तुझसे कह नही पाया जहा मेरी आजन्म कारावास की सजा हुअी हुअी बहन भी यहाँ की स्त्रियोकी जेलमें गत सप्ताह ही आयी है ! यदि मै भागूगा तो अुसे लेकर ही भागूगा। सरकारी अधिकारियो में सबको मेरी सजाके अितिवृत्त से मालूम है कि वह मेरी स्त्री बहन कटकी है । हम दोनोपर अेक साथ मिलकर की गयी हत्या का अिकठ्ठा आरोप आया और दोनो को कालेपानी की सजा हुअी । यदि मै अकेला भाग गया तो वे क्वचित मेरा बदला लेने के खयाल से, कम अज कम अुसे भी अिसकी जानकारी होगी

अिस सशय पर अुसपर जुलम तोडने से वाज़ नही आवेगे। पुनश्च, जव तक वह कैदखाने की कब्रमें गडी हुअी है, तवतक मैं भले ही अुसमें से वाहर निकलकर जीवित हो जाअू पर हालत तो मेरी भी मरे हुअे की सी ही रहेगी! यह मेरी आजही भाग निकलने के रास्ते में सवसे भारी अडचन है! अेक दफा अव मैं अिस तरह भाग खडा हुआ तो फिर अुसे छुडाने के लिये कोअी गूढ अभिसधि करू क्या, अुससे दोवारा मिलने के लिये जाना भी मेरे लिए समव हो सकेगा क्या? वह घवरा अुठेगी, मेरे लापता 'भगोडा' वन जाने की खवर सुनकर, चिताओंसे क्षीण होकर वह जान तक दे बैठेगी! —"

"ठहरिये! यही है न अडचन? तो मै आपसे प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि आपकी वहन को कैदखानेसे मुक्त कराना, जिस समय हम स्वय वधन में थे, भागे नही थे, अुस समय की अपेक्षा अव हमारे भाग जानेपर, स्वतत्र हो जानेपर ही अधिक सुसाध्य होगा! आज हम जगल में भागकर जा पहुँचे है। अिसका मतलव यह नही कि हम फिर अिस कैदियोंके अुपनिवेश में पैर रखही नही सकते! यह डर गलत है! मैं पिछली दफा जव भागा था न तव तीन चार महीने रातके वक्त खुले तौर पर रहता था अिन जानरो में और दिनभर गुप्तरूप से घुमा फिरा करता था अिस अुपनिवेशमें! कटक वावू, यह कार्म मेरा रहा। मै आपकी वहनको कैदखानेसे निरावद रूप में अुठाकर जगलमें जिस जगह आप रहेंगे अुस जगह लाकर आपके सामने खडी किये देता हू! देखिये तो सही मेरे करिश्मे। थोडा खुला छूटने दीजिये, जगलका चारा और वारा (हवा) अिस वाघने अेक दफा फिर खाया कि आ ही गयी समझिये अिस गज खाये हुअे नाखूनो में पुन वह पूर्व ालिक व्याघ्रीय धार! कटक वावू, आपको मेरा पहले का पराक्रम मालूम नहीं है। आपकी मेरी जानपहचान मेरे हाथो में हथकडियाँ पडनेके पश्चात काले पानी की तरफ आते समय 'महाराजा' वोटपर जो हुअी थी वही है! पर अुसदिन वधुभाव की जो सौगध हमने ली थी, अुसका पालन करके आपने अिस कठोर कैदखानेमें मुझपर जो अनेक अुपकार किये है अुन्हे जनम जनम तक भूलूगा नही। अुसी वोटपर कालेपानी की ओर आते हुअे मैंने कालेपानीके वधन लौह को तोडनेका आपको अभिवचन दिया था आज अुसे आशिक रूपसे सच्चा सावित किया है, कल परसों

पूर्णरूपसे सच्चा साबित कर दूगा कटक बाबू ! बेडियाँ पहने, पीजरे में बद पडा हुआ रफिअुद्दीन ही आपने देख रखा है, अत कदाचित आपको मेरा कथन आज कल्पना प्रतीत हो । पर यदि कही पीजरे में बद होनेसे पूर्व का मेरे भीतरका व्याघ्र आपने देख रखा होता न, तो मेरे करिश्मो पर आपका मेरे कहे वगैर ही विश्वास बैठ गया होता ! "

रफिउद्दीन के अिन अतके दस-पाच वाक्योंसे कटक का अुसके सबध में विश्वास बढने के स्थान पर अुसके सबध में भय ही अधिक बढता चला गया था! रफिअुद्दीन बोल रहा था कटक से, पर रफिअुद्दीन की वे बाते सुन रहा था किशन ! कटक को पीजरे में बद रफिअुद्दीन ही की जानकारी थी, यह सचमुच है,—पर किशन भूल के रफिअुद्दीन को भली भाँति पहचानता था । वह थोडी देर स्तब्ध रहा । फिर मनही मन बोला,

" तो भी यह मेरा विगाड क्या लेगा ? अिसके भीतर के पहले का व्याघ्र फिर विगड खडा हुआ तो भी चिंता काहे की ! यह यदि बाघ है तो अदमान में आकर तो मैं भी अेक प्रवीण दरवेशी बन गया हू ! यह बिगडा ही तो अिसी बदूक से अुडा डालू अिसे आन की आनमें ! "

" तब कहिये, कटक बाबू, क्या तय किया ? जाना है न भागकर? आजन्म कारावास की बधन शृखला तोड कर फेंक देनी है न अिसी क्षण?"

" तोडकर फेंक देने की बात क्या पूछता है ? तोड तो चुके ही है न अब ! भाग जानेकी बात क्यो? ये हम भागकर तो आये ही हैं । अब अगला कदम किधर रखना है वह बता ! "

" भले वीर ! अगला कदम — हिंदुस्तानमे ! स्वदेशमें ! ! "

कटक हसा ।

" पर अधकार और सकट का अेक समुह का समुद्र—यह कालेपानी का समुद्र— रुकावट बनकर फैला पडा है अिन कदमो के और स्वदेश के मध्यमें !—वह ? "

" वह अुल्लघकर ! " तैरने के पैंतरो के दो हाथ अुस अँधियारे वातावरणमें आवेश पूर्वक मार कर रफिअुद्दीन ने अुत्तर दिया ! " अुस कालेपानी के सकट समुद्र को अुल्लघकर स्वदेश जाना है यही निर्धार जाकर ही रहेंगे यही निश्चिति ! ! "

"कटक बाबू —" अुस घने, जन शून्य और अंधकार पूर्ण अरण्यमें आध अेक घंटा चर्चा हो चुकने पर रफिअुद्दीन की जानेवाली पलायनाभिसंधि की चर्चा का अुपसंहार करने लगा, "अुस दिन रात को बैरक के सामने के मैदान में हम यही चर्चा कर रहे थे। अुस समय जावरोंके गांव में आश्रयार्थ जाने का अर्थ भयंकर मृत्युही के आश्रयमें जाना है अैसा आपने कहा था, नही क्या ?"

"हाँ। तूने अुन जावरो के आश्रय में जाते समय अुपस्थित होने वाले जिन संकटो का अुल्लेख किया था वे थे ही अुस प्रकार के! विजाति का और विशेषत सुधरे हुअे मनुष्यो को गंध आते ही यदि वे बहुधा अेक समयावच्छेद से चारो दिशाओ से जहरीले तीरोकी वृष्टि करने लग जाते हैं, तो अुस अवस्था में अुनका आश्रय मांगने के लिये जाना प्रत्यक्ष मृत्यूसे भी आश्रय मांगने के लिए जाने जैसा आशा पूर्ण कृत्य नही है क्या? पर अब अुसे लेकर क्या करना है? अिन जावरो के जंगल में और अुनके हाथमें जा पडने के पश्चात् अुनकी बस्तीमें से तू पिछली दफा जिस समय भाग आया था अुस समय तूने स्वयं अनुभूत जिन संकटो का वर्णन किया और पुनरपि अुन्हीं के जबडों में जा कूदने का निश्चय सुझाया, वह मुझे कितना भी भयंकर क्यो न लगा हो, पर वह अब सच देखा जाय तो मुझे अुतना कुछ भयंकर नही लग रहा है। कारण, अब वह अेक ही अुपाय अपने सामने रह गया है। अब अुसकी बाल की खाल अुतारना खत्म कर अिस वक्त के लिए। मुझे अब यदि सचमुच कोअी वस्तु भयंकर भासित हो रही है तो वह तेरा अभिसंधिका निश्चय नही, प्रत्युत मेरे पेट में कूदने फादने वाले ये चूहे!

"मेरे भी पेट में भूख की अेकमात्र ज्वाला भडक रही है, पर अब सवेरे तक तो अुसके बुझाने का कोअी अुपाय बच नही रहा है! हां अेक अुपाय मात्र बाकी है पेटकी आग को बुझाने का!" रफिअुद्दीन अंधेरेही में हास्ययुक्त चेहरा करके बोला।

"कौनसा वह? बता तो सही!" कटकने पूछा।

"दूसरा कौनसा हो सकता है! आप जायकेदार चीजोका नाम लेते चलिये। चटपटेदार पुलाव, पूरिया, पकौडियाँ, गोश्त, भाजीका मसालेदार रस्सा, चाशनीसे भरी हुअी जिलेबियाँ, अुनके नाम श्रवण अेव ग्रहण समकाल ही आनेवाली सुगंध से मेरे मुँहमें जो पानी भरा आ रहा है अुसके छिडकने से वह पेट के भीतर की भूख की आग अगर बुझ सके तो बुझ सके!" खाकर न सही हँसकर तो पेट भर लिया अुद्दीनने।

"ठीक तूने अपने पेट भरने का अुपाय तो खोज निकाला अब मुझे भी अपने पेट भरनेका कोअी अुपाय खोज निकालना चाहिये! दिन भर वारिश में भीग भीगकर मैं तो भय्या, बुरी तरह से जम गया हूँ!" अिस तरह से स्वरमें अुद्गारते हुअे कटक अुठा और वदूक लेकर अिधर अुधर कुछ चहल कदमी करते हुअे, हाथ मलते हुअे, पैर पटकते हुअे शरीर में गर्मी लाने का यत्न करने लगा। त्यो ही अुसे समीपस्थ आध अेक मील दूरपर के जगल किनारे के अुस सरकारी नारियल के बगीचे की याद हो आयी। वह एकदम रफिअुद्दीन की तरफ मुडा

"अुठ रसोअी तय्यार है सारी। अमृत प्राशनार्थ मधुर मिष्टान्न भक्षणार्थ चल! अुस ओर के नारियल के बगीचे में जाना है!"

"और? नारियल कोअी हाथ मारते ही जमीन पर झडकर पडने वाली नीमोलियाँ नही है! अयच, हाथ से नारियल तोड सकू अितना मैं कुछ लवा नहीं हूँ।" रफिअुद्दीन हँसा।

"अदमान में दोन दफा रहकर नारियलो के पेडो से ठिगना रहा आदमी तू ही मुझे पहली मर्तवा नजर आया है! पर कोअी भी नारियल का पेड मुझसे तो अूँचा नही है यह मै दिखाये देता हू तुझे, चल!"

वे दोनो अुठे। आगे पीछे सन्नाटा है यह देखकर सरकारी सडक पर जा लगे थोडी देर वाद वाग की तरफ को मुडे। अुनके रोजके परिचय का था वह वाग। नारियलो की घनी पौध के आते ही छुरियाँ कमरमें वाधकर दोनो के दोनों दो अूँचे नारियलो पर चढे। अुन वृक्षो में पैर रखने के लिए पहले ही से खोदे वनाये हुअे रहते है। दोनो ही चढने में प्रवीण। सिरो से चिपक कर अुन्होने नारियल तोडे। वे नारियल धपाधप नीचे गिर पडे त्योंही, वह आवाज सुनते ही, वाग की परली ओर की वाजूपर वनी

हुअी रखवालदार की झोपडी की तरफ से सू सननन करते हुअे गोफन के पत्थरो की वृष्टि होने लगी !

दोनो के पेट में घस्स हो गया। कटकने नारियल के पेडपर चढने से पहले वदूक और कुल्हाडी नारियल के झमोलो और पत्तो वत्तो के ढेरमें जमीनपर ही छिपाकर रखी थी अितना अच्छा किया था। पर वे हाथियार कोअी दीया लेकर ढूँढने आये और अुसके हाथ जा लगें तो—! कटक के अेक दफा मन में आया कि, साहस करके नीचे अुतरे और वदूक चलायें। पर अुस प्रकार की आवाजसे सारा सोया हुआ जगल खडा हो जायगा ! वह भी मूर्खता ही होगी ! अूपर ही वैठे रहे तो अेकाध पत्थर सनसनाता आ कनपटी पर वठ गया कि सारा ही किस्सा खत्म हो जायगा !

अैसी दुतर्फा भीति के कारण वे जहाँ थे वही चुपचाप चिपके वैठे रहे। पर भूख अुन्हे चुप भी वैठने न दे। भीति की अपेक्षा भूख से वे अधिक सत्रस्त हो रहे थे। अततो गत्वा पेडसे चिपके चिपके ही अुन्होने कवॅले कवॅले नारियल काटे, छुरीसे छीलकर अूपरका का मोटा छिलका वहाँके झुवके ही में अटकाकर अुन्होने नारियलोका पानी पिया और अदर का मलाअी सदृश मृदु खोपा निकालकर खाया। वह अिस समय अुन्हे कितना मीठा लगा होगा अिसका वर्णन करना कठिन हैं ! सुनहरी कलशोवाले राजमहल की अूपर की छतपर वैठकर सोने के प्यालेमें भरकर द्राक्षासव पीनेवाले राजा की भाँति अुन्होने अुसका आस्वाद लिया। गोफन के पत्थर सनसनाते हुअे वीच वीचमें अुनके आजू वाजू से होकर जाते थे और तो भी वे अेकअेक कच्चा नारियल तोडकर छीलकर अुसका मधुर पानी पीतेही जाते थे मलाअी खाते ही जाते थे।

अुन्हें अव अच्छी तरावट महसूस हुअी। पत्थरभी आने वद से पड चुके थे। नीचे अुतरने के अिरादेसे रफीअुद्दीन थोडासा नीचे सरककर आया भी, पर त्योही अुस परली ओर के झोपडे में किसीने लालटैन जलाअी हो अैसा प्रकाश दिखाअी दिया ! दचककर रफिअुद्दीन आधे वृक्षपरसे अुतरते अुतरते फिर सर्प की भाँति सरसराता हुआ चोटी तक जा पहुँचा। लालटैन झोपडी से वाहर हिलती हुअी दिखाअी दी। कोअी न कोअी अपने को ढूढने के लिए निश्चित रूप से आ रहा है ! अेक के वजाय दो लालटैने ! वदूके ?—कधेपर क्या हैं

अुनके ? हा ! वदूक भरे हुअे दो सिपाही, जो अुस रात जावरो से हुअी हुअी साझ की मूठभेड के कारण अुस वागमें विशेष देखरेख रखने के लिअे तैनात किये गये थे, वे आवाज किधर से आयी यह देखने के लिअे अिधर अुधर देखते जा रहे हैं। बीचही में गोफन के पत्थर अुनके साथ आये हुअे अेक दो कैदी फेंकते हैं ! बिलकुल किसी बाजकी ओर अत में अिधरही आ रहे हैं वे !

कटक और रफिअुद्दीन पासपास के जिन दो अूचे नारियल के पेडोपर चढकर वैठे हुअे थे, अुनके बिलकुल जड के नजदीक वे पुलिसवाले चले आये ! कटक और अुद्दीन की छाती में अेक ही घवराहट समा गयी। तोपके मुहपर वाधे हुअे आदमी का हृदय जैसे तोप के छूटने की प्रतीक्षा में प्रत्येक स्पदन स्पदन में धडकता रहता है, अुसी प्रकार पुलिसवालो का ध्यान न जाने कव अपने ही वृक्षो के अूपर चला जाय और अुनके वदूक की गोली जाने कव अपने अूपर छूट जाय अिस विचारसे अुनका हृदय प्रतिक्षण थर्रा उठता था। अव हम निश्चेष्ट अवस्था में नीचे लुढक तो नही पडेंगे न अैसी भीति प्रतीत होती थी। पर अुनके सामने अिस स्थिति में अुपाय तो अेकही रह गया था कि वे वृक्षसे और भी अधिक सटकर चिपके बैठे रहें—मृत्युको अपनी ओर आने का वुलावा देने का तथा अुससे अपना पिंड छुडाने का यही अेक मार्ग था !

जैसे जैसे अुन पुलिसवालो की लालटैनो की किरणे अूपर अूपर अुनके नजदीक नजदीक आने लगी वैसे वैसे कटक और अुद्दीन के प्राण अुन्हे छोडकर दूर दूर जाने लगे !

त्योंही पडौस के दस पाच नारियल के शिखरभागो में फडफडाहट हुअी। पुलिसवाले चौंक कर अुस ओर को दौडे और अेक ने झटसे वदूक चलाअी। वदूक छूटते ही घू घू घू करते हुअे कुछ घूवड (अुलूक पक्षी) अूपर अुड गये और अेक वेचारा टप्से नीचे को टपक गया। पुलिसवाले खिलखिलाकर हँस पडे।

अेकने वह अुलूक पक्षी अुठाकर दूसरे को दिखाया।

"यह देखा तुम्हारा चोर ! घूवड पर फडफडा रहे थे। तुमने हठ पकडा कि चोर नारियल तोड रहे हैं ! ! लौटो अव, चलो !"

.. ..

वह मजमा जैसे जैसे आगे जाता गया, वैसे वैसे कटक और अुद्दीन की जानमें जान आती गयी। अुद्दीन मन ही मन हँसा, "आयी थी बीतने जानपर सो अुल्लूपर ही चली गयी!"

पर फिर से प्राणोपर सकट को न बुलाना हो तो जबतक वे पुलिस-वाले लालटैनें बुझाकर अपनी अपनी झोपडीमें नही चले जाते तबतक अुन वृक्षो के शिखरपर ही लटकते हुअे वैठे रहना आवश्यक था। अुस तरह वे दोनो भी वैठे। पर अुस दिन किये गये श्रमकी पहले की थकावट तथा अिस समय निष्क्रियता अिन दोनो कारणो से अुन दोनो के दोनो को अूघ आने लगी। शिखर भाग का गाढ परिरभ करके वे दोनो अूघने लग गये। आधा अेक घटा हो गया तोभी पुलिस पहरेदार अपनी लालटैनो के अतराफ बीडियाँ फूकते वैठे ही रहे! कटक और अुद्दीन अुनकी तरफ देखते, अूघते, न जाने कब गाढ निद्रा में निश्चेष्ट हो गये।

अुसी निश्चेष्टावस्थामें अुद्दीन का वृक्षको दिया हुआ परिरभ किसी अेक समय शिथिल हो गया, अुसकी वैठक जो चक्रायमान हुअी सो वह सर्र करके नीचे की ओर फिसल आया! अुसके साथही, अुसके मनसे पूर्व अुसका देहही जाग गया और अुसने फिर पेडको सर्पकी भाति मजबूती से लपेट लिया। निद्रारोगियोकी अैसीही अवस्था हुआ करती है। वे स्वय निद्राधीन अुनके पैर जागरित, अूची अेव सँकरी दीवारोपर पाणरक्षा के योग्य सावधानी बरतते हुअे सीधे चले जाते है, अुसी तरह अुद्दीन अुस अूँचे पेडपर से नीद ही में फिसल आया, पर वृक्षसे लिपटा हुआ ही सर्राटेसे अैसा फिसला कि सीधा जमीनपर पहुँचा। अुसकी छाती, जाँघें, सारी छिल छिला गयीं। पर अूपरसे गिर पडता तो कपालमोक्ष ही हो गया होता, अुससे बच गया यह देख अुस रक्ताक्त रूपसे खुरच जाने के बारे में अुसे कुछ अधिक अनुभव नही हुआ। नीचे आते ही अुसे सारी परिस्थितिका स्मरण हो आया। झोपडी की ओर देखा तो लालटैन बुझ चुकी थी चारो ओर निशब्दता छाअी हुअी थी। थोडा ठहर कर अुसने कटक जिस पेडपर था अुसे हाथसे धीरे से थपथपा। कटक को अूघ में भी जागृति का स्मरण था, वह समझ गया। अुसने भी हलकीसी अेक ताली अुत्तर में बजायी। "तू अुतर गया? ठीक। मै भी धीरे से अुतर आता हूँ, ठहर!" अितना सारा अर्थ अस ताली में गर्भित था।

कटक के नीचे आते ही दोनों थोडी देर तक दुबक कर चुप बैठे रहे। अुत्तर रात्रि हो चुकी होगी अैसा तर्क करके अुसके पश्चात् अुन्होने वह बदूक, कुल्हाडी आदि वस्तुअें जहा छिपायी थी वहा से निकाल ली। सबेरा होने से पहले लौटकर किसी अेक घोरतर कातार में अुन्हे विलुप्त हो ही जाना चाहिये था। अिसके अर्थ वे वहा से निकल कर सडक की तरफ आये। निकलते समय अुद्दीन पत्तो के ढेरमें से कुछ अुठा रहा है यह देख कटक ने धीरेसे कहा,

" किस बात की खटपट कर रहा है रे निष्कारण ? "

" निष्कारण ? अुस वक्त तोडकर गिराये हुअे दो तीन नारियल क्या यही फेंककर चले जायें ? "

" कितना भुक्कड है तू ! कहा डेढ दमडीके नारियल है वे ! छोड ! "

" डेढ दमडी के ? अिन्ही डेढ दमडी के नारियलो के कारण दो पूरे पूरे सिर छंटे जाते थे हमारे ! "

रफिअुद्दीनने अेक दो नारियल काख में दबा लिये। अुस सडक से जिस तरह आये थे अुसी तरह वापिस वे अरण्य मार्ग के समीप चले आये। पौ फटने के मौके पर वे अुसी रास्ते से अरण्य के बीच घुस गये। रास्ते में वह पुलिस जमादार जहा मरा पडा था, अुस जगह जाकर अुसकी पुलिस की वर्दी, दियासलाअी और बीडियो सहित सारी वस्तुअें अुन्होंने निकाल ली। जावरो का वह बाण अुसी तरह घँसा रहने दिया। अुसके पश्चात् अुन्हो ने अुस मार्ग को वही पर नमस्कार किया।

अुसके बाद अुस अरण्य के अुस पार्श्व से दूर अेक सघन भाग में घुसने का अुन्होंने जितना अुनसे बन पडा अुतना प्रयत्न किया। रास्ते में अेक चौडी और गहरी खाडी मिली। अुसका रेतीला किनारा अिस समय अुन्मुक्त, सूखा हुआ और श्वेत शुभ्र हुआ हुआ था। अदमानके सिंधु तट पर कभी कभी पडनेवाली कडी धूप अिस समय पड रही थी और अुस कारण वह रेतीला किनारा अुस जगह पडी हुअी रगबिरगी सीपियो अेव शुभ्रश्वेत स्वच्छ रेताके कारण चमचमा रहा था। वस्तुत वह स्थान अनभिष्ट मात्रा में, तपा हुआ था। पर गत दो अहोरात्र निरतर काम के पसीने में, बारिश में सडे हुअे पर्ण सचयो में, कीचड में भीग भीग कर प्रस्वेदाक्त होने के

कारण और ठडके कारण परेशान हुअे हुअे अुन दोनों 'भगोडो' को अर्थात् कालेपानीसे भागे हुअे कैदियो को, वह अनीप्सित मात्रा में प्रतप्त कडी धूप अेव रेतीला किनारा ही वहुत अधिक अीप्सित प्रतीत हुआ। जहा मनुष्य के सचारण की सभावना हो ही नही सकती अैसा वह दुर्गम अेव दु साध्य स्थान था। अैसी अवस्था में वहा यदि वे लोग खुली जगह में भी चले आयें तो भी कोअी आपत्ति जनक वस्तु नहीं रह गअी थी। अतअेव अुन दोनोने अुस खाडी पर अपने सग लाये हुअे सारे कपडे खूब मल मलकर धोये और अुस कडी धूप में सुखा डाले। अुनके शरीर की गत अहोरात्र में जोको, मच्छरो, काटो ने पुरी तरह छलनी ही वना डाली थी। अुसपर अुस अरण्यका औषध जो किचड अेव मिट्टीका लेप सो अुन दोनो ने अपने सर्वांग में लगा लिया, धूप में सुखाया, और तत्पश्चात् डालो पत्थर तथा मिट्टी के सावुन से शरीर के अवयवो को रगड रगड कर अुस खाडी में अुन्होने यथेच्छ गोते लगाये।

अुसके वाद अुन्हे जो जोरदार भूख लगी आयी, आह, अुसका क्या कहना? अुसका अनुभव तो अुन जैसे कठोर श्रमजीवी मनुष्यो को, घोर श्रमके अनतर अुस प्रकार का स्वच्छ स्नान किये हुअे वलवान् प्रकृति के मनुष्यो को ही आ सकता है! पर वहा अन्न कहासे मिलेगा? वहा तो मृगया पर ही आजीविका चलानी होगी। अुस में भी वदूक चला कर सारे प्रसुप्त अरण्य को जगा देना अुनके लिअे अव भी खतरेसे खाली नही था। पर अुस अरण्य में मिलता क्या था? जगली सूअर! और अुद्दीन पिछली दफा अुस जगल में जव भाग गया था तवसे जावरो की भाति ही सव प्रकारके शिकार करने में अुसने प्रवीणता प्राप्त कर ली थी! अव अेक घटा झाडीमेंसे लुकते छिपते जाने के वाद अुसके अेक शिकार हाथ लगा और हाथ की कुल्हाडी के अेक ही प्रहार में अुसने अुसे जमीन पर लिटा दिया। अुसके वाद सूखी हुअी रेतीली जमीन परसे लकडियां जमा करके जावरो के सूप-शास्त्र के अनुसार वह मास अुसने विधिपूर्वक भूना और फिर अेक पत्ते पर परोस कर अुन लोगो ने भोजन के लिअे प्रारभ किया।

और अुस अवस्था में भी, तादृश्य पक्वान्न के समस्त जन्म में पहली

ही वार खानेका अवसर आने के कारण कटक को मुँह टेढा मेढा बनाकर येनकेन प्रकारेण अुसे निगलना पडा। साथ लाये हुअे नारियल के टुकडो का व्यजन रहने के कारण अुलटी की नौबत तो नही आयी। तो भी जीभ के लिये वह जितना कठिन अनुभव हुआ अुतना पेट के लिये अनुभव नही हुआ। सारा चट कर चुकने के अनतर कटक को पेट भरने के समाधान की अेक डुकार आयी और अैसी कुछ तरावट महसूस हुअी कि, यव्! अुसे देखकर अुद्दीन हँसा–

"बाबूजी, दो तीन दिनमें यह जावरो खुराक आपको अितनी अनुकूल लगने लगेगी अैसाही दीखता है कि मेरे हिस्से में कुछ बच भी रहा करेगा या नही अिस का मुझीको डर लगने लग जायगा!"

अुनका भोजन अिस तरह हँसते खिलखिलाते चल ही रहा था कि त्यो ही आकाश अभ्राच्छादित सा हो गया। कटकने कहा,

"वह देख बादल किस तरह फिर घिरते चले आ रहे है! तब अगला कार्यक्रम निश्चित होने तक अिस अरण्य में पहले आसरे का स्थान कही न कहीं खोज निकलना चाहिये। कलकी रात तो पेडपर ही सोकर बिता दी, पर अुस जैसे शय्या मदिर के वे विलास प्रति रात्रि सहन करने का मुझे तो कोअी शौक है नहीं। अिस अरण्य का हमारा पथ प्रदर्शक तू ही है। तुझी को ढूढ निकालना चाहिये अेकाध अुमदासा बगला साँझ होने से पहले पहले! चल अुठ!"

"पर मै जो आपको अिस भाग में ले आया हू वह अिसी लिअे तो ले आया हू ताकि आपको बगले बगलेही अेकसधि, सुरेख, पत्थरके बने हुअे, जितने चाहिये अुतने मिल सके! आअिये, अिस टीले की अुतनी झाडी पार कर ले!"

अुस झाडी को पार करके वे टीले पर चढे। वहा से समुद्र दूर पर दिखाअी देता था। अुस टीले की अुपत्यका में गुफाअें ही गुफाअें थी और वहा से आगे रेतीले भाग तक प्रचडाकृति अलग अलग शिलाओका अेक सघ का संघ फैला हुआ था। मानो हाथियो के झुडके झुड ही सिधु पुलिन पर अवतीर्ण हुअे हो!

अुन गुफाओ को दिखला कर अुद्दीन बोला,

"देखिये बाबूजी, बगले से दूसरा बगला किस तरह लगा हुआ है ! जैसी कि बबअी की मलबार हिल ! देखियेगा अब किराया विराया किस बगले का सस्ता पडता है ।"

अुन्होने गुफाओ का निरीक्षण करना शुरू किया । देखते देखते दो विशालकाय शिलाअें अेक दूसरे के सिरोपर टेका दिये हुअ तबू की सी आकृति में खडी हुअी, दो मस्त हाथी अेक दूसरे से जूझने का खेल खेलते समय मदोन्मत्त मस्तकसे अपना अपना मस्तक भिडा कर अेक दूसरे को पीछे धकेलने के पैंतरे में खडे हो अिस प्रकार सुहाती हुअी अुन्हे दिखाअी दी । अुन शिलाओ की अुस तबू जैसी दर्शनीय रचना के भीतर तबू जैसी ही खूब खुली हुअी जगह थी । अुसमें फिर छोटी छोटी दो तीन गुफाअें कोठरियो की तरह दीवार के दोनो पार्श्वों में बनी हुअी दिखाअी दे रही थी । वह देखते ही अुद्दीन को वही जगह वननिवासके लिअे सुदर प्रतीत हुआ । वह तत्काल भीतर गया और मध्य भागमें जाकर आसन जमाकर बैठ गया पर अभी बैठा ही था कि त्योही अेकदम "घात !" "घात !" अिस तरह भर्राअी हुअी आवाज में चिल्लाकर घबराया घबरायासा बाहर निकल आया ।

"क्यो रे, क्या हुआ ?" बदूक सभालते हुअे कटकने पूछा ।

"मनुष्य कहिये, भूत कहिये, पर कटक अेक अत्यत जुगुप्सिताकृति प्राणी अुस अूपर की कोनेवाली गुफा में दुबक कर बैठा हुआ है ! अुसकी आँखें अुसके चेहरे की कालिमा में दीपवर्तिका की भाति चमक रही है !" अुद्दीनने भीति भी अपनी आदत के मुताबिक हसकर व्यक्त की ।

"तब ? आओ गोली चलाओ जल्दीसे !" कटक ने बदूक अूपर अुठायी ।

"न, न ! जबतक बिलकुल जानपर ही नही आ पडती तब तक बदूक की आवाज ठीक नही ! निष्कारण अुपद्रव मच अुठेगा सारे जगल में अेकाध दफा ! प्रथम अुसे लकडी से चुभोकर देखें ! देखें तो सही है कौनसा प्राणी वह !"

अुद्दीनने अैसा कहते कहते अेक लबी सामने पडी हुअी लकडी अुठायी और थोडासा भीतर घुस कर अुसने अुस दरार में से अुसे अदर घुसेड

दिया। अैसा करते ही अेक दयनीय स्वर में चीत्कार सा हुआ और किसी अेक प्रकार के करुणा भरे शब्द सुनाअी दिये !

"अरे ! यह तो कोअी जावरा है !" रफिअुद्दीन को जावरो की जो थोडी टूटी फूटी भाषा आती थी अुसके आधार पर अुसने पहचान लिया "मारिये मत मुझे, अिस तरह यह अपने ही से दीनवाणी में विनति कर रहा है वहुधा।"

" तव अुसे किसी तरह बाहर आने के लिअे कह और यह भी कह दे कि, हम जावरो के मित्र है शत्रु नही ?"

रफिअुद्दीनने जावरो की बोली में जैसे तैसे करके वह वात कह दी और पूरी तरह समझाने के ही खयालसे अुसने अुस लकडी को विल मे डालकर फिरसे अेक वार खडखडाया।

" आया आया —" अिस प्रकार का आर्तवाणी का अुत्तर अुस विलमें से आया। शनै शनै प्रथमत सिर बाहर निकालकर अुसके पश्चात कटिनिम्नभागसे घिसटता घिसटता अेक दु खी कष्टि जावरा अुस बिलसे वाहर निकला। बाहर आते ही अुसने अेक पैर फैलाकर अुसकी पिंडली की ओर अंगुली का अिशारा किया और आखो में पानी भरकर कराहने लगा।

कटक और अुद्दीनने जब अुस पिंडली की ओर देखा तो अुन्हें मालूम पडा कि वहाँ खून वहने वाली किसी प्रकार की अेक चोट आ गयी है। कुछ कुछ अिशारो से और कुछ शब्दोंसे अुद्दीन को यह पक्की तौर पर मालूम पडा कि, कल जावरो ने अग्रेजो की टुकडी पर जो छापा मारा था, अुस समय अुत्तर में अग्रेजी पुलिस द्वारा किये गये गोलीवारमें अेक गोली अिस जावरे के पैरमें आ कर लगी अुसके सायवाले लोग अपनी जान लेकर जव भागे जा रह थे अुस समय अिसके लिअे भागना कठिन हो गया, अेतावता अिसे वही छोड दिया गया।

रफिअुद्दीन के घ्यान में जव वह वस्तुस्थिति आयी तव अिस तरह आनंदित हुआ मानो अुसके हाथ में कोअी वडी भारी अमूल्य निधि ही आ गयी हो ! कटक को अेक ओर को ले जाकर वह बोला,

" ताली लीजिये वाबूजी पहले ! जावरों की वस्तीमे अपनेको

आश्रय प्राप्त करना था। पर अिस समय वे अंग्रेजो पर बुरी तरह नाराज है। हम ठहरे अंग्रेजी कैदियो में से अन्यतम लोग। शरणके लिअे भी हम गये तो भी दूर से देखतेही सशयग्रस्त होकर जावरे हमपर तीर चला बैठेंगे यह जो बडी भारी मुसीवत थी हमारी राहमें वह अिस जावरे की दोस्ती से टल जायगी अैसा प्रतीत होता है। जावरो के राज्य में जाने के लिअे यह जावरा अेक चलता फिरता प्रवेशपत्र ही बनकर मिल गया है अैसा समझना चाहिये। तव आअिये अिसकी शुश्रुषा हम अच्छी तरह करे।

कटक को भी यह निश्चय पसद आया। अदमानके कक्ष कारागार में रहते समय प्रथमोपचारो का और दवाअियोका काम अुसने खूब कर रखा था। वह वैद्यकीय कामचलाअू ज्ञान अुसके अिस समय अुपयोग में आया।

अुस जावरे को अुन्होने ढाढस दिया।अुसकी पिंडली की छुरी द्वारा जिसभी प्रकार हो सकी अुस प्रकारसे चीरफाड करके वह गोली बाहर निकाली चोट की जगह को धोकर पोछकर, कुछ अेक वनस्पति लाकर लगाकर पट्टी बाध दी। गोली के निकलतेही असह्य वेदना कम होकर अुस जावरे को थोडासा भला मालूम पडने लगा। अिस अुपकार की कृतज्ञता वह नाना प्रकार के शब्दो और सकेतो से व्यक्त करने लगा।

अुसी स्थानपर वे तीनो भी दो तीन दिन अुसी प्रकार छिपे रहे। जंगल के पशुपक्षियोका आखेट वदूक विदूक न चलाते हुअे जितना सभव हुआ अुतना किया। अुस जावरे से पूछकर अुसकी वस्ती की जानकारी भी अुन्होने हासिल की। वे लोग कालेपानीसे किस तरह भाग आये, अंग्रजोंके अब वे किस तरह दुश्मन बन गये है और जावरोकी वस्तीमें किस प्रकार शरण पाने की सोच रहे है, अित्यादि बाते भी अुसे वतला दी। अुस जावरेने भी अत करण से अुन्हे आश्वासन दिया कि अुसे अुन्होने जो प्राणदान दिया है अिस अुपकार का वदला देने के लिअे जावरे भी अुनकी भरसक सहायता किये वगैर नहीं रहेंगे। कारण, जावरो की जिस जातिका वह घटक था अुस जातिके नायक का वह भगिनी पति था और अेक शूर अेव विश्वस्त स्तभ भी।

अुस जावरे के ठीक होने तक वही चोरीसे छिपे रहेनेमें अुनके जो

तीन चार दिन व्यतीत हुये, अुस कालमें रफिअुद्दीन सर्वथा निर्श्चित अेवं आनदमें था। पर कटक मन ही मन अत्यत चिताक्रात अवस्थामें था। रफिअुद्दीन की जितनी कल्पना थी अुससे भी कही अविक सुलभता पूर्वक अुसका भाग जानेका निश्चय अिस मजिल तक पूरा हुआ था। जिनकी कल्पना तक नही थी अैसे कितने ही अनुकूल अवसर अुनको प्राप्त होते चले गये। वह स्वय तो अपने मनमें यही सोचता था कि अब तो हम कालेपानी से भागही गये हैं। पर कटक के मनको चिता निरतर खाये डालती थी। अुसके सामने अपनी ही मुक्तता का सवाल नही था, अपितु मालती की भी मुक्तता अुसे अभी करनी थी।

अुसे किस प्रकार छुटकारा दिलाया जावे? छुडाकर ले भी आये तो अुसे अिस जगल में, अिस गुफा में, अिस भयानक पेंच में किंवा जावरो की वस्तीमें रखें कैसे? सभाले कैसे? रफिअुद्दीन के बगैर तो अेक कदम भी आगे बढना दुर्घट है। वह आजकल भले ही अेकनिष्ठ दिखाअी देता हो। पर है तो वह मूलका अेक जातिवत हिंस्त्र पशु! अैसी अवस्थामें अुसपर विश्वास कहा तक किया जावे? पुनश्च, भलेही अुसे अिस बातकी शका तक न आये कि यह कटक किशन है अत कटकी के मालतीत्व की स्मृतिका किसी प्रकारका सूत्र अुसके मनमें अुलझा हुआ न रहे, और भलेही कटक की भी अुम्रसे, रुप से और श्रमसाध्य कष्टोके कारण आयी हुअी क्षीणतासे, यह मालती ही है अैसा सकेत करने पर भी देखते ही प्रत्यभिज्ञातव्य न रह गयी हो तो भी--किसे मालूम अुसे देखते ही रफिअुद्दीन ने अुसे मालती समझकर पहचान लिया तो? अेकाध भयकर विपत्ति अपने अूपर नही टूट पडेगी अिसका कोअी भरोसा है? पुनश्च, वह तो अिसे पहचानेगी ही! तब अिसकी पूर्वकालिक नीचता अथवा अुसकाही पूर्वकालिक क्रोध भडक अुठेगा और अुस आगकी लपटो में सभी की राख निश्चय से हो जायगी। अिम प्रकारके अेकात कातार में वह, मैं और यह! अिसकी सहायता लेकर अुसकी मुक्तता करनेका मतलब रावणकी सहायता लेकर राम का सीता की मुक्तता कराना हुआ! पर--! अिसे छोड दूसरा कोअी अुपाय अपने पास है ही कौनसा?

अुद्दीनके मनमें मात्र अुस समय प्रतारणाके भावका लवलेश तक



नही था। अुसके सामने यदि कोअी कठिनाअी थी तो वह अेक ही थी—पैसा !

जावरो की वस्तीमें लोकप्रिय होना हो तो मदद चाहिये और आगे चलकर कालेपानी को अतिम नमस्कार करना हो तो किश्तियां, कपडे, हथियार, खाद्य अित्यादि साधन जुटाने के लिअे पैसा चाहिये। अुसके लिअे दो ही मार्ग थे। अेक यह कि कैदियोकी वस्तीमें रातविरात फिर घुसकर डाके डालना अथवा कटक वावूकी जो हजार डेढ हजारकी रकम वे देनेवाले थे अुसको प्राप्त करना। पहले का अुनका यह निश्चय हुआ करता था कि कटक को अपनी सारी रकम अपने साथमें लेकर ही वैरकसे निकल भागना चाहिये ! पर अिस वीच जावरो के छापे का अप्रत्याशित मौका हाथ लगनेके कारण अुन्हे अचानक रूपसे जगलमें घुसना पडा। अुसके कारण अुनके अन्य सारे सकट टल गये, पर पैसा मात्र साथ नही लेने में आया। अुतनी अडचन वह कटक के सामने अुपस्थित किया करता था और पूछा करता था कि, "क्या करना चाहिये वतलाअिये ! डाके डाले जायें या आप अव भी अपनी वह रकम किसी युक्तिसे वापिस ले सकते हे ?"

कटक कहता, " ना, ना डाके की वात ही मत निकालो ! जहा तक वन पडे अपने हाथो अपनी मौतको वुलावा नही देना चाहिये ! मैं अपनी रकम किसी न किसी युक्तिसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करूगा। अभी मुझे आशा है। पत्थरके नीचे भिचा हुआ हाथ जहातक वन पडे सफाअीसे निकाल लेना ही अच्छा रहता है ! अन्यथा गडवड करनेसे हाथ ही टूट जायगा!"

दो तीन दिन जव अिसी तरह वीत गये तव कुछ तो अिसलिअे कि रहा नही जाता था और कुछ अिसलिअे कि अन्य कोअी अुपायही नहीं था, अतत अेक दिन कटकने अुद्दीनसे अपनी वहन के छुडाने की चर्चा छेडही दी। अुन दोनोने मिलकर अनेक अुलटी सुलटी तरकीवो को सोच निकाला। पर जव निश्चित योजना कुछ नही वन सकी तव वे हारकर सोने चले गये।

पर चूकि अुस दिन अुद्दीनके मनमें कटकी को छुडाने के विचार लगातार आते जा रहे थे अत अुसके संवधमें अन्य विषयोकी भी जिज्ञासा स्वभावत अुसके मनमें अुत्पन्न होने लगी। विस्तरे पर पडे पडे ही वह सोचने लगा, वह कैसी दीखती होगी ? छुडाकर लेही आये तो अुसकी

सगति अपना भी समय विनोद पूर्वक व्यतीत हुआ करेगा । कैसा होगा भला, अुसका स्वभाव ? और यदि वह दीखने में सुदर और स्वभावसे प्रेमला रही, तो–?' अकस्मात्, अुसकी लालसा जाग अुठी और बोली, 'तो अुसे तू और तुझे वह अभीप्सित प्रतीत नही होगी यह कैसे कहा जा सकता है ? पुनश्च, कटक तो अुसका सगा भाअी ही है । तब अुसकी कामुक अभिलाषा में तो अुसका प्रतिस्पर्धी होना सभवही नही । बहुत हुआ तो अुसको अुसका तथा मेरा प्रेमसबध भाअी और अभिभावक के नाते प्रिय नहीं लगेगा, अितनीही भीति । पर, पर, पर–'

अुद्दीन को अकस्मादेव अेक अुपाय सूझा, 'कटक बाबूके अपने अूपर जो अुपकार हुअे हैं अुनका बदला चुकानेके लिअे स्वय अुनकी जानपर आपकी जान कुर्बान करके अुन्हे और अुनकी अिस बहिनको कालेपानीपर से छुडाकर सुरक्षित रूपसे परतीर तक पहुँचाने में सेवा की और अीमानदारी की अितनी पराकाष्ठा की जाय कि अुसकी बहन स्वेच्छापूर्वक मेरे लिअे माग पेश करे और कटक बाबू आनद से अुसे पूरा करे ।' अैसी आशाको भला असभव क्या प्रतीत होगा ?

पर अिससे अितना अवश्य हुआ कि अुद्दीन की कटक के प्रति विद्यमान निष्ठा अेव अवलब पूर्वापेक्षया कहीं अधिक मजबूत हो गया । पुनश्च पैसे और सहकार्य की आवश्यकता के कारण भी कटक बगैर अुसका काम चलने वाला नही था यह भी तो अेक बात थी न !

अैसी मनस्थिति मे अुस जावरे के स्वस्थ्य होने की राह देखते हुअे वे जो अुस जगह छिपकर रह रहे थे अुस कालावधी में अुधर अुनके पीछे सरकारी अधिकारियो की चाल ढाल भी अुनके लिअे अनुकूल ही थी । अुस साझ को जावरो का धावा बोलते ही जगल छोडकर और जान लेकर सरकारी कैदियो की टोली बैरक में जब वापिस चली गयी अुसके अगले दिन एक सशस्त्र सैनिकोकी टुकडी अुस जगल में भेजी गयी अुन्हे अुस रास्तेपर जावरो के तीरोंसे मरे पडे अुस जमादार का शव दिखाअी दिया । तीर भी अुस तरह गडा हुआ था, अत अुसे जावरोने ही मार डाला है यह स्पष्ट ही था । अुसपर से सरकारी अधिकारियो ने यह अनुमान लगाया कि अुसके साथ जो कटक और रफिअुद्दीन थे अुन्हे भी

जगल में कही अेकात में घेरकर जावरो ने खत्म कर दिया होगा। और जब तक अिस तर्क को असत्य सिद्ध करनेवाला कोअी प्रबल प्रमाण न मिले तबतक अुन कैदियो का नाम 'भगोडे' कहकर घोषित करना अुन्होने स्थगित कर दिया। अत अिस दृष्टिसे अुनका पीछा किंवा खोज कितने ही दिनो तक सरकार की तरफ से हुअी ही नही। यह कटक और रफिअुद्दीन के फायदे की ही बात रही। दलदल तक का अुस जगल का वह नया हिस्सा मात्र अंग्रेजोने सर्वदा के लिअे अपने अुपनिवेश में समाविष्ट कर लिया, अुस पर कडा पहरा बिठा दिया, और जावरो ने भी अपना सामर्थ्य परखकर सदा की भाति अुस हिस्से का आना जाना बद कर दिया। और अेक पैर अुन्होने अपना पीछे ले लिया और प्रकरण बगैर बोले जहा का तहा शात हो गया।

चार पाच दिनके पश्चात् अुस जावरे का पैर थोडासा अच्छा हो गया है यह देख अुसे आगे करके अुसके वसीले से अुसके सजातीय जावरो के समीप आसरा लेने के लिये कटक और अुद्दीन अुस घोर अरण्य में अुस जावरे के पूर्ण परिचय के चोर रास्तोंसे जावरो की अुस आरण्यक 'राजधानी' की दिशामें वे चल पडे।

पर जाते समय अुस जावरे की छाती में अिस बात की धडकी भर रही थी कि, जावरे अुनका स्वागत वृक्षो पर से अकस्मात् सनसनाते हुअे आने वाले जहरीले बाणो की वृष्टि से तो करेंगे नही न? कारण जावरे कभी कभी भगोडो को अपने यहाँ शरण आते ही आसरा देते है यह भले ही सच हो, और अुनकी खुदकी जाति में कितने ही बरसो मे आसरा लिया हुआ अेक भगोडा भले ही अुस समय रह रहा था, तो भी अुनकी वह लहर अिस प्रकरण में भी अुसी प्रकार काम देगी या नहीं अिसकी अुस जावरे को भी शका ही थी। कारण, अिस समय वे अंग्रेजोपर अर्थात अंग्रेजी कैदियोपर भी अुलटे हुअे थे। कुछ कैदी 'भगोडे' के बहाने से अुनकी बस्तीका पता लगाने के लिअे गुप्तचर के तौर पर भी अंग्रेज भेजेगा, अिस बातका भी जावरो को डर लगा ही रहता है।

प्रत्येक कदमके साथ, जावरो की वह आरण्यक राजधानी जैसे जैसे समीप आती जा रही थी वैसे वैसे कटक और रफिअुद्दीन की घबराहट भी

बढती जा रही थी । वे लोग सोचते थे, हम अिस जाबरे के साथ जा तो रहे है, पर जावरे हमें अिसके साथ आता देख आसरा दे ही देंगे या अिसको भी अग्रेजी के आदमियो के साथ आता देख जातिद्रोही मानकर हम सभी को विषभक्षित वाणो का अेक साथ भक्ष्य वना डालेगे ! प्रत्येक कदम पर झाडी में कहा भी थोडी सी खुडक हुअी कि अिनको लगता कि निगरानीके लिअे तैनात किये हुअे किसी जावरे का वाण तो नही छूट रहा सनसनाता हुआ अिधर से,— या अिधर से,— या अिधर से ! ! ! जव राजधानी दो तीन मील दूर रह गयी, तव तीनो रातका सा समय आया जान वहीं ठिठक गये । वह रात अुन्होने अुस झाडी ही में व्यतीत की ।

'तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् : : : १८

यह देखिये जावरो की अेक अनादि राजधानी !

अेक राजधानी कहने का कारण यह है कि अदमान में आदिम मानवो की जो आरण्यक टोलिया हैं वे वहासे विस्तीर्ण और घने कातारोमें बडे वडे टीलोपर भिन्नभिन्न स्थानोपर जिस जगह वस गयी वही वे पृथक् रूप वसी हुअी है। अुन सवका मिला हुआ कोअी राज्य नही है, सघ नही। जो टोली जहा रहती है अुनकी अुतनी ही राजधानी, वह अेक जाति ही अलग होकर वैठ गयी । अुस प्रकार की भिन्न भिन्न जातियोमें से जिस जातिने अग्रेजोके अूपर अुस दिन धावा वोला था वह टोली यहा रहती है, यह अुसकी राजधानी है ।

घने वृक्षो झुरमुटो से ढके हुअे अिस टीले के मध्य भागपर पठार के सदृश अेक अुन्मुक्त स्थल था । अुसके पार्श्व में अुस टीले पर की पथरीली जमीन, चित्र गुफाओ में जैसी होती है वैसी वडी वडी चारपाच फूट अूचाअी की अदर दूर तक पहुँची हुअी और सलग्नावस्था लवी चली गयी पाच छै दरारें थी । यही अुस राजधानीका प्राकार वद्ध पाषाण निर्मित सुदृढ ग्रामस्थान था। अुन दरारो में वे सारे नागरिक धर्मशाला के सलग्न सहन में जिस तरह यात्री लोग खाते सोते वैठते अुठते है अुसी प्रकार सयुक्त

परिवार की भाति अनेक पीढीयो से रहते चले आये है। अिस विस्तीर्ण राजधानी के प्रजाजनो की जनसख्या यदि औरतों, बच्चो और पुरुषा को मिलाकर डेढ सौ से अधिक न भी हो तो भी कम तो थी ही नही !

वहा दीवारे नही थी, टट्टिया नही थी, अुपविभाग नही थे। सारी राजधानी मिलाकर वह अेक ही घर था, और भी अैसा कि जिसमें कमरा, अूपर का मजिल, मध्यवर्ती घर, रसोअी घर प्रभृति अेक भी विभाग नही था। बस था तो केवल अेक दूरतक गया हुआ बरामदा !

अुसके सामनेके खुले मैदान को अुस मुख्य राजधानी का अेक अुपनगर कहा जा सकता है। अुस अुपनगरमें जिस दिन आसमान साफ रहता अुस दिन धूपमें अथवा रातको चादनीमें विलास करनेके लिअे कुछ विलास मदिर भी प्रमुख घरानोने बाँध रखे थे। जिन्हें घर कहते है, वैसे वे नही थे, पर जिन्हें हम झोपडियाँ कहते हैं वैसे भी वे नही थे। बास की खपच्चियाँ लबाअी और चौडाअी में बाधकर तय्यार की गयी अेक लबी टट्टी दो तीन वृक्षोसे बाध डाली कि अुस विलास मदिर की अिमारत खडी हो गयी समझिये ! अुसके अूपर छप्परका रहना भी जावरोके शिल्पशास्त्र के अनुसार सगत नही था। तब खिडकियो, दरवाजो आदि अनावश्यक वस्तुओंका तो नाम भी नही लेना चाहिये ! अूँचे पथरीले भूभागोके सिरोपर नीचे पैर लटका कर जब लोग बैठेंग तब टेका लेने के लिअे कुछ चाहिये न ? बस अुतने ही भरके लिअे यदि वह बास की टट्टी बाध ली कि हो गया तय्यार वह विलास मदिर !

अुस टोलीके राजा नानकोवी ने भी अपनी रानीके लिअे अिस प्रकार का अेक विलासमदिर अुस राजधानीके समक्षवर्ती अुपनगर में बाध रखा था। वहाके पथरीले भूभाग के लबे और सलग्न पलग पर अपनी रानी और बच्चोके साथ बैठकर, अुस बासकी टट्टीका टेका लेते हुअे और नीचेकी ओर पैर लटकाये हुअे राजा नानकोवी जिस दिन आसमान साफ रहता अुस दिन धूप खाता हुआ अथवा रातको चादनीमें अुसी मचपर, सुखशय्याके विलासोका अुपभोग करता हुआ दिखाअी देता। पर बारिश तो सदैवकी वस्तु थी, अत अुसको अधिकाश काल अुस मुख्य राजधानीही में अन्य प्रजाजनोंके साथ हिलमिलकर खाने-बैठने-अुठने-सोने आदि में व्यतीत होता था।

दिनभर वह राष्ट्र जगल मे मृगयाके लिअे जब निकल जाता तब वह सारी राजधानी सुनसानसी रहती थी। रातको सारे के सारे नाचका कार्यक्रम रहा तो अुस मैदान में नाचते अन्यथा अुन्ही दो तीन खोहोमें सारे पुरुष स्त्रियाँ बच्चे अेक ही साथ बगैर किसी बिस्तरे बिस्तरेके सर्वथा नग्नावस्था में हँसते खेलते, जब नीद आती तब सो जाते। विवाहित दम्पति और अविवाहित स्त्रीपुरुष सब मिले जुले!

अुनका वही धर्म था, नही, सनातन धर्म था। धर्मोंधर्मोंमें बडपनका मान आजके हमारे किसीभी धर्मको प्राप्त नही होगा। सिर्फ जावरोके ही नही प्रत्युत हमारी मनुष्यजातिके भी 'तानि धर्मानी प्रथमा न्यासन्'।

अुस धर्मके समानही अुनकी दिनचर्या भी लगभग सनातन ही थी। अुस राजधानीही को देखिये। वह वहाँ कब स्थापित हुअी यह बतलाना अितिहास तथा स्मृतिके लिअे भी सभव नही था। तोभी अुसकी अुम्रका अेक कालमापक यत्र वहाँ लगा रखा था। यत्रका अभिप्राय अुस नैसर्गिक गहरे गड्ढसे है, जो अुस टीले और मैदान की अेक बाजूमें था। अिस बस्तीके जावरोकी पीढियो पर पीढियाँ समुद्रकी सीपियोंके भीतरके प्राणी पकड लाती आअी है, जिस तरह हम मूगफली खाते है और दाने अलग करके अुसके छिलके फेंक देते हैं, अुसी तरह वे सीपियोंके अदरके प्राणीको मुँहमे डालकर वे सीपियाँ अुन गड्ढो में फेंकती चली आयी है, अुन सैकडो बरसोंसे थरपर थर जमकर शिलास्थि (Fossilized) हुअी हुअी सीपियोंके किमाकार सचयके आधारपर यदि कालगणना की जाये तो अनेक युगोंसे यह बस्ती अिसी अवस्थामें वहा रहती चली आयी होगी, वे जावरे प्रत्यह दोपहर को समुद्र की सीपियोके प्राणी मूगफलीके दानोंकी तरह खाते आये होंगे, और सीपियोको अुसी गड्ढेमें फेंकते चले आये होगे तथा अपने अुसी रसोअी घरमें अिसी तरह जीभ चाटते हुअे बैठते चले आये होगे अैसा अनुमान निकलता है!

अुस राजधानीके सारेके सारे नागरिक अपने सदाके समुद्रनृत्यके लिअे आज फिर जानेवाले थे। फिर कहनेका कारण यह कि बीचमें अग्रेजोंके साथ जो युद्ध 'ठन' गया था अुसके कारण अुनके दस-पद्रह दिन अुसी गड्बडोमें चले गये थे और सर्वदा का नाचवाच कुछ भी नहीं हो पाया था। तिसपर भी आज का नाच अुनके राष्ट्रीय विजयका था। अुनकी अपनी

समतिमें अग्रेजोके साथ हुअे युद्ध में जीत अुन्ही की हुअी थी। अुस दिनके छप्पे में अपने मुठ्ठीभर आदमियोंके सामने अग्रेजोकी वह छसौ–सातसौ की सेना भी अुखड गयी थी और जान लेकर भाग गयी थी। अितनाही नही, अग्रेज सेनाका अेक वडा अधिकारी (अर्थात् वह सशस्त्र पुलिस) जावरोंके अेक वीर ने ताककर वाण मार कर ठडा कर दिया था ! वह वनका भाग भलेही अग्रेजो ने हस्तगत कर लिया हो पर अुसे गिनताही कौन है ! जितने चाहिये अुतने जगली सूअर, सुविस्तीर्ण सघन कातार और अेकातवर्ती सिंधुतट अेव वालुकामय प्रदेश जव तक निर्वेध रूपसे अपने लिअे खुले हुअे है तव तक अग्रेजोंके हाथमें गया हुआ वह नया वन्यभाग अैसा ही है, जैसी कि लक्षाधीश के जेवसे निकलकर गिरी हुअी अेक कौडी ! युद्धका हेतु वह अरण्यभाग अुतना नही था जितना था जावरोंका अपमान ! ! अुसी का वदला अुन्होने लिया था।

और वदला ही जावरोकी जीत रहती है। अुनका क्रोध जितने वेगसे भडक अुठता है अुतनेही वेगसे वह शात भी हो जाता है। अपने वैयक्तिक शत्रुसे भी वही का वही वदला लिये वगैर वे नही रहेंगे। पर यदि वह कुछ वर्ष लापता होगया, तो अुसका अुन्हे अितना विस्मरण हो जाता है कि, वह यदि फिर अुन्ही में वापिस आ गया तो अुसके सवधके क्रोध की अुन्हें याद नही आती, वह अुनमें मजेमें हिलमिलकर रह सकता है ! अग्रेजोद्वारा किये गये अपराधका भी अुन्होने जो वदला लिया सो अुसीमें अुनका समाधान हो गया। अुनके अुस विजयके अुत्साहमें शल्यवत् चुभनेवाली वात यही थी कि राजा नानकोवी का श्यालक अकेला पैरमें गोली की चोट खाकर कही जगलहीमें छिपकर वैठा हुआ था। पर वह सुरक्षित रूपसे वापिस अवश्य आ जायगा अिस वारेमें अुन्हे कुछ भी सदेह नही था। कारण, वह अग्रेजोंके हाथ तो लगाही नहीं था, अगर किसीके हाथमें पडा हुआ था तो वह था अुस दुष्ट अरण्यभूत के—अुस 'अेरम चौगा' के !

हा ! अुन जावरोमें अेक पचाक्षरिणी थी, अुसे परसो रातही को राजा नानकोवीने अपने खोये हुअे श्यालक का पता मत्रतंत्रके वलपर ढूढ निकालने के लिअे कहा था। तव अुस पचाक्षरिणी स्त्रीने अग्निके समक्ष आसन जमाया। आगकी ओर टक लगाये अुस ज्वालामें आकृति सी को देखते

हुअे वह बहुत देर तक मग्नसी बैठी रही। अुसके पश्चात् आवेगसे अेकदम अुठकर अुसने अपने गलेमें पहनी हुअी अस्थिखडकोकी माला हाथमें ली और आगके चारो ओर चिल्लाती हुअी नाचने लगी। "हा, हा, मालूम पड गया। यह देखिये, वह 'अेरम चौग!' बोल! कौनसी दुष्टता तूने की है, बता!" अैसा आन्हान देकर, वह हवामें से कोअी बोल रहा हो अिस प्रकारसे कान लगाकर सुनने लगी! और फिर बोली,

"अच्छा, अैसी बात है! सुना न राजा नानकोवी?" हम जावरोका शत्रु यह अेरम चौग, यह अरण्य का दुष्ट भूत है न अुसीने तेरे श्यालक का विश्वासघात किया है देख! वह वीर घनी झाडी में छिपकर अग्रेजो पर वाण चलाता था, पर अग्रेजो को दीखता नहीं था, अितनेमें अिस धूर्त अरण्य के भूतने अुन सारी टहनियो को झुका दिया! अुसपर वह वीर अेकदम आखो के सामने आ गया, अग्रेजने देखा, निशाना लगाया, जावरा वीर के पैर में गोली लग गयी! अन्यथा अग्रेज की क्या ताकद कि वह जावरा वीर को देख भी सकता। अरे दुष्ट अेरम चौग! अब जो हुआ सो हुआ, अब अपने ही अरण्य में छिपाये हुअे हमारे अुस वीर को दो तीन दिनके भीतर हमारे समीप सुरक्षित रूपसे पहुँचा दे, अन्यथा, अिस अरण्य में जहा तहा आगही आग लगा दूगी, और अिस थिगरे की तरह तुझे अुस आग में जला डालूगी!"

अैसा कहते हुअे अपनी कमर के चारो ओर बाधे हुअे अेक लाल कपडे के अगुल भर चौडे थिगरे को खोलने लगी। पैर से लेकर सिर तक अुसके शरीर पर अन्य स्त्रियो की भाति किसी प्रकार का कोअी कपडा नही था। और वह जो लाल थिगरा अुसने कमर से बाध रखा था वह भी मत्र तत्र का अेक कटिसूत्र समझकर! कटिसूत्र की भाँति ही वह थिगरा भी बारीक था। अुसके शरीरके किसी भी अवयव को ढकन रूप दुष्कर्म के घटित होने की कोअी समावना नही थी।

वह अरण्यवर्ती भूत, अेरम चौगा आग से बहुत अधिक डरता है। वह थिगरा आग में डालते ही जिस तरह थोडी ही देर में जलकर राख हो गया, अुसी प्रकार मेरी भी गत बनेगी यह जान डरके मारे अुस अरण्य भूतने अुसे वचन दिया कि दो तीन दिन में अुस घायल और जगल

में छिपाये गये जावरे को नानकोवी के समीप सुरक्षित रूपमें भेज दिया जायगा।

अिस आश्वासन के कारण स्वभावत जावरो की अुस युद्ध में हुअी जो थोडी बहुत हानि हुअी थी वह भी अिस तरह पूरी हो जानेवाली थी। अिससे सभी को बडा आनंद हुआ। और अिसी कारण आज के अुस सिंधु पुलिन पर होनेवाले विजय नृत्य को बडे ठाठ बाट से सपन्न करने के लिअे प्रत्येक जावरा आतुर हो अुठा था।

सवेरे ही वह सारा का सारा राष्ट्र नित्य नियम के अनुसार मृगया के लिअे निकला। औरतें, पुरुष, बच्चे, सारे के सारे! छोटे बडे सभी के हाथो में अपना अपना धनुष्य बाण विद्यमान था। राजधानी में घर तो कोअी था ही नहीं। अत अुनके दरवाजे बद करने का भी कोअी सवाल नही था। जब दरवाजा ही नही, तब साखल और ताले का तो नाम तक लेनेकी आवश्यकता नही। अत जावरो की भाषामें साखल और ताले के लिअे कोअी शब्द ही नहीं है। पीछे सामान भी कुछ रहनेवाला नही था। प्रत्येक की द्रव्य सपत्ति यदि कुछ थी तो वह थी, तीरकमट और गले में पडा हुआ कौडियो का हार। कुछ अुपकरण किंवा हथियारो के अतिरिक्त निरर्थक वस्तु अुनके घरमें कुछ रहती ही नहीं। वस्त्रो का तो नामो निशान नहीं, अन्न धान्य के सबध में बात करना हो तो अुनके सारे सग्रह, साधन, यथा, पेटारे, बोरियां, तहखाने, डिब्बे सब कुछ यदि कोअी था तो या तो वह अरण्य था या फिर वह महाविस्तीर्ण समुद्र। कल की साझ का खाना पीना सब कलही को समाप्त हुआ हुआ। आज अब जो मृगया में मिलेगा वह। Enough unto the day the evils there of Let tomorrow take care of its own!" हजारो बरसो पहले से वे जावरे अीसा के अिस धर्म सूत्रको प्रत्यह आचरण में लाते आये हैं।

राजधानी को किसी रास्ते की धर्मशाला की तरह खाली छोड़कर जावरोका वह सारा राष्ट्र अपने दैनिक कार्यक्रमके अनुसार सवेरे ही जगल में शिकार की टोह में चला गया। अुसके पश्चात् थोडेही समय में अुनकी अलग अलग पार्टियां अपनी अपनी अभिरुचि और सुविधा के अनुसार

भिन्न भिन्न शिकारो के पीछे लगती हुअी सारे जगल में बिखर गयी। कुछ स्त्रियाँ और वच्चे धनुष्यवाण अथवा पत्थर हाथ में ले पक्षियो को मारते चले गये। कुछ स्त्री पुरुष वडे वडे जगली सूवरो के पीछे लगे। कुछ समुद्र की ओर मुडकर प्रत्येक पथरीले भागपर वडी वडी मछलियो हके अुछल आने और अपने वाणसे अुनका निशाना वनाने के लिअे अुत्सुक होते हुअे वगुले की भाँति ताकमें खडे रहे।

राजा नानकोवी और अुसकी रानी 'फुली' यद्यपि राजा रानी की हैसियत में थे, तो भी अन्य सभी प्रजाजनो की भाति मृगया अुन्ही को करनी पडती थी, अन्यथा भूखे रहना पडता। जावरो में राजा को कोअी कर नही दिया करता। राजा के पास अेक भी पुलिस, नौकर या नौकरानी नही रहती। सधि-विग्रह, सकट-विकट अित्यादि अवसरो पर वह अुनका मुखिया वनता है, अुसके विचारो को विशेष महत्त्व प्राप्त होता है, यही अुसका राजापन है। अुसकी तरफ जाति जाति में होनेवाली लडाअियो के मामले में न्यायान्यायका काम तक कानून की दृप्टिसे नही रहता। कारण जावरो में जो जावरो से लडेगा, अुसी को अुससे, जितना अुसमें दम हो अुतना वदला लेना होगा। न हो तो न भी सही। जातीय न्यायालयका वह प्रश्न ही नही रहता। व्यवितगत शत्रुका विनाश व्यक्ति ही चाहे तो करे, न चाहे तो न करे। वह व्यक्तिगत वस्तु है। जाति से अुसका कोअी सबध नहीं। न मुकदमा, न जाँच, न सजा, न कारागार, न पुलिस. न पटेल, ! अैसा अुनका राजकीय विधान है, और अैसा है अुनका राजा जो सिरपर मुकुट तो क्याँ, लगोटी तक नही पहनता अथवा, अैसी है अुनकी रानी जी कमरके नीचे अिचभर पेडका सुदर ढगसे कतरा हुआ पत्ता ही लटकाये रहती है और अुसके अतिरिक्त अन्य किसी मूल्यवान् साडी का जिसे ज्ञानतक नहीं!

अुस दिन सवके साथ मृगया के लिअे चलते समय रानी फुली अपने अेक वरस के वच्चेको भी अपनी पीठपर खडा करके ले गअी थी। अपने अिधर कातकरी अित्यादि जातियो की औरते अपने वच्चेको पीठपर अेक झोली में डालकर ले जाती हैं, किवा वच्चा ही पीठकी ओर से अपनी मा के गले को हाथोद्वारा पकडकर तथा पेटको पैरोंसे लिपटा कर पीठपर वैठा

रहता है। पर अदमानी स्त्रिया अेक पट्टी सिरके तालुभाग में अटका कर पीठपर छोडती है। वच्चेको पीठपर लेने पर वह अुस पट्टीका टेका लेता है किंवा मा के कटिनिम्न पृष्ठभाग पर घडोंची की परजिस तरह टेका लिया जाता है, अुस प्रकार पैर टिकाकर पट्टीको पकडकर खडा रहता है। अुस पट्टीके निरतर दवावके कारण स्त्रियो की तालु प्रदेशका अस्थि भाग सर्वथा स्पष्ट दीखने योग्य दवा हुआ हो जाता है और वहासे सर्वदा के लिअे अेक गढासा वन जाता है। अुसमें पट्टी पत्रकी तौरसे वैठ जाती है। और वहाकी प्रौढ स्त्रियो की कटिपृष्ट भागस्थ अस्थि और कटिनिम्न पृष्ठभाग मूलत अितना अुभरा रहता है कि लडका वगैर किसी तकलीफसे अुसपर पैर रखकर खडा हो सकता है। अत यदि हम यहाकी स्त्रियोकी पीठपर वच्चा वैठता है, अैसा कहे तो अुधर की स्त्रियोकी पीठसे लगकर वच्चा खडा रहता है, अैसा कहना पडेगा।

राजा नानकोवी के अुस लडके का नाम, रानी फुली की गर्भावस्था में ही 'कोरी' रखा गया था। क्यो कि जावरो के स्मृति शास्त्रके अनुसार स्त्रियोंके गर्भवती होतेही अुस लडके का नामकरण सस्कार हो जाना चाहिये। स्वभावत ही लडके लडकियो के पहले नामो में भिन्नता नही रहती। अुसके कारण अुस वच्चे के 'कोरी' नामसे वह जावरो का युवराज था अथवा राजकन्या अिसका पता चलना कठिन था। अत अलगसे यह वताना आवश्यक है कि वह लड़का था, युवराज था। लडकी होती तो अुसका गर्भावस्था का यह पहला सामान्य लिंगी "नाम अुसके अुम्रमें आ जाने पर वदल जाता और अुसके अुस प्रथम ऋतुमें जो फूल खिले होते अुनमेंसे किसी अेक के नामपर अुसका नाम रख दिया जाता। नामकरण की यह पद्धति अुनके सनातन धर्मका द्योतक अेक जातीय संस्कार है। जिस प्रकार प्रत्येक लड़की नाम वदलती है, अुस प्रकार रानीका भी गर्भावस्था में रखा गया अेक सामान्यलिंगी पहलेका नाम था। जव रानी ऋतुमती हुअी तव अुसका नाम वदला और चूंकि चारो ओर अुस समय फूल ही फूल खिल रहे थे अत अुसका यह दूसरा नाम 'फुली' रखा गया।

अुन जावरो में से जो लोग समुद्रपर मछलियाँ मारने के लिये गये हुअे थे, अुसी ओर राजा नानकोबी और रानी फुली भी अपने बच्चे को पीठपर लिये गयी हुअी थी। अूचे पथरीले भागो के शूलाकार प्रदेशो पर अपने अपने धनुषोपर बाण चढाये हुअे जावरे खडे थे। नीचे समुद्र की लहरे अेक के पीछे अेक आकर अुन पाषाणमय तटोपर टकराती हुअी फूट जाया करती थी। बीच में कोअी अेक मत्स्य किंवा मत्स्य समूह अुन लहरो की अुछाल के साथ अूपर चला आता था। श्वेतशुभ्र बडेबडे गृध्राकृति पक्षी आकाश में से होकर समुद्रपर नीचे अूपर अेकसा चक्कर मारते रहते थे। अुनकी परछाअी अुन लहरो पर पडती थी। तब अैसा लगता था, मानो वे पक्षीही अुन तरगोपर तैर रहे हो। पर कभी कभी जब कोअी जलजतु समुद्रके अूपरी पृष्ठपर समूह बनाकर चला आता तब वे बडे बडे पक्षी सचमुच ही झपट्टा मारकर अुन तरगो पर डोलने लगते। अुन तरगोपर जब अुनकी कतार पर कतार और परछाअी डोलने लगती तब अुस नीले समुद्र की सारी लहर अैसी कुछ शुभ्रश्वेत दिखाअी देती, मानो क्षीरसागर की कोअी अेक लहर भूले से अिधर बहती चली आयी हो।

पानी के अूपर आने वाले मत्स्योपर जावरो के बाण छूटते त्योही वे मत्स शीघ्रही समुद्र में अदृश्य हो जाते। अिस तरह अेक घटे तक बाण मारते रहने के पश्चात् राजा नानकोबीने तथा अुसके पीछे पीछे अन्य जावरोने अुस के गहरे समुद्र मे गोता मारा। तीनतीन आदमियोंके अितने गहरे पानी में गोता लगाकर वे अेकदम अुसके तलपर पहुँचे। पानी में गोता मारने में जावरे अत्यत प्रवीण होते है। वह अुनका रोजमर्राका खेल भी है और आजीविका भी। जिन मछलियो के अुनके तीखे बाण गड जाते है वे मछलियां निश्चयही समुद्र के तल पर पडी हुअी मिल जाती है। अुनमें से जितनो को लाना सभव था अुतनी मछलियोको वे अपनी पीठपर लादकर अूपर ले आये। रेतीले तटपर आतेही अुन्होने अपनी वह सारी निधि नीचे डाल दी। सारे लोग अुन के चारो तरफ अिकट्ठा होकर हँसते खिलखिलाते तथा किसके बाण से कौन मछली मरी अिसकी चर्चा करते हुअे अपनी अपनी प्रशसामें मग्न हो गये। अुसके बाद अुन्होने बडी बडी आगें जलायी। अुनपर कुछ तो वे मछलियाँ, कुछ अपने बच्चो और औरतो र

शिकार कर के लाये गये पक्षियो को तथा कुछ अन्यो द्वारा लाये गये जगली सूअरो को आवश्यकतानुसार कुछ को भूना गया और कुछको साझके लिअे रख छोडा गया। अुस समय तक सवेरे अलग अलग बिखरे हुअे लोग लगभग सारे के सारे लौट चुके थे। अुस के बाद अुस शुभ्र अेव विस्तीर्ण रेतीले तटपर धूप की अूष्मामें अुन का वनभोजन प्रारभ हुआ। अुस सघन अरण्य की बरसात में तथा समुद्र के जल में सवेरे से लेकर अब तक बुरी तरह भीगते आने के कारण वे ठिठुरा रहे थे। अत धूप में जब अुनके शरीर सूख रहे थे तब अुन्हें अुतना ही आनद हो रहा था जितना कि चादनी में बैठकर भोजन करते समय हम लोगो को आनद हुआ करता है। कुछ भुना, कुछ अधकच्चा, कुछ कच्चा मास——जिस को जैसा भाया अुसने वैसा उदरस्थ कर डाला। कठिन हड्डियों को दोनो हाथोंसे कडाकड तोडते हुअे अुन की जोडो में से बह आनेवाले रस को किसीने बडे ही आस्वाद-पूर्वक चखा, तो किसीने मुलायम मुलायम हड्डियाँ वैसी की वैसी ही दाँतोसे कचाकच चबाकर खा डाली। जाबरे अन्य सब पदार्थों की भाति मास भी कच्चा खा जाते है। सर्वथा पक्वान्न का ही निश्चय हुआ तो भुना हुआ मास खा लिया। पर भूनने से आगे पकाना, राधना, मसाला डालना---अितना ही क्यो, रसोअी करना यह शब्द भी अुन की भाषा में नही है।

अितने में नानकोवीने हाथ के अिशारे करते हुअे पूछा,

" दोलकाष्ठ ?— विलायती पानी ? "

जाबरो की भाषामें शब्द अिने गिने ही रहते है। अुसपर भी अुन्हे यथाशक्ति हाथ के अिशारो से ही बातचीत करना अधिक पसद है। शब्दोंसे अुन्हें बहुत अधिक अरुची है। अत सारा वाक्य बोलना हो तो अेक शब्द में बोल जायगे और अुसका अवशिष्ट अर्थ हाव भाव द्वारा पूरा करेंगे। राजा नानकोवी ने जब केवल ' दोलकाष्ठ' अितना ही शब्द कहा तब अुसने भी अुस वाक्य का अवशिष्ठ भाग हाथ से तथा संक्षिप्तसंकेतोंसे ही पूर्ण किया। वे सारे शब्द तथा हावभाव अेकत्र करके हिंदीमें अुस वाक्य को लिखें तो अुस अेक शब्दका सारा अर्थ यों होगा—

" क्यो भाअी, क्या बात है ? अपना वह दोल्कोष्ठ किधर चला गया है। बहुत दिनो से अिधर आता ही नहीं, क्या बात हो गयी ? वह आज

अगर रहता तो वह विलायती पानी — वह शराब पेटभर कर पिलाता। अब कमी है तो बस अुसी की है।

यह सुनकर अेक जावरेने दो शब्द और दस अिशारे तथा दृष्टि-विभ्रम करके जो अुत्तर दिया, अुसका भावार्थ अितना था— "वह 'दोल-काष्ठ' अरण्यके दूसरे भागमें रहनेवाली, 'टटोवी' "नामकी जावरो की अेक दूसरी जाति के लोगों परिचय के कारण चला गया है, और थोडे ही दिनोमें वापिस आनेवाला है।"

पर अुसके लिये आजका विजय नृत्य रुक थोडा ही सकता था? मृगया और नाचही तो अिन जावरोका श्वासोच्छवास। अुसमें भी अितने दिनो से अुन अंग्रेज़ो के साथ की लडाअी की गडबडी में नाच हुआ भी नही था? अुस अिच्छा की पूर्तिके अभावरूप अुपोषण की आज पारणा ही थी। अिस नृत्य के लिये पर्युत्सुक वे जावरे पुरुष, स्त्रियाँ, लडके सारे अुस विस्तीर्ण वालुकामय तटपर भिनभिनाते हुअेसे अेकत्र हो गये। कोअी ज़ोरज़ोरसे अपनी भुजाअे थपथपाने लगे, कोअी योही अकेले छलांगें और कुलांगें मारने लगे कोअी गरजने लगा, कोअी न जाने कैसा अेकस्वरी स्वरपर तीनचार शब्दोका गाना लगातार गाते हुअे फिरने लगा। प्राय: सारे स्त्री–पुरुष अेकदम नगे। कुछ शृंगारप्रिय लोगोने आभूषणके तौरपर कटिके पुरोभागके नीचे पत्ते लटका रखे थे। दो–तीन–चार लोग ज्योही अेक दूसरेके हाथमें हाथ डालकर नाचने लगे त्योही चालीस पचास लोग अेकत्र हुअे, अेक दूसरेके हाथमें हाथ डाले अेकवृत्त बनाकर बीचमें शास्त्रोक्त रीतिसे अेक वर्तुलाकृति वस्तु रखकर अुसके चारो ओर नाचने लगे। अुस अेकस्वर, अधूरे और त्रुटित तालके गानेको अुसी प्रकार गाते हुअे घूमने घामते अुस नृत्यका वेग बढता चला गया। अेक थका कि अुस वृत्ताकृति हस्तशृंखला में दूसरा घुस आता। थकना यह व्यक्तिगत दोष था तो शृंखलाको टूटने देना तथा नृत्यके वेगको शिथिल बनाना जातीय दोष सिद्ध होनेवाला था, अपने राष्ट्रीय देव भगवान पुलगाके अुपहासका पात्र बनना था, वह जावरोंके सनातनधर्मके विरुद्ध अेक पापाचरण हुआ होता। अंतमें जब नाचकी समाप्तीका समय आया, तब तो अुस वृत्तके

नृत्योन्माद की सीमाही नही रह गयी। भराटे तथा भराटेसे फिरनेवाले अुस नृत्यमय वृत्तपर आखका ठहरना कठिनसा हो गया।

आजकल के यूरोपके किसी भी नग्न सघ के समासद अुस समय यदि वहा रहते और अुन नग्न मिले जुले स्त्री पुरुषों को अुन नग्न नृत्यावस्था में अपने देहभान को विसराया हुआ देखते तो आश्चर्य से अपने मुंह में अुगली डालकर कह बैठते — "नगा नाच अगर हो तो अैसा हो!" मार्क्स से भी सैंकडो वरसो पूर्व जावरे जिसप्रकार समाजसत्तावादी थे, अुसी प्रकार आज के यूरोप के नग्न सघ की अत्युच्च महत्त्वाकाक्षा को वे सैंकडो वरस पहले क्रिया में परिणत भी कर चुके थे।

वह नाच अभी खत्म होने भी न पाया था कि अुतने ही में अेक जावरे ने जोर से ताली वजायी तथा अूचे स्वर में चिल्लाया—"दोलकाष्ठ! दोलकाष्ठ!" देखते है तो सचमुच ही 'दोलकाष्ठ' आ रहा है और अुसकी काख में तथा हाथो में भी 'विलायती पानी' की वोतले है। जावरो के आनद का ठिकाना न रहा।

जावरो को तमाखू पहले ही से वहुत प्रिय लगती है और गत चालीस पचास वरसो से अुन में विलायती शराव का भी प्रवेश थोडा वहुत हो गया है। वे यदि अभी शराव के व्यसन के चगुल में पूरी तरह नही फँसे है, तो अुसका कारण यह नही है कि, वह अुन्हें वहुत अधिक अच्छी नहीं लगती, प्रत्युत यह है कि शराव अुन्हे मिल नही पाती है। यह जो 'दोलकाष्ठ' नाम का व्यक्ति जो आजकल अुन लोगो में अितना अधिक लोकप्रिय हो गया है वह अपने मिलनसार स्वभाव के कारण जितना लोकप्रिय हुआ है, अुसकी अपेक्षा भी अधिक तो वह शराव हासिल करके देने और तमाखू लाकर देने के कारण ही है।

जिस मनुष्यका नाम जावरोने 'दोलकाष्ठ' अिस अर्थवाले जावरी शब्दमें रखा था, वह मूलत अेक 'भगोडा' ही था। अंग्रेजोकी कालापानी की जेलही में आजन्म कारावास की सजा पाकर आया हुआ था और अनेक वरसो पहले वह जेलसे भाग गया था। पर भारतवर्ष वापिस जाने का अुसका अेकवार प्रयत्न निष्फल हो गया था। और अुस साहस कृत्य में कुछ जावरोसे अुस जंगलमें अिस विलायती पानीके कारण ही घनिष्ठ

परिचय हो गया था, अत अिन जावरोकी टोली में अुसे गत तीन चार वरसो से आश्रय मिला हुआ था। वह चोरी छिपे अदमान के आग्ल अुपनिवेशमें जाता, जावरोद्वारा प्रदत्त अनेक सुदर और वडे वडे शख, दो–दो फुट की तश्तरियो और थालियो सदृश चौडी और गुलावी रगकी सीपियाँ अुस कैदी अुपनिवेश के व्यापारियोको चोरी छिपे बेचता, वहुत कुछ पैसे गाठमें वाधता और वाकी पैसो से थोडासा विलायती मद्य और वहुतसी तमाखू गुप्तरूपसे जावरो को लाकर दिया करता था। अुन लोगो में वह अिस तरह घुलमिल गया था मानो वह अुन्ही का कोअी रिश्तेदार हो। वह अुनकी बोली बोलता, खाना खाता, नगा रहता, रगीत मिट्टी के पट्टे शरीरपर मलता, अुनके सुखदु खमें समवेदना दिखाता, अुनके स्त्री पुरुषोंमें हिलमिलकर वह अुसी प्रकार नाचता और सोता जिस तरह वे लोग नाचते और सोते थे।

वे जावरे अुसे स्नेहवश 'दोलकाष्ठ' अिस अर्थके जिस नामसे सवोधन किया करते थे, वह भी अुसे पूरी तरह फवता था। कारण अुसकी कमरतक आनेवाले ठिगने तथा बूट पॉलिश की भाति काले कलूटे जावरो में वह अधगोरा और छै–अेक फूट अूचाअीका भारतीय भगोडा जब खडा होता था तव अैसा ही दिखाअी देता था कि, तारकोलसे पुती नौकाओंके ठीक मध्य में खडा किया हुआ कोअी 'दोलकाष्ठ' ही हो! अिस साम्य के कारण ही जावरे विनोदमें अुसे अिस नामसे सवोधन करने लगे थे।

जिन्होंने अुसे अुसवार शख और सीपियाँ दी थी, अुन अुनको अुसने चार चार घूट पिलाया, अन्यो को यथेच्छ तमाखूकी वुकनी भरकर दी और राजा रानी को तो दो पूरे के पूरे प्याले शराव के आकठ भरकर अर्पण किये। अुस अुन्मादमें राजा नानकोवीने और रानी फुलीने 'दोलकाष्ठ' का अेकअेक हाथ पकडकर और अुसे मध्यमें लेकर अुसके सन्मान के लिअे अपने तीनो का अेक स्वतंत्रही नगानाच चालू किया।

अिधर विजय नृत्य का वह अुत्सव सिंधुतट पर 'विलायती पानी' के प्राशन द्वारा सपन्न हो रहा था और अुधर गत प्रकरण में वताये अनुसार वह घायल जावरा कटक और रफिवुद्दीन को साथ ले अुस राजधानी के समीप दो तीन मील पर आकर ठहरा हुआ था। अुस घायल जावरे ने

अुन्हें 'दोलकाष्ठ' नामक भगोडे की बात सुनायी। अुसने कहा कि यदि वे भी अुसी की भाति तमाखू और शराब लाकर जावरो को पुराया करें तो अुन्हें भी जावरे पूरी तरह मदद दिया करेंगे और अुन्हें स्नेह और आदर की दृष्टि से देखा करेगे। पर पहली कठनाअी यह थी कि वे भारतीय कैदी थे अग्रेजो के लोग! और जावरे थे अुस समय अग्रेजो से सख्त नाराज! अत यदि अुन्होने अुस घायल जावरे को अुन्ही के साथ आते हुअे देख लिया तो वे जावरे कदाचित् अुस जावरेपर भी सदेह कर बैठें! क्रोध से जहरीले बाण बरसाना शुरू कर दें! अुस आपत्ति को टालने के लिअे अतमें यह निश्चय हुआ कि, कटक और रफिअुद्दीन दोनो अुस रातको अुसी अरण्यमें रह जायँ, वह घायल जावरा जाकर अपने टोली वालो से मिल जाय, अैसा करने से निन्यानवे प्रतिशत अुसका स्वागत निरापद रूप से होगा, अुसके पश्चात् वह जावरा अुन लोगो को बतायें कि कटक और रफिअुद्दीन ने किस भाति अुनकी जान बचायी, वे दोनो अग्रेजोंके आदमी नही हैं, बल्कि अिस समय तो वे अुनके कट्टर दुश्मन बने हुअे है, 'भगोडे' हैं, और जावरोको नाना प्रकार के मद्य, तमाखू, काचमणि, रगीत रेशमी वस्त्रो की पट्टियाँ अित्यादि वस्तुअें सदैव पुराया करेगे। ये सब बाते बडी युक्ति से वह कहे और अुसके पश्चात् घायल जावरे की जान बचानेके अुपकार के बदले अुन नये भगोडो को अपने यहा आश्रय देने के लिअे टोली के राजारानीको राजी करे। अितना काम हो जाते ही वह जावरा फिर अिस जगलमें आये और कटक तथा अुद्दीन को अपने साथ ले जाय।

अिस निश्चय से पर्याप्त अशमें निर्भय हुआ हुआ वह जावरा शीघ्र ही राजधानी की ओर चल पडा। कटक और रफिअुद्दीन जगल ही में ठहरे रहे। अुनके दिलमें घबराहट भर गयी थी कि, जाने आगे क्या हो और जावरे क्या करे! अुसपर भी रफिअुद्दीन की मूल आततायी वृत्ति के सबध में कटक मनही मन सदैव आशकित तथा सावधान रहता था। पुनश्च, मालती की मुक्तता हो जाय, अिस राक्षस का पूर्व वैर जागरित हो अुठे, तब यह अिस अेकात अरण्य में अपने ही अूपर अुलट पडे तो— अिस भीति के कारण, कटक अविस्मरण पूर्वक अुस बदूक और बारूद

गोले को अपने हाथ में रखने लगगया था । अूपरसे अैसा दिखाता था कि यह सब सहज भावसे ही वह कर रहा है। अुसमें भी अब अुन दोनो के सामने अेक नया ही प्रश्न अुपस्थित हो गया था। — यह 'दोलकाण्ठ' कौन है ? जावरोपर अितने बरसो से अपनी छाप डालने वाला यह 'भगोडा' कोअी कर्तृत्ववान् मनुष्य ही होना चाहिये ! वह अिन जावरोमें अिसी-प्रकार यही का यही क्यो रह गया ? वह भी समुद्र लाघकर भागने के मौके की खोजमें है क्या ? साधन सामग्री जुटा रहा है क्या ? कोअी न कोअी कर्तृत्वशाली पुरुषही है, अेतावता, हुआ तो वह अेक अुपयोगी मित्र —नहीं तो अुपद्रवी शत्रु ! क्या सिद्ध होगा कौन जाने ?

और सबसे अधिक परेशान करनेवाली चिता अिस बात की थी कि अिस घायल जावरे को देखते ही वह राजा नानकोवी क्या कहेगा, क्या करेगा ?

" तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है !..." : : १९

जावरोका जयनृत्य समाप्त हुआ। सूर्य अस्ताचलकी ओर चल पडा। जावरे भी अपनी राजधानी की ओर चल पडे।

राजा नानकोवी अुस खोहवाले अपने राजमहलमें नहीं गया। अुस मैदानवाले विलास मदिर में ही प्रविष्ट हुआ। अुस विलास मदिरमें राज-शय्या का काम करती थी अेक शिला। छतका काम करता था आकाश, तीन ओर की तीन दीवारे थी, तीनो दिशाअे ! चौथी दिशा की दीवार थी वृक्षो से बाधी हुअी बास की खपच्चियो वाली टट्टी, और वही अुस राजशय्या का तकिया भी था ! अुसका टेका लेकर शिला शय्यापर नानकोवी बैठा। "फुली ऽ !" प्रेमभरी अेक हाक अुसने मारी। फुली रानी प्रसन्नवदन वहा चली आयी। अुसकी आखो में कामपूर्ण लपटता और हृदयमें वह 'विलायती पानी' हिलोरें ले रहा था।

आसमान में बरसात नही थी। वह खुला था। साझ की धूपकी कोमल किरणें हिलने डोलनेवाले जगल के अूपर कूदफाद मचा रही थी।

प्रणय के मुग्ध हावभाव प्रदर्शित करती हुअी रानी फुलीने अेक हाथ में धारदार काच का टुकडा आगे बढ़ाकर और दूसरे हाथ से किसी ब्रश जितने तथा ब्रश जैसे बढे हुअे बालोवाले अपने सिर को दिखलाते हुअे आर्जवपूर्वक कहा—" तराश न ! "

अुसके अुस अभिनय और शब्दों का मिलाकर अर्थ यों था कि, ' बाल कुछ बढ गये हैं, मेरा मस्तक विशोभित हो गया है, अिस काच के टुकडे-रूप अुस्तरे से चिकनी चिकनी हजामत कर डाल न ! सिर की वीर बना डाल न, प्रिय तम मेरी, वह भी तेरे अपने ही हाथो से ! '

हमारे यहा प्रियपत्नी के केशकलाप की किसी विलासी पति द्वारा वेणी का कसा जाना जैसे प्रणयक्रीडा का अेक अग है, बैल अपने सीगोंसे गाय को खुजाते हुअे और चाटते हुअे जिस तरह प्रेम में आया होता है, अुसी प्रकार प्रेमातुर हो अुठनेपर अपनी प्रियतमा के सिर के बढनेवाले बालो को सर्वथा हलके हाथो से 'तराश कर' अुसकी चिकनी चिकनी हजामत बनाना जावरो के प्रणयी जनो की अेक हविस हुआ करती है। अुन के रतिविलास का ही वह अेक शृगारभाग है ! विधवा का केशवपन अपने धर्मशास्त्रो के अनुसार जितना अनिद्य—नहीं, जितना अेक प्रकार का अनुल्लघ्य धर्मसस्कार, अुसी प्रकार सधवा का केशवपन भी जावरो के धर्म शास्त्र के अनुसार अेक सौभाग्यलक्षण और अेक धर्मसस्कार समझा जाता है।

अपनी प्रिय पत्नी की अुस हविस की पूर्तिके लिअे नानकोवीने तत्काल अुसे समीप ले लिया। शिलाशय्या पर अुसे सुलाकर, अुसका सिर अपनी जाँघपर लेकर अुस कांच के धारदार टुकडे से वह लाडभरे तथा हल्के हाथोंसे अुसका सिर साफ करने लगा। सिर सफा चट हो चुकने के पश्चात् जब वह अुठकर बैठी, तब अपने चिकने चुपडे सिर से अधिकाधिक शोभायमान वह विकेशा रानी फुली अुसे अितनी मोहक और आकर्षक प्रतीत होने लगी कि, अुसने प्रणयावेश में अुसका चुबन वहीं का वहीं ले लिया। और जिस तरह अुसने रानी की अिच्छा पूरी की थी अुसी तरह रानी भी अुसकी अिच्छा पूरी करे अिस अर्थ की अेक विनति जावरों की रीति के अनुसार अभिनय की भाषा में करते हुअे, अेक हाथ से अुसने वह

काच का टुकडा सामने की ओर किया और दूसरे हाथ से अपना सिर दिख-लाते हुअे नानकोबी अपनी प्रियतमा से आर्जवपूर्वक बोला, "तराश !"

तब रानी फुलीने नानकोबी को अुसी पत्थर की सेजपर सुलाया। अुसका सिर अपनी विवस्त्र जघापर लिया और काच के दूसरे अेक अेकदम कोरे धारदार अुस्तरे से वह जावरा सुदरी 'कर्र कर्र' करती हुअी अपने पति की हजामत बनाने लगी। अितने मे नानकोबी की बहन और अेक दो लडके भी वहां आये। ताजे ताजे दो तीन छबडी भर के सजीव सीपियां वे लोग फलाहार के लिये ले आये थे। अपनी सीपियो का मुह खोल कर अदर के नानाविध प्राणियो को मूगफली के दानो की तरह मुंह में डालते हुअे तथा अुन सीपियो को अुस पुरातन गढे में फेकते हुअे वे सारे लोग गपशप लडाते हुअे बैठ गये।

त्योंही, "आगया ! आगया ! अूऽऽ अूऽऽ" अिस तरह अकस्मात् चिल्ला कर नानकोबी की बहन नाचती हुअी अुठ खडी हुअी ! दूरस्थ झाडी की ओर सकेत कर के अुसने सब का ध्यान जिधर आकर्षित कर लिया था, अुधर जब नानकोबीने देखा तो अुसे दिखाअी दिया कि, अुस का गुम हुआ वह घायल जावरा, अपनी अुस बहिन का पति, थोडा लगडाते हुअे किंतु साकल्येन सर्वथा निर्भय, निश्चित वृत्ति से अपनी राजधानी की ओर चला आ रहा है। तत्क्षण आनद से ताली पीट कर वे सारे खडे हो गये और नाना प्रकार के अिशारे करते हुअे तथा विचित्र प्रकार से चिल्लाते हुअे "चल, चल, जल्दी आ, तेरा स्वागत हो !" अैसा भाव व्यक्त करने लगे।

अपने विषय में अपने जातभाअियो के मन में किसी भी प्रकार का किल्मिष नही आया यह देख हर्षोत्फुल्ल वह जावरा भी आनद अेव औत्सुक्य से दौडता हुआ ही आगे आया। पर अपने अुन भाअीबदो के समुख आते ही अेकदम ठिठक गया। नानकोबी, फुली और अुस जावरे की स्त्री अित्यादि सारे के सारे न हंसे, न बोले, तन कर खडे हुअे और अुसकी तरफ देखने लगे। धीमे धीमे अुन्होने अपनी आखें अुसपर फाडी। वह भी तन कर खडा हुआ और मानो गुस्से मे भर आया हो, अिस तरह अुनकी ओर आंखें फाड कर घूरने लगा।

अुस के पश्चात् वे दोनो पक्ष अेक के बाद अेक करके खांसने खखारने लगे। पाच छै मर्तबा यह खासना हो चुकने के पश्चात् वे फिर निश्चल वृत्ति से अेक दूसरे को घूरते हुअे खडे रहे।

कारण, जावरो के शिष्टाचारके अनुसार वही नमस्कार चमत्कार की पद्धति है। कोअी भी व्यक्ति, वह अपना खास लडका ही क्यो न हो कुछ दिन बाहर रह कर घर वापिस आया कि अुससे मिलने जुलने से पूर्व अिसी प्रकार का नमस्कार चमत्कार करना पडता है।

अिस रूढि का मूल जावरो की स्मृतिक्षीणता में होगा। अुन्हे याद तो किसी वस्तुकी ठीकसे रहती ही नहीं। अत मनुष्य कुछ दिन लापता होकर वापिस अपने में आया कि जबतक अुसकी पहचान ठीक ढंगसे न हो जाय, तबतक अुसे ठीकसे निरख परखकर देखना पडता है, खास खखारकर अुसकी शत्रुता किंवा मित्रता का ठीक से पता चलाकर अुसको अपनी टोली में घुसने देना यह भी सावधानता का अेक कर्तव्य हुआ करता है। अुस प्रारंभिक काल की आवश्यकता का ही रूपातर अिस शिष्टाचार के रूप में हुआ और पहचान हुअी हुअी भी हो तो भी अभ्यागतो के साथ अुस प्रकार का नमस्कार चमत्कार किये बिना न बोलने की पद्धति ही पड गयी होगी।

अुस शिष्टाचार के पूर्ण होते ही, अुन्ही विस्फारित नेत्रोंसे आनद का अश्रुजल वेगसे वह निकला और अपने अुस खोये हुअे वीरबधुके गले में अन्य बाधवो के तथा पतिके गले में पत्नी के प्रेमपूर्ण आलिंगन की भुजाअें जा पडी।

अपने छुटकारेका अद्भुत वृत्तात सुनाते समय अुस पुनरागत जावरे ने कंटक के तथा रफिअुद्दीन के अपने अूपर हुअे अुपकारोका अितना अधिक अुल्लेख किया कि, जब अुसने अत में अुन दोनो भगोडोको जावरे आश्रय देने और अुनके द्वारा अुसे दिये गये प्राणदान के ऋण से अुऋण हो अैसी साग्रह विनति अुस समयतक वहा आये हुअे अुन टोलीके अनेक लोगो को संबोधित करते हुअे की, और अुन भगोडो की ओर से यथेच्छ तमाखू और शराब मिलने का आमिष (लालच) भी दिखाया तब अुसपर जिसने स्वीकृति सूचक सिर न हिलाया हो अैसा अेक भी जावरा नजर नही आया। तथापि किंचित् विचार करने वाली, नेताको सुहाने योग्य मुखमुद्रा कर के

नानकोवी थोडी देर चुप बैठा और तत्पश्चात् अिशारो से वाक्यका अधिकाश व्यक्त करते हुअे केवल अितना ही शब्द अुसने अुच्चारा,

"दोलकाष्ठ!"

अुसमें अितना अर्थ भरा हुआ था कि, अैसे भगडोकी सच्ची परीक्षा दोलकाष्ठ ही को है! अुसी को हमारी ओरसे अुनके पास भेजो! यदि कटक और रफिअुद्दीन को दोलकाष्ठ ने आश्रयाह समझा तो आश्रय अवश्य देंगे।

अुधर सध्याकाल के समय अुसकी मुलाकात हो रही थी, अिधर कटक और रफिअुद्दीनने सूर्यास्त से पूर्वही किसी पशुका शिकार किया, अुसका मास अग्निपर भूना और अुससे पेट भर चुकने के पश्चात् अुस भयानक दलदल और कीचड वाले जगलमें अपने बिस्तरेकी खोज करने लगे! वहाका पलग, पलगकी मूलप्रवृति वृक्षके अतिरिक्त और कौनसा हो सकता था? वृक्षोको देखते देखते वे अैसे दो अलग अलग वृक्षोपर चढे जिनकी चौडी चौडी टहनियां अूचाअी पर जाकर अेक दूसरेसे चिपकी हुअी दिखाअी दी। अुन वृक्षोकी टहनियो द्वारा तय्यार-किये गये तख्तोपर वे सो गये। गाढ़ निद्रामें कहो लुढककर नीचे ही न आ पडें। अिस भय के अपाकरण के लिये अुन्होने अपने आपको अरण्यवल्लरियो की रस्सीके सदृश मजबूत छालो से अुन टहनियो के पलग के साथ बाध लिया। बरसात बहुत देर तक बद रही। तथापि जगलमें से पानी तो टपकता ही रहा। बीच बीचमें अेकाध झडी भी आ ही जाती थी। पर अिसमें सदेह नही कि वे दोनो शीघ्रही गहरी नीदमें सो गये। पर वह गहरी नीदही थी अथवा ग्लानिजन्य बेसुधी थी, यह अुनके अपने ध्यानमें भी नही आया।

तडके ही उद्दीन अुठा। अुसे अुस गहरी नीद के पश्चात् अितनी प्रफुल्लता अनुभव हो रही थी कि वह थोडी देरके लिये यह भी भूल गया कि अुसके सिरपर सकट की भयानक तलवार लटक रही है। समीप ही दूसरे वृक्षपर कटक सोया हुआ था। अुसकी ओर अुसने देखा तो वह भी अगडाअियाँ लेता हुआ नीदसे जागकर अुठ ही रहा था। थोडा विनोद करने की अिच्छा हो आते ही अुद्दीनने कटक को पूरी तरह अुठाने के लिये अूची और सुरीली आवाजमें यह भूपाली छेडी—

घन श्याम सुदरा, धोधरा अरुणोदय झाला ।
अुठो कंटक बाबूजी अुदयाचलीं सूर्य आला ।।

कटक को हँसी आयी । वह भी अुठकर के टहनीपर ही कुछ देर बैठा, बाघ की टोहमें मचान बाधकर मृगयु लोग जिस तरह बैठते हैं, अुसी तरह कटक को बैठा देख अुद्दीनने मजाक की,

" क्यो बाबूजी, कितने बाघ मारे ? "

कटकने उत्तर दिया,

' भय्या, जो सचमुच बाघ, वो तो अभी आनेवाला हैं । वे जावरे कल के निश्चयानुसार अभी वापिस आयेंगे । तव या तो वे मानुषायित दिखाअी देंगे या व्याघ्रायित! – बाणो के नखोंसे फाड फाडकर खा जायेंगे तुझे और मुझे ! "

कटक अभी अितना बोल ही रहा था कि, त्योंही सामने की झाडीमें हलचल होने लगी । केवल सौ कदमो की दूरीपर आते ही जावरेने अपनी अरण्यक भाषामें " भू ऽऽ भू ऽऽ ' करके जोरसे चिल्लाना शुरू किया । अुस जावरेको पहचानते ही कटक झटपट वृक्षसे नीचे अुतरा । रफिअुद्दीन अपने पेटपर अुसी तरह बना रहा । अिसका कुछ अशमें तो यह कारण हुआ कि वह अपने चारों ओर बाधी हुअी वेलोकी छालोको जल्दीसे खोल नही पाया परतु कुछ अश में अुसने जो दोरी लगायी वह अपने रक्तमास में भिनी हुअी शठवृत्ति के कारण भी थी । अुस जावरे के साथ वह अपरिचित ' दोलकाष्ठ ' भी आया हुआ था । अुन दोनोका निश्चय कटक और अुद्दीन को आश्रय देनेका था अथवा नही यह अभी पूरी तौरसे पता चलाना था । तब अैसी शकाकुल स्थितिमें स्वय आगे न बढकर कटकको ही आगे जाने दिया जाय, यदि यह दिखाअी दे कि पासा अनुकूल पड रहा है तो खुदभी वहाँ जायें । प्रतिकूल दीखा कि पीछेसे पीछेही निकलकर भाग खडे हो सके अैसा कपट भावभी रफिअुद्दीन के अुस तरह पीछे रहने में था ही नहीं यह कौन कहे ?

कटक को आगे आया देखते ही अुस जावरेने आनंदका चीत्कार किया और अुसे अपनी भुजाओ में लिपट लिया । 'ये ही है कटकबाबू ! ' अैसा

अुसने अुसका परिचय ' दोलकाष्ठ ' को करवा दिया । तत्काल दोलकाष्ठ ने भी आगे बढकर कटकसे कहा,

" कटक बाबू, मुझे लगा ही था कि आप होगे ! मैं यद्यपि गत दो तीन बरसोसे अिन जावरो में अिस प्रकार नगा होकर अेक जावरा ही बन गया हू, तथापि वेषांतर करके मै कालेपानी के अुपनिवेश में निरतर घूमता रहता हू । मैंने आपको अनेक बार देखा है । आपकी अधिकारियो मे जो प्रतिष्ठा है और आपका भाग जाने का जो निश्चय है वह भी मुझे मालूम है । सत्तावन के स्वातन्त्र्यवीर अप्पाका मैं भी अेक विश्वासपात्र मित्र था । आपको सहायता पहुँचाने के लिअे मरते समय अुन्होने मुझसे कहा था ! वे अेक गुप्तमन्त्र मनुष्य थे ! अुन्होंने मेरा परिचय आपको नही दिया था । कारण आपके साथ अुनकी जान पहचान नअी थी और मेरी पुरानी । मुझे कालेपानी परसे भाग जाने के लिअे जैसा साथी चाहिये वैसे आपही है ! कटक बाबू, आपकी बहन कटकी को मे आनकी आन में छुडाकर ले आअूगा ! चौंकियेगा नही ! मुझे सब कुछ मालूम है —कैसे यह सब मौका मिलने पर सुनाअूगा । आपके लिअे मैंने जावरो की ओरसे आश्रय दिलाया है । पर आपका जो दूसरा साथी जो भगोडा है, अुसे देखे बगैर अुसके विषय में मैं अभी कोअी वचन नही देना चाहता । कारण, कारण, कारण,— अुसका जो नाम अिस जावरे के टूटे फूटे अुच्चारणसे मैंने पता चलाने की चेष्टा की है, वह रफिअुद्दीन का सा कुछ बनता है ! और कटकबाबू, मुझे अुस नामसे सख्त नफरत है । पर अुस मनुष्य को देख लेने के पश्चात यदि वह अिस नामके समानही अधमाधम नही निकला तो मैं अुसे भी आश्रय दिला सकूगा । ठीकसे बताअिये अुसका नाम क्या है ! "

कुछ सकुचाते हुअे कटक बोला,

" रफिअुद्दीन ही है । पर वह मनुष्य यहातक हमारे भाग आने में बहुत अधिक सहायक सिद्ध हुआ है, मेरे लिअे तो कम से कम अुसे आश्रय—"

कटक को बीच ही में टोककर दोलकाष्ठ बोला, "वह अुस मनुष्य को देखने के बादका प्रश्न है । कहा है वह ?"

जब तक अिधर अिनका यह बोलना चालना हो रहा था तब तक रफिअुद्दीन अपने चारो ओर के लताबंधन छुडवा कर अुस दूरस्थ वृक्षके नीचे आ ही रहा था। कारण, अुस जावरे द्वारा हसते हुअे दिया गया भुजबंधन, वह आनंद चीत्कार दोलकाष्ठ द्वारा स्मितमुख से कटक के साथ किया गया हस्तादोलन अिन सब लक्षणोंपर से अुसे असंदिग्ध रूपसे यह विदित हो गया कि अब जावरो ने अुनके साथ स्नेह संबंध स्थापित कर लिया है, आगे जाने में अब कोअी विघ्न नही अैसी अुसकी दृढ धारणा हो चुकी थी। अितने में कटकने जोरसे पुकारा, " रफिअुद्दीन आगे आव, जावरे अपने मित्र हो गये है ! "

रफिअुद्दीन मुक्तमनस्क तथा हसता हुआ आगे आया। दोलकाष्ठ अुस की ओर निहार कर देख रहा था। पर रफिअुद्दीन जब नजदीक आया तब अुससे भी अधिक लंबे विशाल देह अेव शक्तिशाली अुस नग्नकाय दोलकाष्ठ का संत्रस्त भावसे भ्रूकुंचन होने लगा। वह बार बार मिटाने का प्रयत्न करता था किंतु अुसके माथेपर की क्रोध की रेखाअें पुन पुन प्रज्वलित हो अुठती थी। अुफनाते हुअे मद्य की बोतल का काग ताड करके अुडने की कोशिश करे तादृश त्वेषसे अुसका देह कही अुफन कर अुड तो नही जायगा अैसा प्रतीत होता था। और अुस बोतलके अुडनेवाले काग को जिस तरह हम मजबूती से अूपर से दबाकर धरते है, अुस तरह वह जमीनपर अपने पैर मजबूती से जमाकर रखने लगा। अितने में अुसके मन में जिस अेक शंकाने विक्षोभ निर्माण किया था, अुसकी आवश्यकता को पूर्ण करने वाली अेक क्लृप्ति अुसे सूझ गयी। अुसने बलपूर्वक अपने मुंहपर मुस्कराहट लाकर रफिअुद्दीन के साथ प्रेमपूर्ण हस्तादोलन करने की अिच्छा से अपना हाथ आगे बढाया। "आअीये, आअीये" दोलकाष्ठ के अैसा स्वागतात्मक संबोधन करते ही रफिअुद्दीन की कली खिल अुठी। अुसने अपने दोनों हाथ आगे बढाकर दोलकाष्ठ का हाथ पकडा और सिर झुका कर दोलकाष्ठ को प्रत्यभिवादन किया।

रफिअुद्दीन के पंजेकी ओर देखते ही दोलकाष्ठ को जिस निशानी की आवश्यकता थी वह मिल गयी। रफिअुद्दीन के दहिने हाथ की कनिष्ठिका की अेक पोर टूटी हुअी थी। यह रफिअुद्दीन तो वही रफिअुद्दीन है ! और तत्क्षण दोलकाष्ठ ने दांत पीसकर गर्जना की,

" तूही ! तूही वह रफिअुद्दीन है ! नीच— ! ! "

अुस भयंकर औसान और आरोप का अर्थ कटक को तो क्या अभी रफिअुद्दीन को भी पूरी तरह मालूम पडने से पहले ही दोलकाष्ठ ने अपने हाथ में आया हुआ अुद्दीन का हाथ झटाक से एक झटका देकर खीचा, और अेक कुस्तीका पेंच मारकर अुसे पीठकी तरफ से अपने पेटमें कर लिया, अुसकी कमर में वांये हाथ की अेक मजवूत लपेट मारकर दहिना हाथ अुसकी दोनो टांगो के वीच धँसाकर अुसे अूपर अुठाया और अेक पछाडमें जमीनपर दे पटका । तत्काल अुसकी छातीपर सवार होकर अपने दोनो हाथोसे दोलकाष्ठने अुद्दीन का गला कसकर दवाया । अव अुद्दीन के ध्यानमें आया कि, अरे, यह अेक अपना पुराना दुश्मन छातीपर चढ बैठा है । अुद्दीनने अुसे पहचाना पर तव जव वह अुस की मुठ्ठीमें पूरी तरहसे आ चुका था !

" है ! है ! छोडो ! छोडो ! " कहता हुआ कटक घवराया सा ज्योही बीचमें आने लगा, त्योही अत्यत दृढ और निष्ठुर स्वर में दोलकाष्ठ चिल्लाया

" वावूजी आप थोडा चुप रहिये ! यह मनुष्य नही है, शैतान है । आपके भले के लिये भी अिसका काटा निकाल फेंकना चाहिये ! मेरा तो यह अेकमात्र जानी दुष्मन है ! वह सव पीछे वताअूगा ! वोल, रफिअुद्दीन तू ने तो अपनी ओरसे मुझे जान से मारही डाला था न ? यह मेरा पुनर्जन्म । — अव मैं अपनी ओर से, नीच कहीं के, तेरा खातमा किये डालता हू !

दात ओठ पीसते हुअे विकराल क्रोध से दोलकाष्ठ अपनी वज्र मुष्टियो द्वारा प्रहार पर प्रहार अुस छटपटाते हुअे और वकरेकी तरह चिल्लाने वाले अुद्दीन की आंखोपर, नाक पर, छातीपर करने लगा । अुद्दीन की आंखोंमे, नाकसे और मुंहसे खून की धारा चिर्र करके अूपर निकलने लगी । वह लथड पथड होकर वेसुद गिर पडा ।

जो अपने मालिक का दुष्मन वही अपना दुश्मन, अिसप्रकार जैसे अेक पालतू और अीमानदार कुत्ते को अनुभव होता है और अुसका शत्रुत्वभाव जागरित हो अुठता है, अुसी तरह जो दोलकाष्ठ का दुष्मन वही अपना भी दुश्मन अैसा समझने के कारण अुसे जावरे की भी वैरज्वाला जागरित हो अुठी और

अपना धनुष्य हाथमें लिया और रफिअुद्दीन पर ताना। तथा अुसमेंसे सन सनाते हुअे छूटा हुआ बाण रफिअुद्दीन की छातीमें अिस तरह गाड दिया मानो कोअी मेखही गाड दी हो ! रफिअुद्दीन जहाका तहा ठंडा हो गया !

तत्क्षण दोलकाष्ठ अुस अघोरी सतोषके आवेशमें कटक की ओर मुडकर बोला,

"कटकबाबू, सुनिये, मैने अिस रफिअुद्दीनको यो बकरेकी तरह मुक्को से कुचलकर क्यो मारा ! आपको लगता होगा कि मैं ही आततायी हू ; पर अिस अुद्दीन को जबसे आप जानते है, अुससे भी बहुत पहले से मै जानता हू । अिसने अिसी तरह गला घोटकर कितनो ही की जानें ली हैं । यह पहले अेकबार कालेपानी पर आजन्म कैदी था । अुस समय मै भी कैदहीमें था। मुझे लकड़ियाँ भरकर भेजनेवाली नौका पर काम मिला था। अुस कारण नौकानयन की कलामें मैं खूब निष्णात हो गया । यह मेरे हाथके नीचे लकडी जमादार था । आगे चलकर हमने भाग जाने की गुप्त अभिसधि की। अुस साहसमे अिससे मुझे सहायता मिली । अिसके पास नही थी दमडी, और मेरे पास थी हजार दो हजार की रोकड । मै जिस नावपर काम करता था, वही नाव अेकदिन मौका पाकर हमने हाथमें ली और रातोरात समुद्रमें छोड दी।

"वायु अनुकूल था । हम भगोडे समुद्रमें अच्छे रास्ते पर आ लगे। अैसे मौकेपर अिसने मेरे पास की सारी रकम हथियाने की दुष्ट भावना से, हालाकि मैंने अिसका कुछ भी बिगाडा नहीं था, तो भी अिसने मेरा घात करने का निश्चय किया । मै जब अेकबार, अेक तख्तेपर नाव के किनारेपर अिसकी तरफ पीठ किये खडा था तब अिसने अुस तख्तेको अकस्मात् अुलटा कर अुसके सहित मुझे भरे समुद्रमें धकेल दिया । मै ज्योही अुस नाव को फिर से पकडने के विचार से गया, त्योही अिसने चप्पूका डडा अुठाकर मेरे सिर पर दे मारा । मैं चक्कर खाकर पानी में गोते खाने लगा, डूब गया । नाव झपट्टे से आगे निकल गयी । मैं डूब गया ।

"पर अद्‌भुत योगायोगसे मैं ज्योही पानीके अूपर आया त्योही लकडीका तख्ता मेरे हाथ लगा। अुसे पकडकर मै अपनी जान बचानेकी भरसक चेष्टा करने लगा । अुसी बीच जावरो की अेक बडी 'डुगी' आगे निकलकर मेरे समीप आयी । अुन जावरोने अपनी नौकामें मुझे डाल लिया और अिस तरह

मेरी जान बचा ली। पर अिसके विचारसे तो मै मरही गया था । — आगे अिसका क्या हुआ वह मुझे अिस क्षणतक मालूम नही था । अब तो अिसका नाम सुनतेही, और अिसे प्रत्यक्ष अिस जगह देखतेही, यही वह नीच है, यह मैने पहचान लिया । अिसने मुझपर तथा अन्य लोगो पर जो अत्यत बीभत्स स्वरूप के अत्याचार किये है अुनका मैने आज अिकठ्ठा ही बदला चुका दिया है। अब आप मेरे काम को ठीक बताये या न बतायें यह आपकी मर्जी पर है।

" तुमने ठीकही किया है । तुमने अिस नीच को अब जिस तरह मारा है, अिसी तरह और तीन बार मारा होता तब भी मै यही कहता कि, आपने ठीक ही किया है ।—अितने अिसके जघन्य अपराध है ? और मै अुन्हे अच्छी तरह जानता हू । पर जो मुझे स्वय करना था, किंतु परिस्थिति वश कर नही पाया ,वही तुमने किया है ! मेरे पैरमे गडा हुआ काटा, जिसे मै नही निकाल सका अुसे तुमनेही निकाल दिया है । अुसके कारण मेरी अग्रिम योजना में जो कठिनाअियाँ न पेश होती वे यदि पेश भी हो जाय तो भी अब मै अुनकी चिंता नही करूगा ! "

"नही, नही, यह यदि रहता तो आपकी अग्रिम योजना में कठिनाअियाँ निश्चित ही अुपास्थित होती । बहुत करके, मेरी तरह ही यह आपका भी घात करनेमें कसर न रखता । वह सकट अब अिस अधम सर्प के अिस प्रकार कुचले जाने से नष्टप्राय हो गया है । आपकी अग्रिम योजना अब अधिक निर्विघ्न हो गयी है, यह मै शीघ्रही आपको दिखा दूगा । मै कौन–"

" हो, वही थोडासा पता चलाने की मुझे अुत्कठा अेव आवश्यकता है।

" पर मेरी समति यही बात आप मुझ से न पूछें और मै न बताअू कारण आप अविश्वासी है यह नही, स्वर्गवासी अप्पाजीने आपके चारित्र्य के सबध में जो प्रशस्तिपत्र दिया है वही अिस शका निर्विवाद निराकरण है। पर अदमान के जघन्य अपराधी जगत् में अुन्ही अपराधियो के सहकार्य से कालेपानी से भाग जाने जैसे प्राणातिक अभिसधि में जिसे पडना हो अुसे दो बाते छोड देनी चाहिये । अेक बात यह कि काम के लिअे जितनी अपरिहार्य हो अुससे अधिक खुदकी पूर्वपीठिका दूसरो को बताना तथा दूसरी बात है प्राणोका मोह ! –अिन दोनो बातो का त्याग आवश्यक है

यह मैंने अनुभव के आधार पर निश्चित कर लिया है। आपकी जितनी आवश्यक है अुतनी पूर्वपीठिका मैंने पता चला ली है। मेरा नाम दोलकाष्ठ है अितनी मेरी पूर्वपीठीका आपको प्रस्तुत कार्य के लिअे पर्याप्त है। जैसा जैसा प्रसग आता जायगा वैसे वैसे मै अपने आपही अपनी अन्य जानकारी आपको थोडी थोडी करके वताता जाअूगा। अव पहले आप जावरो की ओर चलिये। राजा नानकोवी मेरी आपके प्रति अनुकूल समति होने के कारण स्वय आपकी मुलाकात के लिअे अुत्सुक है। हा, पर आपके पास अेक वदूक, कुछ गोला वारूद और पुलिस के कपडे भी थे न ? यह जावरा कहता था।"

"है न, पर मै अेक वजह से अुन्हें छिपाता रहा हू। जावरे हमारे हाथो में अुस प्रकार के शस्त्र देख कर कही विचलित न हो जायें! और वे वस्तुअें मै अपने ही हाथो में रखता चला आया हू।—अिस अधम अुद्दीनपर अपने गूढ अविश्वास के कारण!"

"पर सच पूछिये तो, अुस भाग जाने के काम के लिअे जो वस्तु अत्यावश्यक है, और जिस वस्तुका मेरे समीप अभाव है अैसी वस्तु आपके समीप है, यह सुनकर ही मुझे आपके सहकार्य का अितना अधिक आकर्षण प्रतीत हुआ! जाअिये, पहले वे वस्तुअें लाअिये अिधर!"

पत्तो के ढेरमें छिपाअी हुअी अुन सब वस्तुओ के कटक द्वारा वहा लाये जाते ही दोलकाष्ठ पहले पहल अुस वदूक पर अिस प्रकार टूटा, जैसे अेक वुभुक्षित व्यक्ति किसी पक्वान्नपर टूट पडता है। और वडी शानसे वह वदूक अुस नग्नकाय वीर ने अपने कधेपर रखी, आगे हुआ और विलकुल सैनिक की अदा से कटक को हुक्म दिया,

"चलो, आव मेरे पीछे पीछे!"

"वाह," कटक हसा, "वन्दूक के स्पर्श समकाल ही आपके पैर भी किसी सैनिक की भाति टपटप करते हुअे पडने लगे हैं। आपके शरीर में किसी सैनिक का सचार हो गया हो अैसा प्रतीत होता है।"

"किसी सैनिक का काहे को ? मैं स्वय अेक सैनिक ही तो था पहले! मैंने लडाअी देख रखी है। वाबूजी, प्रत्यक्ष रणागण में लडा भी हूं मैं ...!

पर मुहसे अकस्मात् निकली हुअी अपने पूर्व वृत्तात की अितनी जानकारी भी अधिक हो गयी अिस भावना से ही कदाचित् दोलकाष्ठ अेकाअेक चुप हो गया और कटक तथा जावरे के अिस छोटेसे सैन्यका अग्रणीत्व स्वीकार करके किसी सेनानी की भाति वह नानकोवी की अुस अरण्यक राजधानी पर अभिमान करने के लिअे चलने लग गया!

—वह कौन ?—पुलिस ? : : : : २०

स्त्रियो के जेलखाने की रसोअी वाली छपरी में अेक वडी भारी साग भाजी पकाने की 'डेग' के नीचे आग सरकाती हुअी कटकी खडी थी। कैदी स्त्रियोंके वेष के अनुसार अेक घुटनेतक का मोटा झोटा लुगरा, सिर में हफ्तो हफ्तो तक तेल नही, कघी नही, सर्वथा अमगल और नीच कैदी स्त्रियो का सहवास, अिन सव कारणो से वालो म जुअें भरी हुअी, धगधग करने वाली—वडी वडी भट्टियो की आच में लगातार श्रम करते करते धूम्रवर्णाक्त अेव स्वेदमलीमस शरीर, पर अुस स्थिति में भी मौलिक सुभगता लिये हुअे वह युवती कटकी, मालती अुन अग्नियो द्वारा प्रज्वलित वडी वडी भट्टियो के मध्यभागमें पंचाग्नि साधन में शोभायमान मूर्तिमती तपस्या के सदृश सुहा रही थी।

कम अज कम अुसके सामने अुस समय खडी हुअी तथा अुसकी ओर सहृदयतापूर्ण कौतुकसे विहारती हुअी अनसूया जमादारनी को तो वह कटकी अुसी प्रकार शोभायमान अवस्थामें दृष्टिगोचर हुअी!

वहाँ अुस समय अेक और कैदी स्त्री काम कर रही थी। वह जव आटे की थैलियाँ लाने के लिअे वाहर चली गयी तव कटकी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिअे अनसुयाने चुटकी ,वजायी। कटकीने अूपरकी ओर देखा, थोड़ी आगे वढी, अिधर अुधर अच्छी तरहसे देखा, अनसूयाके हाथमेंसे झटपट अेक चिठ्ठी ली और लकडियो के ढेर की आड में जा छिपी। अनसूया दरवाजे ही में खडी रही, ताकि कोअी अदर न आ सके। अेक दो मिनिट ही में कटकीने वह चिठ्ठी पढ डाली आगमें फेंक दी, अनसूयाने सिर्फ गर्दन ही के सकेत से पूछा, 'काम हो गया न ?'

कटकी ने भी गर्दन ही के संकेतसे अुत्तर दिया, 'हां!' तब शीघ्रही अनसूया वहासे चली गयी। कटकी से अपना कोअी स्नेहसबध है अिसकी किसी को शका तक न आये अिस ख्याल से आजकल अनसूयाने कटकी के साथ बोलना कतअी छोड दिया था। अन्य कैदी स्त्रियो से वह जितना बोला करती थी, अुतना भी वह कटकी से नही बोलती थी। कामकाजके मामलो में भी कटकी का अपने साथ कोअी सबध नही आने देती थी।

कटकीने वह चिठ्ठी पढी, अुसका हृदय किसी उत्कट आशाके अुद्रेक से तथा साहस कार्य की भीति से धडकने लगा। अुसका शरीर अुस कैदखाने में था। पर मन वहासे अुठाकर कहीं अन्यत्र पहुँचा दिया गया है, अैसा अुसे प्रतीत होने लगा। वह चिट्ठी कोअी भयानक किंतु शुभ सूचना अुसे दी गयी थी। अुस सूचना के अनुसार अुसको जो कुछ करना था वह किस तरह पूर्ण किया जाय, अिसी अुधेडबुनमें वह पड गयी। क्या करना है, कैसे करना है, अिसे वह मन ही मन अकित करती जाती थी। अिस कार्य में अणुमात्र भी गलती न हो अिसके लिअे जो कुछ आवश्य करणीय कृत्य थे अुनका क्रम वह ठीक ठीक बाधती जाती थी। तत्रापि यदि दुर्दैव से अुस क्रम में कोअी त्रुटि आ गयी, तो अुसे वर्तमान सकटकी अपेक्षा भी अनेक गुने अधिक भारी सकट में पड जाना होगा, अिस कल्पना के आते ही वह बीच बीचमें थर्रा भी अुठती थी। पर सुदैव से यदि वह कार्यक्रम व्यवस्थित रूपसे पूरा हो गया तो ?—केवल चौबीस घटोके बीच में ही सुखके स्वर्ग में पैर और किशन के गले में बाहुपाश!

अुसके मनमें यह सारा तुफान चल रहा था। पर अुसका व्यवहार जेलखाने की घडियाल की तरह, जेलद्वारा निर्धारित नियमोंके अनुसार व्यवस्थित रूपमे चल रहा था। सारे कैदियोका जीमना हो गया। दो पहर के समय नित्य नियम के अनुसार रसोअी विभाग की स्त्रियो को मिलने वाली छुटी में कटकी थोडी देर आराम से सुस्ताने लगी। पर अुसका मन बुरी तरह बेचैन था। क्या होगा, कैसे होगा,—ये चिताअें अुसे खाये डाल रही थी। वह बार बार देखती कि अनसूया जमादारनी आ रही है या नही।

घडी ने तीन वजाये, अुसे लगा कि चारही बज गये हैं। अुसने सोचा कि अब वाहर कामपर जानेका अुसका समय हो आया। पर जव मालूम पडा कि अभी तीन ही वजे हैं, वह थोडी निराश हो गयी और फिर नीचे वैठ गयी। अितने में सचमुच के चार वज गये। अनसूया जमादारनी ने जेलर के हुक्मके मुताविक 'कटकी' कहकर अुसे पुकारा। सवके सामने कटकी को आपने साझ के कामपर वाहर जानेकी आज्ञा मिली।

कैदियो के लिअे कैदखाने से वाहर अेक प्रेमोद्यान वनाया गया था। वहा जाकर झाडने वुहारने का काम कटकी की ओर था। कटकीका चाल-चलन अच्छा है यह देखकर वह काम जेलरने अुसीके सुपूर्द किया था। वह हररोज अुस प्रेमोद्यान में जाने के लिअे अिसी प्रकार जेलकी फाटकसे वाहर चली जाया करती, साझके झाडने वुहारने का काम खत्म हो चुकने पर जव प्रेमोद्यान वद हो जाता तव वह फिर अुस फाटक के भीतर आकर कैदखाने में खुदभी वद हो जाया करती थी। पर आज—?

आज अुसका निश्चय था कि कैदखाने से वाहर निकल आने के वाद अव कभी अदर वापिस नही जाना। चिठ्ठी में जैसा लिखा था अुस प्रकार भाग जाने में सफलता मिल गयी तव तो ठीक है ही, न मिली तो तत्काल पेट में छुरा भोक कर अपने आपको समाप्त कर लेना है। वधनमुक्त तो हर हालत में होना है, अिस फाटक से अव सजीवावस्था में तो भीतर नही जाना है, यह अुसका पक्का निश्चय हो गया था। अुसने मन ही मन कहा, "आज मेरे आजन्म कारावासकी सजा यहीं समाप्त हो गयी न!" आज जव वह प्रेमोद्यान की सफाअीके लिअे झाडू लेकर निकली थी, तव अुसके साथ ही रसोअी घरका अेक छुरा भी छिपाकर ले लिया था। अुसे अुसने अेक वार फिर हाथसे टटोलकर देखा। जव वह फाटक से वाहर निकल रही थी तव अुसने अपना चेहरा, अपना व्यवहार अैसा कुछ भोला भाला और निरपराध व्यक्ति का सा वना लिया था कि किसी पहरेदार को अुसकी तलाशी लेने की आवश्यकता तक महसूस न हो। अनसूया अुस समय कटकी को दूरसे झाककर देखने तक के लिअे वहा नही आयी। अपने स्वप्न तक में वह मामला नही था, यह आगे चलकर

वह सिद्ध कर सके अिस हेतुसे अनसूया किसी अन्यही काम में तल्लीन है अैसा वहाना वनाने की चतुराअी दिखा कर जेलखाने के वीचोबीच वने हुअे चौक में कभी की चली गयी थी ।

जव अच्छे चालचलन वाले स्त्री पुरुषोको विवाह की अनुमति मिल जाती तव वे कालीपानी के कैदी अपनी पसदकी जोडी का चुनाव करने के लिअे अुस वागमें आया करते थे । वें हररोज की तरह अुस दिनभी वहा जमा होने लगे, आपस में वात चीत करने, अुठने वैठने में मग्न हो गये । झाडना वुहारना हो चुकने के वाद कटकी भी अुन लोगो के वीचमें फिरने लगी । पर अुसका चित्त तो सारा अुस वागके सामनेसे जानेवाली सडक की तरफ केंद्रित था । पाच वजे । पर अभीतक जो आदमी अुसे चाहिये था, वह सडक पर दिखाअी ही न दे । वह वेचैन हो गयी । आँखें फाड फाड कर देखने लगी । पाच के वाद का अेकअेक मिनिट अुसे अेक अेक घटेकी तरह अनुभूत होने लगा । सव्वा पाच हो गये ! — वह कौन ?—पुलीस ?

हा, हा! पुलिस ही है वह । पर कटक कहा है ? सडकपर चिट्ठी में लिखे अनुसार पुलिस तो दीखा, पर कटक ?

अितने में अुस पुलिसने स्थिरीकृत सकेत के अनुसार हाथ हिलाया। कटकी झटसे प्रेमोद्यान से वाहर निकल कर सडक पर आयी । वह पुलिस नि शक होकर सामने आया और अुसने कटकी का हाथ पकड लिया । अुस स्पर्श से कहिये, अथवा समीप आनेके कारण निरखकर देखने से कहिये, पर कटकीने तत्काल पहचान लिया कि, यह पुलिस कटक ही है ! अुसके पीछे ही अेक अध–गोरा, अूंचा पूरा किंतु अुसके लिये सर्वथा अपरिचित अेक और सिपाही खडा था !

पहला पुलिस कटक था, दूसरा 'दोलकाष्ठ !' अुन दोनो ने पुलिस का भेस वना, कवेपर वदूक, कमरमें सरकारी पुलीस के पट्टे धारण किये, विलकुल पुलिसवालो की ठसक में सामने आकर कटकी का हाथ पकड कर अुसे अूची आवाज में आज्ञा दी, " तुम्हे चीफ कमिशनर साहव ने वगलेपर वुलाया है ! हम ले जाने के लिअे आये है ! " कटकी के पीछे पीछे अुस वागका पहरेदार भी अुनके पास आ रहा था । अुसे

आये तब अुन्होने कमिशनरका यह सदेसा सुनाया कि, "हमारी ओरसे कटकी नामकी किसी भी स्त्री कैदी के लिअे बुलावा नही भेजा गया।"

निश्चयही से किन्हीं दो पुलिसवालोने अुस तरुण स्त्री कंदी को भगाया होगा! यह बात स्पष्ट होतेही जेलर गडबडमें पड गया! जेलखाने की 'सकट घटा' अेकदम जोर जोर से बज अुठी। जिधर तिधर सिपाहियोकी दौडधूप, खोज और नाकेबदी का काम शुरू हुआ। विशेषत पुलिस की बैरको में वे दोनो पुलिसवाले कौन हैं, अिसकी सख्ती से छानबीन होने लगी। कारण, अुस लडकी को पकडकर ले जानेवाले दो पुलिस के सिपाही थे अिसी के सबूत चारों ओर से मिलते चले गये। अनेक राहगीरोने बताया कि रास्तेपर आते जाते हमने दो हथियारबद सिपाहियो को अेक लडकीको लेकर जाते हुअे देखा है, पर वे चूकि पुलिसवाले थे अत कोअी सरकारी काम होगा अैसा समझकर हमने अुधर बहुत ध्यान नही दिया। रातभर खोज होती रही, पर वह पुलिस कौन था अिसका कुछ पता ही न चले! अुस लडकीको लेकर वे गये किधर यह समझ ही में न आये!

अिस रीतिसे कमिशनर की ओर से विवरण प्राप्त कर के दूत रातको जबतक वापिस न आये और कटकी को भगाया गया है यह जबतक पक्का नही हुआ तबतक कटक और दोलकाष्ठको अपना काम पूरा करने के लिअे चारपाच घंटे निर्विघ्न रूपसे मिल गये। अुस समय तक किसीने अुनका पीछा तक नही किया था। पुलिसवालोका भेस बनाने में अुन्होने जो चतुराअी दिखायी अुसका अुन्हें अच्छा अुपयोग हुआ। कारण, सरकारको जो सदेह हुआ वह भिन्न ही दिशा का हुआ। जिस दिशामें खोज नही करनी चाहिये थी, अुसी दिशा में खोज होने लगी। अिसका कटकने पूरा पूरा फायदा अुठाया। जब पिछली दफ़ा जावरोने अग्रेजोपर धावा बोला था, तब जो अग्रेजी पोलिस का जमादार मार डाला गया था, अुसकी बदूक, कपडे पट्टे वगैरे कटक ने निकाल लिये थे। दोलकाष्ठ भी अिसी तरह कहीं से पुलिस के कपडे, बदूक, पट्टा वगैरे झपट लाया था। अिस मौके पर अुस वेषके कारण अुनके साहसी गूढोद्यमका आरभ तो निर्विघ्न रीतिसे पूर्ण हो गया।

दोलकाष्ठ जब कैदसे भाग गया था, तब अुसके पकडने के सबघमें हुक्म तो जारी हुआ था ही। किंतु अिस पुलिस के भेसके कारण, छद्म वेष में अुस अदमान के सरकारी अुपनिवेश में वह घूमता रहा था, और ज्योंही आवश्यकता होती त्योंही वह जाकर जावरो की राजधानीमें अपने को छिपा लेता था। सत्तावन के स्वातत्र्य युद्ध के वीर वृद्ध आप्पाजी के समीप भी वह अिसी छद्म वेषसे नित्य आया जाया करता था। कटकको जब जावरोने आश्रय दिया तब दोलकाष्ठने अुसे भी अिस विद्यामें पूर्ण प्रवीण बना दिया था। कटककी बहन कटकी को जेलखाने से छुडाने का यह षड्यत्र दोलकाष्ठने ही रचा था। अुसीने कटक के साथ अिस छद्म वेषमें अनसूयाके घर जाकर मुलाकात की थी। कटकने अुसके समीप घरोहरके तौरपर जो हजार डेढ हजार की रकम रखी हुअी थी वह वापिस ले ली थी और कटकी को जेलखाने में जाकर पकडाने के लिअे अुस षड्यत्रसे सबघ रखनेवाली गुप्तचिठ्ठी अनसूयाके हाथो भिजवायी थी। अुस चिठ्ठीमें लिखी विषय-वस्तु के आधारपर ही कटकी निर्भय होकर बागसे निकलकर सडक पर चली आयी थी। और छद्म वेषमें आये हुअे अपने अुन साथियोके साथ आजन्म कारावास की लौहशृखला को तोड फेंकने का यह प्राणातिक साहस कृत्य किया था।

कटक और दोलकाष्ठ के साथ कटकी जो निकल भागी सो अुसे सडक छोडकर शीघ्र ही अेक वक्र मार्ग से समुद्र तटपर लाया गया। वहाँ अेक 'डुगी' तय्यार ही थी। वृक्ष की अेक बडी भारी जड को काटकर अुसे मध्य भाग में खोद कर नाव की तरह खोखली बनाकर, नाव का ही आकार देकर, अुस अखड द्रुममूल का जो अेक टोकरासा वहा के लोग बनाते हैं और जिसकी सहायता से वे लोग अत्यत द्रुतगति से जलप्रवास करने में निष्णात हो जाते हैं, अुस अत्यत प्राक्कालिक नाव को वहाँ 'डुगी' कहा जाता है। नौका विद्या में मनुष्य द्वारा किया गया वह प्रथम आविष्कार है। जावरे अिस प्रकार की डुगियो में बैठ कर समुद्र मे सफर करने में खूब प्रविण होते है। अुसी प्रकार की अेक डुंगी समुद्र के अेक दुर्लक्षित अेक वक्रमार्गोपगम्य तट प्रदेश पर कटकने तय्यार रखी थी। कटकी को लेकर वे पुलिस के भेसवाले दोनो शस्त्रहस्त व्यक्ति डुगी में बैठ गये और डुगी

भी द्रुतगति से समुद्र में प्रविष्ट होने लगी। तटपर रहनेवाले जिन कुछ थोडे से लोगोने अुस डुगी को अुस प्रकार अेक तरुणी को लेकर दूर जाते हुअे देखा, अुन्हे भले ही वह दृश्य बहुत आश्चर्यकारक प्रतीत हुआ हो किंतु चूकि अुस में शस्त्रहस्त पुलिस के आदमी भी बैठे हुअे थे अत किसी प्रकार का शोर शराबा करने का ख्याल अथवा साहस नही हुआ। थोडी ही देर म डुगी काल्रेपानी के निर्जनाति निर्जन अेव निविडतम अरण्य के अुपकठवर्ती समुद्र–भाग में प्रविष्ट हुअी।

कटक के शरीर से अपना शरीर सटाये हुअे कटकी बैठी थी। अुसे कटक की सगी बहन माननेवाले दोलकाष्ठ को अुस में कोअी वैचित्र्य नही अनुभव हुआ। परतु अुसकी वह मनोहर तनु लतिका और वह मिलनसारी का हसना, बोलना, बर्ताना आदि देख देख कर दोलकाष्ठ को बार बार यह अनुभव हुअे बिना नही रहा कि यदि यह युवती मेरे शरीर के साथ भी अिसी तरह सटकर बैठे तो कितना मीठा अनुभव होगा।

वह डुगी निर्जन और विघ्न विरहित समुद्र भाग में प्रविष्ट होते ही जलौघपर जैसी जैसी सलील वृत्ति से डोलने लगी, वैसे वैसे ही कटकी का हृदय भी आनदौघपर सलील वृत्ति से डोलने लगा। पीजरे से छूटे हुअे पक्षी को निस्सीम आनद तो होता ही है, पर अुस कैदखाने से निकल कर आयी हुअी मालती का आनद अुस से भी अधिक निस्सीम था। कारण, पीजरे से छूटकर आया हुआ पक्षी जो वृक्ष दिखाअी दे अुस पर जा बैठता है, किंतु अुस के सगे सबधी तथा मित्र कहलाने वाले अन्य पक्षी अुसे खदेडने लगते है, अुसे अैसा घोसला ही नही मिल पाता जहा वह निर्भय होकर रह सके। पर आजन्म कारावास के बधनो से मुक्त यह पक्षी जिस डुगी में हँस और खिलखिला रहा है, अुसे अुस के अेकमात्र मित्रने, सबबीने तत्काल अपना लिया है, किशन के प्रणय परिपूर्ण प्रेमव्यवहार में अिस पक्षी को स्नेहमय सगति की मनपसद गर्मी देनेवाला अेक मधुर घोसला तत्काल ही मिल गया था। वह पक्षी, वह मालती अुस मुक्तता के अुल्लास में और किशन की सगति में अितनी तल्लीन हो गयी कि वह अुस क्षण के लिअे यह भी भूल गयी कि अुसे कभी आजन्म कारावास की सजा हुअी थी तथा अुस कारावास की कृत्या अब भी अपने चारो ओर चक्कर मार रही है। अब मै

कटकी हू, मालती नही अिस को भी भूल गयी। खग्रास ग्रहण के समय जिस प्रकार आकाश में शशिकला विलुप्त हो जाती है, अुसी प्रकार अुस के भीतर की 'मालती' जो विलुप्त ही हो गयी थी, वह 'कटकी' की अनुभूति के अुस ग्रहण के छूटते ही पुन. पहले जैसी ही सुदर सुभग अेव सुखद स्वरूप में प्रकट हो गयी। अुस आनद के आवेग में मालती मालती ही की भाति पुनरपि हसने, रूठने, डोलने और बोलने लगी। किशन भी अुसे पुन किशन ही सा अनुभूत होने लगा। वह 'डुगी' अुस समुद्र के सलील तरगोपर अूची नीची होती हुअी थोडी सी जव अेक ओर को झुक जाती तव अपने को सभालना कठिन हो गया है अैसा प्रणय मधुर वहाना कर के मालती किशन के वक्षःस्थल अपना भार डालकर गिर पडती, किशन अुसे अपनी भुजाओ से सभालकर धरते समय आलिगन कर के पकडता। अैसे स्वच्छदता के सौख्य का आस्वाद करते करते अुस का नशा ही चढता गया। अुस नशे में अपने चारो ओर अद्यापि विद्यमान छद्मता के आवरण को मालती ने दूर हटा दिया और असावधान अवस्था में वोल गयी,

" किशन ! देख, देख, अुस छोटीसी लहर के अूपर सूर्यकी साध्यकिरन के पडतेही गुलावके फूलोंसे वने हार की भाति वह लहर कैसी सुहाने लगी है देख। समुद्रके रगविरगी गुलाबोका हार कैसा रहता है, यह दिखाने के लिअे यह छोटीसी पुष्पमडित लहर अैसी की अैसी अुठाकर अदमान के अेक आश्चर्य के रूपमें यादगार के लिअे माको ले जाकर दिखायी जाय अैसा मुझे लगता है ! अे किशन —"

वह आगे कुछ वोलना चाहती थी की अुतनेही में किशनने अुसकी चिच्ची अगुली अुसे सावधान करने के खयाल से दवायी। वह भी थोडीसे सकपका गयी। कारण, दो बार अुसने किशनको ' किशन ' कह कर ही सवोधन किया था। अेतावता दोलकाष्ठ के मन में सहजही जिज्ञासा अुत्पन्न हुअी और वह पूछने लगा

" क्या ? किशन ! अर्थात् कटक वावू का घरका असली नाम किशन था मालूम पडता है ! और तुम्हारी मा है अभी ? कहा रहती है वे ? कटक वावू का असली जैसे किशन है, वैसेही तुम्हारा नाम भी कटकी न होकर कुछ और

ही होगा ! सचमुच तुम्हारे जैसे पुष्प पक्षी के लिअे किसी फूल किंवा पक्षीक ही सुंदर नाम होना चाहिये !"

टोलकाष्ठ अपने मुँहफट स्वभाव के अनुसार जो अच्छा लगा वह अुद्दंड रूपसे बोल गया। किशन मन ही मन सकपकाया! अपने अज्ञातवासके छद्म स्वरूपको अुतार फेकने योग्य अवस्था अभी आ पहुँची हो अितने कुछ वे अभी संकट के चंगुल से मुक्त नही हुअे है, अिस बात को वह अच्छी तरह जानता था। विनोदके खुभे हुअे कांटेको विनोदहीके कांटेसे बाहर निकालने के लिअे किशन हंसा।

" देखिये, नाम ही की बात करनी हो तो आपका भी यह 'दोलकाष्ठ नाम पलने ही में रखा गया होगा, और जब मैंने आपसे नाम तथा पूर्ववृत्त पूछा था, तब याद कीजिये, आपने मुझे कौनसा सूत्र सिखाया था ! 'कालेपानी' पर से जिन्हे सफलतापूर्वक भागना हो अुन्हें अपना पूर्ववृत्त बताना तथा प्राणो की भीति अिन दो वस्तुओ का त्याग कर देना चाहिये !' ठीक है तब ! अुसी अुपदेशके अनुसार हम भाअी बहन अपना सच्चा नाम तबतक नही बताअेंगे, जबतक आप अपने अिस कृतक नाम दोलकाष्ठ का परित्याग नही कर देते !"

" अर्थात आप दोनोंके असली नाम तो ये नही है, अितना तो आपके बोलने से पता चलता ही है, और आपका नाम तो 'किशन' ही –"

अिस सारे झमेलेको यही समाप्त कर डालने के हेतुसे मालती बीच ही में बोल अुठी,

" देखिये, मै हूँ न, में आनंदातिरेकसे थोडी विक्षिप्तसी हो अुठी हूं अपने बचपन के अेक संबंधीका नाम मेरी जबानपर चढा हुआ है, वही अिस समय मेरे मुंहमे निकल पडा अपने कटक भय्या को संबोधन करते समय!"

परंतु अिस भूल की अनुभूति के साथ ही अुसके ध्यान में अत्यंत अनिच्छापूर्वक यह भी आया कि, यह जो छुटकारे का अपरंपार आनंद अपने को हुआ है वह भी भूल ही है, यह छुटकारा क्या है, छुटकारे के लिअे किये जानेवाले प्रयत्न का फलोन्मुख आरंभ है, अंतिम सफलता नहीं है। वह किंचित् सी विमनस्क होकर बैठ गयी।

अुस गंभीर समुद्र पर पक्षो की भांति अुडती, बैठती, चलनेवाली वह

डुगी, वह जलवीचि, वे रगबिरगी किरणें, और कारागृहसे छूट आनेकी अुन्मादक अनुभूति आदि ही में वह मग्न थी, पर अव वह आनद की नौका जिसपर तरगे लेती हुअी चल रही थी वह समुद्र कितना गहरा है अिस ओर भी अुसका ध्यान गया !

"कितना गहरा है रे यह समुद्र, और कितनी छोटी है यह अपनी डुगी ! " समुद्रकी भीषण गहराअी की ओर ध्यान देती हुअी विमनस्क मालती किशन से बोली।

"नि सदेह, पर अैसी छोटी नौकाअें अैसे महागभीर समुद्रो को भी तैरकर परली ओर जा सकती हैं न ! " किशनने अुसकी मानसिक स्थिति के लिअे योग्य प्रोत्साहनभरा अुत्तर दिया !

"किती गोड बोलतोस रे तू" लाड भरे हाथोंसे किशन की पीठ पर हलकीसी थपकी देते हुअे मालती मराठी में बोल गयी। अुसे लगा कि, दोलकाष्ठ को मराठी नही आती होगी। कारण, अवतक वे सारे अुसी हिंदी में बातचीत कर रहे थे, जिसमें सारे अदमानी बातचीत किया करते है।

"पण माझ्या पाठीवर तुम्ही तसच लडिवाळपण थोपटून विचारल न, तर मी पण तसच गोड बोलेन की ! " दोलकाष्ठ अपने सैनिक बाने के योग्य अुजड्ड विनोद से मराठी भाषा ही में बोला ! अितना ही नही तो कपट शून्य घनिष्ठता के कारण मालतीके पीठपर अुसने स्वयभी अेक हलकी सी थपकी मारी।

मालती चौंक कर बोली, "अयँ, आपको भी मराठी आती है ? आपका मूलका घर महाराष्ट्र ही में है क्या ? "

"हा, किसीसे अुसका पूर्व वृत्तात पूछना ठीक नही अिस तरह ! जो कोअी अपने आपही जितना कुछ बतला दे अुतना सुन लेना ही ठीक है ! कटकबाबू का और हमारा यह प्रस्ताव पहले ही स्थिर हो चुका है ! "

दोलकाष्ठ यह बोल ही रहा था कि अितने में पार्श्ववर्ती सिंधु तट की ओरके पहाड पर 'अू ऽ ऽ !' अैसी किलकारियाँ और तालियाँ सुनाअी दी। पहले ही स्थिरीकृत निश्चयके अनुसार ज्वार भाटे की दृष्टिसे जहा सुरक्षित स्थल होगा वहा अुतरवा लेने के लिअे जावरे अुस बाजू में आकर अिस प्रकार का सकेत करनेवाले थे। तदनुसार वे जावरें धनुष-

वाणसे सज्ज होकर अेक ओटवाले अुतारके समीप आये हुअे थे। वहा अुस डुगी के आते ही अुन्होने कटकी सहित सवको अुतरवा लिया। सघन अरण्य में से होकर अनेक मोड पार करते हुअे, अघेरा होने से पूर्वही सारे लोग राजा नानकोवी की अुस अरण्यक राजधानी में आ पहुचे।

जावरे लोग अेक वडी सी आग जलाकर अुस समय अुसके चारो तरफ वैठे हुअे थे। अुस आगपर अेक अरण्य शूकर का पूरा घड का घड अुलटा टाग रखा था। अुनका जव समिलित शिकार होता है, अुस समय अुस प्राणी को अिस प्रकार आग पर टागे रखते है, और जव वह खूव घूआ खा लेता है, भुन जाता है, तव अुसे वहा से निकाल कर अुसके अुस अघ कच्चे मास के टुकडे सव लोगो में तकसीम कर दिये जाते हैं। वह जेवनार खत्म हुअी कि अुस आग के चारो तरफ वे सारे स्त्रीपुरुष मिलजुलकर तथा नग्नावस्था में अपना नृत्य आरभ कर देते है। अिस किस्म की आगें कभी कभी तीन तीन, चार चार जगहो पर भी जलायी जाती हैं और अुनके चारो तरफ जेवनार की तथा नाचकी भी भिन्न भिन्न तीन चार पक्तियाँ लग जाती है। अिन तीनो अभ्यागतो के प्राणातिक साहस कृत्य में अिस प्रकार सफल होकर वापिस आ जाने के कारण अुनके अिस नियमित कार्यक्रम में अेक भिन्न ही रग भर गया। वे सारे के सारे अुन तीनो के चारो ओर भिनभिनाते हुअे से जमा हो गये।

अिस में भी जिसका देखो, अुसका घ्यान कटकी पर! राजा नानकोवी को अिस साहसपूर्ण गूढ अभिसधिका परिज्ञान था ही। अुसके विचारसे ही कटक और दोलकाष्ठ कटकी को छुडा लाने के लिअे गये थे। अग्रेजो के अुस कडे पहारे में से कटकी को अिस तरह अुठा लाने से तो अग्रेजो ही का अवमान हुआ और वह भी अपने जावरो के साहाय्य से अेवच जावरो के आश्रित व्यक्तियो के हाथो!—अिस प्रकार नानकोवी को अपना ही गौरव अनुभूत हुआ। अुस विजय की मूर्तिमत पताका ही वनी हुअी थी वह कटकी। अत अुसे देख देखकर भी अुसका जी अघाता नही था। पर अुन सव में जावरो की स्त्रियो और वच्चोकी गडवड का तो कुछ न पूछिये! आगकी अुस प्रज्वलित ज्वाला के प्रकाश में वे अुसे अपनेपनसे देखती हुअी, हंसती हुअी, अुगलियोके अिशारे करती हुअी,

भीड लगाकर खडी रही। पर अुसकी अपेक्षा भी यदि किसी वस्तुकी ओर विशेष रूपसे देखने की अुनकी अिच्छा होती थी तो वह भी अुसकी साडी।

मालती की ओर वे जावरों की विवस्त्र स्त्रिया निरतर अिशारे करने लगी, "यह क्या है ? अुस स्त्रीने अपने शरीर के चारो तरफ यह क्या अभद्र लपेट रखा है ? यो देखने में वह कितनी सुदर दीखती है ! तब शरमा सकुचा कर अपने को कपडो में छिपाती काहे को है ? क्या पहना हुआ है जी, अुसने ?" अैसे नाना प्रकारके प्रश्न वे आपस में पूछ रही थी।

दोलकाष्ठ ने अुनमें से अेक स्त्री को जवाब दिया, "वह साडी है साडी ! लुगरा कहते हैं अुसे।"

यह सुनते ही वे सारी औरते मुँहपर हाथ रखकर अेकदम खिलखिला पडी और नाक सिकोड कर बोली, "छी, औरते भी कभी क्या लुगरा पहना करती है ? कुछ मर्यादा !"

विवस्त्र रहनेवाली अुन स्त्रियो को स्त्री का वस्त्र पहनना जिस प्रकार स्त्रीत्व के लिअे अशोभा अुत्पन्न करनेवाली अेक अमर्यादा प्रतीत हुअी, अुसकी अपेक्षा भी सौगुना अधिक अुन जावरा स्त्रियो को अपाद मस्तक नगी तथा नि सकोच भावसे पुरुषो में अुसी तरह अुठती बैठती देखकर मालती को भी हरदर्जे की शरम महसूस हुअी। अुसने अेक दो बार तो अपनी आखें ही बद कर ली। तत्पश्चात् नीचे की ओर देखती हुअी खडी रही।

राजा नानकोवी के सामने भी अेक सवाल सा खडा हो गया। अुसकी रानी फुली ने आग्रह किया कि, "कटकी जबतक अपने यहा है, तब तक अुसे साडी नही पहननी चाहिये। अुसके अिस अुदाहरण को देखकर अपनी लडकियोको भी यह अश्लील आदत पड जायगी !"

कटकी पर अुन्हें तरस आता था। अुसकी यातनाओ को सुनकर और अुसकी ओर देखकर सब स्त्रियो को अपना भी अनुभव होता था। पर वस्त्र धारण करने की अिस अश्लीलता से मात्र अुन्हें नफ़रत महसूस होती थी। अतमें रानी फुलीने कटकी की साडीके आँचल को थोडासा झटका देकर ममतापूर्वक सकेतित किया, "छोड दे यह साडी और स्त्री को सुहानेवाली विवस्त्रतापूर्वक रहने का शिष्टजनोचित आचरण का पालन कर !" पर

झटके से अुतरे हुअे आँचल को फिरसे यथा स्थान रखकर मालती ने अुसे और भी मजबूती से पकड लिया !

अब मामला कहीं हदमे बाहर न चला जाय, अिस डर से दोलकाष्ठ बीचमें पडा और सब बातो को हसीपर अुडाकर अिस बात का आश्वासन दिया कि, " कटकी की कपडे पहनने की जनम की बुरी आदत हैं ! अेकदम अुसमें सुधार कैसे होगा ? दो चार दिनमें सभ्य स्त्रियोंकी तरह विवस्त्र रहने की आदत अुसे भी हर हालत में पड जायगी। तब तक शिष्टाचार के विषय में अुसपर सख्ती न की जाय। केवल पहनने के प्रकरण ही में नहीं अपितु खाने, गाने, नाचने आदिके प्रकरण में भी ! "



सबकी आँखें भर आयीं : : : २१

" छोड, छोड, छोड बाण ! निकल भागा देख वह वराह अुस झाडी में से ! "

किशनके अिन शब्दो के साथ ही वृक्षपर चढकर बैठी हुअी मालतीके धनुषसे सनसनाते हुअे बाणपर बाण छूटने लगे। वह अरण्य वराह जिस झाड़ी में दुबका बैठा था, अुसके पीछेसे जाकर किशन अेक लंबा भाला लिये अुसे ढूढकर खदेडनेकी कोशिश कर रहा था। अुस तकलीफसे परशान होकर अंतमें वह वराह जिस झाडीमें था, अुससे बाहर निकला और वेगसे दौडता हुआ आगे जा घुसा। अुसकी अुसी स्थानपर प्रतीक्षा करती हुअी मालती अेक वृक्षपर धनुष्य बाण तय्यार करके बैठी हुअी थी। जावरोंके जगलमें रहते हुअे जावरा स्त्रियाँ जिस तरह अपने पुरुषोंके साथ शिकारके लिअे जाती हैं, अुस तरह वह भी प्रतिदिन किशनके साथ शिकारके लिअे जाने लग गयी थी। और तीन चार महीने के अुस वन-निवास काल में धनुष्य बाणके प्रयोग और शिकारके साहस भरे काममें जावरा स्त्रियोकी भाति ही वह भी, अब प्रवीण हो चली थी। आज वराहकी मृगया भी अपने आपही करनेका आग्रह अुसने किया था जिसका पहला पाठ किशन अुसे दे रहा था। वराहको खोजता खदेडता बाणोकी प्रहार-भूमि में, पेडपर चढकर

मालती जहा अुसकी टोहमें बैठी हुअी थी अुस दिशामें, अुसे लाकर छोडनेका काम किशनकी तरफ था। अुसने अुसे वहुत अच्छी तरह पूरा किया। और वह वराह ज्योही बाहर निकला त्योही मालतीने अुसपर शरवृष्टि करनी शुरू कर दी।

अुसके पहले दो बाण अुस बलिष्ठ वराह को तृण-शरो (कुशलर्यं) की भाति ही चुभे, अुनकी पर्वाह न करता हुआ वह पशु अुसी प्रकार दौडता रहा। अितनेमें मालतीने अपने भीतर की सारी शक्ति लगाकर अेक आखिरी बाण छोडा जो सीधा जाकर अुसकी कोखही में जा धसा। थोडा सा लडखडाता हुआ वह वराह ज्योही कुछ और आगे बढा त्यो ही धडाम से जमीन पर गिर पडा।

यह देखतेही मालती पेड परसे नीचे अुतरी, दौडते हुअे आनेवाले किशनको अुसने बीचही में ठहरा दिया और अपने शौर्य की प्रशसा अुसके द्वारा अधिकारपूर्वक प्राप्त करनेकी अिच्छा से बोली,

"क्यो आज की है या नही मृगया मैंने प्राणोपर आ बीतनेवाली ?"

"वृक्षपर बैठकर तो की है !" किशन हसा! "जिसने पैदल पीछा करके हिंस्र प्राणीको लाकर तेरे सामने खडा कर दिया, प्राणोपर आ बीतनेवाला काम तो अुसने किया है ! केवल सुरक्षित रूपसे वृक्षपर बैठने का काम ही तूने किया है।"

"प्रत्येक रानी मृगया करते समय अपने साथ खदेडने वाला आदमी तो रखती ही है। तू अेक अच्छा खदेडने वाला आदमी है, अितना कह ले तेरी मर्जी हो तो ! पर जिसका बाण, शिकार तो अुसीका है ! अिस वराह की कोखमें घुसा हुआ बाण मेरा है, अत शिकार भी मेरा ही हुआ।"

"कोअी पर्वाह नही, वह पूरा का पूरा जगली सूअर तू अकेली ही खा डाल, हो गया न ! और मै तो अब शाकाहारी ही होनेवाला हू। जिसे जगली सूअरके गुण अभीष्ट हो वह सूअर खाय ? मै केले आलू-"

"ठीक बिलकुल ठीक ! जिसे अपनी खोपडी में आलू ही आलू भरने हो वह खाय आलू !" मालतीने अुसे बीच ही में टोका।

अितने में 'अू ऽऽ अू ऽऽ' करके जावरोकी हांक मारने की किलकारी

सुनाअी दी। मुडकर देखा तो अेक जावरा, जो किशनके हाथ के नीचे काम करता था, दौडा दौडा आता हुआ दिखाअी दिया। आते ही अुसने रोनेकी सी आवाज निकालकर, आँखें पोछकर अेक दो शब्द बोलकर, जो सदेश पहुँचाया अुसका सपूर्ण वाक्य यो बनता—

"बाबूजी! चलिये चलिये, आपको राजा नानकोबी रोने के वास्ते बुला रहा है!"

अुसके अुस भावार्थको समझ कर किशनने मालती को शब्दोमें बतलाया, "सुना? नानकोबी, मुझे रोने के वास्ते बुला रहा है!"

"छी, अिसका क्या मतलब? तुझे रोने के लिअे बुला रहा है अिसके क्या मानी है? अुसे रोना हो तो वह रोये जी भरकर!"

"अरी, मगर अुसके अकेले के रोनेसे काम कैसे बनेगा? अुसके सबधियो में से जो अेक जावरा कल तक मृगीसे बीमार पडा था न, वह मर गया है। अुसके पीछे बचे हुअे लोग जितनी अधिक सख्यामें अिकठ्ठे होकर जोर जोरसे रोयेंगे अुतना ही अुस मृत व्यक्तिका आत्मा,–अुसका भूत–सतुष्ट होगा, अन्यथा वह जीवित सगे सबधियो को कष्ट देता रहेगा, अैसी अिन लोगोंकी धारणा हुआ करती है। अत कोअी मर गया तो वे सबको 'रोने के लिअे चलिये' कहकर आमत्रण देते हैं। हसती क्या हो, अपनो में भी तो पहले अैसी ही धारणा थी। आज भी हमारी अनेक जातियो में दाम देकर लोगोको रोने लगाया जाता ही है न?

मोल देके रोदनार्थ लोगोको लगाया है।
अश्रु है न, पीर है न, मोह है न माया है॥

क्रिश्चियन–मुसलमानोंमें भी मुर्दो को गाडकर, वे फिर अुठेंगे अिस खयाल से अुन्हे जतन करके रखना चाहिये अैसी जो धार्मिक धारणा है, वह भी जावरोकी अिस परलोक विद्याका ही सबक लेती रही है, नही क्या? जावरे तो मृतव्यक्ति सिर्फ रोना ही पर्याप्त समझते है, पर पहले मिश्रसे लेकर जापान तक के अनेक राष्ट्र अैसा मानते थे न कि, अेक आदमी मर गया तो अुसका साथ देने के लिअे अुसके जीवित सगे सबधी भी अपने आपको गाड ले और पर लोक पहुँचे! मरे हुओ की जीवित स्त्रियाँ, नौकर, दासदासी वगैरह को भी अुन्ही की कब्रमें गाड दिया करते

थे। अच्छा–" अुस जावरे की तरफ मुडकर किशन बोला, "जा, और नानकोबीसे जाकर कह कि हम रोनेके लिअे अभी आते है। पर ठहर, यह देख, अिस वराह को भी पीठपर डालकर ले जा और राजा नानकोबीसे यह कहना कि, यह हमारी तरफ से अुसे अेक नजराना है।"

जावरे ने अपने अेक खास तरीके से अुस वराह को बाधा, और अुस ढेरको पीठपर डाल कर वहा से चला गया।

"कितनी थक गयी हो तुम!" किशनने मालती की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखा और अुसका अेक हाथ अपने हाथ में लेते हुअे कहा, "मालती शिकार की धुन में सवेरे दौडधूप करती हुअी तुम कितनी पसीना पसीना हो गयी हो, और थकी हुअी दिखाअी देती हो। ये देखो पसीने के स्वच्छ और शुभ्र बिंदु मोती की भाति तुम्हारे माथे को और यह लाली तुम्हारे गालो को किस तरह सुदर बना रही है! आओ, बैठो कुछ देर मेरे पास, थोडीसी सुस्ता लो और तब हम चले जावरो की ओर!" अुसके बालो तथा गालोपर से हाथ फेरता हुआ किशन अेक कुर्सीनुमा चट्टानपर नीचे पैर लटका कर बैठ गया और अपने हाथमें पकडे हुअे अुसके बायें हाथ को अेक प्रणयपूर्ण झटका देकर मालती को और अधिक अपनी ओर खीच लिया।

मालती को यही बहाना अभीप्ट था। वही मिल गया। अुसकी मुखमुद्रा खिल अुठी। वह चुपके से किशन की गोदमें जा बैठी। अपना दहिना हाथ अुसके गले में डाल, अुसके पैरोपर अपने भी पैर लटकाये मालतीने मुखमडल किशन के विशाल वक्ष स्थल पर रख दिया। आखें मूद ली मदमद श्वासोच्छ्वास लेती हुअी वह विश्राम करने लगी।

मालती के भालवी चूर्ण कुतल हवा से भुराभुरा रहे थे। अुन्हे हाथ से सवारते हुअे बीच बीचमें अुसके गालो को थपथपाते हुअे अेक क्षणमें अुसकी ओर प्रेम भरी निगाहसे देखता हुआ, दूसरे क्षण अपने आनत मस्तकको अुसके मस्तक पर टेकता हुआ अपनी आखें मूदता हुआ किशन भी अपनी प्रियतमा के गाढ आलिगन के सुखास्वाद में निमग्न हो गया।

तादृश तल्लीनता में जब अुनके कुछ क्षण व्यतीत हुअे तब मालती

ने अपने लोचन अुन्मीलित किये और किशन के वक्ष स्थलपर पडे पडे ही अुसने अपना मुखमडल किशन के मुखके समीप पहुँचा दिया।

अुसकी मूक विनति ही किशन की अभ्यर्थना थी। अुसने मालतीके अूपर अुठाये हुअे मुखका चुवन ले लिया। मालती ने फिर अपना सिर किशनके वक्ष स्थलपर टेक कर आँखें वद कर ली।

अुसकी वह मधुर तद्रा जव थोडीसी पूरी हुअी तव वह किशन की गोदहीमें अुठकर सीधी वैठ गयी। अुस तद्रा में जिस विषयका ताता अुसके मन में वध रहा था। वह मानो किशन को भी सुनाअी देख रहा हो अिस खयालसे, अुसी प्रकार अुमी विषय को चालू रखते मालती ने लाडभरे कठसे पुछा,

" सच है, तुझे भी अिस प्रकार प्रतीत होता है न ? "

" अिस प्रकार ? मधुर न, प्रतीत होता है न ! तेरे अीदृश प्रेमपूर्व आलिगन में मालती यदि अविक्षति रूपसे मृत्यु भी आ जाय तो वह भी मधुर ही प्रतीत होगी ! तव जीवन के वारे में क्या पूछती है ! "

" तव वताअू मैं, तुझसे क्या पूछ रही थी ? सारे आयुष्य भर, अपने अपने हाथो किसी भी प्रकारका आततायित्व का अपराध न होनेपर भी निरतर अेक के वाद दूसरी दुर्गति को सहन करते करते मुझे जो यह तेरी सगतिका अमूल्य प्रणय-प्रेमल सुख मिल गया है अुसे अिससे भी अधिक सुख कि लालसा से खतरे में डालने का साहस अव मुझ से नही होता। सचमुच किशन मैं कहती हू अव यहा से भागकर पुन अपने देगकी ओर जाने की अिच्छा से जान खतरे में क्यो डाली जाय ? भरे समुद्र को अेक छोटीसी नावसे पार करना, प्रवल शत्रुओके सरकारी पहरे समुद्रपर और भूमिपर हमेशा में ताकमें वैठे हुअे, अुनकी आँख वचा कर देशमें जानेकी आशा रखना यह सव अव पागलपनसा नही प्रतीत होता ? यदि मनुष्यता पूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिअे कोअी अन्य अुपाय ही न होता तो अुस समय साहस करना आवश्यक होता। पर अव यहाँ तेरी सगती में स्वच्छदता या जव हम अिस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत कर ही सकते है तो फिर यही अिन जावरो के आश्रय में अिस अरण्य में अिसी प्रकार आनद से क्यो न रहे जन्मभर ?

" जिस गुहामें हम दोनो आज कल रहते है न, वह गुहा मुझे तो सुखका साक्षात् गोकुल प्रतीत होता है। कोअी भी रानी, अपने हीरे मानिकोंसे तथा गदेलोंसे सजे हुअे अपने स्मृतिमदिर में मुझ से अधिक सुखी नही होगी ! किशन, राजमहालो में भी राजा रानी आत्महत्या किया ही करते हैं न ? मेरी मा हमेशा मुझसे कहा करती थी कि जरूरत से ज्यादा सामान का रहना और न रहना समान ही है। सुख केवल सामानमें नही रहता मानसिक सतोष में रहता है। वह कहा करती कि यदि पचास भी अपने घर रहे थी तो सोना तो अुतनेही स्थल पर पडेगा जितनी अपने शरीरकी लबाअी चौडाअी है। हड्डियाँ बहुत होनेपर भी अपनी शरीर को बढाया नहीं जा सकता। अुसी प्रकार जलेबीके सामने ढेर के ढेर क्यो न पडे हो। आदमी तो अुतना ही खा पायेगा जितना अुसके अगुश्त भर पेट में समा सकेगा। अत कहती हू कि अब अधिक सुख देश में जाकर भी कौनसा मिलनेवाला है जिसके लिअे अक्षरश सकटके समुद्र में फिरसे हम अिस प्रकार छलाग मारे ? मुझे तो यहा कुछ भी कम नही प्रतीत होता। किशन मैं जो तुझसे अिस तरह आलिगन किये हू, कही भी रहू, आलिगन का सुख तो अितना ही रहेगा! अिस वनमें प्यास लगने पर स्वच्छ पानी पियें तो वह जितना मधुर लगेगा बिलकुल अुतना ही मधुर वह सिधु नदीके तीरपर जाकर प्यास बुझानेपर लगेगा। सुख तो वैसाही और अुतना ही रहेगा!

" सवेरे अिस प्रकार शिकार खेलते हुअे समुद्र के किनारे अथवा अरण्य-वन में स्वेच्छा पूर्वक सचार करे, थकावट आयी कि तेरे वक्ष स्थल पर अिस प्रकार आकर अपनी थकावट दूर करे, अिस तरह अपने शरीर पर हाथ फिरवा ले, फिर गुहा की ओर जा, जोर की भूख का मास, मत्स्य, फल, कद आदि द्वारा यथेच्छ परिहार करे, दो पहरको समुद्र के किनारे, रेतीले मैदान में जावरा स्त्रियो के खेल खेलते हुअे, गाने गाते हुअे, नाना रगरूप के शख-सीपी आदियो को ढूंढते हुअे वनश्री के और जलश्री के चमत्कार देखें, और दिनभर अितस्तत स्वच्छद अुड अुडकर थके हुअे पक्षियो के जोडे अपने अपने घोसलो की ओर लौटने लगे कि, अुसी प्रकार तेरे हाथ में अपना हाथ डाले अपनी अुस गुहारूप गोकुल की ओर वापस जायें

और अेक दूसरे से चिपट कर सोयें ! । मन के मपैने ही से जिसे मापा जा सकता है वह प्रियसगति का सुख अिस गुहागत अपनी रतिशय्यापर जितना समाधान पहुँचाता है, गोकुल में चले जायें तो भी वह अुतना ही पहुँचायेगा ! तव यहा से भाग कर आगे जाने के प्रयत्न में प्राणग्राही नवीन नवीन सकटो को क्यो तू जवर्दस्ती मोल लेना चाहता है ? चल हम यही जन्मभर वने रहे । मेरे सुखसमाधान के पलग के लिअे वह गुहा पूर्णतया पर्याप्त है !"

" पर वह गुहा पलग के लिअे पर्याप्त रही थी तो भी पालने के लिअे पूरी पडेगी क्या ? कल पालना वाधने का समय आ पहुँचा तो ?" किशनने अुसे गुदगुदी की।

" चुप, वाष्कल कही का ! " मालतीने अेक हलकी सी चपत किशन के गालोपर जडा दी और खिलखिला कर हँस पडी । " मैं जो कुछ कहती हू, अुसे मजाक मत समझ । "

"नही, प्रिये, मैं मजाक नही समझ रहा हूँ । पर तू यह प्रश्न करते हुअे कि, फिरसे समुद्रपार भाग जाने का प्राणसकट काहे को मोल ले, अिस वात को भुला वैठी कि, पुराने सकट अभी अपने चारों ओर पूर्ववत् चक्कर मार रहे हैं । मैं भाग ही गया हूँ, यह निश्चित् रूप से भले ही सरकारी अधिकारियो को मालूम न पडा हो, वे कदाचित् अभी तक यह भी सोचते होगे कि जावरो की मुठभेड में मै मारा जा चुका हूँ, तथापि तुझे तो दिन दहाडे भगा कर ले जाया गया है, अिस में कोअी शका ही नही है अुन्हे ! तुझे तथा तुझे भगाकर ले जानेवालो को जो पकडवा देगा, अुस के लिअे हजार हजार रुपयो के पुरस्कार दिये जावेगे अिस आशय के विज्ञापन सर्वत्र लगे हुअे है ! जोर शोर से खोज की जा रही है। अुन के गुप्तचरो को और नौकाओ को यदि हमारे यहा के निवास का पता मालूम पड गया तो ? किंवा अिन सैकडो जावरो में से ही अेकाध आदमी को अग्रेजोंने अपनी ओर मिला लिया तो ? अैसे अुदाहरण क्वचित् मिलते भी है ! अैसी यदि स्थिति अुत्पन्न हो गयी, तो अपने ही हाथो अपनी जान ले लेना, अुस कैद की भयकर यातनाओ में फिर से जा पडने की अपेक्षा अच्छा नही लगेगा क्या ?

अुस सकट की अपेक्षा, समुद्रपार होने का साहस कार्य हर हालत में कम खतरे का है। पुनश्च, यहा पशु पक्षियो के जोडो की तरह जीवित रहे भी तो पशुपक्षी बनकर रह पायेंगे, मनुष्य बनकर नही। स्वदेश की स्व-राष्ट्र की तथा मनुष्य समाज की कुछ भी सेवा, कुछ भी देशकार्य यदि अपने हाथो न होता हो तो अुसे मनुष्य जीवन में मनुष्यता रही कहा? और प्रिये तेरी कुक्षि को यथाकाल धन्य करनेवाले अुस नन्हे से देवदूत को अिन जावरो और अिन अरण्य शूकरो की सस्कृति की दीक्षा देनी होगी क्या? अतः हमें अपने देश तो जाना ही चाहिये। समुद्र को लाघना ही चाहिये। दूसरी बात यह भी है कि, जब से हम कालेपानी के कैदखानेसे भागकर आये है तब से तो गत तीन चार महीनो तक दैव भी हमारे लिअे अनुकूल ही बना रहा है। अुस नराधम रफिअुद्दीन का बदला अिस दोलकाष्ठ के पराक्रम से अनायासही चुका लिया गया, जिस से अिस स्थानपर भी तेरे रास्ते में आकर खडी होनेवाली रुकावट दूर हो गअी।

अुस प्रच्छन्न शत्रुसे जिस किस्म की मदद लेने के विचारसे हमने अुसे अपने नजदीक रखा था, अुस समुद्रतरण के कार्य में सहायता करने वाला अेक प्राणोपम मित्र भी अुस दोलकाष्ठ के रूप में हमें मिल गया। नाविक विद्या में वह प्रवीण और, साहसी है। गत तीन चार महीनो के अुस के व्यवहार से अुस के स्नेह की परख भी अच्छी तरह हो ही गअी है! अुसने अेक सुदर नाव भी कितने परिश्रम से सर्व सामग्री युक्त बनाकर तय्यार रखी है! अब अनुकूल हवा की ही अुतनी प्रतीक्षा है। वे हवाअे बहने लगी कि हम तीनो समुद्र में अुस नाव को छोडकर अपने देश की ओर चल ही पडेंगे।

"पर अुस दोलकाष्ठ के मनमे, मेरे सबध में जो अेक दुराशा अुत्पन्न हो गअी है, मैं उसकी पत्नी बन जाअू यही जो अेक अभिलाषा अुसके मनमें सचारित हुअी है, अुसका दुष्परिणाम आज नही तो कल शत्रुत्व में परिणत नही होगा क्या?"

"सहसा वैसा नही होगा। कारण अुसे तेरी अभिलाषा है भी तो वह अुस नराधम रफिउद्दीन की अभिलाषा की तरह राक्षसी स्वरूप की

नही है। आजतक तो अुसका स्वरूप सात्विक ही है। हमने जो अपना भाअी बहनका नाता आजतक जोड रखा है, अुसीको वह सच्चा मान रहा है और केवल अिसी लिए वह तुझ जैसी कुमारिका को अपनी पत्नी बनाने की अिच्छा प्रदर्शित कर रहा है। वह तुझे अभीतक कुमारिका समझता है। अुसे जब अपना सच्चा वृत्तात और सच्चा नाता बतलाने का समय आयेगा-"

"तब फिर बता क्यो नही देता सारी बाते ? सचमुच किशन, मुझे भी अब तुझे अुपरी तौरसे क्यो न हो, 'भय्या' कहने में शरम महसूस होती है।"

"सो क्यो ?" किशनने अुसके चुटीसी काटी और हँसा।

"छी, क्यों की क्या पूछता है ? अपने प्रियतम को भी कोअी भाअी कहा करता है ? जाबरो में भी भाअी बहन की शादी को कोई मनुष्यता की रीति नही समझता।"

जाबरो में नही समझते होगे, पर मनुष्य समाज में बहिन की भाअी की शादिया कभी हुअी ही नही, अैसा मत समझ ! मनुष्य समाजने सब तरह के विवाहो को ही नहीं, अपितु स्वच्छद सभोगो को भी जिन जिन परिस्थितियो में वे अिष्ट अथवा अपरिहार्य प्रतीत होंगे, अुन अुन परिस्थितियो में धर्म्य माना हुआ है। प्रत्यक्ष गौतम बुद्ध का जन्म जिस कुल में हुआ अुसी कुलकी कथा ग्रथातर में यो लिखी हुअी है कि सूर्य कुलके अेक राजकुमारको और अुसकी बहिन को सकटावस्था के कारण अेक निर्जन अरण्य में जन्म व्यतीत करना पडा। तब अुन भाअी बहनो ने आपसही में विवाह किया और अुनकी सतति के अुदर से ही आगे चलकर अनेक पीढियो के पश्चात् बुद्ध सदृश महात्मा अुत्पन्न हुआ।

"राजकुलका रक्तबीज दैवी ! अुसका मनुष्यो से सबध नहीं होना चाहिये अैसी अनुवशिकता की अतिरेक युक्त शुद्धता की रक्षा के लिअे ब्रह्मदेशके, मेक्सिको के, और अनेक स्थानो के प्रख्यात "दैवी" राजवशो मे राजपुत्रका विवाह अुसकी सगी बहन ही से होना चाहिये अैसी 'धर्माज्ञा' थी, शिष्टजन समत प्रथा ही थी ! जिन समाजो को अुस धर्मसे दुष्परिणाम होते है अैसा अनुभव हुआ, अुन्हो ने अुसी को अधर्म साबित किया। आज भी हिंदू-मुसलमान क्रिश्चनादिक समाजो में कही ममेरी बहन

तो कही मौसेरी वहन, प्रत्यक्ष सगी चचेरी वहन से भी विवाह करना अधर्म नही माना जाता ! तव हम तो केवल प्राणोपर आये हुअे सकटो के परिहारार्थ ही अिस भाअी बहन के नाते का वहाना वनाये हुअे है "

" सच सच वता, कल वह क्या कह रहा था तुझसे । मेरी ओर अितना अधिक हँसते हँसते अुगली का अिशारा करते हुअे ? "

" अरी, वह दोलकाष्ठ सचमुच अेक सैनिक की तवीयत का खुले दिलका मनुष्य है ! छक्के पजे अुसे मालूम ही नही है । ज्यो ही वह नाव कल तय्यार हो गअी त्यो ही वडे आनदसे अुसने मुझे वह दिखाअी और पूछा,

" अिस नावसे तुझे और तेरी अुस गोरी वहन को यदि मैंने सुरक्षित रूपसे स्वदेश में पहुँचा दिया तो, अिस मल्लाह को तू अिस नावका किराया क्या देगा ? "

" मैंने कहा, ' क्या चाहिये तुझे ?"

तव अुसने तेरी तरफ अुगली करके कहा, " सिर्फ वह सोने की प्रतिमा मुझे चाहिये !"

" मैं हँसा, मैंने कहा, मुझे कोअी आपत्ति नही । यदि अुसके मनको तू वश कर सका तो परतीरपर पहुँचाते ही मैं तुम दोनो का विवाह कर डालूगा ।"

"तब अेकदम छातीपर हाथ मारकर वह दोलकाष्ठ हँसा, ' वह काम मेरा । मेरे सीटी देते ही यदि वह पछी मेरे हाथपर आकर नही वैठा तो मैं अपना नामही वदल डालूगा ! "

तत्काल अुसने मुझसे वचन भी ले लिया कि यदि कटकी अनुकूल हो गअी मैं अुसे दोलकाष्ठको आनदसे अर्पित कर डालूगा । "

" वाहरे तू, और वाहरे तेरा वचन ! किशन ! " अुसकी ओर रुष्ट दृष्टिसे देखती हुअी मालती बोली, " किशन, सारा वुरापन और अुत्तरदायित्व मुझपर डालकर तू अपना अलग थलग हो गया ! पर क्यो रे, यदि वह अबसे सचमुच ही मेरे साथ लाडप्यार करने लग गया और मैं अुसकी हो गअी तो—? "

" तो क्या ? तेरी अिच्छा पूर्ण करके तुझे आनदयुक्त देखने के

लिअे मैं अपने आपको अुसके पश्चात् सचमुच का तेरा सगा भाअी समझने लगूंगा और अुसके साथ तेरा विवाह अपने हाथोंसे कर दूंगा ।"

क्रोधके अेक झटके के साथ अुसकी गोद में से अुठने की अिच्छावाली मालती को हाथ पकडकर अुसी तरह से बैठाते हुअे किशन समझाने बुझाने लगा ।

" अिस तरह गुस्सा क्यो करती है ? जब तूने सवाल किया था, तब तुझे किस तरह अच्छा लगा था ? तो जैसे दो वैसे लो ! पर मालती, मैं बिलकुल हृदयसे कहता हूं तुझसे, कि तुज जैसी सुंदर और गोरीपान तरुणी के लिअे मेरे जैसा काला कलूटा कुरूप और किसी भी प्रकार की विशेषता से हीन प्रियतम अनुरूप नही है यह मैं अपने मन में पहले ही से जानता हू । मुझे यदि तेरा स्नेह ही मिल गया, तेरी संगति में सेवक के रूपसे भी यदि मैं रह सका, तो भी मेरी योग्यताके अनुसार मुझे जो मिलना चाहिये वह मिल जायगा अैसा मैं मानता चला आया हू । मेरी अपेक्षा भी जो तेरे लिअे अधिक अनुरूप है, अुस प्रियतम के चुनने में तू सर्वथा स्वतत्र है ।"

" ठीक है न ? मै स्वतत्र हू तभी तो मैंने चुनाव किया है । चुनाव तेरी आखो अथवा मर्पने से न करके मैंने अपनी आंखो और मर्पने से अिसी प्रियतम का किया है ! मेरे किशन ! मेरे प्रियतम !"

मालती ने गद्गद् होकर किशन को अपने बाहुओमें कस लिया और अुसके वक्षःस्थलपर अपना माथा टेककर क्षणभर नि स्तब्ध होकर प्रेमाश्रु बहाती रही । परतु फिर अपनी गर्दन अूपर अूठाकर चुभती हुअी दृष्टिसे किशन को निहारते हुअे हँस पडी,

" किशन, तुम पुरुषो को रूपरगकी ही जानकारी अधिक रहती है । कारण, तुम्हारी प्रीति तुम्हारी आंखो में रहती है । पर हम ललनाओ की प्रीति हमारे हृदयो मे रहती है । ललनाओ की प्रीति हमारे हृदयरूपी नेत्रोंसे देखा करती है । अत अुसे रूप और रग दिखाअी तो पडते है, पर शील स्वभाव और सद्गुण अुसे अधिक मुग्ध करते हैं । पराक्रम और पौरुषका सौंदर्य रूप और रगसेभी कितना अधिक आकर्षित होता है, यह घनश्यामल रामको वरनेवाली, सुवर्ण गौर सीतासे पूछ, सावले श्रीकृष्ण को वरनेवाली अथवा शिशुपालादिक गोरे, कम्बख्त तथा लपट व्यक्तियो का तिरस्कार

करने वाली स्वरूपशालिनी रुक्मिणी से पूछ ! अतअेव ललनाओ का स्ने, रूपरग के दो दिन में सूख जानेवाले घास की भाति अस्थिर नही होता, अपितु शील के आम्र तरुके सदृश सरस, सुस्थिर और फलवान् होता है ! "

" कम अज कम होना तो चाहिये ही था ! " किशन ने अुसे चुटते हुअे कहा, " पर स्त्रियो के आधे हृदय में प्रीतिका निवास है यह तेरा कहना यदि रुक्मिणी के अुदाहरण से सत्य माना जाय, तो स्त्रियो के बचे हुअे आधे हृदय में कपट का निवास है यह मेरा कहना भी अुसी अुदाहरण द्वारा तुझे मानना ही चाहिये ! कारण, रुक्मिणी के चोरी चोरी किये गये पत्र-व्यवहार भी प्रसिद्ध ही हे ! तब तू कम आज कम मेरे लिअे तो दोलकाष्ठ को अेकदम निराश मत कर। देश में जाने के पश्चात् तेरी प्रेमयाचना को स्वीकार करुगी अैसी आशा अुसके सामने सतत बनाये रख ! वह सज्जन है अिसमें सदेह नही, पर अेक निष्कपट अुजड्ड आदमी है वह थोडासा। अिस लिए वह जो भी लाल लपेट की बात करे, अुसका अेकदम तिरस्कार न कर। कारण देश में जाने के पश्चात् तेरी की आशा छूट गअी तो अिस समय समुद्रलघन के कार्य में जो साहसपूर्ण और मनोयोगपूर्ण सहायता कर रहा है, अुसमें वह ढिलाअी करने लग जाय, किसे मालूम ? अच्छा और यदि तेरा और मेरा असली नाता अेव पूर्ववृत्त बतला दू तो अपने प्रेम के विषय में से अुसके मनमें मात्सर्य अुत्पन्न नही होगा, यह कैसे कहा जा !

और हमने जिस हत्या के कारण यह सजा पाअी है, अुस के बारे हुअे अभियोग के समय जिस सकट से परित्राण पाने के लिअे हमने कृतक नाम और कृतक नाता प्रसिद्ध किया था, वे सकट अिन नामो के पुन जाहीर होते ही अपने अूपर पुनरपि टूट पडें अैसी अभी भी सभावना है। अत स्वदेश में पहुँचने तक अपने को यह नाटकीय भूमिका अिसी प्रकार बनाये रखना लाजमी है। देश में जाने पर दोलकाष्ठ के प्रेम की तू सुखेनैव अुपेक्षा कर। वह सज्जन है। तेरी अिच्छाके विरुद्ध बलपूर्वक अपना प्रेम लादनेवाला दुर्जन नही है । पर कही वह बिगड भी खडा हुआ और दुश्मनी करने लगा तो वहा अुसका मुकाबला करना अथवा अुसे चकमा दे देना हमारे लिअे यहा की अपेक्षा सौगुना अधिक आसान रहेगा । आज हम पूरी तरह परवश हैं। अुसकी सहायता के बिना समुद्र का अुल्लघन

अत्यत कठीण! जिन अुद्दड और अुच्छृखल मनुष्यो में अनवस्था ही समाज व्यवस्था होकर बैठती है, अुन की सगति मे जिसे जीवन व्यतीत करना हो आपद्‌धर्म ही को सद्‌धर्म मानकर चलना होगा!"

अितने में पुन 'अू ऽ ऽ ऽ! कटक बावू ऽ ऽ' अैसी किलकारियाँ सुनाअी दीं।

"अुठ अुठ! वे जावरे फिर अपने को बुलाने चले आये हैं, अब जाना ही चाहिये अुनके साथ समारभपूर्वक रोने के लिए!"

कटक और कटकी जब जावरो की खोहपर पहुँचे तब अुन जावरो का मृतक सस्कार अपने पूरे जोरपर था। वह मृत जावरा राजा नानकोवी का अेक विशेष स्नेही और जावरो का अेक 'दादा' था, अत अुसके मृतक सस्कार के लिए वे सारे जावरे आये हुअे थे। अुस शव को बीच में रखकर सब लोग अुसके चारो ओर अेक वृत्त में बैठे हुअे थे। अुस मृत व्यक्तिकी पत्नी और बच्चो को स्वभावत ही दु खनें पहले ही से विव्हल कर रखा था। परतु मृत सस्कार के लिअे वह सारी जातिकी जाति जब अिस प्रकार सार्वजनिक शोकके लिअे अेकत्र हुअी, अुस समय अुस दृष्य को देखते ही वह मृत व्यक्तिकी पत्नी शोक का आवेग बढ गया हो अिसी खयाल से नही प्रत्युत अुस मृतक सस्कार सबधी कर्तव्य की जानकारी के कारण भी बिलखते बिलखते बीच ही में अूँचे स्वर से चिहुँक अुठी। अुसके साथही अेक खास स्वर और तालपर वे सारे जावरे भी रोने लग गये। पहले पहल अेक कर्तव्य समझकर भलेही अुन्होंने रोना शुरु किया हो तो भी आगे चलकर वे सचमुच ही रोने लग गये। क्यो कि जनपद विध्वसक सक्रामक रोग ही की भाति समाजानुभूति भी अेक सक्रामक रोग ही हुआ करता है। अस्तु सब की आँखें पानी से डबडबा आअी।

वह सार्वजनिक सगीत मिश्र आक्रद असवरणीय सा हो गया। अिस बीच, अुनमें से कुछ वृद्धोंने अुस शव की अेक गठरी बाधी और अुसे लेकर वे सब अेक वृक्ष की ओर चले। अेक निश्चित ताल में अपनी छाती पीटते हुअे तथा अेक निश्चित स्वरमें गले फाडकर रोते हुअे वे वहा गये। अुस वृक्षकी अूँचाअी पर अेक खोखल थी। अुसमें अुस शवकी गठरी अिस ढगसे बिठाअी गअी कि, मानो वह मनुष्य पालथी मारकर मुँह

अुठाकर सजीव मनुष्य की तरह सबकी ओर देख रहा हो। जावरो की ठिगनी जाति के लिअे वह वृक्ष अुतना अूँचा प्रतीत हुआ, कि अुनमें से कोअी भी अितनी अूँचाअी तक अुस शव को अुठाकर नही रख सकता था। अत यह काम दोलकाष्ठके सुपुर्द किया गया। अुसने स्वय अुस मुर्दे को अुस खोखलमें ले जाकर विठा दिया। जावरो के मृतक सस्कार की जव यह विधि पूरी की जा रही थी, अुस समय सवने तालबद्ध आक्रोशकी परमावधि कर डाली।

अुसके बाद सब जावरो ने अपने शरीर पर के सारे रगविरगी श्रृगारिक मिटटीके पट्टे पोछ डाले। हजामत किये हुअे सब सुहागिन स्त्रियो और पुरुषो ने सूतक के चिन्ह के तौरपर केवल भूरे रगकी मिट्टी लेकर अपने शरीरोपर अथच ' तराशे गये ' विकेश सिरोपर मल ली। अुसके पश्चात् मृतक के अतिम दर्शनो के लिअे वे सारे जावरे खडे हो गये। अुनमें धार्मिक कृत्य करवानेवाला पुरोहित तो कोअी रहता ही नही। अुस अुस कालमें जो भी अगुआपन पाया हुआ वूढा होगा, वही प्रथाके अनुसार सारे सस्कार कराता है।

अैसा अेक वूढा अगुआ अुस वक्त आगे आया और टूटे फूटे चार पाच शब्दो में अनेक हावभावो की भर्ती डालकर अुसने जो भाव व्यक्त किया, अुसे यदि शब्दो ही में कहना हो तो यो कहा जा सकेगा —

" अब अिस अपने मृत सवधी की ओर तीन महिनो तक कोअी भूलकर भी न देखे। अुसका यदि अेकातवास भग हो गया तो अुसका भूत गुस्सा करेगा। हम अुसे भूल तो नही जाते, अुसके प्रीति के प्रति कृतघ्न तो नही हो जाते यह सव अुसका भूत अिस अूँची खोखल में बैठा बैठा देखता रहेगा। अिस लिए अिन तीन महिनो में कोअी भी शृगार–मज्जा अथवा आमोद –प्रमोद न करे। नाचरग तीन महिने तक वद! रगीन मिट्टीके नखरे वद! — भूरी मिट्टी ही सिर्फ शरीर पर मलनी चाहिये कारण जहरीले मच्छर वगैरे जो जगलमें नगे जावरो को काट खाते है, अुनसे देह सरक्षण के लिअे किसी न किसी मिट्टी का लेप आवश्यक होता है।

अेक विशिष्ट आवाजमें सब जावरों ने अिस आदेश को स्वीकार किया और सब अपनी खोह की ओर वापिस चले गये।

किशन और मालती भी अपनी स्वतंत्र गुफा की ओर चल पड़े। जाते समय बड़ी अजीजीसे अुन्होंने दोलकाष्ठ को भी अपने साथ चलने के लिअे कहा।

दोलकाष्ठ के सिरपर अुस वक्त दार्शनिकता का भूत सवार हो रहा था। अपने पाण्डित्य का प्रभाव मालतीपर डालने के अिरादेसे वह किशनके साथ जावरो के मृतक सस्कारके विषयमें रास्तेभर बातचीत करता चला,

"देख मृतक के सबध में प्रीति और भीति अिन दो भावनाओ परही सारे मृतक सस्कार किस प्रकार खड़े है! हमारे वैदिक मृतक सस्कार औौर्ध्वदेहिक और सूतकश्राद्ध आदि अिन वर्मशून्य अेव वन्य जावरोंके आरण्यक मृतक सस्कारही के तो सस्करण है। हिंदू, क्रिश्चियन, मुस्लिम सभी मृतक सस्कार मृत व्यक्ति विषयक प्रीति और भीति की भावनापरही आधारित है। कैसे सो देखिये। अिन जावरो के मृतक सस्कारोपरही बीचबीचमें हस रही थी न कटकी? पर अुनके जगली और पागलपने के प्रतीत होनेवाले मृतक सबधी प्रत्येक प्रथा ही की प्रतिध्वनि अपने सुधारणायुक्त वैदिक–क्रिश्चियन –मुस्लिम प्रभृति अीश्वरोक्त धर्म कह ढोल पीटनेवाले मृतक सस्कारोंमें आकर्णित होती है अैसा यदि मैंने सिद्ध कर दिया तो तू मुझे क्या देगी? आदिम मानव मुर्देपर अिस लिअे पत्थरोका ढेर चुनता है कि कही वह भूत बनकर अुठ न खडा हो—अुसीके पेटसे अिन अीसाअियो और मुसलमानोके कब्रिस्तान, भव्य मकबरे और पिरामिड पैदा हुअे! मृत व्यक्तियोंकी नौका वैतरणी को तर जानेमें समर्थ हो सके अिसीलिअे–"

"बस हुआ बाबा, तेरा तत्त्वज्ञान!" किशन ने यह देखकर कि अब यह तत्त्वज्ञान की धारा में बेतहाशा बहता चला जायगा, दोलकाष्ठको बीचहीमें टोक दिया! "मृतोको वैतरणी पार ले जानेवाली नौकाओके सबधमें जानकारी देनेकी अपेक्षा पहले यदि तू जीवितोको पार ले जानेवाली नौकाके बारेमें जानकारी देगा तो अधिक अुपकार होगे! वैतरणीका मृत समुद्रपार करने के लिअे अेकाघ नौका मरनेके पश्चात् हमारे मुर्दोको कहीं से भी मिल जायेगी। न भी मिली तो भी तबकी तब देख लेगे। पर आज अिस वक्त कालेपानी का समुद्र जीवितावस्थामें पार करनेके लिअे अुपयोगी हो सके अैसी जो नौका तू तय्यार कर रहा था, अुसका क्या हुआ सो बता पहले!

जो नाव तूने अुस दिन मुझे दिखाअी भी अब अुसे किस दिन समुद्रमें ढकेलना है? परसो तूने कहा था कि अब सारी तय्यारी पूरी हो चुकी है, पर अभी तू कल–परसो, कल-परसो किये ही चला जा रहा है। अब प्राणोकी अिस नैया को सकट समुद्र में कब ढकेलनेवाला है बता? बिलकुल पक्की तारीख चाहिये! फिर चाहे दैव हमें पार ले जाय या बीचहीमें डुबा दे। पर अब अेक दिन भी केवल डरके ख्यालसे यहा ठहरना ठीक नही। बता, दिन बता।"

"बिलकुल निश्चित दिन बतलाता हूँ। तीन महीने और तीन दिन समाप्त होते ही जो दिन अुदित होगा, अुसी दिन नाव को समुद्रमें ढकेलना है!"

"बापरे, क्यों? अब अेकदम अितनी देर क्यो? परसो तो तूने बतलाया था कि सारी तय्यारी हो चुकी है? और अब बिलकुल ज्योतिषीके ठाठमें तीन महिने तीन दिनकी बात कर रहा है? मुहूर्त विहूर्त की खपत तो सवार नही हो गयी कही?

"यह जिस दिन तय्यारी पूरी हुअी, अुसी दिन दोलकाष्ठ का मुहूर्त हुआ करता है। पर मुहूर्तकी खपत को अेक और रख भी दें तो भी अपने को दो और खपतो का खयाल रखना ही चाहिये। अेक खपत है समुद्रकी और दूसरी है नानकोबी की। राजा नानकोबी ने मुझे अभी जताकर कहा है कि, जब तक अिस जावरे का सूतक समाप्त न हो तब तक नौका समुद्रमें नही छोडनी। सो यह जावरोका सूतक तीन महीने बाद जाकर खत्म होगा। अुसके पश्चात् वे हमारे लिअे दो तीन दिन बाद अपनी डुगिया सहायतार्थ देकर अिस समुद्रके तटके समीपस्थ वक्रमार्गों में से रास्ता निकालते निकालते भरे समुद्र में हमारी नाव को अपने पहरे के अदर पहुँचा देनेवाले हैं। और समुद्रकी हवाअें भी अुस कालमें हमारे लिअे अनुकूल होनेवाली हैं। अिसी लिअे तो मुझे ठहरना पड रहा है। अरे, देश जाने की जल्दबाजी जितनी तुझे है, अुससे कम मुझे है अैसा तुझे लगता तो किस आधारपर है? तुझे होगी सादी जल्दबाजी, पर मुझे तो भय्या, शादीकी जल्दबाजी है न! क्यों कटको, ठीक है या नही? कटकने पर तीर पर पहुँचाने के बदले में जो दाम देना मजूर किया है अुसकी हुडी मकारी जानेवाली है तेरे ही प्रेम के साहूकारे पर समझी।" ढिठाअी के

साथ दोलकाष्ठ ने हसते हसते कटकी के गालपर अेक लाडभरी चुटकी मारी ।

" पर, काम होने के बाद दाम का सवाल ! कंटक द्वारा दी गयी हुडी सकारी जायगी तो अुसी दिन सकारी जायगी यह बात मल्लाह को भी भुलानी नही चाहिये ! "मछली को आमिषमात्र दिखाअी दे सके अिस चतुरता से मालतीने अपना जाल फेंका ।

"... चली मातृगेह को" : : : २२

" किशन ! अे किशन ! " अपनी गुहाके द्वारपर खडी मालतीने मन ही मन दो तीन बार पुकारा । वह कुछ हताश सा मुह किये खडी थी । फिर मन ही मन गुनगुनाया, " बोलते बोलते जाने किधर चला गया ! सवेरे का गया अितनी देर होनेपर भी अभीतक नही लौटा । अुन जावरो ही की धुन में अुधरका अुधर ही अटक गया मालूम पडता है ! — पर यह कौन आ रहा है, अुन बास की झाडियो में से बास जैसा ही अूचा ? दोलकाष्ठ ! और कौन ? मेरा मन बस में करने के लिअे कितना प्रयत्न करता रहता है बेचारा ! अितना प्रेमयुक्त और साफ हृदयका मनुष्य है यह कि सचमुच ही अुसके अूपर मुझे तरस आती है । पर क्या करे ? अुसके प्रेम को मैं स्वीकार भी नही सकती और अिनकार भी नही सकती । आज महीनो से सवेरा हुआ कि अिस अरण्य के ताजे ताजे फूल और ताजा ताजा शहद लेकर मुझे अुपहार देने में अेकदिन का भी अिसने नागा नही किया । मै अिसे पति मान लू अैसा जो अेक असवरणीय मोह अिसके मन में अुत्पन्न हुआ है, अुसे त्यागकर यह यदि मुझसे कहे कि तू मुझे भाअी मान ले तो मैं अभी अिसी क्षण अपने अत करणसे अुसे अपना भाअी बना लूगी कारण अब मुझे सचमुच ही वह पसद आने लगा है ।"

मालती मन में अितना बोल ही रही थी कि दोलकाष्ठ अुस गुहा के समीप आ पहुँचा । अुसके अेक हाथ में अेक सुदर शख था । वह गुलाबी रग का था । अुसे तराशकर और घिसकर अूपर बेलबूटियाँ काढकर

सजाया हुआ था। अिधरके सिंधु पुलिम अिन शंखो के लिअे वहुत अधिक विख्यात है। अुसके दूसरे हाथ में अेक अत्यत हरे पत्तोका द्रोण था। अुस में ताजे फूल थे। वहाके वनो में शहद के छत्ते विपुल! जावरे लोग अुन को तोडकर वानकी वात में जितना चाहिये अुतना ताजा शहद लाकर देने में प्रवीण थे। अुस प्रकारका ताजा वहुत सा शहद अुस शखके कुप्पेमें भरा हुआ था। दोलकाष्ठ ने वह कटकी को दिया। कटकीने अुसे अपनी गुहा में रख लिया। अुसके पश्चात् अुसने वे फूल अुसे दिये तथा कुछ अुसके वालो में स्वय खोसने के अिरादे से हाथ आगे वढाया। हा हा ना ना करते हुअे कटकी ने अुसे वे फूल खोसने दिये। बचे हुअे फूलोका द्रोण दोनो हाथोसे अूपर अुठाकर अुन्हें सूघती हुअी और रगोको देखती हुअी प्रसन्नायिता कटकी वोली,

" कितने सुदर फूल है ये। मै आपकी आभारी हू!"

" पर कटकी अिन सव फूलो से वढकर सुदर अेक और फूल है अिस अरण्य में, पर वही अभी कुछ मेरे हाथ में नही आया है!"

" काहे का है जी, वह अितना सुदर फूल ? "

" तेरे सौंदर्यका! कटकी–" दोलकाष्ठ ने अुद्दडतापूर्वक अपना मासल हाथ अुसकी कोमल ठोढीपर लगाने के लिअे आगे वढाया।

" छी " ठोढी वचाकर पीछेकी ओर हटकर पर क्रोध न जताती हुअी कटकी प्रत्युतर में वोली " अ ह। वह फूल समुद्रके अिस अदमानी तट के जगल का भले ही रहे पर हाथ में यदि आता हुआ तो आयेगा समुद्र के अुस परली ओरके भारतीय तट के जगल ही में!"

" अुसी आशा पर तो मै जीवित हू। और मेरी नाव भी यदि तैरेगी तो अुसी आशापर तैरेगी। वस ? अव सिर्फ तीन दिन वाकी है। आज ही जावरो के तीन महीनो का सूनक समाप्त होनेवाला है। अपने को अव अुधर ही चलना है। वह खत्म हुआ कि चौथको हमने अपने साहस की नाव समुद्र में ढकेल ही दी समझो! देशकी तरफ ले जानेवाली हवाअे भी अव अनुकूल वह रही है। अव अितने पर जो कुछ परमेश्वर करेगा वही सत्य है ? "

" जो भलाअी की वात हो विलकुल वही करेगा परमेश्वर! आज मुझे

अैसा शुभशकुन दीखा है कि मुझे अब किसी प्रकार का सदेह ही नहीं रह गया। मैंने करक भय्या से सब किस्सा सवेरे ही कह दिया था।"

" वह कौन किस्सा है, क्या मै जान सकता हू ? शकुन विलकुल सत्य हुआ करते है, समझी !"

" अच्छा तो सुनाती हू। कल रात मेरी लाडली मा सपने में दिखाअी दी। समुद्रके अिस तटपर मै खडी हू, बीचमें यह कालेपानी का समुद्र है, अुस ओर के तटपर मेरी मा खडी है! अपने दोनो हाथ फैलाकर वह मुझसे कह रही है, 'अरी, चल न, देखती क्या है, आ, मेरी भुजाओ में घुसकर आलिगन पूर्वक भेट मुझसे! मार छलांग, डर मत, मै तुझे सहार दूंगी !' माके ये शब्द सुनते ही मैंने, अेक जोरकी छलाग मारी, पानी की छोटीसी धाराको जिस तरह लाघते हैं, अुसी तरह समुद्रको लाघ कर मैं झट्से अपनी माँकी भुजाओ में समा गयी। अितने में मानो दृश्य परिवर्तन हो गया। मै अपने घर में हू, झूलेपर मैं और मेरी मा वैठी है मुझे जो गाने पसद है, वह मेरी मा मुझे गा गाकर सुनाती है। सचमुच दोलकाष्ठ, अुस स्वप्न के वाद से मै अधीर हो गयी हू, मेरी माके वे गाने मेरे कानो में लगाकर गूज रहे हैं, मेरी मा ? हाय, अव वह मुझे कब मिलेगी !" कटकी रोने लगी।

"चुप हो, चुप हो। रो मत, तुझे अपनी माकी स्मृति जिस प्रकार विव्हल कर देती है, ठीक अुसी तरह मुझे भी अपनी मा की स्मृति विव्हल करती है। मेरी मा— मेरी एक छोटीसी दस वारह वरस कि लाडली वहन! मेरे अतिरिक्त अुनके लिअे अन्य कोअी आधार नही था! वे लोग भी मेरी अिसी प्रकार राह देखा करते होगे! मेरा और अुनका अिसी प्रकार विछोह हो गया है! अुनसे मै कब जाकर मिलूगा, यही मै भी सोचता रहता हू।" अितना वोलते वोलते दोलकाष्ठ का भी गला भर आया और आँखोंसे अश्रुओ की धारा वहने लगी।

विशालकाय रूक्ष, और मुस्टडा दिखाअी देनेवाले अुस दोलकाष्ठको अिस तरह भावाविष्ट देखकर कटकी को कौतुक सा प्रतीत हुआ। अेक वडे भारी रूखी चट्टानोवाले पर्वत शिखरको यकायक झरते हुअे देखकर कौतुक

तो प्रतीत होगा ही न ? अुसकी ओर क्षणभर दर्त्तक दृष्टि निहारते रहने के पश्चात् अुसने पूछा—

"तुम्हारी वह छोटी बहन अब बडी हो गयी होगी !"

"काहे की बडी हो गयी होगी ! होगी कोअी वीस अेक बरसकी। अुसे परेशान करना हो तो बस अुसे यो दोनो हाथोपर अुठाया और जबतक वह चिल्लाने न लग जाय तब तक अुसे जोरसे फिराते रहे। अब भी जब मै अुससे मिलूगा न, तब पहलेही सपट्टे में अुसे अितना फिराअूगा, अितना फिराअूगा, f f अुसे बुरी तरह चक्कर आ जाय और मेरी माँ गुस्से में आकार डाटने लगे। वह वीस बरसकी हुअी तो क्या हुआ, मेरी हथेली ही में समा जायगी ! तेरे भाअीने कभी सारे जनम में इतना लाड किया है ?"

"सच कहू क्या—" मालती भावनाके आवेशमें अेकदम बोल बैठी, "मेरा अेक अिकलौता अैसाही प्रेमी भाअी था—"

"क्या मतलब ?" दोलकाष्ठने बीचहीमें टोक कर कहा, "था के क्या मानी ? तब यह कटक कौन लगता है तेरा ?"

मालती यह प्रश्न सुनते ही अितनी चकरा गयी कि चेहरा अेकदम फक्क पड गया। पर अितने में कटक ही अुधर आता दिखाअी दिया। वह विषय स्वभावत ही बद पड गया।

"वह देख कटक ! नाम लेतेही चला आया ! सौ बरसकी अुम्र है तेरी !" हसते हसते दौडकर वह कटकसे लिपट गयी।

"शाबास, दोलकाष्ठ, शाबास ! भले मानस, मैंने तुझे अिधर भेजा कटकीको बुला लाने के लिअे, सो तू यहा आकर गप्पे ही छाँटने लगा ! सूतक समाप्ति के सस्कार के लिअे वे सारे जावरे चल पडे न अुधर ! राजा नानकोबी हमारी ही राह देख रहा है। चलो, चलो, झटपट !"

"कटकबाबू, मैं जो ताजा शहद लाया हू, अुसे खाये बगैर यहासे आगे अेक कदम नही रखना। कटकी, वह शहद ले आ !"

दोलकाष्ठके आग्रहको सिर माथे करके मालती शहद ले आयी, हरे हरे पत्तोपर अुस शख के सुदर गगासागर से वह शहद परोसा गया और अुस मधुर आरण्यक प्रातराशके समाप्त होतेही वे तीनो जावरोकी अुस खोहकी ओर चले गये।

जावरोकी पद्धतिके अनुसार तीन मास का सूतक आज समाप्त होनेवाला था। अपने अुस मृतक व्यक्तिके और्ध्वदेहिक के अतिम सस्कारके लिअे वे सारे जावरे शरीर तथा सिरपर भूरी मिट्टी मलकर जोरजोरसे अेकही स्वरपर और तालपर रोते हुअे, अुस वृक्षकी ओर अेकत्र होकर चले जिसपर अुस मृतकके शव को अुन्होने बैठा ले रखा था। अुस प्रचड वृक्षके आते ही वे रुक गये। तत्पश्चात् दोलकाष्ठने अुस अूची खोखलमें से अुस मुर्दे की गठरी को नीचे अुतारा। बरसात, हवा, धूप, और गीध–अिन सबके अेकत्रित कार्रवाअीसे अुस मुर्देकी शरीर का मासभाग अुन तीन महीनो मे नास्तिप्राय तो हो ही गया था। हड्डियोका ढाचा ही बच रहा था। अुसे मध्यमें रखकर जावरोंके अेक मुखियाने अुसकी गर्दन मरोडकर तोड डाली। खोपडी समेत वह सिरका ढाचा अुसने हाथमें अुठा लिया। अुस मृतक की विधवा आगे आअी। अुसके फैलाये हुअे हाथो में मुडीको फेंकते हुअे अुस मुखियाने कहा,

"यह हिस्सा तेरा!"

अुस विधवाने अुस मुडी को धोकर, पोछकर, घिसकर, अुसमें छेद करके, धागा पिरोकर सबके सामने अुसे गलेमें बाध लिया और पीठपर लटका लिया। अपने यहा विधवाके चिन्ह हैं, केशवपन, काषायवस्त्र अग्रेजो में विधवा का चिन्ह है, अेक काला प्रावरण जो सिर परसे आचलकी भाति लेकर पीठपर छोडा जाता है। अुसी प्रकार जावरोकी विधवाअें जबतक विधवा रहती हैं, तबतक अपने मृत पतिकी मुडी गलेमें बाधकर पीठपर लटकाये रहती है। पुनर्विवाह किया तो अपर पति ही अुसे अुसके गले से निकाल सकता है।

अुस विधवाको सिरका ढाचा दे चुकने के पश्चात् अुस मृतक के अेक अेक जोडोको तोडफोडकर हड्डी हड्डी अलग कर डाली गअी अुनमे से कुछ हड्डियाँ मृतकोंके बच्चोमें तकसीम की गयी। किन्हीं खास सबधियोमें तकसीम की गअी। बची हुअी सारी हड्डियोको चेटकीने अपने सामने रखकर, चुनाव करके अतमें अुसके तीन भाग कर डाले। अेक अरण्यभूत के प्रत्यौषध के रूपमें, अेक अग्नि के और अेक समुद्रके। जिसको जिस भूत का प्रत्यौषध चाहिये, अुसने अुस ढेरकी हड्डी अुठाअी। मृतकोंकी अिन हड्डियोंके नाना-

विघ भूषण, हार, ताबीत वगैरे बनाकर जावरे स्त्री–पुरुष गले में अथवा शरीरपर पहनाते है। अुसके योगसे तत्तत् रोगो तथा भूतोसे अुनका वचाव होता है, अैसी अुनकी श्रद्धा होती है।

अुसमें भी मृत जावरा यदि कोअी प्रतिष्ठित और वडा आदमी रहा तो अुसकी अेकाध हड्डी को अुपयोगमें लाने का अधिकार मिल जाय तो अुसे अेक सम्मान की वस्तु समझा जाता है। अैसे मृतो की हड्डियाँ स्नेहियों तथा अभ्यागतो को अुपहार के रूपमें भी दी जाती है।

दोलकाष्ठ राजा नानकोवीका वडा ही प्रिय मित्र तथा सहाय्यक था। अुसके लिअे सम्मान की वस्तु के तौरपर समुद्रीय भूतके प्रत्यौषध रूप हड्डियोमेंसे अेक अच्छासा छोटासा अस्थिखड अुठाकर राजा नानकोवीने दोलकाष्ठको दिया। तथा सकेतो अेव शव्दोद्वारा कहा कि "अव तुम्हें समुद्रकी भीति नही। तुम्हें अपने देश में वह सुरक्षित रूपमें तरा ले जायगा।"

दोलकाष्ठके मन पर भी अुस भयानक मुर्दे के मस्तक, धड, हड्डियाँ जोड आदि के कडकडाहट के साथ तोडने फोडने की अुस सारी क्रिया का अेक विशेष प्रकार का गभीर प्रभाव सा पड ही रहा था। अुसमें भी अुस चेटकीने जावरो की भाषा के त्रुटित शव्दो में अुसे सकेत किया,

"अिधर! जुरुविन! अस्थिखड! मत्र!" अर्थात् जुरुविन नामक समुद्रीय भूत के लिअे यह मत्र मैं तुझे वताती हू। अुसे वोलकर ही अुस अस्थिखड को गले में वाधना चाहिये।

वे जावरा स्त्रियाँ ठिगनी थी। दोलकाष्ठ के कमर तक ही पहुँच पाती थीं। अेतावता, चेटकी के मुँह तक अपना कान ले जाने के लिअे अुसे नीचे वैठना पडा। तत्पश्चात् अुस चेटकीने अेक विचित्र मुखमुद्रा वनायी, अिस तरह अिशारे किये मानो अुस के शरीर में कोअी भूत सचरित हो गया हो तथा अुस के कान में फूक मारी। अेक निरर्थक से अक्षर का अुस के कान में अनेक वार अुच्चारण किया, जिस तरह हमारे यहा मान्त्रिक लोग न्होम्' न्हुम, न्होम् आदि अर्थशून्य अेकाक्षर का अुच्चारण किया करते है। जावरो के वातावरण में रहते रहते जावरी वनते चले आनेवाले दोलकाष्ठ के

भोले मन का अुन मत्रोपर तथा अस्थिखड के प्रत्यौषध पर पूर्ण विश्वास रहा करता था।

सूतक के समाप्त होते ही जावरोने अपनी अपनी अभिरुचि के अनुसार मगल शृगार करने शुरु कर दिये। अुन्होने शरीरपर भरी हुअी भूरी मिट्टी धो डाली। पुरुषोने लाल, पीले, भगवे, सफेद मिट्टी के पट्टे अपने शरीर पर टेढे मेढे खींचे। सुवासिनी स्त्रियोने अपने सिरो के बालोंके खूटे साफ करवा कर खोपडियो को चिकनी चुपडी बनाने की अिच्छा से अपने अपने प्रेमियो अथवा सखियो के हाथो, धारदार काच के टुकडो द्वारा अपनी हजामत करवा ली। अेक दूसरे की चोटी गूथती हुअी जिस तरह अपने अिधर की सुहागिन स्त्रियाँ उत्सव आदि के समय कायव्यग्र सी रहती है, अुसी प्रकार वे जावरो की विवस्त्र सुहागिनें और कुमारिकाअें बडे प्रेम से दूसरे की खोपडियोकी चिकनी चिकनी हजामत करती हुअी अपना शृगार सपन्न करते हँसती खिलखिलाती बैठी रही। अुस के पश्चात् मूगोकी, अथवा रगीन सीपियोंकी अथवा मृतकोकी हड्डियोकी मालाअें अुन्होने अपने गले में पहनी। अिस प्रकार शृगार क्रिया के सपन्न हो चुकने पर, सूतक के कारण गत तीन महिनो अुन की जो नृत्यलिप्सा सचित होती चली आअी थी, अुसकी पूर्ति करने के ख्याल से सूतक समाप्ति का जो सार्वजनिक नृत्य आज सिधु तटपर होनेवाला था अुधर सारे नग्नकाय आबालवृद्ध स्त्रीपुरुष मिल जूलकर जाने लगे। और इधर, 'अच्छा, अभी थोडी देर में हम भी आते हैं नाच में शरीक होने के लिअे।' अिस प्रकार राजा नानकोबी से कह कर कटक कटकी दोलकाष्ठ सहित अपनी गुहा की ओर चले।

गुहा के समीप जाकर वहा के शिलातक्त पर वे तीनो बैठे। कटकी कुछ फल, कच्चे नारियल, शहद और भुना हुआ मास ले आयी। भूख तो लग ही रही थी। सबने अुस वन्य भोजन को अत्यत रसास्वादन पूर्वक खाया।

"बस! अब अिन वन्य मिष्ठान्नोंके खाने के और दो दिन ही बाकी रह गये। परसो से वनभोजन समझ कर के समुद्र भोजन का आरभ करना होगा।" दोलकाष्ठ कटक की पीठपर थपकी देकर आश्वासन देने लगा।

"और परमेश्वर की अनुकपा रही तो अगले महीने की अिसी तारीख को हमारा अपने घर में, अपने देश में प्रिय जनो के मध्य हँसते खेलते प्रिय भोजन चल रहा होगा !" कटकने कटकी को पीठ पर स्नेहभरी थपकी मारी।

"परमेश्वर की अनुकपा रही तो, अैसा क्यो कहता है अब ?" दोलकाष्ठने अत्यत अुल्लसित वृत्ति से कटक को बीचही में टोक दिया, "परमेश्वर की अनुकपा भी हो ही गयी है न आज! कटकबाबू, में नाव अच्छी तय्यार की है, पुलिस के कपडे, बदूक, गोला बारूद भी हमने तय्यार रख लिया है। जावरोके प्रवीण नाविको की डुगियाँ दूरतक साथ आनेवाली हैं। नाव में मास, मधु, फल, मद्य, भरपूर अन्न जल सगृहीत कर के रखा है। मछलियाँ पकडने के लिअे जाले ले लिये हैं। देश पहुँचते ही जो धन सग्रह चाहिये सो वह भी हमने अेकत्र कर ही लिया है। लाडली कटकी, जो जो पुरुष प्रयत्न साध्य वस्तु थी वह वह हमने जुटा ली। पर यह नटखट समुद्र है, जिसे योही कालापानी नही कहा जाता। अुस कालके मुँह में सीधी सादी हवा से चलनेवाली नाव ढकेल कर जाना है, अुस में सफलता तो दैव ही के अधीन रहेगी, परमेश्वर की कृपा अपेक्षित है, अिस कल्पना से मेरी छाती सदा धडकती रहती थी। पर आज समुद्र के अुस 'जुरुविन' नामक भूत पर प्रतिबधक का काम करने वाला वह मत्र और यह प्रत्यौषध जब मुझे अुस चेटकीने दिया, तब मुझे सचमुच बहुत सतोष हुआ! दैवी कृपा को यह देख वह लिखित वचन चिठ्ठी!" अैसा कहते हुअे दोलकाष्ठने अुस मृत जावरे का चेटकी द्वारा प्रदत्त अुगली की पोर जितना मत्रित अस्थिखड निकाल कर गभीरता पूर्वक कटक के सामने रख दिया।

"छी! दोलकाष्ठ! कितना आरण्यक हो गया है तेरा मन भी! बुद्धू है क्या तू भी!" कटकने अुपहास किया।

"क्या कहा? बुद्धू? जगली? कटक, अिन जगली जावरो में ही नहीं अपितु अपने आर्यों में भी मृतो की अस्थियो में दैवीय गुणो की सत्ता को स्वीकार करनेवाले ढेर के ढेर भरे पडे हैं! किन्ही ब्राह्मणादिक जातियो में मृतो की

खोपडी का चूर्ण खीर में मिश्रित कर के श्राद्ध के दिन पितरस्थानीय पुरुषो को तथा यजमानको खाना चाहिये अैसा शास्त्रीय विधान नही था क्या ? वृद्धादिक व्यक्तियो के दत, अस्थि, प्रभृति अवशेषो का कितना स्तोम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रादिक पथियो में रचाया जाता है, मालूम नहीं ? क्रिश्चियन, मुसलमानादिको की तो वात ही मत कर। मृतको की अस्थियो पर ही अुनकी कब्रें बनाअी जाती हे और कब्रो के भीतर की हड्डियो ही की सुरक्षा के लिअे जीवित व्यक्तियो की हड्डियाँ कब्र में गाडने की वारी आने तक दगे लडाई झगडे करने में कोअी कम नही करते! मृतो की अस्थिका का महत्त्ववाद अेव अुसमें निवसनेवाले मान्त्रिक गुणो पर विश्वास की भावना जावरो ही में केवल नही — सारे जगभर में है। तव वेचारे जावरो ही को जगली क्यो कहता है? कहना हो तो सारे जगको जगली कह। खैर, मेरा अिम मन्त्रित अस्थिपर पूर्ण विश्वास वैठ गया है। जिस के गले में यह चेटकी प्रदत्त समन्त्र ताअीत बाधा जायगा अुसे अुस 'जुरुविन' का— सामुद्रिक भूत का — भय नही रहेगा, वह समुद्रमें कभी भी नही डूबेगा। समुद्रप्रवाह में वह सुरक्षित रूपसे पर तीर को जाकर पहुचेगा ही यह अुस चेटकी का आश्वासन असत्य ह यह कहने का अधिकार, अुसका परीक्षा करके देखे वगैर, तुझे भी तो नही है? अनुभव होने से पूर्वही किसी वस्तुको आग्रहपूर्वक असत्य वतलाना भी तो अेक प्रकार पागलपन ही है न ? और वह भी अुतनाही परित्यक्यव्य है जितना कि अुसे आग्रहपूर्वक सत्य वतलाना!"

"अच्छा भाअी, वैसाही सही! वाध ले वह हड्डियो का ताअीत तू समन्त्रक अपने गले में! न सही नावसे, अुस ताअीत ही से सही, किसी प्रकार सुरक्षित रूपसे समुद्रपार के अपने देश पहुँच जाय तो वस!"

" मुझे अपने जीवन के लिअे अपने गले में नही वाधना है। मेरी जो लाडली है न कटकी, तेरी वहन और मेरी प्रियतमा। —वह यदि सुरक्षित और सुखी रही तो वस हम भी सुरक्षित और सुखी रहेगे। अतअेव यह ताअीत मुझे अुसीके गले में वाधना है और मुझे दीक्षा देते समय चेटकी ने जिस मन्त्रका अुपदेश दिया था अुसी का मैं भी अुसके कान में अुपदेश देनेवाला हू। यह ताअीत जब तक तेरे गले में बना रहेगा न तब तक मेरी लाडली, तेरे प्राणो के लिअे समुद्र में कोअी खतरा नहीं। हमारी नाव रास्ते में यदि टूट फूट

भी गयी तो भी केवल लहरो पर वहाकर, स्वत समुद्रदेव ही तुझे पर तीर तक पहुँचा देगा। चल आ अिधर अुस आचल को थोडासा नीचेकी ओर सरका ले।"

दोलकाष्ठ सकोच शून्य प्रेमभावसे कटकी के कधेपर हाथ रखकर अुसके अधूरे किंतु शान के साथ कसकर वाघे हुअे आँचल को ढीला कर के नीचे की ओर सरकाने लगा।

अुसकी अिस छेडछाड में अुपद्रवकारी लपट वृत्ति नही थी। कुछ पागलपन, थोडा मर्यादाशून्य अुज्जडपन ही था। जिस वातचीत में कपट नही रहता है अैसे अुसके प्रेमको देखकर कटकी को दोलकाष्ठ पर गुस्सा नही आता या प्रत्युत् सहानुभूति और करुणा ही प्रतीत होने लगी थी। किंतु वह अिस वात को समझती थी कि यदि वह अिसके आतुर प्रणय को अनिर्बंध रूपसे वढने दे तो देश में पहुँचने पर अुसके प्रणय अेवच विवाह विषयक आग्रहका अनादर करने के लिअे कोअी मार्ग नही रह जायगा। पुनश्च अुसे सशय में न रखकर यदि वह वाणी से तथा अपने व्यवहार से यह पक्का जतला दे कि वह अुसका पति रूपमें वरण करेगी तो देश पहुँचने के वाद अुससे विवाह करने से अिनकार करने पर दोलकाष्ठके मन में विश्वासघातकी जानकारी के कारण भयकर वैरबुद्धि के जाग अुठने की भी सभावना है, इस वात का डरही कटकी को आजकल लगने लग गया था।

अुसने अुसको पीठ थपथपाकर कधेपर जो हाथ रखा था अुसमें कामवासना नही थी प्रत्युत अेक प्रकार की वत्सलवृत्ति ही अधिक थी, यह कटकी जान भी गअी थी। अुसकी तादृश छेडछाड किसी स्नेही वडे, भाअी की छेडछाड की भाति अुसे आनददायक भी प्रतीत हो रही थी। तथापि अुपरिनिर्दिष्ट भीती के कारण ही अुसने दोलकाष्ठ के हाथ को थोडा सा परे करते हुअे और आँचलको अपने कमर में फिर खोसते हुअ कृतककोप पूर्णस्वर में कहा,

" ताअीत ही वाधना है न, तो वह मेरा कटक भअिया वाध देगा, तुम्हारी कोअी आवश्यकता नही है वेकार की छेडछाड करने के लिअे।"

कटकी की अुस भर्त्सनासे दोलकाष्ठ के प्रणयी मन को अैसी गहरी

चोट पहुँची कि अुसकी आँखोंसे आसू ही टपक पडे—साथ ही शब्दो में से क्रोध भी! वह कटकी के पास से दूर हटकर खडा हो गया। अुस अपमानको मजाक रूपमें न लेकर अुसने कटकीसे अत्यत विव्हल से स्वर में कहा,

" कटकी, अभीतक तू मुझे पराया ही समझती है न! तेरे स्वयवर का अेक पण समझकर ही अिस टटपूजी नाव को समुद्र में डालकर तुम्हे अिस कालेपानी से अुस पार पहुँचाने के लिअे अपनी जान की बाजी मे लडा रहा हू यह तुझे मालूम नही ? किंतु तेरे मन में मेरे सबध में अबभी अितना परभाव हो तो जबर्दस्ती तेरे सामने नाचते हुअे, तुझे तकलीफ पहुँचाते हुअे अपनी पगडी अुछलवानेवाला आदमी कम अज कम यह दोलकाष्ठ तो नही है। तू अगर आजतक मुझ से आगे चलकर विवाह करने की बाते बनाकर मुझे अुल्लू ही बनाती आअी हो तो वह तेरे लिअे कोअी शोभाजनक बात नही है। अुसका परिणाम——"

कटकने दोलकाष्ठ को आज तक अितने गभीर अेव विषादपूर्ण स्वर में बोलते हुअे नही देखा था। अत दोलकाष्ठ का अैसा बिगडा हुआ राग-रग देखते ही कटक सहमसा गया। स्वदेश पहुँचने के अनतर कटकी के अनुपलाभ से अुत्पन्न होनेवाले वैरभाव का सूत्रपात यही तो नही हो जायगा, जिन बदूको और गोलाबारूद को हमने अपने सरक्षण के लिअे जुटाया था अुनको अब अेक दूसरे पर आक्रमण करने के लिअे अुपयोग में लाने का प्रसग तो नही आ जायगा। आज या कल अिसी मालतीके कारण दोलकाष्ठ अेक नये रफिअुद्दीन का रूप धारण कर के अपनी तथा मालती की जान लेने पर तो अुतारू नहीं हो जायगा, अैसी भयप्रद शकाओ के आते ही कटक का सिर चक्कर खा गया। पर अिस समय अुसके सामने यही अेक मार्ग बच रहा था कि जहाँ तक हो सके अिस अनिष्ट प्रसग को कलपर टालता चला जाय, और जहाँतक निभ सके दोलकाष्ठ से निभाता चला जाय। वह यह अब भी अच्छी तरह समझता था कि, दोलकाष्ठ सौजन्य से अेकदम हाथ धोकर बैठ जानेवाला व्यक्ति नही है। अत दोलकाष्ठ के आगे के कोप परिपूर्ण उद्गारो के व्यक्त होने से पूर्व ही अुसे ठडा करने के विचार से अत्यत नरमाअीसे बोलने लगा।

"कैसा परिणाम, मेरे मित्र? अैसे स्त्री-सुलभ सकोच को देखकर

गुस्सा आना चाहिये ? या आनद प्रतीत होना चाहिये? प्रेयसीकी अनुरजना कैसे करना चाहिये, यह अुन जगली जावरो को जितना मालूम है अुतना भी तुझे मालूम नही अैसा प्रतीत होता है, बाध वह ताअीत तू ही कटकी के गले में! मैं अुसका वडा भाअी हू। मेरा कोअी अधिकार नही है क्या अुस-पर? अिस लिअे यह चतुर लडकी जब तक भाअीके नाते मै अुसे आज्ञा न दूं तब तक अूपरी तौरपर अस्वीकार जतलाती रही ? ह वहन वाधने दे दोलकाष्ठ को अपने गले में ताअीत !"

"गुस्से में आगये अुतने ही में! बिलकुल पगले हो तुम!" कटकी ने समय सूचकता प्रदर्शित करते हुअे अेक आकर्षक मुस्कराहट के साथ दोलकाष्ठ की अुगली पकडकर खीच ली। अुस अुगली पकडकर खीचते ही परवश हाथीकी भाति वह दोल्काष्ठ झट से अुस के समीप खिचा चला आया और पुन: प्रसन्न वृत्तिसे अुससे कहने लगा,

" तू ही हटा ले वह आचल नीचे की ओर, हा, बस है अुतना। गेले में ताअीत तो बाधने को आना चाहिये न! पर अुसके पहले तेरे कान में मुझे मत्र पढना पडेगा। पढू न ? तेरे कान के समीप अपना मुंह ला सकता हू ? हा, नही तो फिर मर्यादा का भग हो जायगा और तू फिर फुफकार अुठेगी!" दोलकाष्ठ अब पूरी तरह प्रणयरस में मग्न हुआ हुआ था। ठीक कान के समीप अपना मुंह ले जाकर अेक हाथ अुसके गले के चारों ओर कधे पर रखकर अुसने अुसको अपने नजदीक कर लिया और चेटकीका वह अर्थहीन अक्षरोवाला मत्र तीन वार अुसके कान में पढा।

कटकी से सटकर अुस तरह खडा रहना दोलकाष्ठ को अितना प्रिय प्रतीत हो रहा था कि यदि सौ वार भी अुस मत्रका पाठ करते हुअे अुसे वहा खडा रहना पडता तो भी अुसे कोअी कष्ट न होता। पर कटकी कही फिर अुखड खडी न हो अिस भयसे अुसने जितना आंचल अुतर चुका था अुतना ही अुतारकर, वेहूदगी न नजर आये अिस विचारसे तीन वार मत्र की दीक्षा देनी आवश्यक थी, अुतनी जब दी जा चुकी तब अिस विधि को समाप्त करके दोलकाष्ठ हाथ में पड़े ताअीत को ठीक करता हुआ दूर हट गया।

" जल्दी ही खत्म कर दिया " कटकी धूर्तता पूर्वक हंस पडी। पर अिन शरारती गुलाबी काटो की खरोच का ज्ञान हो अितनी होश अुस आनद प्रवाह में वहनेवाले दोलकाष्ठ को कहा से रह सकती थी? अुसने सरल भावसे अुत्तर दिया,

" वाह, खत्म कहा हुआ! अव यह तावीत वाधना है न तेरे गले में! अैसे! हा, सामने हो अिस तरहसे! गले को ठीक से अूपर अुठा। गिरने दे अुस आचल को! वार वार अुसको ठीक करने के लिअे हाथ क्यो लाती है वीचमें!—हां, यो! तनकर खडी रह, समझी!"

अुसके सामने विलकुल समीप खडे होकर अुसने वह ताबीत अुस की वक्षस्थल पर ठीकसे लटकता रहे अिस अदाजसे वाधना शुरू किया।

अितने में अुसके वक्ष स्थल पर और गले के मध्यभाग में कुछ लाल लाल से चिन्ह अुसे दिखाअी दिये।

" यह क्या? ये लाल लाल खरोचे कैसी है तेरे गले के नीचे? शिकार के समय कही काटो वाटो में तो नही गिर पडी थी न?" अिस प्रकार वह अुससे पूछ ही रहा था कि, अुतने ही में अुसे मालूम पडा कि, ये खरोंचे नही है वल्कि लाल रगसे वेलवूटे, तथा कुछ अक्षर गोंदे गये है, अैसा अुसे दिखाअी दिया। क्षणार्ध में अुसने वे अक्षर पढ डाले—" मालाती"

" क्या? मा—ला—ती—? मालती?"

ज्यो ही अुसने ये शब्द जोरसे पढे, त्योंही दोलकाष्ठ की आकृति की सारी रेखाअें ही वदल गयी! अुसके शरीरपर रोमाच खडे हो गये!

घनीभूत अचेतावस्था में से धीरे धीरे चेतना में आनेवाले मनुष्य की भाति वह कटकी को निर्निमेष दृष्टि से निहारने लगा। क्षणार्ध ही में अुसने अत्यत स्निग्ध किंतु अत्यत विस्मयपूर्ण स्वरमें कटकी से पूछा,

" सच वता, सौगध है तेरी लाडली मा की! यही तेरा सच्चा नाम है न? तू मालती ही है न? किसने गोदा था यह नाम तेरे वक्ष स्थल पर?"

कटकी को जव मालूम पडा कि, अुसका असली नाम अिस प्रकार अचानक दोलकाष्ठ को मालूम पड गया है तव वह थोडीसी सहम गयी

तो भी किसी प्रकारकी हानिकी कोओी सभावना दृष्टिगत न होने के कारण और अिस कारण भी कि दोलकाष्ठने अत्यत स्नेहाकुल स्वर में अुसकी अपनी ही मा की सौगध खिलाओी थी, अत अुस अपनी मा की स्मृति के ताजा होते ही थोडी सी भावमूर्च्छित सी हो कर अपने आपको संभालते हुअे बोलने का प्रयत्न करने पर भी बोल वही गयी जो सत्य वस्तु थी।

" वह जो नाम है न, वह मेरा बचपन का प्यार का नाम है। मेरे बडे भय्याने प्रेम में आकर अिस प्रकार लाल रगसे मेरे शरीरपर गोदा था अेक दफा! पर मेरा मूल का नाम तो कटकी ही है।"

' नही! मालती, तू मालती ही है। यह देख, अुस नाम के चारो ओर कढे हुअे बेलबूटे, वह देख अुस नाम को गोदते गोदते मेरे हाथसे भूलसे ' ल ' को लगी हुओी ' आ ' की काना! वह गलत रूप ' मालाती! ' —सब गलत! सब असभव! पर वह सब क्यों! " गद्‌गद् स्वर से मालतीको नखशिखात तक निहारता हुआ दोलकाष्ठ बोला, " यह देख, यह तेरी प्रत्यक्ष मूर्ति! ये बाल, यह माथे से लेकर पैरो तक की गात्र-रचना। मेरी बेसुधी के धुम्रवलय में छिपी हुओी तेरी आकृति, मेरे होश मे आते ही अुस धुम्रवलय के तिरोहित होते ही किस प्रकार नखशिखात तक मेरी मालती के रूपमें प्रकट हो गयी है! कटक बाबू, आप कोओी भी क्यों न हो, पर यह आपकी धर्म की बहन कटकी मेरी सगी बहन मालती है!! सत्य कहिये, यह सारा किस्सा क्या है! मैं अब आपका ही हू, मुझसे डरिये नही!"

कटक के अिस अत्यत अप्रत्याशित वाक्य के सुनते ही कटक को बिजली का शॉक ही बैठा! बहुत बरसो पहले मालती का बडा भाओी सजा पाकर कालेपानी गया था, यह अुसे तत्काल स्मृत हो आया। परतु यदि दोलकाष्ठ मालती का सच्चा भाओी ही है तब तो अुसके मार्ग की अेक और बडी बाधा अपने आपही अपसारित हो गयी। दोलकाष्ठ के मनमें अब मालती के विषय में न तो कोओी विषयलालसा निर्माण होगी और नही तज्जन्य वैर भावना के ही अुत्पन्न होने का कोओी भय रह जायगा। यह सब प्रत्युत्पन्न रीत्या अुसके ध्यानमें आ गया और वह दोलकाष्ठ से बोला,

" मित्र, जो सत्यवार्ता है, वही मै तुझे सुनाअूगा, पर! पर!—थोडा

ठहर, अिस मेरी मालती का नाम गोदनेवाला जो अिसका बडा भाअी था, वह आगे चलकर अेक लडाअी पर गया और वहा अुसके सिरपर अेक चोट आ गयी। अुस चोट की अेक निशानी अुस के माथे पर वनी हुअी है, अैसा हमें अच्छी तरह पता चला था। वैसी कोअी निशानी तेरे सिर पर-"

कटक अपना वाक्य अभी पूराभी नही कर पाया था कि, दोलकाष्ठने अपने माथे पर आये हुअे वालो के गुच्छे को दोनो हाथो से हटाकर अपने माथे को कटक के सामने कर दिया । दो अगुल चौडे घाव की निशानी स्पष्ट रूप से अुसके माथेपर दिखाअी देती थी। निशानी मिल गयी !

कटकने अपनी अव तक की सारी कथा कह सुनाअी। अुस का नाम जव किशन था तथा अुस लडकी का नाम मालती था अुस समय वे किस प्रकार के सकट में जा पडे और किस तरह अुन्हें कटक और कटकी ये वनावटी नाम रख लेने पडे यह तथा अन्य सारा वृत्तात कह दिया !

कटक वोला, " तुम्हारे लडके के सिरपर लडाअी में अेक चोट आयी होगी अैसा मुझे अतर्ज्ञान द्वारा दीख रहा है," कह कर अुस अधम कितवने, अुस रफिअुद्दीनने साधु के भेस में जव कहा, तभी मालती की माता की अुस पर श्रद्धा वैठी। अिस सकट के चक्र में पडने के लिअे अेक दृष्टि से जो मूल कारण वनी, वही यह तेरी चोट की निशानी आज तुम भाअीवहनों के पुनर्मिलन का भी कारण वनी ! मालती को सकट से मुक्त करने का साधन वनी ! अुसी प्रकार अुस अधम कितवको तेरे ही हाथो प्राणदड भोगना पडा और अिस प्रकार अविज्ञात रूप से मालती के भाअीने मालती के अवमान का वदला चुकाया, यह योगायोग जितना ही आल्हाददायक है, अुतना ही आश्चर्यकारक भी है !"

" अरे, क्या कहता है !" वह गुस्सेवाज दोलकाष्ठ तनकर खडा हो गया और अपना जवर्दस्त वाहू हवा में फेंक कर, दातओठ चवाता हुआ मुठ्ठी तानता हुआ वोला, " अुस अद्दीन को तो मैंने अपना वदला समझ कर मारा है। मेरी वहन का वदला लेने के लिअे अुस का गला अेक वार और अिस तरह घोट कर अेक वार फिर अुसे अिस तरह जान से मारना चाहिये !" क्रोध के आवेश में हवा का ही गला दोलकाष्ठने कसकर दवाया।

"रहने दे भय्या,अव अुस गुस्से को !" अपने भाअी की तथा वचपन से लेकर अवतक के सारे सुखदुःखो की स्मृति से अुस के नेत्र भर आये थे। अुसने अपने भाअी का हाथ पकड कर धीमेसे नीचे की ओर खीचा और अपने हाथ से अुसे दवाती हुअी लाडभरे कठसे अुसके क्रोध को शात करने लगी।

" मालू, बहन !--मेरे हाथो तेरा कुछ भी तो कल्याण नही हुआ। तेरे लिअे मुझ भाअी का रहना और न रहना समान ही रहा न ! तेरे मन के अनुकूल--"

"भय्या, अव तू मुझसे मिल गया है न ? अिसी में मेरा सव कुछ मनोऽनुकूल हो गया है ! अव अगर कुछ और होना वाकी रहा है तो वह अपनी मा की मुलाकात ! भय्या, मुझे अेक वार अपने पेट में छिपा ले न?"

" मालू ! वहन !" अपने गले से लिपटी हुअी अुस अपनी वहन को सहलाता हुआ, अुस के वालो के अूपर से हाथ फेरता हुआ मिलन की अुस मधुर अचेतावस्था में वह बीचवीचमें यो ही पुकार अुठता, "मालू!" "मेरी वहन !" और वह भी लाडभरे कठ से अुत्तर देती-" अू !" "हा !" "भय्या !"

क्षणभर वाद मालती की भुजाओ को छुडाकर अुस का वह भाअी किशन की ओर मुडा,

"किशन, मेरी वहन को अनेक सकटो में से तूने वचाया है। तेरे मुझपर अनत अुपकार हे ! पर देख, मेरे भी तुझपर कुछ कम अुपकार नही हे, समझे! तूने मेरी वहन मुझे वापस दी, मै भी यह ले, तेरी प्रेयसी तुझे वापिस देता हू ! अपने आशिर्वाद के दहेज के साथ अिस अपनी भगिनी का मैं यथाशास्त्र कन्यादान कर रहा हू !"

"विवाह के पश्चात् न ?" किशन हसा।

तत्पश्चात् अुस निश्चित किये हुअे दिन अुन बेचारे आतिथ्यशील जावरोने वडे साजवाज से अुन तीनो को विदा दी। जिस समय किशन, मालती और अुस का भय्या (दोलकाष्ठ को अव सव लोग 'वड भय्या' कहने लगे थे।) अुस नावमें वैठे, चांदनी रात के समय चुपचाप तट का परित्याग किया, अुस समय समुद्र के भूत को 'जुरुविन' को प्रसन्न करने

के लिअे जावरोने नानाविध चेटक कृत्य किये । और दो तीन डुगियो को साथ ले जावरो में से कुछ प्रवीण नाविक किशन की अुस नाव को खाडियो खाडियो में से, अृजु–वक्र मार्गो से होते हुअे, अग्रेजो के पहरे के स्थानो से वचाकर कालेपानी के भरे समुद्र में अुन्हें पहुँचा आये ।

कालेपानी के भरे समुद्र में !—वह केवल वाताश्रित तरी ! रात के अधकार में तो चारो दिशाओ में साक्षात काल ही अपनी जभा खोले खडा रहता ! अितने भयानक ! अितने घातक ! अितने सुनसान, अितना असहाय साहस कृत्य वह ! मध्यरात्र कालेकुट्ट करोखे में वह अशाख विस्तीर्णय समुद्र जव गरजता तव अैसा प्रतीत होता मानो मृत्यु ही खर्राटे भर रही हो ! पर आजन्म कारावास के वधनो में सडते रहने की अपेक्षा यह साहस–यह मृत्युका आलिगन — ये महाकाल के भुजपाश — सचमुच अिसमें कितना अधिक सुख है ।

कालेपानी के समुद्र में वह नाव भी अनाटक गति से चली जा रही थी । हवा अनकूल थी । पाल का पेट भी भरभर कर खव फूल गया था । वारी वारी से वे तीनो निरतर चप्पू चलाते जाते थे । मालती भी चप्पू चलाने की अपनी वारी में अपनी शक्तिभर चप्पू मारती थी ।

आसमान में कभी वादल छा जाते, अधेराही अधेरा हो जाता, कभी धूप चिलचिला अुठनी, दिशाअें हसने लग जाती । समुद्रभी कभी अुफनाता हुआ क्रोधी दिखाअी पडता कभी टलमल टलमल लघु लघु तरगे अुठाता हुआ सरोवर ही की भाति प्रसन्न दीखने लगता । थोडा सा कहीं खटका हुआ कि तीनो के मुखोपर मन में छिपाये हुअे भयकी कृष्णच्छाया अेकदम फैल जाती ? फिरसे अुसे दवाकर छिपाकर वे अेक दूसरेको धैर्य देते, हसते, चप्पू चलाते हुअे गाया भी करते ।

अनुकूल हवा अुनके पालमे भरी हुअी थी । पर अुसीके आधारपर कुछ वह तरी निष्कटक रूपसे नही जा रही थी । आजन्म कारावास के पद–वधनोको तोडकर हम कालेपानीसे भागे जा रहे है, अिस कल्पना के आनद का पवन जो अुनके हृदयके पालमें भरा हुआ था, मुख्यत अुसीके आधारपर वह तरी अिस तरह वेलगाम चली जा रही थी ।

मनुष्यकी आशा–निराशा, पाप–पुण्य, न्याय–अन्याय, साध्य–असाध्य

आदि की कसौटीपर जगकी गतिविधियोको कुछ पारख कर देखते नही बनता। अुस विचारकी कोअी खास गिनती भी नही की जाती। अपने को जो वस्तु सभव प्रतीत होती है वह अकस्मात् असभव हो जाती है। और जो असभव प्रतीत होती है वही कभी कभी अकस्मात् सभव हो जाती है। अिसी को हम योगायोग कहते है। निश्चियसे अुन गतिविधियो का हमारी अिच्छा और हमारे तर्कके अनुरोधसे कुछ भी खुलासा नही हो पाता अैसा हम माना करते है।

सर्वथा राजमहलोमें सैकडो दासदासियो द्वारा लालित पालित होते समय अथवा प्रत्यक्ष राजारानी द्वारा गोदी में लेकर खिलाये जाते समय मनौती के आयास से प्राप्त हुआ हुआ राजकीय पिडवाला बच्चा अूचे प्रासाद परसे, रानीकी अथवा राजाकी गोदमेंसे फिसल कर नीचे फरश पर गिर पडता है और चकनाचूर हो जाता है। श्रीमत रघुनाथराव पेशवे का अेक अपत्य कहते है, जब वे अुसे हाथ में खिला रहे थे, अुस समय नीचे गिरकर चिथ गया था। अिसके विपरीत क्वेटा किंवा विहार में हुअे भीषण भूकप के धक्के के समकाल जब नगरके नगर ढहकर जमीन में विला गये, अुस समय चार चार मजिल के बडे बडे भवन धडाम से विदीर्ण भूमिके अुदरमें राशि रूप होकर गिर पडे। मनुष्य, मावाप, बच्चे दबकर लुगदी बनकर पत्थरो की राशिमें चूने और गारेकी तर चिन डाले गये। और अुसीमें खुदाअी करने पर किसी माका दूधपीता बच्चा दो पत्थरोंके तबूके नीचे सुरक्षित रूम में मिल गया! यही है योगायोग! दैव! जिसके कार्यकारण की अुलझन को हम सुलझा नही पाते अथवा जो हमारी अिच्छाके अनुरूप सुलझ नही पाती, अुसी को हम दैव कहते है। दैव, योगायोगका दूसरे शब्दोमें कहे तो अर्थ ही है हमारा अज्ञान, हमारी निराशा!

कालेपानी के भरे सागरमें हवाके आधारपर चलने वाली इस छोटी सी नाव में बैठे हुअे प्रतिक्षण मृत्युकी चट्टानपर टक्कर खाने की सभावनावाले अिन तीन जीवोंके दैव मे अुस अुलटे सुलटे योगायोगो में से कौनसा योगायोग आनेवाला है?

अिनका क्या होगा? कैसे होगा?—

आज आठवां दिन जैसे तैसे करके अुग आया। सकटोका मुकाबला

करते करते अुनका भय भी कुछ न्यून हो चुका था। केवल यही अेक अप्रिय बात थी कि अन्न तथा पानीका सग्रह खत्म होने के करीब आ गया था। पर यात्रा भी तो आधे से अधिक समाप्त हो चुकी थी। वे लोग बीच बीचमें मछलियाँ पकडते थे और खाते थे, अुससे अुनका कुछ निभाव हो जाता था। पर अशक्ति बढ गयी। अुसमें भी मालती तो बहुत ही श्रांत हो चुकी थी। तथापि अुसका बडा भय्या अुसे बताता था कि, अब आधे से अधिक यात्रा खत्म हो चुकी है, और कहता,

"आततायी, पापी—अुम रफिअुद्दीन मरीखे कितव यदि अिस कालेपानी के समुद्रको पार करके अपने देश पहुँच मकते हैं, तो तेरे जैसे निरपराध, निष्पाप और सुशील अबला को सहाय्यता दिये बिना वह देव किस प्रकार रह सकेगा? तेरे पुण्यसे हम सभी पार पहुँच जायेंगे! स्वदेश पहुँच जायेंगे! फिर वह ताअीत, वे चेटक, वे शुभ शकुन——वे सब योंही जायेंगे?"

अिस प्रकार धीरज बधाने से अुसकी शरीरकी थकावट न भी सही तो भी मानसिक थकावट तो दूर हो ही जाती थी। रात आतेही किशनकी जाघपर जब वह सिर रखकर सो जाती और वह अुसे थपकियाँ देता, तब चिंता का लेश भी अुसे स्पर्श नहीं करता था। अितनी शीघ्रता से अितनी गाढ निद्रामें वह सो जाती कि, सवेरे ही अुसका जागना होता, और वह तब पूर्ण प्रफुल्ल होकर अुठती।

आठवा दिन भी निर्विघ्न रूपसे व्यतीत हुआ। अुस मध्याकाल के सूर्यास्त की शोभा और अुस शात समुद्रके आश्वासन पूर्ण व्यवहार के कारण अुन तीनो को विपुल अुल्लास प्रतीत होने लगा। हवाभी कुछ मात्रामें मद पड गअी थी। अिस लिअे अुन्होने अपने चप्पू अधिक वेगसे चलाने शुरू किये। प्रत्येक चप्पूके प्रहारके साथ स्वदेश का तट द्रुतगति से समीप आता जा रहा है, इस अनुभूति के कारण अुस श्रम का अधिक त्रास अुन्हे अनुभव नही होता था। अुलटे, अुल्लास आवेग में किशन ने अेक नाविको का गाना गाना आरभ किया, तथा मध्य मध्य मालती की ओर देखते हुअे विनोदभरी हँसी हँसने लगा। अुसके बडे भैया ने भी अुसके सुर में अपना सुर मिलाया

और तालकी गतिपर चप्पू चलाने लगा, तथा स्वयमपि जोर जोरसे गाने लगा—

वायु रे, पवन रे,
बढाये जा तरी को अिस,
नाविक रे,
चलाये जा सवेग चप्पुओं को तू।
करती स्मरण आज स्वजनों के स्नेह को,
सांवली सलौनी बाला चली मातृगेह को,
सांवली सलौनी वाला चली मातृ-गेहको।

अेक चरण यह बोलता तो दूसरा चरण दूसरा। इस प्रकार गाते गाते और सपासप चप्पू चलाते हुअे वे लोग चले। नाव भी वेगसे समुद्रमे आगे बढती चली, और स्वदेश वेगसे समीप आता चला। जब तक अधेरा नही हुआ और जिधर तिधर चाँदनी चमचमाने नहीं लगी तब तक वे लोग गाते ही रहे और चप्पू चलाते ही रहे।

अुस गाने को सुनते सुनते और अुस नाव के झूलते हुअे पलगपर किशन की गोद को सिरहाना बनाये मालती कब सो गयी, यह अुसका अुसे भी नही मालूम हो सका।

हवा फिर अनुकूल दिशामें वह अुठी। पाल भर गअी, चप्पूका चलाना मद पड गया। मध्यरात्र का समय, आकाश में चद्रमा—अितने ही में नाव से कुछ दूरके अतर पर खलभलाट की वडी भारी आवाज हुअी और अेक अूचासा पानीका भारी भरकम खभा अूपर को अुठ आया!—

बडे भैय्याने ठीकसे निहारकर देखा, तो अेक प्रचड मत्स्य आधे से अधिक अूपर अुठ आया हो अैसा चमकने लगा। समुद्र में अनेक वार अनुभव प्राप्त किये हुअे दोलकाष्ठने तत्काल पहचान लिया कि यह मत्स्य अेक महाभयानक जातिका मत्स्य है। तत्काल अुसने बदूक अुठायी। त्योंही पुन पानीके बीच खलभलाहट की आवाज हुअी और वह मत्स्य पानीमें डुबकी मारकर विलुप्त हो गया। अेक वडी विपत्ति टल गयी अैसा सोच दोलकाष्ठ तथा किशनने निश्चिंतता की सास ली।

अुस भीषण मत्स्य के अूपरसे अुसी प्रकार की मछलियो की वातो का प्रसग छिडा । दोलकाष्ठ सुनाने लगा, " समुद्रयात्री लोग वताते हैं कि कभी कभी अैसे मच्छो से पाला पडता है जिनकी पूंछ में विजली भरी रहती है, और अुसके प्रहारसे वे वोटकी वोटको अुलटा डालते हैं। छोटी मोटी पवनवाहय नौकाओंका तो अनेक मत्स्य वक्रमार्गों से होकर पीछा करते हैं, जिनमें कितने ही मत्स्य नरभक्षक जातिके भी होते हैं।"

किशन के शरीर पर रोंगटे खडे हो गये ! " नरभक्षक ! तू सच कहता है ? "

पर किशन के अिस प्रश्न का अुत्तर देने की दोलकाष्ठको आवश्यकता ही नही हुअी, समय ही नहीं मिला !—

कारण, किशन वह पूछ ही रहा था कि, अुतने ही में, कोअी राक्षस किसी दुवले पतले व्यक्तिके गालपर जड दे, अुस तरह अुस छोटीसी अेवच समुद्रकी लहर पर आरूढ नाव के अेक पार्श्व को अेक करारी चपत लगी और जिस तरह कोअी कटोरी अुलट जाय अुस तरह वह नाव चूपके से सुलटी से अुलटी हो गयी ! !

अेक प्रचड लहर अुठी । अेक भयकर मत्स्य का धड अुस नाव के चारो ओर गरगर फिरा, पिछली वार जो मत्स्य गोता मारकर निकल भागा था वही अिस समय अिस प्रकार गुप्तरूपसे धावा वोलकर आया और अपनी अेक ही फटकार में नाव को अुलटा दिया । अुस नाव में से कोअी आदमी वाहर फेंका गया है या नही, यह देखने ही के लिअे वह तथा अुसके अेक जोडीदार मत्स्य नावके चारो ओर चक्कर मारते हुअे अूपर अुठ आये थे ।

नावके अुलटते समय अुस चपेट के साथ जो व्यक्ति दूर फेंक दिया गया वह किशन ही था ! अुस राक्षसी मत्स्यने अुसपर झपट्टा मारा और अुसे समुद्र के अदर खींच ले गया !

अिधर दोलकाष्ठने अपने पर अुलटी हुअी अुस नाव से वाहर निकलने का प्रयत्न किया । पर वह अुसके प्राणात ही का प्रयत्न ! ! अभी हो भी न पाया था कि, अुतने ही में समाप्त भी हो गया ! नाकपर

मुँहपर लहरो के थप्पड पडने लगे, दम घुट गया, देखते देखते दोलकाष्ठ समुद्र के अुदर में समा गया ! !--

और मालती ? वह डूब गयी है यह तक अुसे विदित नही हो पाया ! वह गाढ निद्रा में थी। अुसे अुस आदोल्यमान तरी के कारण सुख-स्वप्न आ रहे थे, कि वह अपने बचपन के अुसी झूलेपर बैठी हुअी है, अुस की मा अुस के लिअे स्नेहभरे गाने गा रही है, झूलेके अूँचे अूँचे जाकर नीचे की ओर आने की अनुभूति अुसे अत्यधिक मधुर प्रतीत हो रही है !

अुस मधुस्वप्न में, वह जिस तरह सोयी हुअी थी, वैसी की वैसी ही, नाव के अुलटनेपर, समुद्र की अूर्मियोके झूले पर सुला दी गयी ! जाग अुसके पश्चात् अुसे कभी आयी ही नही ! !

वह सुखस्वप्न ही अुसकी आखीरकी जाग थी। अुसकी आखीर की अनुभूति थी, अर्थात् अुसके अपने विचार से तो वह सुरक्षित तौरपर घरपर जाकर अपनी मा से मिली ही ! अुसके भर के लिअे अुसकी अनुभूति की वह अतीम रेखा सुखात ही रही ! !

